जिनागम पंथ ग्रंथमाला : ग्रंथांक–7

।। सर्वोदयी संत ।।

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के जीवन वृत्त पर आधारित (महाकाव्य)

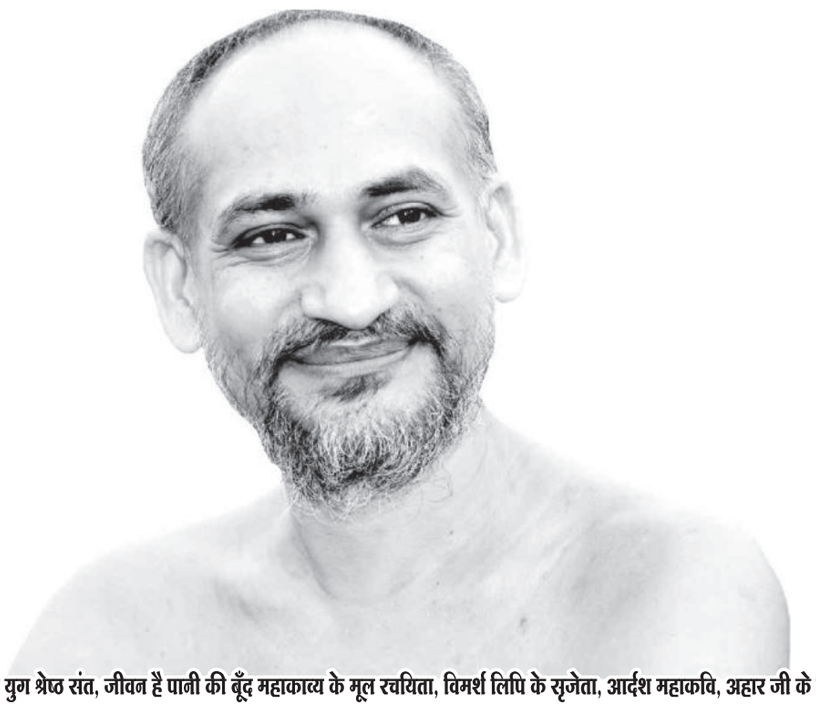

परम वंदनीय युग श्रेष्ठ संत, जीवन है पानी की बूँद महाकाव्य के मूल रचयिता, विमर्श लिपि के सृजेता, आर्दश महाकवि, अहार जी के छोटे बाबा

राष्ट्रयोगी, भावलिंगी संत, श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज

लेखक

ज्ञानचन्द जैन (दाऊ)

शास्त्रदान का पुण्य अवसर

.... शास्त्र विक्रय.... ज्ञानावरणस्यास्रवा:। श्रुतात्स्याच्छ्रुतकेवली।

शास्त्र विक्रय ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण है तथा शास्त्रदान से श्रुतकेवली होता है ऐसा आगम वाक्य है।

जिनागम पंथ ग्रंथमाला से प्रकाशित श्रुत साहित्य का विक्रय नहीं किया जाता। सभी स्वाध्यायी जीवों के लिए नि:शुल्क उपलब्ध कराया जाता है।

जिनागम पंथ ग्रंथमाला : ग्रंथांक–7

कृति	:	सर्वोदयी संत (महाकाव्य) आचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के जीवन चारित्र पर आधारित
आशीर्वाद	:	प.पू. सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज
लेखक	:	ज्ञानचन्द जैन (दाऊ)
समावलोकन	:	श्रमण श्री विचिन्त्यसागर जी महाराज
प्रस्तुति	:	बा.ब्र. विशु दीदी
संयोजक	:	चक्रेश कुमार सरिता जैन, सागर (म.प्र.)
प्रकाशक	:	जिनागम पंथ प्रकाशन
संस्करण	:	प्रथम, 2020
पावन प्रसंग	:	48वें विमर्श उत्सव पर

प्राप्ति स्थान :

जिनागम पंथ ग्रंथालय
छिंदवाड़ा (म.प्र.)
मो. 9425146667

राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच
भिण्ड (म.प्र.)
मो. 9826217291

जिनागम पंथ ग्रंथालय
डॉ. विश्वजीत कोटिया
आगरा (उ.प्र.)
मो. 9412163166

जिनागम पंथ ग्रंथालय
अरिन्जय जैन
दिल्ली
मो. 9710099002

मुद्रक :
ज्योति ग्राफिक्स, जयपुर
मो. 8290526049

मुख्य कार्यकारिणी

अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	मंत्री
कमलेश कुमार जैन	महावीर प्रसाद जैन (गंगवाल)	अंकुर जैन
9415142563	9415049041	9839378786

कोषाध्यक्ष	भंडारी
रमेशचन्द्र जैन (गुरु परिवार)	शरद जैन
9005578760	9451021000

श्री 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मन्दिर बड़ा अतिशय क्षेत्र, बाराबंकी

आचार्य 108 श्री विमर्शसागर जी वर्षायोग समिति

शिरोमणि संरक्षक	परम संरक्षक	संरक्षक	सह संरक्षक
श्री महावीर प्रसाद अग्रवाल	श्री रतनलाल बाकलीवाल	श्री वीर कुमार जैन श्री कैलाशचन्द सेठी	डॉ. ललित जैन, श्री अतुल जैन (डायमण्ड), श्री पवन जैन (डब्बू) श्री विपिन जैन (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट), श्री पदमचन्द्र जैन (छाबड़ा) JTC

अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	मंत्री	कोषाध्यक्ष	सहकोषाध्यक्ष
महावीर प्रसाद जैन (गंगवाल)	दीपचन्द्र जैन (गंगवाल) प्रद्युम्न कुमार जैन	प्रतीक कुमार जैन	हरीशचन्द जैन (राजू)	नमन जैन
9415049041		9415075840	8707424894	9160855511

जानें क्या है जिनागम पंथ?

–भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

'जिनागम पंथ' अनादि–अनिधन, विश्व मैत्री, प्रेम, एकता का परम पावन संदेश है, जो तीर्थंकर भगवंत,केवली अरिहन्त, गणधर संत, आचार्य–उपाध्याय–निर्ग्रंथ के मुख से अतीतकाल में कहा गया, वर्तमान में कहा जा रहा है और भविष्यकाल में कहा जायेगा।

अहो! तीर्थंकर जिन की वाणी यानि जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम और इसमें वर्णित आत्महितकारी पंथ, मार्ग। यही है जिनागम पंथ।

अहो! जिनागम में कथित पंथ अर्थात् मार्ग, यही सच्चा था सच्चा है और सच्चा रहेगा। तीर्थंकर सर्वज्ञ जिन की वाणी ही जिनागम है और जिनागम में कथित श्रमण–श्रावकधर्म यह पंथ अर्थात् मार्ग है जो श्रमण–श्रावकधर्म के मार्ग पर चल रहा है वह जिनागम पंथ का पथिक 'जिनागम पंथी' है।

सचमुच जिनागम पंथ शाश्वत था, शाश्वत है, शाश्वत रहेगा। जो जिनागम पंथ का पथिक है वह सम्यग्दृष्टि श्रावक अथवा श्रमण संज्ञा को प्राप्त जिनागम पंथी है। जो जिनागम पंथ की श्रद्धा से रहित है वह मिथ्यादृष्टि है।

अहो! विदेह क्षेत्र में विराजित विद्यमान बीस तीर्थंकरों के मुख से गणधरादि परमेष्ठी भगवंतों के द्वारा आज भी जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम प्रगट हो रहा है।

धन्य हैं वे भव्य जीव जो जिनागम कथित समीचीन पंथ अर्थात् जिनागम पंथ को स्वीकार कर अनादि मोह, राग–द्वेष की परम्परा का विच्छेदन कर आत्मकल्याण कर रहे हैं। अहो! जिनागम पंथ के अलावा अन्य कोई कल्याण का मार्ग नहीं है। जिनागम पंथ के अलावा अन्य पंथ उन्मार्ग हैं, अकल्याणकारी हैं।

जयदु जिणागम पंथो, रागो–दोसो य णासगो सेयो।
पंथो तेरह – बीसो, रागादि – वड्ढिओ असेयो।।

जो रागद्वेष का नाश करनेवाला है, कल्याणकारी है, ऐसा 'जिनागम पंथ जयवंत हो'। इसके अलावा तेरह पंथ, बीसपंथ आदि पंथ, रागद्वेष को बढ़ानेवाले हैं, अकल्याणकारी हैं।

अहो! कालदोष के कारण कतिपय विद्वानों ने तीर्थंकर जिनदेव के मुख से भाषित अर्थात् सर्वांग से खिरनेवाली दिव्यध्वनि में कथित जिनागम पंथ से बाह्य तेरहपंथ, बीसपंथ, शुद्ध तेरह पंथ आदि नाना पंथों की संज्ञाएँ रखकर परस्पर रागद्वेष को जन्म दिया है। कुछ विद्वान् एवं श्रमण संज्ञा से भूषित जीवों ने भी ख्याति–पूजा–लाभ के लिए नये–नये पंथ गढ़कर भव्य जीवों का महान् अहित किया है।

अहो! अज्ञानता, आज ये जीव इन नाना संज्ञाओं से पंथों का पोषणकर जिनागम पंथ से दूर खड़े हो गये हैं और कल्पित पंथों का पोषणकर अपना आत्म पतन ही कर रहे हैं। तेरह–बीस आदि संज्ञाएँ जिनेन्द्र देव की वाणी से बाह्य हैं। ये जिनागम पंथ से बाह्य पंथ ही वर्तमान में राग–द्वेष का कारण बने हुये हैं। चारों तरफ समाज में विघटन, मंदिरों में खींचतान, इन कल्पित तेरह–बीस आदि पंथों की ही देन है। जिनागम पंथ सभी को एक सूत्र में बाँधकर मैत्री–प्रेम–वात्सल्य का संदेश देता है।

अहो! आज भी यदि स्वकल्पित पंथों का दुराग्रह छोड़कर सब जीव जिनेन्द्र देव की वाणी यानि जिनवाणी, जिनागम में श्रद्धा रखें, और जिनागम वर्णित पंथ यानि 'जिनागम पंथ' को सच्ची श्रद्धा से स्वीकारें, तो सर्व समाज में आज भी एकता का सूत्रपात हो सकता है। आपस के रागद्वेष मिट सकते हैं और जिनशासन गौरवान्वित हो सकता है।

'जयदु जिणागम पंथो।'
'जिनागम पंथ जयवंत हो।'

परिचय की वीथिकाओं में

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

लौकिक यात्रा

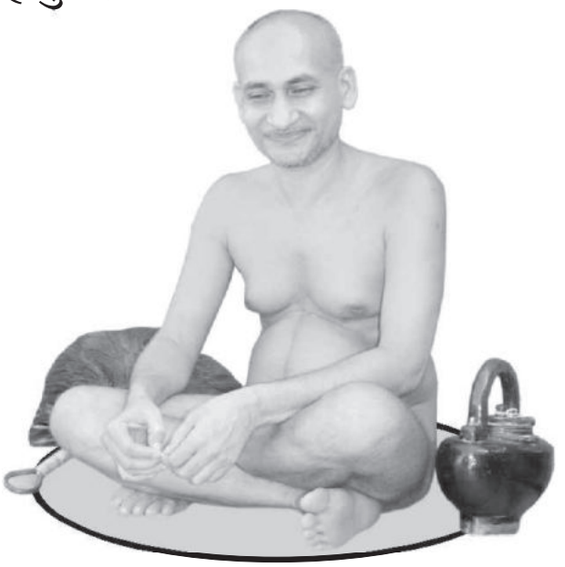

पूर्व नाम	:	**श्री राकेश कुमार जैन**
पिता	:	पं. श्री सनत कुमार जैन (दो प्रतिमाधारी, समाधिस्थ)
माता	:	श्रीमती भगवती जैन (आपके ही कर कमलों से दीक्षित एवं समाधिस्थ पू.आर्यिका विहान्तश्री माताजी)
जन्म स्थान	:	जतारा, जिला टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म तिथि	:	मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं. 2030
जन्म दिनांक	:	15 नवम्बर, 1973 दिन : गुरुवार
शिक्षा	:	बी.एस.सी. (बायलॉजी)
भ्राता	:	दो (अग्रज राजेश जैन, अनुज चक्रेश जैन)
भगिनी	:	दो — (अग्रजा-श्रीमती कमला जैन, अनुजा-बा.ब्र. महिमा दीदी (संघस्थ)
विवाह	:	बाल ब्रह्मचारी
खेल	:	बैडमिंटन, शतरंज (विशेषता—दोनों खेल जिनसे सीखे उन्हीं के साथ फाईनल खेलते हुए चैंपियन कप विजेता)
सामाजिक सेवा	:	मंत्री— श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ, जतारा
रुचि	:	अध्ययन, संगीत, पेंटिंग
सांस्कृतिक रुचि	:	अनेक धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन
करुणाभाव	:	बचपन में एक गरीब अंधे भिखारी को अक्सर पैसे दान देना।

परमार्थ यात्रा

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के प्रथम बार जतारा नगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रयगजरथ महोत्सव में समाज की ओर से निवेदन के अवसर पर दर्शन हुये। आचार्यश्री की वात्सल्यता ने अत्यंत प्रभावित किया। (सन्-1995, स्थान-मोराजी सागर, म.प्र.)

त्याग के संस्कार :

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज की जतारा नगर में वैयावृत्ति के समय आजीवन आलु, प्याज एवं रात्रि भोजन के त्याग से गृह त्याग की भावना।

ब्रह्मचर्य व्रत

: आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का विहार कराते हुए सिद्धक्षेत्र श्री अहार जी में भगवान् शान्तिनाथ की चरणछाया में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी, सोमवार संवत् 2051, 27 फरवरी 1995 को आचार्यश्री से दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।

सामायिक प्रतिमा :

आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज से पार्श्वनाथ मोक्ष सप्तमी के अवसर पर सामायिक प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। स्थान- क्षेत्रपाल जी ललितपुर (उ.प्र.), 3 अगस्त 1995, गुरुवार।

ऐलक दीक्षा :

फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शुक्रवार, संवत् 2052, 23 फरवरी 1996 को देवेन्द्रनगर (पन्ना) में तपकल्याणक के दिन आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से ऐलक दीक्षा ग्रहण की और नाम पाया ऐलक विमर्शसागर जी।

मुनि दीक्षा :

पौष कृष्णा 11, संवत् 2055, सोमवार दिनांक 14 दिसम्बर 1998 को अतिशय क्षेत्र बरासो (भिण्ड) में आचार्यश्री विरागसागरजी से मुनिदीक्षा ग्रहण की और मुनि विमर्शसागर नाम पाया।

आचार्य पद घोषित :

आचार्यश्री विरागसागरजी ने 13 फरवरी 2005 कुन्थुगिरी पर गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी सहित 14 आचार्य एवं 200 पिच्छिओं के मध्य आचार्य पद घोषित किया।

आचार्य पद संस्कार :

मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सं. 2067, रविवार, दिनांक 12 दिसम्बर 2010 को बांसवाड़ा (राजस्थान) में आचार्यश्री विरागसागरजी ने आचार्य पद के संस्कार किये और नाम दिया आचार्य विमर्शसागर जी।

शान्ति भक्ति की सिद्धि :

25 दिसम्बर 2015, सिद्धक्षेत्र अहार जी में भगवान् श्री शान्तिनाथ स्वामी के अतिशयकारी पादमूल में, संघस्थ बा.ब्र. विशु दीदी की असाध्य बीमारी (रोग) से करुणान्वित हो पूज्य गुरुदेव ने जब लगभग 1400 वर्ष प्राचीन आचार्य-पूज्यपाद स्वामी रचित शान्त्यष्टक का भावपूर्वक पाठ किया तो देखते ही देखते क्षण मात्र में दीदी असाध्य रोग से मुक्त हो गई। तब क्षेत्र के यक्ष-यक्षणियों द्वारा गुरुदेव की महापूजा की गई और सूचित किया कि आपको अपनी निर्मल साधना से इस पंचमकाल में दुर्लभतम् शान्ति भक्ति की सहज ही सिद्धि प्राप्त हुई है। साथ ही पूज्य गुरुदेव को 'भावलिंगी संत', 'अहार जी के छोटे बाबा' 'शान्तिप्रभु के लघुनंदन' आदि संज्ञायें प्रदान कीं।

शब्दालंकार :

रत्नत्रय के ऊर्जस्वी और तेजस्वी अलंकारों से जिनकी आत्मा का एक-एक प्रदेश अलंकृत है। सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् की दिव्य रश्मियों से आलोकित पूज्य गुरुवर विमर्शसागर जी महामुनिराज का विराट व्यक्तित्व किन्हीं शब्दालंकारों का मोहताज नहीं है। फिर भी जगह-जगह की धर्मप्राण-समाजों, ऊर्जस्वी संगठनों एवं यशस्वी व्यक्तियों ने नाना अवसरों पर अपने मनोभावों को शब्दों में समेट कर गुरुचरणों में कई शब्दालंकार प्रस्तुत किये हैं और अपना सौभाग्य माना है।

वात्सल्य शिरोमणि—संत के जीवन का सबसे प्रभावी गुण होता है उसका अकृत्रिम वात्सल्य भाव, पूज्य गुरुवर को यह वात्सल्य की अमूल्य सम्पदा, गुरु परम्परा से विरासत में ही प्राप्त हुई है, वर्षायोग 2008 के उपरान्त उ.प्र. के आगरा नगर में पंचकल्याणक के अवसर पर आगरा समाज ने आपके वात्सल्य से प्रभावित होकर आपको **"वात्सल्य शिरोमणि"** के अलंकार से विभूषित किया।

श्रमण गौरव—प.पू. भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज की अनुशासन के सुडौल साँचे में ढली निर्दोष श्रमण चर्या वर्तमान में श्रमण जगत को गौरवान्वित करती है, पूज्य श्री की आगमानुसारी चर्या से प्रभावित होकर एटा-2009 वर्षायोग में शाकाहार परिषद ने आपको **"श्रमण गौरव"** की उपाधि से अलंकृत किया और अपना सौभाग्य बढ़ाया।

वात्सल्य सिन्धु—वात्सल्य और करुणा के दो पावन तटों के बीच प्रवाहित गुरुवर की जीवन मंदाकिनी जनमानस की सतह पर बिखरी घृणा, बैर, कटुता की कलुषता को सहज ही धो डालती है। पूज्य श्री के इसी गुण आकर्षण से अनुग्रहीत हो, एटा में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर राजेश जैन गीतकार आदि कवि समूह ने गुरुवर को **"वात्सल्य सिन्धु"** का भाव वंदन अर्पित कर सौभाग्य माना।

आचार्य पुंगव—संतवाद, पंथवाद और ग्रंथवाद की वैचारिक संकीर्णताओं से असम्पृक्त पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की सिर्फ चर्या ही अनुकरणीय नहीं, अपितु उनका चतुरानुरोग का निर्मल ज्ञान भी ज्येष्ठ है। ऐसे ज्ञान और चर्या में श्रेष्ठ संत के महिमावंत व्यक्तित्व से प्रभावित होकर जतारा जैन समाज ने पंचकल्याणक 2012 के अवसर पर आपको **"आचार्य पुंगव"** की उपाधि से भूषित कर अपना मान बढ़ाया।

राष्ट्रयोगी—पूज्य गुरुवर का "वैचारिक वैभव" सिर्फ जैनों तक सीमित नहीं अपितु हर जाति का व्यक्ति उसे अपनी विरासत मानता है। अत: बिजयनगर (राज.) वर्षायोग में राष्ट्रवादी संस्था भारत विकास परिषद् द्वारा आयोजित ''दिव्य संस्कार प्रवचन माला'' में आपके राष्ट्रोन्नति से समृद्ध उपदेशों को सुनकर आपको **"राष्ट्रयोगी"** का अलंकार समर्पित किया गया।

सर्वोदयी संत—पूज्य आचार्यश्री की निर्भीक शैली जन मानस को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है तभी तो पूज्यवर के प्रवचनों में जैनों के साथ-साथ अजैन भी देशना को सुनकर आनंदित होते हैं, आपके उपदेशों में प्राणीमात्र के उदय की दिव्य चमक नजर आती है। तभी तो बिजयनगर (राज.) दिगम्बर जैन समाज ने 2012 वर्षायोग में आपको **"सर्वोदयी संत"** की उपाधि से नवाजा।

प्रज्ञामनीषी—श्रुताराधना के अनुपम आराधक-जिनेन्द्रवाणी के गहन प्रचारक, वाणी और कलम के अनूठे जादूगर पूज्य श्री की तीक्ष्ण प्रज्ञा और निर्मल ज्ञान से प्रभावित होकर, अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन बिजयनगर (राज.)- 2012 में कविगण एवं भारत विकास परिषद द्वारा आपको **"प्रज्ञामनीषी"** की उपाधि से विभूषित किया गया।

राष्ट्रहितैषी—उत्तरप्रदेश के एटा नगर में स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जन्म जयन्ति के अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के तत्त्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय युवा सम्मेलन में पूज्य गुरुदेव के राष्ट्रहित में समर्पित देशोन्नति परक अमूल्य चिंतन से प्रभावित हो विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आपको ''**राष्ट्रहितैषी**'' अलंकरण से अलंकृत किया गया।

आदर्श महाकवि—सम्प्रतिकाल में कुरल शैली का सैकड़ों विषयों को हृदयंगम करनेवाला अमर महाकाव्य ''जीवन है पानी की बूँद'' के शब्द शिल्पी, भजन, गजल, मुक्तक, कविता, नई कविता, पद्यानुवाद, सवैया आदि अनेक जटिल विधाओं पर साधिकार कलम चलानेवाले परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के अपूर्व काव्यात्मक अवदान से प्रेरित हो, 14 नवम्बर 2016 को अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन में, देश के ख्यातिलब्ध मूर्धन्य कवियों ने सुरेश 'पराग' के नेतृत्व में एवं पं. संकेत जी के मार्गदर्शन में सकल जैन समाज देवेन्द्र नगर की गरिमामयी अनुमोदना के संग पूज्य श्री को ''**आदर्श महाकवि**'' का अलंकरण भेंट कर निज सौभाग्य वर्धन किया।

साहित्यिक यात्रा

श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज यूँ तो शरीर से दुबले-पतले लेकिन गौरवर्ण, शुभ संस्थान, चौड़ा ललाट, दमकता मुखमण्डल, प्रशस्त मुद्रा, मधुर मुस्कान के धारी हैं, ऐसे ही आचार्यश्री की लेखनी भी जनमानस के हृदय को छूने वाली है। आचार्यश्री ने अनेक विषयों पर कलम चलाते हुए साहित्य सृजन किया है।

काव्य पाठ संग्रह—

1. हे वन्दनीय गुरुवर (काव्य)
2. मानतुंग के मोती
3. विमर्शाञ्जलि (पूजा पाठ संग्रह)
4. गीताञ्जलि (भजन)
5. विरागाञ्जलि (श्रमण पाठ संग्रह)
6. जीवन है पानी की बूँद (भाग-1)
7. जीवन है पानी की बूँद (भाग-2)
8. जीवन है पानी की बूँद (समग्र)
9. जीवन चलती हुई घड़ी (काव्य)
10. खूबसूरत लाइनें (काव्य)
11. समर्पण के स्वर (काव्य)
12. आईना (काव्य)
13. सोचता हूँ कभी-कभी (काव्य)
14. मेरा प्रेम स्वीकार करो (काव्य)
15. वाह क्या खूब कही (काव्य)
16. कर लो गुरु गुणगान (काव्य)
17. आओ सीखें जिनस्तोत्र
18. जनवरी विमर्श
19. चटपटे प्रश्न-स्वादिष्ट उत्तर (पहेली)
20. जैन श्रावक और दीपावली पर्व

प्रवचन साहित्य :

1. रयणोदय (प्रथम भाग)
2. रयणोदय (द्वितीय भाग)
3. रयणोदय (तृतीय भाग)
4. गूँगी चीख
5. भरत जी घर में वैरागी
6. शब्द शब्द अमृत
7. शंका की एक रात

ग़ज़ल संग्रह :

ज़ाहिद की ग़ज़लें

विधान :

- आचार्य विरागसागर विधान
- एकीभाव विधान
- श्री भक्तामर विधान (3)
- विषापहार विधान
- श्री कल्याण मंदिर विधान
- श्री श्रमण उपसर्ग निवारण विधान

चालीसा : गणधर चालीसा

टीका :

योगसार प्राभृत ग्रंथ पर :

- अप्पोदया (प्राकृत टीका)
- अप्पोदया आत्मोदया (हिन्दी टीका)

महाकाव्य :

''जीवन है पानी की बूँद'' (महाकाव्य) पूज्य गुरुदेव इस अमर महाकाव्य के मूल रचयिता है पूज्य श्री के इस बहुचर्चित महाकाव्य पर अनेकों साधु-भगवंतों, विद्वानों एवं संगीतकारों द्वारा बहुसंख्या में नवीन छंदों का सृजन किया जा रहा है, जो इस महाकाव्य की लोकप्रियता का अनुपम उदाहरण है।

लिपि : विमर्श लिपि, विमर्श अंक लिपि

भाषा : विमर्श एम्बिसा

पद्यानुवाद :

1. सुप्रभात स्तोत्र
2. महावीराष्टक स्तोत्र
3. लघु स्वयंभू स्तोत्र
4. भक्तामर स्तोत्र (त्रय पद्यानुवाद)
5. गोम्मटेस स्तुति
6. द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ)
7. विषापहार स्तोत्र
8. एकीभाव स्तोत्र
9. पञ्चमहागुरुभक्ति
10. तीर्थंकर जिनस्तुति
11. गणधरवलय स्तोत्र
12. कल्याणमंदिर स्तोत्र
13. परमानंद स्तोत्र
14. रयणसार
15. योगसार
16. उपासक संस्कार
17. देशव्रतोद्योतन
18. ज्ञानांकुश

बहुचर्चित भजन :

1. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)
2. कर तू प्रभु का ध्यान
3. ऋण मुक्ति का वर दीजिये
4. शान्तिनाथ कीर्तन
5. देश और धर्म के लिये जिओ
6. माँ

प्रेरणा से प्रकाशन :

1. सिर्फ दो प्रवचन (आचार्य विरागसागरजी, सम्पादक-आचार्य विमर्शसागर जी)
2. हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्त्व का अनुशीलन (डॉ. लोकेश खरे)
3. समसामयिक – आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा)
4. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय – राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी)
5. प्रज्ञाशील महामनीषी

प्रेरणा से स्थापित :

- **आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला**
- **जिनागम पंथ ग्रंथमाला**

उद्देश्य : मूल जिनागम का संरक्षण प्रकाशन
प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी धार्मिक, नैतिक साहित्य का निर्माण, प्रकाशन

विद्वत् संगोष्ठी :

1. समसामयिक – आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा-2006)
2. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी-2007)
3. जैन दर्शन में कर्म सिद्धान्त राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (बड़ौत-2014)
4. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (बड़ा मलहरा-2016)
5. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (देवेन्द्रनगर-2016)
6. सम सामयिक राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (जबलपुर-2017)
7. आचार्य श्री विमर्शसागर कृत 'रयणोदय' पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (छिंदवाड़ा -2018)।
8. आचार्य श्री विमर्शसागर जी कृत 'जाहिद की ग़ज़लें' कृति पर साहित्यकार सम्मेलन (छिंदवाड़ा-2018)
9. आचार्य श्री विमर्शसागर कृत 'रयणोदय' पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (दुर्ग-2019)।

ऐतिहासिक पूजन प्रशिक्षण शिविर—आचार्यश्री के सानिध्य एवं निर्देशन में आयोजित पूजन प्रशिक्षण शिविर एक ऐसी प्रयोगशाला है जिसमें जैनधर्म के संस्कार एवं शिक्षा का प्रयोग करना सिखाया जाता है। यदि चेतनतीर्थ स्वरूप उपासक संस्कारित नहीं, तो अचेतनतीर्थ स्वरूप जिनमंदिरों का महत्व नहीं जाना जा सकता। आचार्यश्री जब अपने मधुर कंठ से शिविर का यथायोग्य संचालन करते हैं तब हर श्रावक भक्ति में ऐसा लीन हो जाता है कि 4-5 घंटे का भी पता नहीं चलता। आचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित इस शिविर के माध्यम से आज हजारों लोग जैनत्व के संस्कारों से जुड़े हैं। अभी तक 23 पूजन शिविर आयोजित हो चुके हैं—

1. महरौनी (उ.प्र.)
2. वरायठा (म.प्र.)
3. अंकुर कॉलोनी, सागर (म.प्र.)
4. सतना (म.प्र.)
5. अशोक नगर (म.प्र.)
6. रामगंजमण्डी (राज.)
7. भानपुरा (म.प्र.)
8. सिंगोली (म.प्र.)
9. कोटा (राज.)
10. शिवपुरी (म.प्र.)
11. आगरा (उ.प्र.)
12. एटा (उ.प्र.)
13. डूंगरपुर (राज.)
14. अशोकनगर (म.प्र.)
15. बिजयनगर (राज.)
16. भिण्ड (म.प्र.)
17. बड़ौत (उ.प्र.)
18. टीकमगढ़ (म.प्र.)
19. देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
20. जबलपुर (म.प्र.)
21. छिंदवाड़ा (म.प्र.)
22. दुर्ग (छत्तीसगढ़)

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव :

1. नेमिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2002 (रजवांस-सागर, म.प्र.)
2. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2003 (महरौनी, ललितपुर, उ.प्र.)
3. आदिनाथ पंचकल्याणक, रथ महोत्सव-2004 (बूँदी-राज.)
4. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2007 (रामगंजमण्डी, राज.)
5. पार्श्वनाथ पंचकल्याणक, रथोत्सव-2007 (कोटा, राज.)
6. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2008 (शिवपुरी, म.प्र.)
7. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2009 (आगरा, उ.प्र.)
8. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2010 (एटा, उ.प्र.)
9. आदिनाथ पंचकल्याणक, त्रय गजरथ महोत्सव-2012 (जतारा, म.प्र.)
10. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव-2013 (तीर्थधाम आदीश्वरम् चंदेरी, म.प्र.)
11. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (पृथ्वीपुर, म.प्र.)
12. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2015 (टीकमगढ़, म.प्र.)
13. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (बैरवार, जतारा, म.प्र.)
14. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2018 (धनौरा, म.प्र.)

चातुर्मास :

1. मढ़ियाजी जबलपुर (म.प्र.) — 1996
2. भिण्ड (म.प्र.) — 1997
3. भिण्ड (म.प्र.) — 1998
4. भिण्ड (म.प्र.) — 1999
5. महरौनी (उ.प्र.) — 2000

6.	अंकुर कॉलौनी (सागर, म.प्र.)	—	2001
7.	सतना (म.प्र.)	—	2002
8.	अशोकनगर (म.प्र.)	—	2003
9.	रामगंजमण्डी (राज.)	—	2004
10.	सिंगोली (म.प्र.)	—	2005
11.	कोटा (राज.)	—	2006
12.	शिवपुरी (म.प्र.)	—	2007
13.	आगरा (उ.प्र.)	—	2008
14.	एटा (उ.प्र.)	—	2009
15.	डूंगरपुर (राज.)	—	2010
16.	अशोकनगर (म.प्र.)	—	2011
17.	बिजयनगर (राज.)	—	2012
18.	भिण्ड (म.प्र.)	—	2013
19.	बड़ौत (उ.प्र.)	—	2014
20.	टीकमगढ़ (म.प्र.)	—	2015
21.	देवेन्द्रनगर (म.प्र.)	—	2016
22.	जबलपुर (म.प्र.)	—	2017
23.	छिंदवाड़ा (म.प्र.)	—	2018
24.	दुर्ग (छत्तीसगढ़)	—	2019
25.	बाराबंकी (उ.प्र.)	—	2020

वर्तमान संत संस्था में आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज एक ऐसे श्रेष्ठ संत हैं जिनके पास ज्ञान संस्कार की चर्या एवं चर्चा देखने-सुनने को मिलती है। कम-बोलना लेकिन काम का बोलना आचार्यश्री की अपनी विशिष्ट शैली है। **प्रवचनों में सकारात्मक चिंतन को परोसने वाले हित-मित प्रियभाषी, ''जिनागम पंथ प्रवर्तक'' आचार्यश्री पंथवाद-संतवाद-जातिवाद की भी खूब खबर लेते हैं। सच्चे संतत्व को प्रकाशित करनेवाले आचार्यश्री कहते हैं, पंथ-संत-जातिवाद को बढ़ावा देनेवाले श्रमण एवं श्रावक जिनधर्म के विनाशक होंगे। आचार्यों की अपनी-अपनी आचार परम्परा से श्रावक साधुओं के प्रति अश्रद्धानी होंगे, साथ ही सामाजिक समरसता, एकता नष्ट होगी। सचमुच आचार्यश्री का चिन्तन भविष्य की व्याख्या कर रहा है।** आचार्यश्री का सरल-सौम्य व्यक्तित्त्व एवं पूर्वापर चिंतन ही आचार्यश्री की अलग पहचान है। ऐसे युगचेता संत के चरणों में हम बारम्बार नमन करते हैं।

—श्रमण विचिन्त्यसागर (संघस्थ)

पूज्य गुरुदेव से संबंधित अन्य साहित्य

जीवनी साहित्य :

1. **राष्ट्रयोगी :** लेखक—श्री सुरेश 'सरल' जबलपुर (म.प्र.)
2. **आँगन की तुलसी :** लेखक—प्राचार्य श्री निहाल चन्द जैन, बीना (म.प्र.)
3. **जतारा का ध्रुवतारा :** लेखक—श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
4. **भावलिंगी संत (महाकाव्य) :** लेखक—श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
5. **विमर्श धाम (महाकाव्य) :** लेखक—पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र)
6. **सर्वोदयी संत (महाकाव्य) :** लेखक—श्री ज्ञानचन्द जैन 'दाऊ', सागर (म.प्र.)
7. **विमर्श महाभाष्य :** लेखक—पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
8. **विमर्श वाटिका :** लेखक—श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
9. **विमर्श भक्ति शतक :** लेखिका—श्रीमती स्मृति जैन 'भारत',अशोकनगर (म.प्र.)
10. **विमर्श शतक 1, 2 :** लेखक—पं. ब्रजेन्द्र जैन, देवेन्द्र नगर (म.प्र.)
11. **विमर्श वंदना :** लेखक—कवि शशिकर 'खटका', राजस्थानी, बिजयनगर (राज.)

विधान :

1. **आचार्य विमर्शसागर विधान :** लेखक—श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
2. **संकट मोचन तारणहारे-गुरु विमर्श विधान :** लेखक—पं. संकेत जैन 'विवेक' देवेन्द्रनगर (म.प्र.)

स्मारिकायें :

1. विमर्श वारिधि (विजयनगर चातुर्मास 2012, स्मारिका)
2. विमर्श प्रवाह (बड़ौत चातुर्मास 2014, स्मारिका)
3. विमर्श गीतिका (टीकमगढ़ चातुर्मास 2015, स्मारिका)
4. विमर्शानुभूति (देवेन्द्रनगर चातुर्मास 2016, स्मारिका)
5. विमर्श वात्सल्य (जबलपुर चातुर्मास 2017, स्मारिका)
6. विमर्श प्रभा (छिंदवाड़ा चातुर्मास 2018, स्मारिका)

मासिक पत्रिका :

विमर्श प्रवाह (मासिक)

प्रधान संपादक—डॉ. श्रेयांसकुमार जैन (बड़ौत)

संपादिका—डॉ. अल्पना जैन (ग्वालियर)

प्रबंध संपादक—डॉ. विश्वजीत जैन (आगरा)

संपादक—पं. सर्वेश शास्त्री, पं. संकेत जैन 'विवेक'

बहुचर्चित 'जीवन है पानी की बूँद' (महाकाव्य) का उद्भव मूल रचयिता की कलम से...

बात 1997 भिण्ड चातुर्मास की है–

सूरज गुनगुनी धूप लेकर क्षितिज पर चमकने लगा। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज अपने विशाल संघ के साथ प्रभातकालीन आवश्यक भक्ति क्रिया से निवृत्त हो चुके थे। प्रतिदिन की भाँति परम पूज्य गुरुदेव अपने विशाल संघ के साथ नित्य क्रिया हेतु नसियाँ जी की ओर बढ़ते जा रहे थे।

पूज्य गुरुदेव के साथ मैं भी यथाक्रम ईर्यासमिति से चल रहा था, और काव्य में रुचि होने के कारण चिंतन को आध्यात्मिक अनुभूतियों से स्नान करा रहा था। तभी अचानक चिंतन की गर्भस्थली में एक पंक्ति 'जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे' का प्रसव हुआ, और मैं इस प्रसव की परमानंद अनुभूति का बारम्बार अनुभव करता हुआ स्मृति के दिव्य द्वार तक पहुँच गया। मैंने कभी 'होनी–अनहोनी' सीरियल देखा था, अत: होनी–अनहोनी शब्द को अपने काव्य में स्थान देने का विचार करता था, तभी अचानक नित्य क्रिया से लौटते समय चिंतन की गर्भस्थली से जुड़वाँ पंक्ति 'होनी–अनहोनी, हो हो, कब क्या घट जाये रे' का प्रसव हुआ। मैं दोनों जुड़वाँ पंक्तियों का अनुभव करता हुआ, अंतरंग में गुरु आशीष की श्रद्धा से भर गया। अत: इस आध्यात्मिक भजन को पूर्ण करने में उपयोग लगाया। भजन की पूर्णता होते ही मैं पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में पहुँचा, और विनयपूर्वक अपना चिंतन मधुर स्वर में गुरु चरणों में समर्पित किया। सच कहूँ, गुरुदेव ने अत्यंत आह्लाद से भरकर मुझे शुभाशीष दिया। गुरु का वह मंगल आशीष ही है कि इस आध्यात्मिक भजन ने सभी के कंठ को स्पर्शित किया, और इस समय का बहुचर्चित भजन कहलाया। जैन हों या अजैन सभी ने इसे समभाव से स्वीकारा, और मुझे अत्यंत श्रद्धा और प्यार से 'जीवन है पानी की बूँद' चिंतन के प्रणेता, इस नाम से पुकारने लगे।

यद्यपि इस भजन को जब अन्य साधु, विद्वान, गीतकार, गायक, अपनी प्रशंसा के लिए अपनी रचना कहकर बोलने लगे, तब पूज्य गुरुदेव को यह कहना पड़ा, कि 'जीवन है पानी की बूँद' भजन तो विमर्शसागर जी की मूल गाथाएँ है जिस पर अन्य साधु, विद्वान, गायक तो मात्र टीकायें लिख रहे हैं।

–श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)

मूल रचयिता : श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

जीवन है पानी की बूँद कब मिट जाये रे–ऽऽ
होनी–अनहोनी, हो–हो–2-कब क्या घट जाये रे ऽऽ

साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा–लेटा।
हाय बुढ़ापा आयेगा, पास न आयेगा बेटा।
ख्वाबों में तू क्यों, हो–हो–2 आनन्द मनाये रे ऽऽ

अर्द्धमृतक सम वृद्धापन, झुकी कमर सिकुड़न–सिकुड़न।
गोदी में पोता–पोती, खोज रहा बचपन यौवन।
बीते जीवन के, हो–हो–2 तू गीत सुनाये रे ऽऽ

हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो गई मस्तानी।
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में हो ठानी।
बेटा बहु सोचें, हो हो–2 डोकरो कब मर जाये रे ऽऽ

चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी–बेटा है।
चिल्लाता है पानी दो, कोई न पानी देता है।
भूखा प्यासा ही, हो–हो–2 इक दिन मर जाये रे ऽऽ

जीवन बीता अरहट में, पुण्य–पाप की करवट में।
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय भी मरघट में।
तेरा ही बेटा, हो–हो–2 तेरा कफन सजाये रे ऽऽ

सिर पर जिसे बिठाया है, गोदी में भी खिलाया है।
लाड़ प्यार से पाला है, सुख की नींद सुलाया है।
तेरा ही बेटा, हो–हो–2 तुझे आग लगाये रे ऽऽ

जिसके लिए कमाता है, जीवन साथी बताता है।
जिसकी चिन्ता कर करके, अपना चैन गँवाता है।
देहरी से बाहर, हो–हो–2 वो साथ न जाये रे ऽऽ

कर तू प्रभु का ध्यान

रचयिता : श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

कर तू प्रभु का ध्यान–बाबा, कर तू प्रभु का ध्यान।
निज घट में भगवान–बाबा, निज घट में भगवान।।

काँटों में भी जीवन तेरा, फूलों सा खिल जायेगा।
खोज रहा है जिसको तू वह, पलभर में मिल जायेगा।
खुद को तू पहिचान–बाबा, खुद को तू पहिचान।1।।

धन–वैभव यह महल–खजाना, कुछ भी साथ न जायेगा।
सुबह खिला जो फूल बाग में, साँझ समय मुरझायेगा।
कर ले धर्मध्यान–बाबा, कर ले धर्मध्यान।।2।।

कभी किसी का दिल दु:ख जाये, ऐसे बोल कभी मत बोल।
घावों पर मल्हम बन जायें, ऐसे बोल बड़े अनमोल।
कहलाता यह ज्ञान–बाबा, कहलाता यह ज्ञान।।3।।

माता–पिता, बड़ों का आदर, धर्ममार्ग पर चलो सदा।
गुरुजन की नित सेवा करना, श्रावक का कर्तव्य कहा।
पाओगे सम्मान–बाबा, पाओगे सम्मान।।4।।

हिंसा, झूठ, कुशील, परिग्रह, चोरी यह मत पाप करो।
पाप विनाशक, धर्म प्रकाशक, णमोकार का जाप करो।
हो सम्यक् श्रद्धान–बाबा, हो सम्यक् श्रद्धान।।5।।

राग–द्वेष भावों के कारण, भवसागर में डूब रहा।
गँवा रहा भोगों में जीवन, मन फिर भी न ऊब रहा।
क्यों बनता नादान–बाबा, क्यों बनता नादान।।6।।

जिसको अपना कहा आज तक, हुआ कभी ना वह अपना।
जिसकी खातिर जिया आज तक, निकला वह सुंदर सपना।।
क्यों तू करे गुमान–बाबा, क्यों तू करे गुमान।।7।।

मेंढक ने प्रभु ध्यान किया जब, मरकर देव हुआ तत्काल।
समवसरण में प्रभु को ध्याया, जीवन उसका हुआ निहाल।
मिट जाये अज्ञान–बाबा, मिट जाये अज्ञान।।8।।

ऋण मुक्ति का वर दीजिये

रचयिता : श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

गुरुदेव मेरे आप बस, इतनी कृपा कर दीजिए।
कल्याण अपना कर सकूँ, वरदान इतना दीजिए।।

सोचूँ सदा अपना सुहित, नहिं काम क्रोध विकार हो।
हे नाथ ! गुरु आदेश का, पालन सदा स्वीकार हो।
सिर पर मेरे आशीष का, शुभ हाथ प्रभु धर दीजिए। गुरुदेव...

दृढ़ शील संयम व्रत धरूँ, नित ब्रह्मचर्य लखूँ सदा।
सीता सुदर्शन सम बनूँ, निज आत्मसौख्य चखूँ सदा।
माता सुता बहिना पिता, दृष्टि विमल कर दीजिए। गुरुदेव...

सच्चा समर्पण भाव हो, नहिं स्वार्थ की दुर्गन्ध हो।
विश्वासघात ना हम करें, हर श्वाँस में सौगंध हो।
हे नाथ! गुरु विश्वास की, डोरी अमर कर दीजिए। गुरुदेव...

जागे न मन में वासना, मन में कषायें न जगें।
हो वात्सल्य हृदय सदा, कर्त्तव्य से न कभी डिगें।
गुरुभक्ति की सरिता बहे, निर्मल हृदय कर दीजिए। गुरुदेव...

भावों में निश्छलता रहे, छल की रहे न भावना।
गुरु पादमूल शरण मिले, करते हैं हम नित कामना।
जिनधर्म जिनआज्ञा सुगुरु, सेवा का अवसर दीजिए। गुरुदेव...

उपकार जो मुझ पर किये, गुरुवर भुला न पायेंगे।
जब तक है तन में श्वाँस हम, उपकार गुरु के गायेंगे।
हम शिष्य हैं गुरु के ऋणी, ऋणमुक्ति का वर दीजिए। गुरुदेव...

सम्यक्त्व ज्ञान चरित्र से, सुरभित रहे मम साधना।
आचार की मर्यादा ही, हे नाथ ! हो आराधना।
स्वर–स्वर समाधिभाव का, चिंतन मुखर कर दीजिए। गुरुदेव...

शान्तिनाथ कीर्तन

रचयिता : श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, भगवन्–2
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, शान्ति भगवन्।

हम आये हैं, द्वार तुम्हारे–2
दे दो प्रभु जी, हमको सहारे–2
शान्तिनाथ भगवन्–भगवन्–भगवन्ऽऽ
जय हो.....

छवि वीतरागी, प्यारी प्यारी लागे–2
दरश जो पाया, धन्य भाग जागे–2
चरणों करुँ नमन–नमन–नमनऽऽ
जय हो.....

सर्वज्ञ स्वामी, शरण में आया–2,
कहीं न मिला जो, वह सुख पाया
हर्षित हुए नयन–नयन–नयनऽऽ
जय हो.....

हित उपदेशी, आप कहाते–2
हम गुण गाने, भक्त बन जाते–2
छोड़ूँ न अब चरण–चरण–चरणऽऽ
जय हो.....

अहार जी के – बाबा कहाते–2
यक्ष यक्षिणी भी, सिर को नवाते–2
झुकते हैं मुनिगण–मुनिगण–मुनिगणऽऽ
जय हो.....

दुखिया हो कोई, द्वार पे आये–2
हँसता हुआ ही, द्वार से जाये–2
श्रद्धा हो पावन–पावन–पावनऽऽ
जय हो.....

एक सुखद अनुभूतियों का एहसास

''माँ''

रचयिता : श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

बेटा हो दुःख–पीड़ा में, माँ बन जाती दीवार।
माँ के प्यार सा इस दुनियाँ में नहीं किसी का प्यार।।
ओ–ऽऽ माँ, प्यारी माँ–ऽऽ–ऽ

माँ की गोदी में बेटा जब चैन से सोता है।
बेटा जैसा और किसी का पुण्य न होता है।
किलकारी भर भरकर माँ का करता है दीदार।
माँ के प्यार सा.....

बेटा जब–जब रोता है, माँ लोरी गाती है।
भूखी–प्यासी रहकर भी माँ, दूध पिलाती है।
चंदा–सूरज, अश्रु बहाते, पाने माँ का प्यार।
माँ के प्यार सा.....

कोठी–बँगला रुपया–पैसा, सब ऐशो–आराम।
माँ बिन सूना घर का आँगन, माँ को करो प्रणाम।
माँ ही घर की तुलसी है, रौनक, घर का शृंगार।
माँ के प्यार सा.....

जीवन–संगिनी पाकर माँ का प्यार भुलायेगा।
घर में दीवाली होगी पर खुशी न पायेगा।
माँ ही घर की दीवाली, होली, घर का त्यौहार।
माँ के प्यार सा.....

अपनी खुशियाँ कर न्यौछावर, देती है खुशियाँ।
बेटा समझे, न समझे, समझे न यह दुनियाँ।
माँ चलती काँटों पर, देती फूलों का उपहार।
माँ के प्यार सा.....

दुनिया छूट भी जाये, माँ का कभी न छूटे साथ।
माँ ने पकड़ा हाथ हमारा, पकड़ो माँ का हाथ।
सब तीरथ माँ चरणों में, बन जाओ श्रवण कुमार।
माँ के प्यार सा.....

राम, कृष्ण, महावीर ने माँ का मान बढ़ाया है।
जाँ देकर आजाद भगत ने, माँ को पाया है।
सदा चिरायु, सुखी रहो, भारत माँ करे पुकार।
माँ के प्यार सा.....

।। मंगलाशीष ।।

आचार्य श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज

साहित्य सृजन एक साधना है जो बुद्धि का श्रेष्ठ प्रयोग है।
गद्य की अपेक्षा पद्य रचना और भी कठिन कार्य है।

वयोवृद्ध कविधन दादा ज्ञानचन्द पिड़रुआ एक श्रेष्ठ साहित्य मनीषी हैं वृद्ध अवस्था में भी प्रतिदिन साहित्य सेवा में संलग्न हैं निर्ग्रन्थों पर ग्रन्थ लिखना यह उनकी श्रेष्ठ गुरु भक्ति का परिचायक है।

इसीप्रकार अपने आयुकर्म के निषेकों का सद्उपयोग करते हुए समाधि को भावित करें।

यही मंगलाशीष है।

दिनांक 31.4.2017
मंगलगिरि (म.प्र.)

लेखक की कलम से...

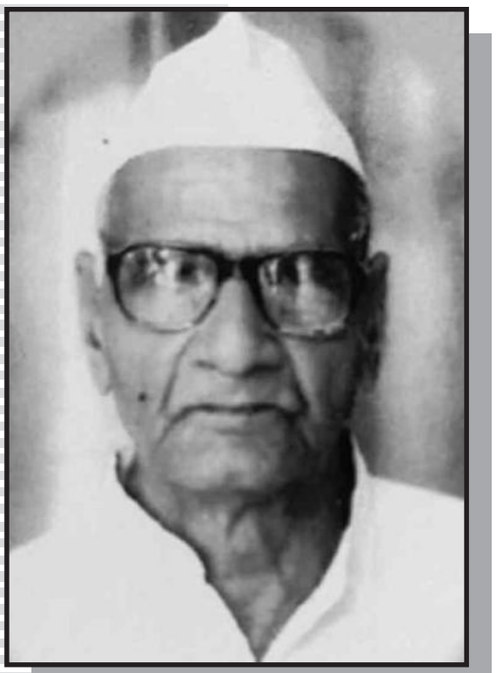

महाकाव्य के लिखने का आशय इतना है, आज हम आप सभी इतने भाग्य शाली हैं कि सभी को आज दिगम्बर निर्ग्रन्थ सन्तों की वाणी दर्शन और संगति करने का अवसर आसानी से उपलब्ध हो रहा है लेकिन पिछले पच्चीस सौ वर्षों में (अन्तिम श्रुतकेवली के बाद) कई बार सैकड़ों वर्षों तक दिगम्बर सन्तों का इस भारत भूमि में अभाव रहा है लेकिन–जिनवाणी का कभी अभाव नहीं रहा इसी जिनवाणी के माध्यम से हम सभी जो अनंतों वर्ष पहले हुए भगवान् आदिनाथ, चक्रवर्ती भरत, कामदेव बाहुबली, चौबीस तीर्थंकरों और अनंतों महापुरुषों की जानकारी लेकर उनका गुणगान कर उनके बताए हुए मार्ग पर चल रहे या चलने का प्रयास कर शान्ति का अनुभव करते हैं। इस महाकाव्य में भी एक ऐसे संत के उज्ज्वल चारित्र का वर्णन है। मैंने अपने कानों से कई लोगों के मुख से सुना है कि आचार्य विमर्शसागर जी तो पंचमकाल में पूर्ण भावलिंगी संत हैं। मैंने उनके भावों का ही इस महाकाव्य में आगम के अनुसार वर्णन किया है जो आप सभी पाठक गण पढ़कर अनुभव कर सकते हैं।

लिखने का आशय यह है कि जिनवाणी तो हम लोगों को अनवरत आगे भी सभी को प्राप्त होती रहेगी पर किसी काल में यदि संतों का अभाव हुआ तो इस जिनवाणी के माध्यम से भव्य जीव इन संतों का जीवन चारित्र पढ़कर चारित्र का अनुशरण कर मुक्ति मार्ग पर चल सकते हैं।

ऐसी मेरी मंगल भावना है, ॐ ह्रीं नमः

– ज्ञानचन्द जैन (दाऊ) सागर (म.प्र.)

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

प्रथम कलश

मंगलं भगवान् अर्हन्, मंगलं वृषभो जिनः।
मंगलं पूज्यपादार्यो, जिनागम पंथोस्तु तम्।।
मंगलं भगवान् वीरो मंगल गौतमो–गणी।
मंगल कुन्दकुंदार्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलं।।
सर्व मंगल मांगल्यम्, सर्व कल्याण कारकं।
प्रधानं सर्व धर्माणाम्, जैनं जयतु शासनं।।1।।

वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघन हरण मंगल करण, पूरण परम प्रकाश।।
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रचों पाठ सुखदाय।।2।।

मंगल मूरति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्।।
मंगल जिनवर पद नमो, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव।।3।।

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन वच काय।।
मंगल सरस्वती मातका, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म।।4।।

या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
मंगल नाथूराम यह, भवसागर दृढ़ पोत।।
मंगल बीस विदेह के, तीर्थंकर जिनदेव।
मंगल उनकी वन्दना, नाशत कर्म कुटेव।।5।।

दशलक्षण मंगलमयी, पाप नशावन हार।
सोलहकारण भावना, शाश्वत सुख आधार
नंदीश्वर की वन्दना, मंगलमय सुखकार।
सिद्धक्षेत्र मंगल कहे, नित पूजों त्रयवार।।6।।

अव नमन मेरा है सिद्धों को, जो इसी जगत में ही रहते।
रह करके इसी जगत में ही, जग से सम्बन्ध नहीं रखते।।
जो रही अनादि से संग में, उस काया से नाता तजकर।
अब पर से भी संबंध नहीं, केवल आतम ही है हितकर।।7।।

हैं निर्विकार आकार रहित, शाश्वत सुख में रत रहे सदा।
त्रय लोकों के सत जानकार, कुछ नहीं किसी से कहें कदा।।
है गणना उधर अनंतों में, सब एक साथ ही रहते हैं।
पर मेल नहीं कोई दूजे से, निज का ही अनुभव करते हैं।।8।।

उन निर्विकार सब सिद्धों की, गुणमाला चित में धरने से।
पापी तक जग में तिर जाते, उन जैसा कारज करने से।।
अब हिय में ही बिठलाते हैं, हम सभी अरूपी सिद्धों को।
मन को भी स्थिर करते हैं, इस कारज की सत् सिद्धी को।।9।।

यहाँ नमन शारदा माता को, जो श्रेष्ठ सुमति पद की दाता।
वो कुमति विनाशनहारी हैं, सत् सम्यक् पथ की निर्माता।।
अब नमन उन्हीं को है मेरा, जो इसी काव्य के हैं नायक।
वो, विमर्शसिन्धु आचार्य प्रभु, रत्नत्रय के उत्तम साधक।।10।।

।। भूमिका ।।

कई ग्रन्थों को लिखके इनने, उद्धार किया मानव जन का।
उनके ही जीवन चारित्र का, मन बना हमारा लेखन का।।
इस महाकाव्य को लिखने का, जो भाव बनाया है हमने।
उसको ही सफल बनाने को, नवकार जपा मेरे मन ने।।11।।

''जीवन है पानी की बूँद'' यह महाकाव्य रचके गुरु ने।
आगाह किया है जग जन को, ये धन वैभव झूठे सपने।।
परिवारिक जन मोही रहते, नित रागद्वेष उपजाते हैं।
धन वैभव के नश जाने पर, कोई नहीं साथ निभाते हैं।।12।।

यह ढाई द्वीप सारे जग में, बस मानव लोक कहाता है।
इसके बाहर ये मानव तन, कहीं और पहुँच नहीं पाता है।।
उस ढाई द्वीप के मध्य बना, यह जम्बूद्वीप बहुत प्यारा।
इसके ही मध्य सुदर्शन है, पर्वत सारे जग से न्यारा।।13।।

इस महाद्वीप के उत्तर में, ऐरावत देश वसा सुन्दर।
दक्षिण में भारत देश बसा, हम आप रहे जिसके अन्दर।।
जब तीर्थंकर का जन्म होय, तब मेरू सुदर्शन के ऊपर।
जन्माभिषेक करते प्रभु का, सौधर्म इन्द्र अति हर्षाकर।।14।।

सिरताज हिमालय भारत का, चरणों में सागर लहराता।
कैलाश इसी के ऊपर है, आदीश्वर का जिससे नाता।।
यह देश शलाका पुरुषों का, प्रिय जन्मस्थान कहाता है।
मुनियों के सदा विचरने से, यहाँ का कण-कण महकाता है।।15।।

जब भारत में चौथा युग था, तब आदिनाथ भगवान् भये।
उनके पीछे श्री वीर सहित, तेईस तीर्थंकर मोक्ष गये।।
उस समय अनंतों मुनियों ने, इस पावन भारत भूमि से।
महा मुक्ति का पद पाया था, निज छूट कर्म के बंधन से।।16।।

वीरा के बाद हुए यहाँ पर, त्रय श्रेष्ठ महा केवलज्ञानी।
जिनने कर्मों को जीत सहर्ष, शाश्वत सुख की महिमा जानी।।
श्रुत श्रेष्ठ केवली पाँच हुए, भारत में ही पीछे उनके।
तप बल के द्वारा ही इनने, सब कारण जीते करमों के।।17।।

अन्तिम श्रुतज्ञानी भद्रबाहु, उत्तर भारत में लख अकाल।
अपने शिष्यों के साथ सहर्ष, दक्षिण को जाते लख सुकाल।।
इनके जाने से दक्षिण में, जैनागम का उज्ज्वल प्रकाश।
तब हुआ वहाँ पर भी भारी, मुनियों के रहने से विकाश।।18।।

दक्षिण भारत में मुनियों ने, प्रभुवीरा के उपदेशों को।
लिपिबद्ध कराया पत्रों पर, सिद्धांत सहित जैनागम को।।
षट्खण्डागम का महाग्रन्थ, दो श्रेष्ठ महा मुनिराजों ने।
लिपिबद्ध किया तब भावों से, श्रुत परम्परा के ताजों ने।।19।।

दक्षिण भारत में हुए सभी, धर्मी रक्षक आचार्य परम।
उनने शतकों में ग्रन्थ रचे, जैनागम के अति सर्वोत्तम।।
जिनने यह ग्रन्थ रचे सारे, पूरा करने पर का सपना।
कहाँ जन्म लिया है कौन पिता, नहीं लिखा पता कोई अपना।।20।।

वह ख्याति लाभ से दूर रहे, स्वाँसों में धरम रहा उनके।
स्व-पर का हित उपजाने का, सच्चा शुभ कर्म रहा उनके।।
जितने भी ग्रन्थ रचे उनने, हम नहीं रखा पाये उनको।
आटे में नमक कहा जितना, उतने ही पा पाये उनको ।।21।।

रक्षकजन ने जो बचा लिये, वह सभी ग्रन्थ हितकारी हैं।
उन रक्षक जन के आज यहाँ, हम सभी बहुत आभारी हैं।।
वह अंश यहाँ जिनवाणी के, जिनके हृदय में बस जाते।
जग के जालों से बचके वह, निज आतम के ही गुण गाते।।22।।

श्री पुष्पदंत अरु भूतबली, प्रिय वीरसेन से मुनिनाथा।
दक्षिण भारत में हुए सभी, संयम के पथ के सत् पाथा।।
जिनसेन सरीखे महामुनि, दक्षिण भारत में जन्में थे।
उनने नहीं वस्त्र कभी पहना, ऐसे वह श्रेष्ठ गुणीजन थे।।23।।

यहाँ आठ वरष की आयु में, जिनमुद्रा धार लई जिनने।
इसके पहले भी वस्त्र कभी, नहीं तन पे धारे थे इनने।।
पिछले गुरुओं का लिखा ग्रन्थ, षट्खण्डागम का भाग शेष।
जिनसेन गुरु ने पूर्ण किया, भावों की निर्मलता विशेष।।24।।

यहाँ हुए पाँच सौ वर्ष बाद, तीर्थंकर प्रभु महावीरा के।
श्री कुन्दकुन्द आचार्य प्रवर, जो हैं नाशक भव पीरा के।।
प्रभुवीर और गुरु गौतम के, है बाद तीसरा पद मुकाम।
गुरु कुन्दकुन्द आचारज का, भारत भूमि पर श्रेष्ठ नाम।।25।।

वह ग्यारह की अल्पायु में, निर्ग्रंथ मुनि बन जाते हैं।
लौकिक सुख की इच्छा तजके, निज आतम के गुण गाते हैं।।
उनके नामों से चलती सत, यहाँ परम्परा जैनागम की।
जिनधर्म पताका लहराती, केवलज्ञानी सदृश उनकी।।26।।

उनको ही इस पंचम युग में, आकाश गामनी ऋद्धि की।
सिद्धि भी अनुपम प्राप्त हुई, लख परम विशुद्धि भावों की।।
इसका नहीं पता चला कोई, वह लीन रहे निज आतम में।
इक देव बताता है आकर, ऋद्धि हुई प्राप्त तुम्हें चित में।।27।।

तब कुन्दकुन्द मुनिनाथा जी, सीमंधर प्रभु के दर्शन को।
जाते हैं क्षेत्र विदेह सहर्ष, प्रभु वाणी चित में धरने को।।
वहाँ से आकर मुनिनाथा ने, जो वचन सुने जिनराजा के।
चौरासी पाहुड लिखे सहर्ष, उनको अपने चित में धरके।।28।।

।। भारत की महिमा ।।

इस पंचम युग के भारत की, कुछ महिमा यहाँ बताते हैं।
जो सुन्दर और अनुपम है, उसकी तस्वीर दिखाते हैं।।
यहाँ ही सम्मेद शिखरजी है, हम शाश्वत तीर्थ जिसे कहते।
भावों से दर्शन करने पर, भव भव के बन्ध सहज नशते।।29।।

यहाँ से अनगिनत मुनिन्द्रों ने, महा मुक्ति का पद पाया है।
सारे कर्मों को जीत सहज, शाश्वत सुख को अपनाया है।।
सत् पुण्यक्षेत्र हैं कई यहाँ, जो सिद्धक्षेत्र कहलाते हैं।
अतिशय क्षेत्रों की गणना भी, शतकों में जन बतलाते हैं।।30।।

दैलवाड़ा के जिनमंदिर भी, विख्यात बहुत सारे जग में।
नहीं दूजे और कहीं दिखते, इतनी अनुपम नक्कासी में।।
विक्रम संवत् ग्यारह सौ के, ये बने यहाँ अति ही सुन्दर।
यहाँ देश विदेशों से आवत, पर्यटक देखने ये मन्दिर।।31।।

मन्दिर में लागे जो पत्थर, उस समय सभी फनकारों ने।
उनमें की अजब कलाकारी, अंतरंग की छैनी से उनने।।
खजुराहो के सब ही मन्दिर, यहाँ विशेष धरोहर कहलाते।
यहाँ दुनिया भरके सैलानी, दर्शन करने को नित आते।।32।।

अमृतसर का भी कलापूर्ण, सोने का गुरुद्वारा विशाल।
मीनाक्षी मन्दिर मदुरई का, सम्पूर्ण जगत में बेमिशाल।।
है ताजमहल अति ही सुन्दर, जो बना आगरा नगरी में।
आश्चर्य आठवाँ दुनिया का, नहीं दूजा और कहीं जग में।।33।।

।। महापुरुषों का वर्णन ।।

अकलंक सरीखे शूरवीर, इस ही युग में यहाँ जन्मे थे।
जीवन का दाव लगाकर वो, आगम की रक्षा करते थे।।
इस ही धरती पर जन्में थे, आचार्य उमास्वामी गुरुवर।
इनने तत्त्वारथ सूत्र रचे, जो हैं मुक्ति की सही डगर।।34।।

श्री समंतभद्र सम श्रद्धालु, इस ही युग में यहाँ जन्मे थे।
जिनकी श्रद्धा से पिन्डी में, चन्द्रप्रभ स्वामी प्रगटे थे।।
जिनने शतकों में ग्रन्थ रचे, जैनागम के अति हितकारी।
उनके चरणों को वन्दत हम, वो जैन जगत के उपकारी।।35।।

श्री मानतुंग मुनिनाथा ने, अड़तालीस तालों के भीतर।
भक्तामर पाठ रचा ज्यों ही, एक पल में आये थे बाहर।।
इस ही युग में यहाँ जन्मे थे, श्री अमरचन्द से दानवीर।
खिलवाय दई सिंहराजा को, श्रद्धा से उनने दूधखीर।।36।।

इस ही भारत की धरती पर, कोई भामाशाह हुए दानी।
जिनने निज मालिक को दे दी, सब दौलत लख के हैरानी।।
यहाँ हुए भगतसिंह से योद्धा, जिनका इन्कलाव रहा नारा।
हँस के शूली पर चढ़े यहाँ, वन्दे मातरम् कहके प्यारा।।37।।

यहाँ गाँधी और विनोवा में, इच्छाशक्ति थी बेमिशाल।
आजाद कराया यह भारत, समता की लेकर हाथ ढाल।।
वह राष्ट्रभक्त गौरवशाली, सत्धर्म अहिंसा के पालक।
जैनागम के अति विश्वासी, समतामय भावों के मालक।।38।।

वह सदा प्रार्थना करते थे, अगला हो जन्म अगर मेरा।
तब जैनों के कुल में होवे, जिससे मिटता जग का फेरा।।
नहिं दूजा राष्ट्रभक्त कोई, राणा प्रताप सम भारत में।
जिसने जंगल में रहके भी, कई युद्ध लड़े प्रजाहित में।।39।।

यहाँ हरिशचन्द्र से दानी की, सत्कथा सुनी होगी सबने।
सुत प्रिया के संग में बिकके, यहाँ पूरा दान किया जिनने।।
स्वामी चाँडाल बना करके, नित भरा उसी के घर पानी।
ऐसे इस भारत भूमि पर, हो गये अनेकों जन दानी।।40।।

यहाँ भोजन रोज बनाती थी, जिनकी रानी पंडित घर में।
जिनका प्यारा इक लौता सुत, सेवक बनता माली घर में।।
यह सत्वादी की सही कथा, सत् का दर्शन करवाती है।
ऐसे कई वीर सपूतों की, यह भारत माता कहलाती है।।41।।

अपने नन्हें से ललना को, कम्मर में बाँध यहाँ जिसने।
रण में तलवार चलाई थी, भारत माँ की रक्षा करने।।
वह परम वीर लक्ष्मी बाई, मरके भी अमर हुई जग में।
ऐसे बलिदानी श्रेष्ठ पुरुष, लाखन जन्मे इस भारत में।।42।।

श्री शान्तिसिन्धु दक्षिण वाले, थे शदी बीसवीं के सुसंत।
मुनिपथ आसान बनाने को, उन गलत प्रथा का किया अन्त।।
उस वक्त देश में सभी जगह, जिन संत नहीं जा पाते थे।
अन्धर्मी कर अति छेड़छाड़, मुनियों को बहुत सताते थे।।43।।

शासन भी कुछ नहीं कहता था, इससे वो करते मनमानी।
था संकुचित क्षेत्र मुनिजन का, वह इनने करदी आसानी।।
श्री शान्ति सिन्धु मुनिनाथा ने, मुनिपथ आसन बनाया था।
शासन से टक्कर लेकर के, चहुँ ओर धरम फैलाया था।।44।।

।। आचार्य श्री की संक्षिप्त महिमा ।।

इस लेखन में जिनकी महिमा, वो हैं आचार्य विमर्शसागर।
उस ज्ञानामृत के सागर से, हमने भरली मन की गागर।।
वो गागर ही अब छलक रही, श्री गुरुवर के गुण गाने को।
उन महामुनि की महिमा के, कागज पर चित्र बनाने को।।45।।

यह नहीं कथा विकथा कोई, नहीं उपन्यास मनरंजन का।
इसमें चारित्र महामुनि का, सत् सार उन्हीं के चिंतन का।।
कोई माने अथवा नहीं माने, इससे नहीं हमें कछु करना।
उनमें तो बहता रहता है, ज्ञानामृत का पावन झरना।।46।।

वह बालब्रह्म है अन्तस से, संयम समता के मूर्तमान।
नहीं जग से है कोई मतलब, करते आतम का सदा ध्यान।।
वह शिष्यों और सुभव्यों को, आगम का पथ बतलाते हैं।
पापों से नफरत करके वह, पापी को परम बनाते हैं।।47।।

।। लेखक की भावना ।।

श्री विमर्श सिन्धु के चरणों में, यहाँ सादर शीष झुका अपना।
उनकी महिमा दर्शा करके, पूरा करते मन का सपना।।
अब भावों को स्थिर करके, निज जीवन श्रेष्ठ बनाने को।
तैयार किया है मन हमने, इस जग से कुछ ले जाने को।।48।।

आयु के साथ निरत चलता, कर्मों का अद्भुत कम्प्यूटर।
हर पल की नोट किया करता, जीवन के कोरे कागज पर।।
वह सभी नोट्स आगे जाके, अपना परिणाम सुनाते हैं।
उनके शुभ और अशुभ फल को, हर प्राणी हृदय लगाते हैं।।49।।

यह हाल सभी लखके जग का, यहाँ मेरा मन घबराया है।
इससे ही शुभ के करने का, मन हमने यहाँ बनाया है।।
यह समय हमारा सामायिक, जब काव्य यहाँ पर लिखता हूँ।
सारी दुनिया से दूर रहित, जब लेखन चित में धरता हूँ।।50।।

यह ही मेरा अर्चन वन्दन, यह ही मेरा सत् समयसार।
इससे संकट नश जाते हैं, यह भी जीवन का है सुसार।।
लेखक तो एक हुआ करता, पर पाठक कई मिल जाते हैं।
यहाँ लेखक से विद्वान् कई, पाठकगण भी दिखलाते हैं।।51।।

मेरी रचना में गर सुधार, कोई पाठक करना चाहत है।
वह धन्यवाद का महापात्र, तन मन से उसका स्वागत है।।
हम अल्पमति बालक जैसे, जल में पकड़त हैं चन्दा को।
सूरज को दीप दिखाने का, मतिहीन बनाता है मन को।।52।।

श्री गुरुवर के गुण गाने का, ये गौरव अलग निराला है।
यह ही आतम बल है मेरा, जग जड़ता हरने वाला है।।
आचार्य प्रभु के गुण गाकर, हमने निज फर्ज निभाया है।
अपने पाजी अन्तस मन को, आतम का हित समझाया है।।53।।

यह लिखी सही जीवन गाथा, श्री विमर्श सिन्धु मुनिनाथा की।
जिन परम्परा के साधक की, आगम पथ के सत् पाथा की।।
अन्तस का तम हरनेवाली, श्री विमर्शसिन्धु जीवन ज्योति।
अक्षर अक्षर पढ़ना इसका, यह अन्तस के मल को धोती।।54।।

।। महाकाव्य की महिमा ।।

कैसे कहूँ श्रेष्ठ लिखी गाथा, कैसे कहूँ श्रेष्ठ नहीं भाई।
ये सत्य सहज अनुगुंजन सी, हृदय में हमे उमड़ आई।।
यहाँ श्रेष्ठ महामुनिराजों को, जग की जड़ता से काम नहीं।
ना कोई मतलब है पर से, निजपथ बिन नहीं विश्राम कहीं।।55।।

सरिता जल का है लक्ष्य सही, सागर के जल में मिल रहना।
सारे जग से मतलब नाही, अपनी ही राह सदा बहना।।
यह ही सिद्धांत मुनि मन का, निज आतम में रम के रहना।
नहीं यहाँ किसी के बस में है, संतों की राह बदल सकना।।56।।

सरिता जल को इंसान यहाँ, बंधानों में रुकवा सकता।
पर जल का नाम काम कोई, इस जग से नहीं मिटा सकता।।
विद्युत अरु असी बना करते, जग कार्य सभी होवत जल से।
नित षट्निकाय के जीवों की, मिटती है प्यास सदा जल से।।57।।

पर इससे लाभ नहीं ले जो, तब जल का कोई दोष नहीं।
दोषी तो होवत हैं वह जन, जो जाने नहीं उपयोग सही।।
इस तरह यहाँ सत् संतों ने, लिख दीने यत्न सँभलने के।
इससे नहिं लाभ लहे जो भी, वो कार्य करे जग भ्रमने के।।58।।

ऊबड़ खावड़ वन जंगल में, जो झरने सदा बहा करते।
उनमें उत्तम सौंदर्य छठा, जब जग जन ढूँड लिया करते।।
तब कागज पर बहने वाली, ये शब्दों की अनुपम सरिता।
मन का संताप मिटाने की, इसमें तो अद्भुत है क्षमता।।59।।

यह अन्धकार हरने वाली, श्री विमर्श सिन्धु जीवन ज्योति।
हृदय में इसे सजा रखना, यह मन की कालिख भी धोती।।
महावीर प्रभु की गुण गाथा, यह महामुनि नित गाते हैं।
प्रभु कुन्दकुन्द की परम्परा, निज जीवन में अपनाते हैं।।60।।

यह जैनधर्म के अलंकार, इस युग के श्रेष्ठ मुनिराजा।
सिद्धांत परक चर्या उनकी, संयम के पथ के सरताजा।।
सत् ज्ञानामृत से गुरुराजा, भव्यों को नित नहलाते हो।
अपनी अमृतमयी वाणी से, जग जन की प्यास बुझाते हो।।61।।

ये विमर्शसिन्धु मुनिनाथा की, हमने जयमाल बनाई है।
संयम समता के सुमनों से, यह माला खूब सजाई है।।
इस जयमाला को जो भी जन, श्रद्धा से उर में धारेंगे।
इस भव को सफल बनाके वो, परभव भी सफल बना लेंगे।।62।।

सागर संभाग एम.पी. का, टीकमगढ़ डिस्ट्रिक है जिसमें।
उसमें ही नगर जतारा है, श्री विमर्श सिन्धु जन्में जिसमें।।
अब सागर नगरी का गौरव, लिख करके यहाँ बताने को।
अन्दर से बोल रहा है मन, उस मन का बोझ हटाने को।।63।।

।। सागर नगरी का गौरव ।।

सागर की महिमा लिखता हूँ, इसही कारण से गाथा में।
इस महाकाव्य का लेखक भी, रहता है सागर नगरी में।।
है मध्यप्रान्त में अति सुन्दर, वैभवशाली नगरी सागर।
इस नगरी में तालाब एक, दिखता है जैसे हो सागर।।64।।

सागर नगरी के आँगन में, हैं साठ जिनालय बेमिशाल।
इक लाख सहर्ष जैनीभाई, पूजा करते तज आल जाल।।
यहाँ मोराजी का श्रेष्ठ भवन, इस नगरी की शोभा महान।
यहाँ एक जैन विद्यालय है, विद्वानों की अनुपम खदान।।65।।

श्री गणेश प्रसाद वर्णी जी ने, अपने अतिश्रेष्ठ परिश्रम से।
यह विद्यालय खुलवाया था, श्रेष्ठी लोगों की सहमति से।।
शतकों विद्वान बने यहाँ से, जो भारत के हर नगरों में।
जिनधर्म ध्वजा लहराते हैं, जन मानुष के शुभ भावों में।।66।।

इस विद्यालय में पढ़े कई, विद्वानों अरु गुणवानों ने।
जैनश्वरी दीक्षा लई सहर्ष, संयम पथ के परवानों ने।।
श्रीक्षमासिन्धु से महामुनि, इसही नगरी के श्रेष्ठ सुमन।
वो सहनन के स्वामी विराट, इच्छाओं का नित करें दमन।।67।।

।। सागर में अतिशय क्षेत्र ।।

इस नगरी और जिले भर से, शतकों में संत जिनागम के।
भारत में विचरण करते हैं, आतम का हित चित में धरके।।
है अतिशय क्षेत्र नगर मेंढ़ ही, श्री काकागंज महापावन।
वहाँ आदि प्रभु विराजे हैं, संकट मोचन सुख के कारन।।68।।

यहाँ मंगलगिरि का तीरथ है, अति पावन और मनोहारी।
वहाँ वीर प्रभु की प्रतिमा है, खड़गासन में अतिशयकारी।।
वह अष्ट धातु से निर्मित है, ग्यारह फुट की अवगाहन में।
जिनके दर्शन से कट जाते, करमों के बन्ध सभी क्षण में।।69।।

इस मूरत की प्रतिष्ठा भी, दो सहस्र एक ईसा सन् में।
अति ही आनंद के साथ हुई, देवनंदी गुरु के सान्निध्य में।।
भरतेश्वर स्वामी की प्रतिमा, बन गई अभी खड़गासन में।
मंगलगिरि के ही तीरथ पर, संतावन फुट अवगाहन में।।70।।

इस मूरत की प्रतिष्ठा भी, यहाँ दो हजार सत्तरह सन् में।
मई के महीने में हुई सहर्ष, गुरु विशुद्ध सिन्धु सान्निध्य में।।
कई प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा, संग में हुई है इस मूरत के।
लाखों जन यहाँ पर आये थे, इस उत्सव में कई नगरों के।।71।।

नहीं दूजी अभी कोई प्रतिमा, इतनी विशाल मनोहारी।
सारे ही उत्तर भारत में, अवगाहन में इतनी भारी।।
इस ही नगरी के मध्य एक, है रामपुरा सुन्दर मुहाल।
यहाँ वासुपूज्य का मन्दिर भी, बन रहा अनोखा बेमिशाल।।72।।

वहाँ वासुपूज्य जिनराजा की, मूरत प्यारी पद्मासन में।
अति सुन्दर और मनोहारी, पन्द्रह फुट की अवगाहन में।।
इस महाकाव्य का लेखक भी, यहीं रामपुरा में रहता है।
श्री वासुपूज्य की पूजन कर, अन्तस् को धोता रहता है।।73।।

यहाँ भाग्योदय का अस्पताल, धर्मार्थ तीर्थ कहलाता है।
उसमें गुरु विद्यासागर का, आशीष परम लहराता है।।
उस परिसर में कॉलेज एक, जहाँ पढ़कर नर्सें बनती हैं।
वह दुखी मरीजों की सेवा, अंतरंग भावों से करती हैं।।74।।

सर हरीसिंह जी गौर साब, इस ही सागर में रहते थे।
वह बड़े साहसी वीर पुरुष, पद से भी वह बेरिस्टर थे।।
वो भरकम केशों को लड़ने, लंदन तक जाया करते थे।
लंदनवासी अंग्रेज सहर्ष, इनका बहु आदर करते थे।।75।।

श्री गौरसाब ने नगरी में, शुभ भावों से सदकार्य किये।
यहाँ युनिवरसिटी बनाने को, एक कोटि रुपये दान दिये।।
सर गौरसाब ने अन्तस् से, अपनी प्रिय चंचल लक्ष्मी का।
उत्तम उपयोग यहाँ कीना, मन्दिर बनवा कर विद्या का।।76।।

सर गौरसाब जैसे मानव, विरले होते इस दुनिया में।
उन जैसी मंजिल पाने को, हम बसा रहे उनको दिल में।।
अब यहाँ करोड़ों में बालक, सर्वोत्तम शिक्षा पा करके।
दुनिया में नाम कमाते हैं, उत्तम ओहदा धारी बन के।।77।।

मेडिकल का कॉलेज बना, भूमि पर सागर नगरी की।
जहाँ रोगों के डॉक्टर बनते, जो सेवा करते जग जन की।।
यहाँ पुलिस महाट्रेनिंग का भी, कॉलेज बना है एम.पी. का।
वहाँ थानेदार बना करते, जो कार्य करें जन सेवा का।।78।।

श्रीसनतकुमार पिता जी अरु, माताजी श्री भगवती जी के।
हम बहुत बहुत आभारी हैं, उन पुण्यवान नर रतनों के।।
श्री विमर्श सिन्धु से सुत जनके, उनने उपकार किया भारी।
जो धर्म ध्वजा फहराने को, बन गया स्वयं संयम धारी।।79।।

राकेशकुमार से बालक को, श्री विराग सिन्धु मुनिनाथा ने।
संयम का पथ दिखलाया था, जग की जड़ताओं से बचने।।
उन गणाचार्य के अन्तस् से, हम सदा रहेंगे अभारी।
जिनने यहाँ शतकों भव्यों को, दीक्षा दी आतम हितकारी।।80।।

।। आभार ।।

अब यहाँ जतारा नगरी के, हम अन्तस् मन से आभारी।
इस ही नगरी में जन्में हैं, श्री विमर्श सिन्धु संयम धारी।।
इस पुण्य धरा पर श्री गुरु का, बचपन का बीता स्वर्णकाल।
प्रियबाल रूप गुरुराजा का, लखके सब होते थे निहाल।।81।।

इस महाकाव्य के लिखने को, प्रेरित कीना हमको जिसने।
वो मन ही परम हमारा है, उस मन की मानी है हमने।।
जिसने ये काव्य यहाँ लिखने, खुद ही मन से की तैयारी।
उस मन के भी हम भावों से, हैं बहुत-बहुत ही आभारी ।।82।।

सब मित्र हमारे लेखन में, अनुपम उत्साह बढ़ाते हैं।
हर रोज लिखे श्लोकों को, सुन करके अति हर्षाते हैं।।
प्रिय पदम चौधरी कोठारी, श्री विमलचन्द जी आनन्द से।
सुख दुख में साथ निभाते हैं, अपने समतामयी भावों से।।83।।

श्री ऋषभ सुनीता जी हमको, उत्साहित करें बहुत भारी।
निस्वारथ ही सहयोग करें, इनके हम हैं अति आभारी।।
पंडित श्री विमल सौंरया के, श्री वर्धमान कुल दीपक हैं।
दोनों ही जन विद्वान् श्रेष्ठ, आगम के सही उपासक हैं।।84।।

वो करते हैं सहयोग सदा, हमरे लेखन में हितकारी।
उनकी अनुपम सेवाओं के, हम सदा रहेंगे आभारी।।
पंडित संकेत विवेक जैन, देवेन्द्र नगर में रहते हैं।
इस लेखन के हैं सूत्रधार, समता ही चित में धरते हैं।।85।।

निज सभी पुत्र प्यारी बहुएँ, जो नित ही हमें स्वस्थ रखने।
हर तरह सदा सेवा करती, वृद्धामयी रोगों से बचने।।
उत्तम भोजन अरु औषधियाँ, हर वक्त हमें देते रहते।
तन मन को ऊर्जा मिलने से, हम लेखन सदा किया करते।।86।।

अति पुण्यों से मिलते ऐसे, परिवार श्रेष्ठ समताधारी।
इन फर्ज समझने वालों के, हम अंतरंग से हैं आभारी।।
बिटियाँ हमरी अपने घर से, नित टेलीफोन करें हमको।
सुन अंश फोन पर गाथा के, वह भाग्यवान कहतीं खुद को।।87।।

चारित्ररथी की सत्य कथा, जिनने गद्य में लिख दी प्यारी।
उन पंडित सुरेश सरल जी के, हम बहुत बहुत हैं आभारी।।
उस गाथा पर कविता लिख के, अक्षरमयी अर्घ्य चढ़ाये हैं।
श्री विमर्श सिन्धु मुनिनाथा के, जिसमें हमने गुण गाये हैं।।88।।

श्री विरागसिन्धु के चरणों में, हम झुका रहे अपना माथा।
जिनसे आधार मिला हमको, लिखने को यह निर्मल गाथा।।
श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा के, हम बहुत–बहुत हैं आभारी।
गुरु विमर्श सिन्धु से शिष्य बना, जग पर उपकार किया भारी।।89।।

उनके भी हम अति आभारी, जो विष ही सदा बमन करते।
वो सदा बुराई कर हमरी, खुद ही संताप हृदय धरते।।
निंदक नित पास रहे हमरे, जो निशदिन हमें जगाते हैं।
जो भूलचूक होवत हमसे, निंदाकर तुरत बताते हैं।।90।।

।। कथा प्रारंभ ।।

टीकमगढ़ डिस्ट्रिक के माँही, है नगर जतारा अति सुन्दर।
इक सौ पैंतीस घर जैनों के, रहते हैं नगरी के अन्दर।।
गोलापूरव परवार और, हैं सोनगढ़ी इस नगरी में।
बिन भेद यहाँ सब रहते हैं, अति हर्षा के मन गगरी में।।91।।

इस नगरी के सब जैनों में, है मेल बहुत ही हितकारी।
सुख दुख में साथ निभाते हैं, समता है सबमें बहुभारी।।
उन्नीस तिहत्तर के सन् की, हम चर्चा यहाँ सुनाते हैं।
वो सुखद और अतिशयकारी, ज्यों की त्यों सही बताते हैं।।92।।

।। चमत्कार ।।

उस साल जतारा में जितने, थे कुआँ बावड़ी अरु पोखर।
गरमी की ऋतु में नहीं सूखे, यह चर्चा होती थी घर–घर।।
बारिस भी बहुत हुई बढ़िया, इस साल यहाँ के अंचल में।
बरसाती फसलें बहुतभईं, उस साल किसानों के घर में।।93।।

अरु फसल रवि की बोने पर, माहुट भी अच्छी बरसी थी।
तब फसल बहुत अच्छी आई, यह चरचा भी हर घर में थी।।
इस साल फसल अच्छी आना, यह समझ नहीं सबको आया।
पशुओं को घास हुआ उत्तम, यह कैसी ईश्वर की माया।।94।।

उस ही नगरी के वयोवृद्ध, कुछ लोग वहाँ कहते सबसे।
ये अतिशयकारी चमत्कार, होवत है अनुपम पुण्यों से।।
मुझको तो ऐसा लगता है, कोई भव्य आतमा नगरी में।
अवतरत किसी कुल में होगी, शंका बिल्कुल ना है इसमें।।95।।

तीनों ऋतुओं के मौसम भी, इस साल हुए हैं सर्वोत्तम।
सत् महापुरुष के आने के, पहले से होते यह उपक्रम।।
श्री सनतकुमार जी सेठ और, श्री भगवती जी हैं सेठानी।
इसही नगरी में रहते हैं, अति धार्मिक और परमज्ञानी।।96।।

वो अतिशय क्षेत्र पपौरा अरु, श्री द्रोणागिर अक्सर जाते।
वहाँ पार्श्वप्रभु के दर्शनकर, अंतरंग में दोनों हरषाते।।
कभी सिद्धक्षेत्र नैनागिर में, कभी खजुराहो के दर्शन को।
जब तब दोनों जाते रहते, पावन करने अपने मन को।।97।।

।। माँ के गर्भ में गुरुवर ।।

उन्नीस तिहत्तर के सन् का, फरवरी महीना जब आया।
इक भव्य आतमा ने तब ही, माँ कुक्षी में आश्रय पाया।।
अब तो गुरुवर की माता को, रात्रि में कुछ सपने आते।
कभी सिद्धक्षेत्र पर मुनियों के, दर्शन कर दोनों हरषाते।।98।।

।। गर्भवती माता के सपने ।।

कभी करें शिखरजी के दर्शन, कभी राजगृही के पर्वत पर।
पति के संग दर्शन करती हैं, सपने में भी आतम हितकर।।
कभी चाँदी के प्रिय सिक्कों से, कई भरी थालियाँ दिखती हैं।
कभी दूधभरी केशरवाली, कई रजत झारियाँ दिखती हैं।।99।।

कभी दिखते दो गजराज इन्हें, सून्ड़ो में मालायें लेकर।
कभी केला अरु अंगूर दिखे, लटके हुए वृक्षों के ऊपर।।
इक दिना एक नंगा बालक, पिच्छि लेकर निज हाथों में।
इनकी गोदी में बैठ गया, यह दिखा रात के ख्वाबों में।।100।।

इक दिन सपने में माता को, एक बालमुनि दिखलाया था।
पड़गाहन कर उस माता ने, उसको आहार कराया था।।
वह रोज-रोज के सपनों को, प्रिय पति को नहीं बता पातीं।
उठ करके रोज सवेरे से, घर के कार्यों में लग जातीं।।101।।

इक दिन सपने में माता को, रजनी के पिछले पहरों में।
इक धवल बैल दिखलाता है, सागर के जल की लहरों में।।
वो पास आयकर माता की, कुच्छी में सहर्ष समा जाता।
तब धर्ममयी माँ के तन में, आनंद का सागर लहराता।।102।।

अब भोर काल उठके माता, अपने प्रिय के ढिंग जाती हैं।
सपने का हाल सहर्ष सारा, ज्यों का त्यों उन्हें सुनाती हैं।।
हे नाथ! रात के अन्त समय, एक सपना मुझको आया था।
एक धवल बैल आके मेरी, कुक्षी में सहर्ष समाया था।।103।।

हे नाथ! तभी हमरे मन में, आनंद का सागर लहराया।
जो शब्दों में नहीं कह सकते, इतना आनंद मुझे आया।।
दूजे सपने में नाथ हमें, धरती पर सूर्य दिखा आता।
जिसको लखने से नाथ हमें, अन्तस् में हुई बहुत साता।।104।।

।। गुरुमाता के सपनों का फल ।।

श्रेष्ठीवर ने सुनके सपने, इक क्षण को मौन धरा चित में।
फिर कहते हैं प्रिय संगनी से, आनंदित होके अंतरंग में।।
हे प्रियतमा इन सपनों का, फल ही अतिश्रेष्ठ निराला है।
तेरे तन की इस बगिया से, कोई सूरज उगने वाला है।।105।।

जो धवल बैल देखा तुमने, वो धर्म दिवाकर रूपवान।
सुतगर्भ तुम्हारे में आया, वो होगा अतिशय ज्ञानवान।।
अरु सूर्य किरण जो देखी है, उस सपने का फल है प्यारा।
उसके धार्मिक उपदेशों से, जन मन में होगा उजयारा।।106।।

अपने प्रीतम से सपनों का, फल सुन करके उस देवी का।
अन्तस् भी अति हरषाया था, उस पुण्यवान गुरु माता का।।
तब नहा धोय के दोनों जन, श्री जिनमन्दिर जी जाते हैं।
अति महा मनोहर द्रव्यों से, भगवन् की पूज रचाते हैं।।107।।

घर आम अतिथियों को उनने, अति आदर सहित जिमाया था।
अरु याचक जन को दान देय, अपना कर्तव्य निभाया था।।
ये पहला कलश हुआ पूरा, श्री विमर्श सिन्धु जीवन पथ का।
माता के पावन सपनों का, निज की ही गर्भ अवस्था का।।108।।

।। इति प्रथम कलश ।।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

द्वितीय कलश

।। मंगलाचरण ।।

अहमेन्द्र सुरेन्द्र नरेन्द्र सदा, जिनको नित शीष झुकाते हैं।
वह कर्म घतिया नाश यहाँ, अरहंत प्रभु कहलाते हैं।।
केवल लक्ष्मी पाकर जिनके, श्री मुख से पावन हितकारी।
वाणी उच्चारण होवत है, जग के जीवों को सुखकारी ।।1।।

उन अरहंतों भगवतों के, चरणों में शीष झुका करके।
इस महाकाव्य को लिखता हूँ, श्रद्धा भक्ति उर में धरके।।
अब दूजा कलश शुरू करते, गुरुवर विमर्श के जीवन का।
जिसमें अब हाल लिखेंगे हम, श्री गुरुवर के बालापन का।।2।।

श्री सनतकुमार जी श्रेष्ठी ने, एक दिन पूँछा निज संगनी से।
इस गर्भ अवस्था में तुमरी, काहे में लगन आतमा से।।
दर्शनपूजा के बाद निरत, भक्तामर पाठ किया करते।
इसकी ही चाहत है मन में, इसको ही सदा हिया धरते।।3।।

श्री भगवती माँ कहतीं प्रिय से, अब नैनागिर के तीरथ के।
हे स्वामी! दर्शन करवा दो, यह भाव हमारे अन्तस के।।
वहाँ के प्रभु पारसनाथा की, सूरत भावों में झलकत है।
उस सिद्धक्षेत्र के दर्शन की, अंतरंग में भारी चाहत है।।4।।

दूजे दिन दोनों पति पत्नि, नैनागिर तीरथ जा पहुँचे।
पारसप्रभु की पूजा करके, निज अंतर में भारी हरषे।।
फिर भावों से दोनों जनने जल मन्दिर अरु गिरिराजा की।
यहाँ महा वन्दना कीनी थी, श्री समवशरण के मन्दिर की।।5।।

नहीं पता किसी को था कोई, श्री सनतकुमार श्रेष्ठी के घर।
अब आवेगा मेहमान नया, जो बतलावेगा सही डगर।।
अब तो श्री भगवती जी का, प्रिय सासु जी निज भावों से।
नित ध्यान बहु की सेहत का, यहाँ रखती हैं त्रययोगों से।।6।।

ये नगर जतारा है विशेष, जो जुड़ा अनेकों नगरों से।
टीकमगढ़ झाँसी से देहली, सागर इंदौर छतरपुर से।।
अब आगे कथा बढ़ाते हैं, श्री विमर्श सिन्धु जीवन पथ की।
इस युग के श्रेष्ठ मुनीश्वर की, आगम के सही उपासक की।।7।।

उन्नीस तिहत्तर ईसा सन, चर्चा है माह नवम्बर की।
नौवाँ महीना चल रहा यहाँ, कुछ समय गर्भ का था बाँकी।।
पन्द्रह तारीख नवम्बर की, तब आई बहुत सुहानी थी।
हो गया गर्भ का समय पूर्ण, यह बात सबई ने जानी थी।।8।।

तब ही माँ भागवती जी के, तन में पीड़ा होने लगती।
पीड़ा की सुन आवाज तुरत, सासु माँ आकर के कहती।।
धीरज धरलो प्यारी बिटिया, ये समय कड़ा दिल करने का।
फिर उसके तन को हाथों से, उपक्रम करती सहलाने का।।9।।

अब सासु बेनीबाई यहाँ, पर नहीं देर लगाती हैं।
अपनी प्यारी बहु को लेकर, प्रसूतिका ग्रह आ जाती हैं।।
वहाँ मुन्नीबाई नर्स सहर्ष, लेकर के तुरत प्रसूता को।
एक कमरे में आ गई यहाँ, उपचार उसी का करने को।।10।।

।। जन्म श्री गुरुराजा का ।।

पन्द्रह तारीख नवम्बर की, थी सुबह सवेरे की बेला।
था समय सही साढ़े नौ का, जब जन्मा था एक अलबेला।।
अब वहाँ नर्स ने बालक को, कपड़े से सही साफ करके।
हँसकर सासु को बतलाया, भैया भवो है बहुरानी के।।11।।

उन्नीस तिहत्तर के सन् की, पन्द्रह तारीख नवम्बर में।
खुशियों की हुई बरसा भारी, श्री सनतकुमार जी के घर में।
वो दिन ही नगर जतारा को, दो सूर्यों ने चमकाया था।
एक चमका था इस नगरी में, इक ने आकाश उजाया था।।12।।

बालक होने की श्रेष्ठ खबर, घरवालों को लग जाती है।
यह सुन के मीठा समाचार, हर दिल में खुशी दिखाती है।।
तीजे दिन शिशु माता के संग, जब अस्पताल से घर लाये।
तब सनतकुमार जी के घर में, आनंद के सागर लहराये।।13।।

एक आया नगर जतारा में, घर में श्री सनतकुमार जी के।
जो आगम ध्वज लहरायेगा, बन महामुनि आगे चलके।।
दूजा आया पूरब दिश में, कमलों में सुमन खिलाने को।
रात्रि का हरके अंधकार, निज गौरव यहाँ दिखाने को।।14।।

।। चौकोत्सव हुआ सेठ घर में ।।

दस दिन के हुए शिशुराजा, तब सनतकुमार श्री श्रेष्ठीवर।
चौकोत्सव सहर्ष कराते हैं अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
अब आमंत्रण भिजवा इनने, सब रिस्तेदार बुलाये थे।
अरु नगर बुलौवा करवाके, घर आँगन बहुत सजाये थे।।15।।

तब फूफा बुआ और मामा, यहाँ सभी मामियों संग आये।
शिशुराजा का लख तेजपुंज, सबही अन्तस् में हरषाये।।
अब श्रेष्ठीवर के आँगन में, सारी नगरी के श्रेष्ठीजन।
संगनी के साथ सहर्ष आये, शिशुराजा का लखने को तन।।16।।

यहाँ देख शिशु की सूरत को, सब ही जन अति हरषाते हैं।
नहीं देखा ऐसा सुमन कभी, सब आपस में बतियाते हैं।।
कोई ऐसा वैसा जीव यहाँ, नहीं था शिशुराजा के तन में।
वह तो इक महा मुनिनाथा, आ गये नगर के आँगन में।।17।।

।। महापुरुषों की महिमा ।।

महापुरुषों की इस दुनियाँ में, कोई जाति नहीं हुआ करती।
वह तो होते हैं जन-जन के, उनकी होवत सारी धरती।।
उनको तन धन अरु ख्याति से, तिलभर भी चाह नहीं रहती।
वह सत्य अहिंसा के पालक, अन्तस् में सदा दया बहती।।18।।

मन रहता उनका पाक साफ, जैसे त्रय वरषों का बालक।
नहीं विषय वासना होती है, मुक्तिपथ के होवत चालक ।
वह पंथवाद से दूर रहें, केवल सत्पथ अपनाते हैं।
अपने मन पर काबू करके, आतम का हित उपजाते हैं।।19।।

अब फिर से बापिस आते हैं, उत्सव का हाल बताने को।
जो सुना सहर्ष श्रेष्ठीवर से, जस का तस तुम्हें सुनाने को।।
ननदों ने अपने भैया से, लेकर के नेग बहुत भारी।
यहाँ चन्दन चौक बनाया था, अति हर्षा के मन की क्यारी।।20।।

फिर ननदों ने शिशु माता को, दुल्हन की तरह सजाया था।
शिशु को लेकर के गोदी में, तब चौक बीच पधराया था।।
अब सभी पधारी महिलायें, यहाँ गीत शगुन के गाती हैं।
लख सजे हुए शिशु अरु माँ को, वह अन्तस् में हरषाती हैं।।21।।

था गोरा बदन अतिसुन्दर, नयनों में काजल की गरिमा।
हर भाई बहिन को लखने को, मजबूर किये थी शिशु महिमा।।
शिशु के हाथों की अब अंगुली, मुतियों की माला सम चमकें।
उनमें सिंदूरी नख सुन्दर, सूरज की किरणों से दमके।।22।।

एक चमकदार काला धागा, कम्मर में सुन्दर लगता था।
स्वर्णिम करधोनी से ज्यादा, बालक के तन पर फबता था।।
पाँवों में चाँदी की पायल, जन-जन का मन हरषात है।
मामी फूफीं सब सखियों संग, वहाँ गीत शगुन के गाती हैं।।23।।

यहाँ नामकरण जब होता है, सबने कई नाम सुझाये थे।
जो जिसको अच्छे लगे श्रेष्ठ, वह उनने वहाँ बताये थे।।
तब मामा सुन्दरलाल कहें, यह तो चंदा सम लगता है।
सो नाम अभी राकेश रखो, यह नाम शिशु का उत्तम है।।24।।

मामा से सुन राकेश नाम, सब लोगों का मन हरषाया।
तब ताली बजा सभी जनने, उसको ही उत्तम बतलाया।।
श्री सतनकुमार श्रेष्ठ जी ने, तब सबई बुलौआ वालों को।
भरपूर बतासा बटवाकर, खुश कीना था सबके मन को।।25।।

दूजे दिन सब महमानों का, कपड़ा नगदी अरु श्री फल से।
सत्कार किया श्रेष्ठीवर ने, हर्षित होके अन्तस मनसे।।
राकेशकुमार था नाम बड़ा, दादी माँ इस ही कारण से।
बल्लू ही उसको कहन लगी, गोदी में लेकर आनंद से।।26।।

अब तो इस कृष्ण कन्हैया को, राकेश कोई नहीं कहता है।
बल्लू ही सब जन कहते हैं, जो सरल सभी को लगता है।।
जब एक वर्ष के भये बल्लु, चलने लगते निज पावों से।
तब जन-जन के मन समा गये, अपने ही हँसमुख भावों से।।27।।

राकेश कोई जब तब कहता, पर बल्लु ही सब जन कहते।
दोयज के चन्द्र समान बड़े, जन-जन को अति प्यारे लगते।।
नन्ने से बल्लु राजा अब, नटखटता खूब दिखाते हैं।
अपने तुतलाते वचनों से, जन-जन को बहुत लुभाते हैं।।28।।

थी सुन्दरता इनमें अनुपम, सीने से सबई लगा लेते।
लख इनकी बाल्यकला प्यारी, सब मन की प्यास बुझा लेते।।
जब तीन वर्ष के भये बल्लु, निज माँ के संग मन्दिर जाते।
करते थे भगवन् की तै तै, सब ही सुनकर के हरषाते।।29।।

श्री विमर्श सिन्धु का जन्म यहाँ, एक मध्यम घर में हुआ तभी।
इसमें आश्चर्य नहीं करना, यह दुनिया का दस्तूर सभी।।
सो मध्यम घर में जन्म लेय, बल्लु मुनिनाथा बन करके।
दुनिया में पूज्य बने पावन, आतम का हित चित में धरके।।30।।

यहाँ श्रीकृष्ण नारायण ने, कारागृह में ही जन्म लिया।
तब बिना शोर जगवालों के, मन में खुशियों का जला दिया।।
इक चाय बेचने वाला भी, भारत का पी.एम. बन जाता।
यह कुदरत का है खेल सही, इसको कोई बदल नहीं पाता।।31।।

जब महापुरुष पैदा होते, तब देवों में होती हलचल।
चाहे गाँव और घर हो छोटा, पर फरक नहीं होता बिलकुल।।
वहाँ हर दिल में खुशियाँ होतीं, मन हो जाते सबके निर्मल।
जन-जन को ऐसा लगता है, कोई गूँज रही मन में पायल।।32।।

जिस साल गुरु का जन्म हुआ, वह पुण्य साल कहलाई थी।
तब नगर जतारा बालों के, जन-जन में खुशी समाई थी।।
उस साल जतारा अंचल में, कई गुना फसल ज्यादा आई।
घर-घर में चर्चा थी इसकी, यह किसका पुण्य कहें भाई।।33।।

उस समय नगर के लोगों में, चर्चा का दौर चला न्यारा।
श्री सनतकुमार सेठ के घर, एक बालक जन्मा है प्यारा।।
उनके निज खेतों में हमने, नहीं इतनी फसलें लखी कभी।
कहीं पुण्यवान हो वह बालक, ऐसा कुछ लगता यहाँ अभी।।34।।

जब महापुरुष पैदा होते, साता हो जाती डगर-डगर।
धन धान्य उपजते हैं भारी, ऐसा शास्त्रों में लिखा जिकर।।
महावीर प्रभु के जन्म समय, ऐसा ही हुआ करिश्मा था।
यहाँ हिंसा पापन हार गई, अब आया समय अहिंसा का।।35।।

नरकों तक में साता मिलती, ऐसा यहाँ कहती जिनवाणी।
तब फसलों का उत्तम आना, कोई बात बड़ी नहीं बेमानी।।
कोई महापुरुष सा लगता है, यह सेठ पुत्र हमको भाई।
उसके ही यहाँ जनमने से, यह हुआ करिश्मा हितदाई।।36।।

इसकी चर्चा का विषय यहाँ, कुछ न कुछ चलता रहता है।
अब आगे की गाथा लिखने, मन यहाँ हमारा कहता है।।
उन्नीस तिहत्तर के पहले, यह ग्राम नगर पंचायत था।
यह ग्राम जतारा कस्बा था, सुविधाओं का अति टोटा था।।37।।

।। नगर जतारा का विकास ।।

पर जैसे जन्म हुआ गुरु का, यह ग्राम नगर बन जाता है।
सुविधायें सब मिल जाने से, अब लघु शहर कहलाता है।।
बिजली पानी कई विद्यालय, तहसील बड़ी बन जाने से।
महिमा बढ़ गई है कस्बा की, एक महापुरुष के आने से।।38।।

अब पाँच वर्ष के भये वल्लू, शिशु से बालक बन जाते हैं।
खेलों में ध्यान नहीं उनका, वह मन को कहाँ लगाते हैं।।
यह पता किसी को नहीं होता, यह बालक क्या सोचा करता।
जब कहें खेलने को लड़के, वह कहता मूड़ नहीं बनता।।39।।

यह पता किसी को नहीं यहाँ, बल्लू भैया आगे चलकर।
आचार्य परम बन जावेंगे, जैनेश्वरी दीक्षा को लेकर।।
तब धनी गुणी मानव इनके, दर्शनकर पुण्य कमावेंगे।
शासन के मंत्री अफसर भी, चरणों में शीष झुकावेंगे।।40।।

बल्लू का मन था कहीं और, खेलों में कैसे लग सकता।
केवल मन्दिर जाना उनको, निज भावों से अच्छा लगता।।
जब बड़े भाई राजेश सहर्ष, द्रोणागिर चलने को कहते।
तब बल्लू भैया हाँ कहकर, तैयारी झट करने लगते।।41।।

वहाँ मुनिसंघ को लख बल्लू, बस देखत ही रह जाते हैं।
फिर हाथ जोड़ करके दोनों, गुरु चरणों में झुक जाते हैं।।
मुनिराजों की सूरत लखके, मन में कुछ ऐसा लगता है।
जैसे मुनियों का मन सुरूप, उनके भी तन में बसता है।।42।।

आजाद मुल्क में जन्म लिया, आगे चलके जगबन्धन से।
बल्लू स्वतंत्र हो जावेंगे, मुनिराजा बनके आनंद से।।
यहाँ सदा पूत के लक्षण भी, पलना में सबको दिखते हैं।
ये यही कहावत कभी कभी, जेठे स्याने भी कहते हैं।।43।।

माँ दादी के संग हर दिन ही, राकेश भाई मन्दिर जाकर।
दर्शन कर जाप सदा देते, माँ के संस्कारों को पाकर।।
एक दिन मन्दिर में बल्लू को, बिच्छू दुश्मन ने काट लिया।
तब तो तकलीफ हुई भारी, कई लोगों ने उपचार किया।।44।।

घर पुष्पा भाभी ने आकर, प्रिय भैया का उपचार किया।
मन्त्रों से झाड़ा फूँकी कर, फिर दही घाव पर लगा दिया।।
एक दो महीने में बल्लू को, कुछ छोटी मोटी परेशानी।
आकर के बल्लू के संग में, करती थी निश्चय मनमानी।।45।।

जिन मन्दिर में माली काका, नेवजी लेने घर आ जाता।
तब बल्लू अति ही आदर से, काका को भोजन करवाता।।
थाली में भोजन लगा सहर्ष, माँ देती थी जब बल्लू को।
वह सजी हुई भोजन थाली, देकर खुश होवत काका को।।46।।

तब पता नहीं था कोई को, जग की निधियाँ सारे जग की।
जगवालों को ही दे देंगे, दीक्षा लेकर के मुनिवर की।।
करुणा के भाव रहे उत्तम, बल्लू भैया में बचपन से।
जीवों पर दया दिखाते थे, समतामयी अपने भावों से।।47।।

पहले मकान कच्चा ही था, श्री सनतकुमार श्रेष्ठीवर का।
राकेशकुमार के जन्म बाद, बन गया मकाँ पूरा पक्का।।
कच्ची ही गली रही पहले, घर के आगे श्रेष्ठीवर के।
अब पूरी गली बनी पक्की, लेने पर जन्म गुरुवर के।।48।।

यहाँ गली मुहल्ले वाले सब, बल्लू की सरल चतुरता से।
अति ही प्रसन्न रहा करते, इस भैया की किलकारी से।।
अपनी ही महा मधुरता से, सब लोगों से बातें करना।
बल्लू को अति प्रिय लगता था, सबके संग में मिलके रहना।।49।।

।। अग्रज राजेश के साथ स्कूल में ।।

इक दिन बल्लू अग्रज के संग, उनके स्कूल पहुँच जाते।
इसका नहीं पता रहा माँ को, सो परेशान सब दिखलाते।।
राकेश भाई से शिक्षक ने, तब पूछा समता भावों से।
यहाँ किसके संग में आये हो, तुम हमें बताओ आनंद से।।50।।

।। शिक्षक की समझायश बल्लू को ।।

तब अग्रज श्री राजेश कहें, यह छोटा भाई हमारा है।
हमरे संग यहाँ चला आया, पढ़ने की इसकी मनसा है।।
तब बल्लू से ही पूछ लिया, शिक्षक ने पास बुला करके।
तुम रोज यहाँ पर आओगे, पढ़ने की इच्छा चित धरके।।51।।

तब बल्लू ने कुछ नहीं कहा, स्वीकृति में शीष हिलाया था।
शिक्षक जी ने प्रिय बल्लू का, खुश होके सिर सहलाया था।।
फिर शिक्षक जी प्रिय बल्लू से, कहते हैं पापा संग आना।
यहाँ अपना नाम लिखाने, तुम जन्म पत्रिका संग लाना।।52।।

जब घर में रोटी पन्ना को?, बालक जन खेला करते हैं।
तब बेमन से राकेश वहाँ, उन सबके संग में रहते हैं।
यहाँ खेल मेल सबके संग में, बल्लू को नहीं अच्छे लगते।
वह तो सदा स्वतंत्र रहके, अपने मन का खेला करते।।53।।

।। पढ़ने की इच्छा बल्लू की ।।

वह खेल खेलते वक्त सदा, कुछ उदासीन से दिखते हैं।
जैसे है भिन्न कमल जल से, वैसे यहाँ बल्लू रहते हैं।।
अब पाँच बरष के बल्लू खुद, निज मन में सोच बनाते हैं।
अपने पढ़ने की मनसा को, वह पापा को बतलाते हैं।।54।।

अपने भाई बहिनों के संग, पापा जी अब प्रिय बल्लू को।
घर पर ही रोज पढ़ाते हैं, अक्षर मात्रा सिखलाने को।।
बल्लू भैया का सबके संग, पढ़ने में ध्यान लगा रहता।
एकाग्रचित्त लख बल्लू को, घर वालों को अच्छा लगता।।55।।

।। स्कूल में नाम लिखा ।।

अब श्रेष्ठीवर इनको लेकर, शाला में सहर्ष पहुँचते हैं।
बल्लू का नाम लिखो गुरुवर, यह हेडगुरु से कहते हैं।।
तब बड़ी सहजता से गुरु ने, पहली में नाम लिखा इनका।
होते हैं खुश राकेश तभी, पाकर आशीष यहाँ गुरु का।।56।।

बल्लू भैया को पढ़ते यहाँ हो गया समय छः महीने का।
शाला में शिक्षक सहपाठी, इनसे था मेल सभी जनका।।
कोयल सम मीठे वचनों से, यह सबका मन हरषाते थे।
सहपाठी अरु सब शिक्षक भी, बल्लू कह इन्हें बुलाते थे।।57।।

कोई बल्लू कहता था इनको, कोई राकेश इन्हें कहता।
कहके बल्लू राकेश कोई, अपने अन्तस् में खुश रहता।।
वह शाला धन्य हुई थी तब, प्रिय बल्लू के यहाँ आने से।
शिक्षक जनका सौभाग्य जगा, गुरुवर को यहाँ पढ़ाने से।।58।।

जितना उत्साह रहा इनको, हर रोज पढ़ाई करने का।
उससे ज्यादा उत्साह रहा, जिनधर्म हृदय में धरने का।।
तब पता नहीं था यह बल्लू, इस जग में श्रेष्ठ कहावेगा।
अपनी ही ज्ञान पताका को, चहुँ ओर यहाँ फहरावेगा।।59।।

बचपन में भी सूरज जैसी, कान्ति दिखलाती है इनमें।
चन्दा सम सौम्य और शीतल, सागर सी गहराई मन में।।
प्रवृत्ति सदा रही शीतल, नीतिज्ञ रहे निज अन्तस से।
धीरज समता थी भावों में, भरपूर भरा मन करुणा से।।60।।

अनुसार नाम के भी अपने, हृदय में है अति शीतलता।
जीवों पर दया बहुत भारी, भावों में श्रेष्ठ मधुर मितता।।
भावों में दया मधुरता की, प्रवृत्ति हो जिस मानव में।
मानव की बात क्या कहवें, उसकी चाहत है देवों में।।61।।

बल्लू का छठवाँ वरष रहा, वा समय सदा उठती लहरें।
तब खोज रहे होते बालक, निज के भावों में नई खबरें।।
राकेश सहर्ष दोनों टाइम, दर्शन करने जाते मन्दिर।
आये यह मात पिता जी से, शुभभाव सभी इनके अन्दर।।62।।

शिक्षित होनेपर घरवाले, इनको थी सुविधा हितदाई।
इससे बल्लू को पढ़ने में, नहीं हुई कोई भी कठनाई।।
राकेश भाई का लख स्वभाव, शिक्षक यहाँ पहली कक्षा के।
श्रमपूर्वक इन्हें पढ़ाते थे, अंतस में भारी खुश रहके।।63।।

होने पर अति होशियार यहाँ, शिक्षक ने पहली कक्षा में।
मॉनीटर इनको बना दिया, हरषाकर अपने भावों में।।
राकेश सहर्ष अब रोजाना, पहली कक्षा के लड़कों को।
गिनती गुनिया रटवाते थे, जो सिखलाया जाता इनको।।64।।

बल्लू भैया के मधुर वचन, लल्लू मासाब सहर्ष सुनके।
अन्तस में गद-गद हो जाते, भैया की सूरत भी लखके।।
यहाँ पहली कक्षा में भैया, अब्बल नम्बर में पास हुए।
दूसरी कक्षा में कर प्रवेश, मॉनीटर का पद पाय गए।।65।।

।। कथा भूदेव अरु भवदेव की ।।

हर शाम सदा इनके घर में, जैनागम पर चर्चा चलती।
शास्त्रों की नित्य वचनिका भी, बरषों से रोज हुआ करती।।
इक दिन इनके ही पापाजी, इक सुन्दर कथा सुनाते हैं।
जिसमें दो भाई सगे सहर्ष, जैनागम पर बतियाते हैं।।66।।

हर धार्मिक क्रिया सदा दोनों, नित साथ-साथ ही करते थे।
इनमें भवदेव बड़ा भाई, भूदेव अनुज से कहते थे।।
वह दोनों भाई ही नित प्रति, मुनिराजों की प्रिय दीक्षा पर।
शुभ मन से चर्चा करते थे, उनकी पावन नित चर्या पर।।67।।

इक दिना लोटते मन्दिर से, ऐसा संकल्प लिया इनने।
जिनदीक्षा लेंगे साथ सहर्ष, ये भाव धरे इनके मन ने।।
आने पर समय यहाँ उनने, अपना संकल्प निभाया था।
जैनेश्वरी दीक्षा संग लेकर, निज जीवन सफल बनाया था।।68।।

यह गाथा सुनकर बल्लू के, मन में आते हैं कई विचार।
हमको भी निज भ्राता के संग, हो प्राप्त यही सम्यक् सुसार।।
बल्लू के मन में यह पहला, वैराग्य बीज रुप जाता है।
तब खेल कूद भी रुचा नहीं, बस पढ़ना ही दिखलाता है।।69।।

।। बल्लू के मन के विचार ।।

इक दिन पूछा था बहिना ने, अपने इस कृष्ण कन्हैया से।
तुम कभी खेलने नहीं जाते, यह प्रश्न किया निज भैया से।।
तब सकुचा के कहते बल्लू, मुझको आगे मुनिवर बनना।
इससे मन कहता है मेरा, खेलों में रुचि नहीं रखना।।70।।

हमने देखा है कई जन को, खेलन में चोटें लग जातीं।
जिससे कई हो जाते अपंग, उनको नहीं दीक्षा मिल पाती।।
इतने ऊँचे सुनके विचार, बहिना अर्द्ध मूर्छित हो जाती।
अपने परिवारजनों को वह, यह सारी बातें बतलातीं।।71।।

बचपन में ही बल्लू अपने, कितना मन को रखते समार।
जहाँ खेलों में मन रमना था, वहाँ दीक्षा के रहते विचार।।
इक दिन माँ भगवती देवी, कहती हैं अपने प्रियतम से।
तुम जन्म पत्रिका बल्लू की, बनवाओ अपने पंडित से।।72।।

श्री श्रेष्ठी सनतकुमार तभी, पंडित के पास पहुँच जाते।
अपने ललना का जन्म समय, वहाँ पंडित जी को बतलाते।।
फिर कहते हैं अति आदर से, यह जन्म पत्रिका ललना की।
सच्ची तस्वीर बना करके, तुम हमें बताओगे उसकी।।73।।

।। बल्लू की जन्म पत्रिका ।।

तब पंडित जी पत्रक में से, कागज पर कुछ लिखते जाते ।
फिर उसको जोड़ घटा करके, ज्यों का त्यों इनको बतलाते ।।
कुछ मोटी बातें सुनो इधर, जो तुम्हें सत्य बतलावेंगे ।
बाकी सब पत्रक में लिखके, हम घर पर ही भिजवा देंगे।।74।।

राकेश नाम है ललना का, राशी के माफिक अति उत्तम।
यह सहनशील होगा भारी, पढ़ने में होगा सर्वोत्तम।।
स्व-पर हित से ही जुड़ने की, यह सबको बात बतायेगा।
अदृश्य कारणों से शिक्षा, यह पूरी नहीं कर पायेगा।।75।।

है युवा काल में इसे योग, कोई सन्त महात्मा बनने का।
या बहुत वृहद उद्योगों को, है योग यहाँ पर चुनने का।।
यह करुणा और अहिंसा के, कई नये आयाम बनायेगा।
लालच से दूर सदा रहके, स्व पर का हित उपजावेगा।।76।।

इस युग में सभी नीतियों का, यह होगा बहुत बड़ा ज्ञाता।
हे सेठ आपका यह सुपुत्र, होगा जग में सतपथ दाता।।
यह महाकवि भी हो सकता, इसके यहाँ ग्रह बताते हैं।
घर द्वार सभी तज देने के, संयोग सही दिखलाते हैं।।77।।

इसके सब ग्रह बताते हैं, यह होगा अटल हिमालय सा।
हमरे ज्योतिष में यह आया, यह होगा स्वयं शिवालय सा।।
यह वार्ता सुनके सेठ सभी, अपने घर वापस आ जाते।
पंडित की सारी बातें वह, अपनी संगनी को बतलाते।।78।।

माँ भागवती उन बातों को, उत्साह सहित मन से सुनके।
जाने क्या रही यहाँ गुनती, स्वप्नों की याद हृदय धरके।।
पंडित वाली बातें सुनकर, गुरु माता अति हरषातीं हैं।
उस चर्चा को कर गोड़ यहाँ, निज कार्यों में लग जातीं हैं।।79।।

तब पता नहीं था उस माँ को, कितना सच पंडित का कहना।
क्या सचमुच घर को छोड़ेगा, उसका ही बेटा घर अपना।।
पर बल्लू जी आगे चलकर, आचार्य परम कहलावेंगे।
घर के मानव निज नेत्रों से, बस देखत ही रह जावेंगे।।80।।

राकेश सहर्ष अब शाला में, हर कक्षा में अब्बल आते।
होशियार बहुत ही होने से, वह कक्षा नायक बन जाते।।
पन्द्रह की उमर होते ही, उन्नीस अठासी के सन् में।
नवमीं कक्षा में कदम रखा, अति हर्षाके अपने मन में।।81।।

गौरवशाली इतिहास रहा, इस बुंदेलों की धरती का।
कई संत महात्मा हुए यहाँ, निर्मल इतिहास रहा जिनका।।
इस गौरवशाली धरती का, कण-कण भी पूज्य बताया है।
कर नमन हजारों बार इसे, मन मेरा अति हरषाया है।।82।।

हर समय जतारा नगरी में, मुनियों के संघ आते रहते।
उनके दर्शन करके बल्लू, अपने मन की गागर भरते।।
बालक होकर के अब बल्लू, नित ही जिनमन्दिर जाते हैं।।
श्री जिनवर की पूजा करके, अन्तस में अति हरषाते हैं।।83।।

सागर जैसे गंभीर रहे, हँसमुख थे बल्लू बचपन से।
सहपाठी जन से मेल रहा, खेले भी उन संग आनन्द से।।
तीक्षण बुद्धि जिज्ञासु मन, कुछ नया सोचते रहते थे।
कभी जाके नदी किनारे पर, चिंतन भी मन से करते थे।।84।।

व्यवहार मधुर अति होने से, बल्लू ने मन जीता सबका।
शिक्षक भी रहते थे प्रसन्न, संयम लख के प्रिय वाणी का।।
धार्मिक वृत्ति थी बचपन से, दोनों टाइम मन्दिर जाना।
वैराग्य हृदय में था उत्तम, समता जीवन में अपनाना।।85।।

स्कूल समय पर ही जाके, पढ़ने में चित्त लगा अपना।
अब्बल नम्बर पर आने का, पूरा करते मन का सपना।।
राकेश भाई का मन पहले, यहाँ था सरकारी सर्विस का।
लेकिन अब इनका है झुकाव, सत् धर्ममार्ग पर चलने का।।86।।

।। सन् 1994 में बी.एस.सी. की ।।

उन्नीस इकानवे के सन में, बारहवीं कक्षा पूरी कर।
महाविद्यालय में पढ़ने को, प्रवेश किया था हरषाकर।।
बल्लू भैया ने अति श्रम कर, उन्नीस चौरानवे के सन् में।
बी.एस.सी. डिग्री हासिल की, निज नगरी के विद्यालय में।।87।।

।। सन् 1992 की चर्चा ।।

राकेश भाई ने आठ माह, सरस्वती शिशु मन्दिर जी में।
छात्रों को सहर्ष पढ़ाया था, अपने ही नगर जतारा में।।
उन्नीस बानवे के सन् की, एक चर्चा सहर्ष सुनाते हैं।
सामाजिक कार्यों में अपना, भैया कुछ समय लगाते हैं।।88।।

नव युवक बैन्ड था जैनों का, नगरी के ही जिन मन्दिर में।
राकेश भाई शामिल हो गये, उस पावन बैन्ड पार्टी में।।
राकेश बहुत शौकीन रहे, संगीत कला में पहले से।
सो वह संगीत सुनाते हैं, उत्तम धुन में अति आनंद से।।89।।

तब सिद्धक्षेत्र द्रोणागिर में, श्री विरागसिन्धु मुनिराजा का।
था समारोह अति ही बढ़िया, यहाँ चातुर्मास समापन का।।
तब तीरथक्षेत्र कमेटी ने, श्री कल्पद्रुम मंडल विधान।
करवाया था अति आनंद से, जगशान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।90।।

तब तीरथक्षेत्र कमेटी ने, नवयुवक बैन्ड जतारा को।
आमंत्रण कर बुलवाया था, सुनके मंडल की महिमा को।।
यहाँ हुए अनेकों धर्मकार्य, मंडल ने भाग लिया उनमें।
संगीत कला की चर्चा थी, राकेश सुमन की ही जिसमें।।91।।

तब तीरथ क्षेत्र कमेटी ने, राकेश भाई को खुश होकर।
सम्मान किया था उत्सव में, प्रशस्ति पत्र इन्हें देकर।।
तब पता नहीं था भैया को, जिसके आचार्य महोत्सव में।
हम वादन करने आये हैं, अपने ही मंडल के संग में।।92।।

।। अनेक गुण थे बल्लू जी में ।।

वह विरागसिन्धु आचार्य हमें, ऐसे अतिश्रेष्ठ महोत्सव में।
आचार्य महापद देकर के, हरषावेंगे निज अन्तस में।।
राकेश भाई में गुण अनेक, भीतर से भी परिलक्षित थे।
संगीत कला कवि भी उत्तम, गजलों भजनों के गायक थे।।93।।

स्वाध्याय कक्ष में पंडित थे, गर्भालय में व्रति श्रावक।
पूजन प्रक्षाल सदा करते, सामायिक के उत्तम साधक।।
खेलों में भी हरफनमौला, क्रिकेट के श्रेष्ठ खिलाड़ी थे।
बैडमिंटन इनका प्रिय खेल, अंतरंग से फोटोग्राफर थे।।94।।

शतरंज में तो राकेश भाई, अब्बल दर्जे के मास्टर थे।
गिल्ली डंडा के साथ सहर्ष, अंताक्षरी के मैनेजर थे।।
उन्नीस वर्ष की उमर तक, कभी मित्र मंडली के संग में।
पिक्चर भी इनने देखी थी, जो थी हितकर उद्देश्यों में।।95।।

व्रत में एकासन को कहती, प्रिय माँ जब बल्लू भैया से।
तब बल्लू जी कहते हैं वहाँ, एकासन नहीं सधता हमसे।।
ज्यादा कहने पर माँ जी के, एकासन बल्लू कर लेता।
पर रात्रि के अंधयारे में, कुछ फलाहार भी कर लेता।।96।।

फिर सोचते हैं राकेश स्वयं, उपवास लोग कैसे करते।
हमसे एकासन नहीं होता, हम कायरता चित में धरते।।
एकासन से डरने वाला, बल्लू ही खुद आगे चलकर।
उपवासों का राजा बनता, जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर।।97।।

राकेश भाई बी.एस.सी. तक, हर कक्षा में अब्बल आये।
तब देख परीक्षा के फल को, घरवाले भी अति हरषाये।।
इकबार जतारा नगरी में, श्रुतसागर जी मुनि आये थे।
उनकी सेवा भक्ति करके, राकेश बहुत हरषाये थे।।98।।

फिर इसी जतारा नगरी में, श्री दयासिन्धु ऐलक आये।
उनकी चर्चा लखकर बल्लू, अंतरंग में भारी हरषाये।।
पड़गाहन करके बल्लू ने, आहार स्वयं के ही घर में।
ऐलक जी के करवाये थे, हर्षित होकर निज के उर में।।99।।

पर कर्म उदय से चौके में, अंतराय हुआ ऐलक जी को।
आहार पूर्ण नहीं होने से, दुख हुआ बहुत ही बल्लू को।।
उस दिन बल्लू भैया जी ने, भोजन भी नहीं किया ढंग से।
मन नहीं लगा कोई कारज में, सारे दिन दुखी रहे मन से।।100।।

बल्लू के घर के नियर एक, त्रिवेदी ब्राह्मण रहते थे।
अच्छे लोगों में गिनती थी, वह कुल के भी अति ऊँचे थे।।
पर मदिरा पीने की लत से, सारी संपत्ति उस घर की।
हो गई नष्ट कुछ ही दिन में, आदत से मदिरा पीने की।।101।।

।। व्यसन त्यागा था बचपन में ।।

उस घर की हालत को लखके, राकेश भाई ने बचपन में।
पूरे व्यसनों का त्याग किया, ऐसा संकल्प लिया मन में।।
इस महात्याग से बल्लू जी, आगे चलके निज जीवन में।
बन गये त्याग के मूर्तमान, संयम धारण करके चित्त में।।102।।

।। जिन्हें दूर रखा अब वे हृदय में ।।

आचार्य विमलसागर जी की, श्री सोनागिर के तीरथ में।
छैयत्तरवीं जन्म जयंती थी, उनके उस पावन उत्सव में।।
नव युवक बैन्ड जतारा को, आमंत्रित किया गया जिसमें।
संग में आये राकेश भाई, गुरुवर की जन्म जयंती में।।103।।

आचार्य प्रवर के दर्शन का, पर्वत की परम वन्दना में।
सुयोग सहर्ष ही बन जाता, राकेश भाई के जीवन में।।
तब भैया सोचते हैं मन में, यह गुरु तो बीस पंथ के हैं।
इनके दर्शन तो ठीक नहीं, क्योंकि हम तेरह पंथी हैं।।104।।

तब ज्ञान नहीं था ये इनको, श्री विमल सिन्धु आचार्य प्रवर।
इनके गुरु विरागसिन्धु के, यह ही होवेंगे श्री गुरुवर।।
दीक्षा लेकर राकेश स्वयं, श्री विमर्श सिन्धु बन जावेंगे।
तब इनके पूज्य गुरु दादा, श्री विमल सिन्धु कहलावेंगे।।105।।

।। बाजार की भोजन सामग्री का त्याग ।।

विद्या अध्ययन के समय तभी, राकेश भाई टीकमगढ़ में।
अपने मित्रों के साथ सहर्ष, जाते हैं बढ़िया होटल में।।
वहाँ की ही उत्तम गुजिया ने ही, तब बहुत प्रसिद्धि पाई थी।
वह ही गुजिया आर्डर देके, सब मित्रों ने मँगवाई थी।।106।।

सब मित्र वहाँ वो ही गुजिया, खाने लगते हैं आनंद से।
तब मरा हुआ झींगुर निकला, उस ही गुजिया में भीतर से।।
वह झींगुर लख के मित्रों ने, नहीं खाया था उन गुजियों को।
राकेश भाई ने तब त्यागा, बाहर की बनी वस्तुओं को।।107।।

बाहर का बना हुआ भोजन, राकेश भाई ने तज करके।
एक नई मिशाल बनाई थी, करुणा के भाव हृदय धरके।।
यह दूजा कलश हुआ पूरा, श्री विमर्श सिन्धु जीवन पथ का।
बाईस वरषों के जीवन का, बी.एस.सी. तक की शिक्षा का ।।108।।

।। इति द्वितीय कलश ।।

राकेश कुमार के यशस्वी पिता श्री सनतकुमार जी (2 प्रतिमाधारी) एवं माता श्रीमती भगवती देवी।

जतारा स्थित वह निवास, जिसे राकेश की जन्मस्थली का गौरव मिला

सौम्य, सरल, सुसंस्कारित : बाल राकेश

गंभीर, चिंतनशील युवक : राकेश

एक सुशिक्षित, सुंदर, शिष्ट और विनयशील युवक : राकेश।

राकेश बाबू के साथ : मित्र द्वय लोकेश खरे और अनूप खरे। दोनों सहपाठी।

मैना सुंदरी का अभिनय करते हुए राकेश कुमार। श्रीपाल के रूप में बैठे हुए अरविन्द माते, उन्हीं के समक्ष हैं मंत्री-प्रमोद। मंच की दायीं ओर बैठा किशोर है राजेश जैन (राकेश के बड़े भाई) और बायीं तरफ निर्देशक-कपूर चंद बंसल।

कुंडलपुर-वंदना को जाते हुए बादलों ने घेर लिया, वर्षा होने लगी तब राकेश शांत भाव से जाप देने बैठ गए। साथ हैं-स्वतंत्र सिंघई एवं अरविन्द माते। उघारे तन देख कौन कहेगा कि ये नाटक के पात्र हैं- मैना सुंदरी, राजा श्रीपाल और राजा पहुपाल।

बैण्ड दल का गठन करने के बाद, श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ जतारा के सक्रिय सदस्य राकेश कुमार वाद्य-यंत्रों का वादन करते हुए।

अवधेश प्रतापसिंह महाविद्यालय टीकमगढ़ में जब राकेश बी.एस.सी कर रहे थे तब अपने प्रोफेसर श्री चौरसिया जी (मध्य) के साथ। अन्य हैं सहपाठी लोकेश, कमलेश बसंत और अन्य।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

तृतीय कलश

।। मंगलाचरण ।।

जिनने तीर्थंकर चक्रपति, अरु कामदेव पद पाया है।
उन शान्ति कुन्थु अरहजिन को, हमने यहाँ शीष झुकाया है।।
थे चौदह रत्न यहाँ जिनके, नव निधियों के भी मालिक थे।
थी सहस्र छियानवे महारानी, छह खण्डों के प्रति पालक थे।।1।।

वह चक्र सुदर्शन के स्वामी, चक्राधिपति कहलाते थे।
बत्तीस सहस्र राजा जिनको, सादरमय शीष झुकाते थे।।
जिनके गज थे लख चौरासी, अरु कोटि अठारह थे घोड़ा।
इतना वैभव भी जिन्हें यहाँ, संयम में नहीं बना रोड़ा।।2।।

ये तीनों तीर्थंकर भगवन्, अनुपम त्रय पद के धारी थे।
वे कामदेव अरु तीर्थंकर, चक्राधिपति त्रिपुरारी थे।।
इतना वैभव तज देने में, नहीं क्षण की देर लगी इनको।
यहाँ ध्यान उन्हीं का धरने से, लिखने की शक्ति मिली मन को ।।3।।

अब कलश तीसरा लिखते हैं, जिसमें वैराग्य कथा इनकी।
ज्यों की त्यों यहाँ लिखी हमने, राकेश भाई के जीवन की।।
जिनने जीवन्त जिया जीवन, उनही की महिमा है इसमें।
यह सत्य कथा है इस युग की, बिन्दु ही सिन्धु बनी जिसमें।।4।।

कुछ मित्र हमारे सहयोगी, हमरे घर आकर मिलते हैं।
मेरी पावन रचनाओं पर, अंतरंग से चर्चा करते हैं।।
इन रचनाओं को लिखने की, सामर्थ्य नहीं होवत सबमें।
हम हैं अल्पज्ञ बहुत भारी, सबका सहयोग मिला इसमें।।5।।

यह लिखा सही जीवन चारित्र, श्री विमर्शसिन्धु मुनिनाथा का।
जिसने हर दिल को जीता है, उस आगम के व्याख्याता का।।
वह युवाचार्य हैं महासंत, इस युग की श्रेष्ठ धरोहर हैं।
सिद्धांत परक जीवन उनका, संयम के श्रेष्ठ समुन्दर हैं।।6।।

इनके जीवन के सभी कार्य, यहाँ लिखने का सामर्थ्य नहीं।
ऐसा नहीं कार्य कोई इनमें, जिसका होता कोई अर्थ नहीं।।
ये विमर्श सिन्धु जीवन गाथा, जन जीवन को है हितकारी।
इस गाथा का स्वाध्याय सही, आतम को स्वस्थ रखे भारी।।7।।

श्री सनतकुमार की बगिया में, कई फूल लगे हैं सर्वोत्तम।
सुत तीन और दो सुता श्रेष्ठ, जो सभी महकते हैं हरदम।।
उन सबमें तीजा फूल यहाँ, राकेश भाई कहलाया है।
जिसने अध्यातम का अखंड, हर दिल में दीप जलाया है।।8।।

वह ही राकेश सुमन अब तो, आचार्य परम कहलाते हैं।
तीर्थेशों की इस वसुधा पर, महासागर से लहराते हैं।।
इनकी स्तुति वन्दन करके, हमने ये कदम उठाया है।
बिन क्षमता आज यहाँ हमने, सूरज को दीप दिखाया है।।9।।

साधु संगति का श्रेष्ठ असर, राकेश भाई के अंतरंग में।
गहराई तक जा पहुँचा था, रहने से ऋषियों के संग में।।
श्री विमर्शसिन्धु के जीवन की, अब आगे कथा बढ़ाते हैं।
जो पता चला घर बाहर से, उसको ही यहाँ दरशाते हैं।।10।।

।। सागर में विरागसागर के दर्शन ।।

था बिम्ब प्रतिष्ठा का उत्सव, उस वक्त जतारा नगरी में।
श्री विरागसिन्धु आचार्य प्रभु, तब संघ सहित थे सागर में।।
तब नगर जतारा के श्रावक, जाकर के सागर नगरी में।
विनती करते हैं श्री गुरु से, सान्निध्य देने को उत्सव में।।11।।

वहाँ सभी श्रावकों के संग में, राकेश भाई यहाँ आये थे।
आचार्य संघ का दर्शन कर, अन्तस में अति हरषाये थे।।
श्री विरागसिन्धु आचारज ने, तब सभी जतारा वालों को।
आशीष दिया अति हरषाके, लख करके उनके भावों को।।12।।

अब सभी जतारा के श्रावक, श्री विरागसिन्धु के चरणों में।
श्री फल का अर्घ्य चढ़ाते हैं, पधारने को प्रिय उत्सव में।।
फिर सभी जतारा के श्रावक, विनती करते गुरुराजा से।
पधराओं नगर जतारा में, ये विनय हमारी है तुमसे।।13।।

श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने, भव्यों के भावों को लखकर।
स्वीकृति दे दी वहाँ आने की, अपने ही संघ से चर्चा कर।।
श्री विरागसिन्धु आचारज का, वात्सल्य रूप लखके मन में।
राकेश बहुत ही खुश होके, झुक जाते गुरु के चरणों में।।14।।

आचार्यप्रवर की सूरत ने, राकेश भाई के अंतरंग को।
वात्सल्यता की गहराई से, जीता आशीष देकर चित को।।
सागर से वापस आय गये, राकेश भाई सबके संग में।
मन रहा गुरु के पास सही, तन आया नगर जतारा में।।15।।

जब लोग यहाँ पर पूछेंगे, कैसा लागा गुरु को लखकर।
हम उन्हें बतावेंगे ये सब, सौगात मिली नई हर्षाकर।।
आचार्य प्रभु के दर्शन कर, आभास हुआ नये जीवन का।
ऐसा बोलेंगे हम उनसे, अवसर था पहला आनंद का।।16।।

।। मुनि विशुद्धसागर जतारा में ।।

मुनि विशुद्धसिन्धु जी ऐलक श्री विज्ञान सिन्धु जो सागर से।
आ गये जतारा नगरी में, आज्ञा पाकर गुरुराजा से।।
तब सभी जतारा के श्रावक, नगरी की सीमा पर जाकर।
मुनि संघ की करते अगवानी, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।17।।

श्री मदनसिन्धु से जल लाकर, श्री विशुद्ध सिन्धु मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, गणमान्यों ने अति हरषाके।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेकर आये थे, नगरी के ही जिनमंदिर में।।18।।

।। आ. विरागसागर जी जतारा में ।।

छठवीं तारीख फरवरी थी, तब आये नगर जतारा में।
श्री विरागसिन्धु आचार्य प्रभु, उन्नीस पंचानवे के सन् में।।
श्री विशुद्धसिन्धु विज्ञानसिन्धु, नगरी की पावन सीमा पर।
गुरु संघ की करने अगवानी, जनता के संग गये हर्षाकर।।19।।

।। गुरु शिष्य का मिलन ।।

यहाँ गुरु शिष्य की लख मिलनी, जनता ने अपनी अंखियों से।
खुशियों के जल बरसाये थे, लख दृश्य अनोखा आनंद से।।
गणमान्यों ने वहाँ आनंद से, श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, चरणों में शीष झुका करके।।20।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को लेकर आये थे, नगरी के ही जिन मंदिर में।।
मारग में सभी श्रावकों ने, अपने घर के दरवाजों पर।
गुरु चरणों का प्रक्षाल किया, घृत के दीपों से आरती कर।।21।।

।। आ. श्री का संक्षिप्त उद्बोधन ।।

उस दिन भक्तों ने नगरी को, दुल्हन की तरह सजाया था।
कई तोरण द्वार बना उनपे, केशरिया ध्वज लहराया था।।
मन्दिर में आकर श्री गुरु ने, अपनी पावनतम वाणी से।
संक्षिप्त दिया था उद्बोधन, बचने पापमयी जीवन से।।22।।

घट को यदि भरना चाहो तो, पहले उसको खाली करलो।
खाली ही घट भर सकता है, ये बात सही चित में धरलो।।
यदि भरना भी चाहते हो तुम, अच्छे कार्यों से निज घट को।
तब खाली करो बुराई से, पहले अपने चंचल चित्त को।।23।।

कोई सामान बनेगा क्या, इस भरे हुए घट में भाई।
खाली घट भरना संभव है, यह ही कहते हैं जिनराई।।
आचार्य प्रवर की वाणी सुन, राकेश भाई के अंतरंग में।
परिवर्तन की लहरें आईं, वैराग्यमयी आतम हित में।।24।।

राकेश भाई अब रोज यहाँ, संघ की सेवा करने लगते।
हर दिन ही संघ के सन्तों से, धार्मिक चर्चा करते रहते।।
श्री विशुद्धसिन्धु मुनिराजा की, नित की चर्चा को लख करके।
खुश होवत हैं मन में भारी, उनका चारित्र हृदय धरके।।25।।

।। पंचकल्याणक जतारा में ।।

कुछ दिन में ही राकेश भाई, परिचित भी हो गये थे संघ से।
अब संघ में ही ज्यादा रहते, निजभावों से अति आनंद से।।
फरवरी आठ से शुरू हुआ, उन्नीस पंचानवे के सन् में।
जिन बिम्बप्रतिष्ठा समारोह, श्री विरागसिन्धु के सान्निध्य में।।26।।

पंडित श्री विमल सोंरया ने, गजरथ के फेरों के संग में।
यह बिम्ब प्रतिष्ठा करवाई, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।
पंडित श्री विमल सोंरया जी, दोय सहस्र तेरह सन् में।
श्री 'प्रज्ञ पुरुष' की उपाधि से, सम्मानित हुए मदनपुर में।।27।।

।। संस्कार जगे बल्लू जी में ।।

मुनि संघ की वैयावृत्ति को, राकेश भाई हर रात्रि में।
अपने मित्रों के साथ सहर्ष, जाते हैं मुनि वसतिका में।।
पहले दिन वैयावृत्ति में, प्रकाश मित्र कहता गुरु से।
आलू प्याज भक्षण करता, राकेश रोज अति आनंद से।।28।।

तब बड़े हुए निज हाथों को, आचार्य प्रवर ने बल्लू के।
रोका था सहज इशारा कर, तुम जावो ढिग क्षुल्लक जी के।।
होती है बहुत ग्लानि तब, राकेश भाई के अंतरंग में।
आचार्य प्रवर की ओर देख, राकेश तभी सोचत मन में।।29।।

सेवा तो आज करेंगे हम, आचार्य प्रवर की अन्तस से।
आचार्य श्री तब समझ गये, बल्लू के भाव तुरत मन से।।
तुम चार माह का त्याग करो, यह किया इशारा श्री गुरु ने।
राकेश तभी कहते गुरु से, जीवन भर को त्यागे हमने।।30।।

सुनके बल्लू का नियम श्रेष्ठ, गुरुराजा कुछ मुस्काये थे।
अब हरी झंडी मिल जाने से, राकेश बहुत हरषाये थे।।
जब फिर से हाथ बढ़ाये थे, तब वही मित्र गुरु के कहता।
राकेश सदा अति आनंद से, रात्रि में भी भोजन करता।।31।।

अब यहाँ मित्र की वार्ता सुन, राकेश सोचता है मन में।
क्यों परम मित्र शत्रु जैसा, व्यवहार करे मेरे संग में।।
यहाँ पोलें खोल रहा हमरी, मुझको कुछ समझ न आया है।
फिर बोध जगा बल्लू जी को, इसने तो हमें जगाया है।।32।।

सत् मित्र यहाँ पर मुश्किल से, मिलते हैं आज जमाने में।
जो राह बता करके उत्तम, यहाँ लगा रहे सन्मारग में।।
आचार्य प्रवर ने बल्लू को, फिर रोका वैयावृत्ति से।
तुम चार माह का त्याग करो, रात्रि भोजन का खुद मन से।।33।।

चरणों में शीष झुका करके, राकेश भाई कहते गुरु से।
हमने रात्रि का भोजन भी, आजन्म तजा अपने मन से।।
राकेश भाई ने साहस कर, जो त्याग यहाँ दिखलाया है।
उसको लखके गुरुराजा का, अन्तस भी अति हरषाया है।।34।।

तब पास खड़े गुरु भक्तों ने, राकेश भाई की अंतरंग से।
अति भूरि-भूरि प्रशंसा की, दृढ़ता लख के अति आनंद से।।
आचार्य प्रवर की वैयावृत्ति, राकेश भाई करके मन में।
प्रसन्न हुए थे बहुत यहाँ, संयम लेके आतम हित में।।35।।

गुरु की वैयावृत्ति करके, राकेश सहर्ष घर को आये।
मन तो श्रीगुरु के पास रहा, केवल तन को घर में लाये।।
राकेश भाई अब रोजाना, त्रय बार गुरु ढिंग जाते हैं।
उनकी पावन नित चर्या को, अपने ही हृदय बसाते हैं।।36।।

।। वैराग्य ।।

श्री सनतकुमार श्रेष्ठीवर ने, इन सात दिनों में बल्लू के।
अन्तस भावों को परख लिया, क्या समा गया अन्दर इसके।।
राकेश कहीं श्री गुरुवर से, व्रत के ही भाव बना करके।
घर को भी अपना तज देवे, गुरु की संगति चित्त में धरके।।37।।

ऐसा ही हमको दीख रहा, इसके पावन नित कार्यों से।
वह सही हुआ आगे चलके, घर त्यागा था इसने मन से।।
अब सोच रहे राकेश भाई, आचार्य प्रभु से व्रत लेकर।
उनके ही संघ में रहा जाय, वैराग्य मार्ग को अपना कर।।38।।

अब नगर जतारा से श्री गुरु, कदमों को सहर्ष बढ़ाते हैं।
आहार क्षेत्र पर आकर के, संघ के संग में रुक जाते हैं।।
राकेश भाई गुरु के संग में, बिन कहे सुने घरवालों से।
आहारक्षेत्र पर आय गये, कुछ पाने को गुरुराजा से।।39।।

जब पता चला घरवालों को, वह घबराये भारी मन में।
दूजे दिन वह सब पहुँच गये आहारक्षेत्र के आँगन में।।
आहार पहुँच के घरवाले, अपने प्यारे सुत से मिलते।
वहाँ प्रेमपूर्वक सभी लोग, समझा करके सुत से कहते।।40।।

।। संवाद पिता पुत्र का ।।

बेटे तुम घर में ही रहके, धरम करो अति आनंद से।
हम लोगों को एतराज नहीं, श्रावक भी बनो सही मन से।।
राकेश भाई तब कहते हैं, अपने ही सब घरवालों से।
हमने तो दृढ़ निश्चय कीना, दीक्षा लेने का गुरुवर से।।41।।

कोई निश्चय विश्चय ना है, तब कहें पिताजी झुंझलाके।
तुम साथ हमारे घर चालो, ये मेरी आज्ञा चित धरके।।
तब कहते हैं राकेश भाई, हे तात हमारी विनय सुनो।
हम घर नहीं जाना चाहत हैं, हमरे हित की भी बात सुनो।।42।।

यदि बात नहीं मानोगे तुम, यह पिता कहत है भैया से।
स्वाभिमान हमारे को बेटा, तब चोट लगे इस निर्णय से।।
राकेश भाई तब कहते हैं, अति आदर सहित पिता जी से।
गौरव ऊँचा होगा तुमरा, हमारे यहाँ व्रत के लेने से।।43।।

व्रत को ले लिया यहाँ तुमने, धंधा पानी नहीं रहने से।
गौरव भी नहीं बढ़ेगा कोई, बेटा सब कहवेंगे मन से।।
राकेश पिता से फिर कहते, व्रत लिया होयगा जब गुरु ने।
क्या ऐसई शोर किया होगा, उनके भी कुटुम्ब कबीला ने।।44।।

श्री पूज्य पिता कुछ कह पाये, दादी कहती उनके पहले।
बल्लू यदि घर को नहीं गया, हम यहीं प्राण तजें सुनले।।
इस सिद्धक्षेत्र पर जो प्राणी, अपने प्राणों को तजता है।
राकेश वहाँ हँस के कहते, वह सीधा स्वर्ग पहुँचता है।।45।।

अब माँ भी यहाँ पर हार गई, अपने प्यारे निज बेटे से।
बेटे ने यहाँ समझाया था, सबको निज उच्च विचारों से।।
फिर पिता श्री यहाँ कहते हैं, अपने प्यारे इस बेटे से।
तुम सीधे घर नहीं चलोगे, तो हम कहवेंगे श्री गुरु से।।46।।

यह लोग यहाँ नहीं मानेंगे, राकेश यही सोचत मन में।
सो उठके यहाँ से चले गये, श्री शान्तिनाथ के मन्दिर में।।
वहाँ विनती करते हैं प्रभु से, मैंने संकल्प लिया मन में।
ब्रह्मचर्य महाव्रत लेकर के, रहवेंगे श्री गुरु के संघ में।।47।।

लेकिन घरवाले सभी यहाँ, विचलित हैं अपने अन्दर से।
हे नाथ उन्हें सद्बुद्धि दो, वो करें समर्थन आनंद से।।
जब यहाँ बहस में बल्लू से, घरवाले सबही हार गये।
तब वो ही जन सब जाकर के, आचार्य श्री से उलझ गये।।48।।

।। आचार्य प्रभु की समझायस ।।

आचार्य प्रवर सब लोगों को, यहाँ समझाते हैं धीरज से।
वैरागी नहीं बना करता, यहाँ कोई किसी के कहने से।।
वैराग्य भाव हर मानव में, पूरब पुण्यों से बनते हैं।
संयोग सही मिल जाने पर, वो भाव सहर्ष ही जगते हैं।।49।।

हम नहीं किसी को मना रहे, जिनको बनना वो बन जाते।
जो बनना नहीं चाहें मन से, उनको नहीं कोई बना पाते।।
जिस मानव को व्रत लेना है, वह शान्तिनाथ के मन्दिर में।
प्रभु के सम्मुख व्रत ले लेगा, यह लेख लिखा है आगम में।।50।।

हम तो चाहत हैं आप सभी, व्रत धारें यहाँ सभी मन से।
क्या आप सभी व्रत धारेंगे, बतलाओ हमरे कहने से।।
आचार्य प्रभु के मुखड़ा को, तब सभी देखने लगते हैं।
कोई शब्द नहीं निकला मुख से, सब बगल झाँकते दिखते हैं।।51।।

राकेश भाई से माँ कहती, तुमसे त्यागी सुत को जन कर।
हमरी कुक्षी हो गई धन्य, तुमरी सुदृढ़ श्रद्धा लखकर।।
बेटा हमरी अब कुछ बातें, समतामयी भावों से सुन लो।
मेरी कुक्षी बदनाम न हो, यह बात सही चित्त में धरलो।।52।।

ऐसा कोई काम नहीं करना, जिसमें बदनामी हो कुल की।
सेवा में नित तत्पर रहना, आचार्य गुरु महाराजा की।।
अब वही तुम्हारे मात पिता, वह ही तुमरी धन दौलत है।
गुरु आज्ञा में नित ही चलना, बस यही हमारी चाहत है।।53।।

विचलित नहीं होना यहाँ कभी, गर्दिश में और प्रलोभन में।
नहीं ऐसा कार्य कभी करना, जिनधर्म की हानि हो जिसमें।।
बेटा तेरे इस निर्णय से, हम हैं प्रसन्न भारी मन में।
जो पथ तूने अपनाया है, अतिवीर चला करते उसमें।।54।।

राकेश शेर दिल माता की, उपदेशमयी वाणी सुनके।
अन्तस में अति हरषाया था, माता की सीख हृदय धरके।।
हे माता दूध पिया हमने, बचपन में सही शेरनी का।
सो पूरा ध्यान रखेंगे हम, तेरे पावन उपदेशों का।।55।।

जब बल्लू का परिवार सभी, यहाँ से घर वापस आया था।
तब बल्लू को उसकी माँ ने, इस तरह यहाँ समझाया था।।
छब्बीस फरवरी में गुरु ने, उन्नीस पंचानवे के सन् में।
आर्यिकाओं की दीक्षा दी थी, कुछ बहिनों को इस तीरथ में।।56।।

राकेश भाई ने तभी सहर्ष, यहाँ विनती की गुरुराजा से।
हे नाथ हमें व्रत दे दीजे, बचने को जग के पापों से।।
आचार्य प्रभु ने उसही दिन, अन्तस भावों में खुश होकर।
दो वर्षों का व्रत दिया सहर्ष, बल्लू के भावों को लखकर।।57।।

वैराग्य भाव का प्रथम चरण, राकेश भाई के अंतरंग में।
अति ही आनंद से शुरु हुआ, रमने को अपनी आतम में।।
राकेश भाई ब्रह्मचारी बन, आचार्य संघ में रह करके।
आतम का हित उप जाते हैं, समता भावों को चित्त धरके।।58।।

राकेश भाई ब्रह्मचारी ने, संघ के संग पढ़ना शुरू किया।
अरु गुरु की सेवा भक्ति में, अपने अन्तस को लगा लिया।।
आचार्य प्रभु कुछ दिनों बाद, अपने संघ को संग में लेके।
श्री अतिशयक्षेत्र पपौरा में, आ जाते हैं अति हरषाके।।59।।

यहाँ के ही शतक जिनालयों के, राकेश भाई ब्रह्मचारी ने।
अन्तस के अपने भावों से, संघ के संग में दर्शन कीने।।
फिर संघ सहित आचार्य श्री, टीकमगढ़ नगरी में आये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।60।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
श्रावक जन लेकर आये थे, गुरु संघ को श्री जिनमंदिर में।।
यहाँ ग्रीष्मकालीन वाचना भी, बाजारपुरा जिनमन्दिर में।
अति ही आनंद से शुरू हुई, आचार्य प्रवर की सान्निध्य में।।61।।

आचार्य प्रवर की तैंतीसवीं, यहाँ जन्म जयंती भक्तों ने।
आनंद के साथ मनाई थी, शिष्यों ने अरु श्रावक जन ने।।
स्व रचित एक प्यारी रचना, राकेश भाई ब्रह्मचारी ने।
मीठे स्वर में तब प्रस्तुत की, दरशाई जिसे यहाँ हमने।।62।।

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की, माटी जिसे उगाती है।
वह माटी ही इक भव्य जीव की, जनम भूमि कहलाती है।।
ऐसे ही इक भव्य जीव, जो है श्री गुरु विराग सागर।
उनकी महिमा गाके हमने, भरली मन की खाली गागर।।63।।

ये रचना सुन सब लोगों ने, राकेश भाई ब्रह्मचारी की।
अपने अंतरंग के भावों से, अति भूरि भूरि प्रशंसा की।।
राकेश भाई ने एक दिवस, श्री विशदसिन्धु ऐलक जी को।
करते देखा यहाँ केशलौंच, तब सोचत हैं अपने हित को।।64।।

राकेश भाई के पिता यहाँ, संदेश भेजते हैं घर से।
यहाँ छात्रवृत्ति जो पड़ी हुई, तुम ले जाओ विद्यालय से।।
राकेश भाई ने विनय सहित, भिजवादी खबर पिताजी को।
हे तात यहाँ पर पइसे की, अब नहीं जरूरत है हमको।।65।।

श्री विरागसिन्धु आचार्य गुरु, अब सभी त्यागियों को संघ के।
अध्ययन करवाते शास्त्रों का, रोजाना क्लास लगा करके।।
अब यहाँ से कदम बढ़ाते हैं, आचार्य गुरु संघ के संग में।
हो करके क्षेत्र बानपुर से, आये थे नगर ललितपुर में।।66।।

सीमा पर सहर्ष श्रावकों ने, आचार्य प्रवर के श्री संघ की।
अपने अंतरंग के भावों से, ऐतिहासिक ही अगवानी की।।
यहाँ गणमान्यों ने श्री गुरु के, प्रासुक पावन गंगा जल से।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, आनंदित होकर अन्तस से ।। 67।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुसंघ को सब लेकर आये, नगरी के अटा जिनालय में।।
कुछ दिन यहाँ रहके श्रीगुरु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
श्री क्षेत्रपाल के मन्दिर में, अति आनंद से रुक जाते हैं।।68।।

था चौमासे का समय निकट, सो भक्त सभी इस नगरी के।
विनती करते हैं श्री गुरु से, चऊमासे की अति हरषा के।।
श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने, भव्यों के भावों को लखकर।
स्वीकृति दे दी, चऊमासे की, अपने शिष्यों से चरचाकर।।69।।

।। 1995 वर्षायोग ललितपुर में ।।

अब षाढ़ सुदी चौदस के दिन, उन्नीस पचानवे के सन् का।
चऊमासा होवत स्थापित, श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा का।।
दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीरा शासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, सत् ज्योति जली अहिंसा की।।70।।

राकेश भाई ब्रह्मचारी का, श्री विरागसिन्धु गुरु के संग में।
यह पहला ही चऊमासा है, इस ललितपुर की नगरी में।।
राकेश भाई ने गुरुवर से, इस ललितपुर चौमासे में।
तत्त्वार्थ सूत्र द्रव्य संग्रह का, अध्ययन कीना नित कक्षा में।।71।।

नित सुबह शाम दोनों टाइम, आचार्य गुरु महाराजा से।
प्रवचनों को यह सुनते थे, आतम हित को अंतर मन से।।
यहाँ तीन अगस्त को श्री गुरु ने, राकेश भाई ब्रह्मचारी को।
त्रय प्रतिमाओं का व्रत दीना, संग में कुछ और भाइयों को।।72।।

राकेश भाई ब्रह्मचारी की, प्रज्ञा से श्री आचार्य प्रवर।
हो गये हैं भली भाँति परिचित, इन सात महीनों के अन्दर।।
आगम चक्खु का महाग्रन्थ, उस महाग्रन्थ की टाइपिंग को।
आचार्य प्रवर ने सौंप दिया, राकेश भाई ब्रह्मचारी को।।73।।

संघ में कातंत्र व्याकरण की, चल रही पढ़ाई कक्षा में।
टाइपिंग के कारण ब्रह्मचारी, नहीं आ पाते उस कक्षा में।।
जब होने लगी परीक्षा यहाँ, राकेश भाई ने गुरुवर को।
यह सभी बतलाई थी, हम पढ़ नहीं पाये हैं इसको।।74।।

राकेश भाई ब्रह्मचारी ने, श्री गुरु के ही अनुशासन से।
रोजाना ही अतिश्रम करके, यहाँ दई परीक्षा आनंद से।।
तब श्रेष्ठ अंक पाये इनने, उसही कातंत्र परीक्षा में।
आचार्य प्रवर खुश होते हैं, भैया की परम सफलता में।।75।।

।। आ. विद्यासागर के दर्शन ।।

वीना बारह के तीरथ में, श्री विद्यासागर गुरुवर का।
चऊमासा होय रहा पावन, उन्नीस पंचानवे के सन् का।।
राकेश और अरुण भैया, अपने गुरुवर की आज्ञा से।
वीना बारह के तीरथ में, आये थे नगर ललितपुर से।।76।।

आगम चक्खू का लिखा प्रूफ, श्री गुरुवर को दिखलाने को।
वीना बारह में आये यह, गुरुवर का आशीष पाने को।।
यहाँ आकर के दोनों जन ने, आचार्य गुरु महाराजा के।
विनयावत दर्शन कीने थे, चरणों में शीष झुका करके।।77।।

यह दोनों ही ब्रह्मचारीगण, आचार्य प्रभु की अनुमति से।
दो दिन तक संघ में रुके रहे, अति हर्षाकर शुभ भावों से।।
आगम चक्खू का लिखा प्रूफ, आचार्य प्रवर की आज्ञा से।
श्री अभय सिन्धु मुनि को दीना, खुश होकर अन्तस भावों से।।78।।

अब दोनों ही ब्रह्मचारी गण, आशीष लेकर गुरुराजा से।
वापस आ गये ललितपुर में, वीना बारह के तीरथ से।।
प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक वदी अमावस में।
भक्तों ने सहर्ष मनाया था, आचार्य संघ के सन्निध्य में।।79।।

।। समाधान समस्या का ।।

उस ही दिन श्री गुरुराजों ने, विधि पूर्वक ही चऊमासे का।
विस्थापन कीना आनंद से, उन्नीस पंचानवे के सन् का।।
इस दिवस श्री राकेश भाई, आचार्य प्रवर से कहते हैं।
हे स्वामी सपने में हमको, कई सर्प दिखाई पड़ते हैं।।80।।

दो पाँच और दस नहीं वहाँ, वह सर्प सैकड़ों में रहते।
हम डर के मारे हे स्वामी, तब यहाँ वहाँ भागा करते।।
तब घबराहट में हे स्वामी, वहाँ नींद हमारी खुल जाती।
बाँकी की रात वहाँ हमको, बिलकुल भी नींद नहीं आती।।81।।

आचार्य प्रभु तब कहते हैं, कल सुबह श्री जिन मन्दिर में।
श्रीफल ले करके जाना तुम, श्री पार्श्वनाथ के चरणों में।।
कहना स्वामी हम तो केवल, श्रद्धा से तुमको जानत हैं।
अन्तस के मन से स्वामी, हम नहीं किसी को मानत हैं।।82।।

राकेश भाई ने दूजे दिन, ऐसा ही किया जिनालय में।
तब से नहीं इन्हें स्वप्न आया, उलटा पुलटा कोई रात्रि में।।
संघ के सारे ब्रह्मचारी गण, उत्तम ही लखके अवसर के।
विनती करके गुरुराजा से, चरणों में अर्पित कर फल को।।83।।

।। शिष्यों की गुरु से दीक्षा हेतु विनय ।।

हे नाथ आपके आशीष की, शिक्षा से हम सब ब्रह्मचारी।
हर समय साधना करते हैं, जो है आतम को हितकारी।।
हे स्वामी आप कृपा करके, हम सबको दीक्षा दे करके।
हमरा उद्धार करो स्वामी, हमरी विनती चित्त में धरके।।84।।

सब शिष्यन के गुरुराजा ने, अंतस के भावों को पढ़कर।
अपने अंतरंग के भावों से, आशीष दिया अति हर्षाकर।।
फिर कहा सहर्ष गुरुराजा ने, देवेन्द्र नगर के प्रांगण में।
दीक्षा का कार्य उचित होगा, जिनबिम्ब प्रतिष्ठा उत्सव में।।85।।

यहाँ चऊमासा सम्पन्न हुआ, तब शीतकाल के वाचन को।
आ गये अटा जिन मन्दिर में, लेके संग में अपने संघ को।।
आचार्य प्रवर के वचनों का, जनता पर हुआ असर भारी।
गुरुवर की वाणी सुनने को, आ रहे हजारों नरनारी।।86।।

आचार्य संघ के रुकने से, मेला सा यहाँ लगा रहता।
हर रात दिवाली सी लगती, दिन सावन के जैसा लगता।।
यहाँ के सारे ही श्रावक जन, राकेश भाई ब्रह्मचारी से।
अन्तस से बहुत प्रभावित थे, इनके अति निर्मल भावों से।।87।।

यहाँ लोगों को विश्वास रहा, राकेश भाई जिस चौके में।
पड़गाहन को हो गये खड़े, आचार्य गुरु आ गये उसमें।।
राकेश भाई अब मन्दिर से, श्री गुरु के संग निकला करते।
आहार कराके गुरुवर को, वहाँ ही आहार स्वयं करते।।88।।

इक दिन आचार्य गुरु जी ने, आज्ञा दी सब ब्रह्मचारिन को।
दीक्षा के पहले जावो सब, सम्मेद शिखर के दर्शन को।।
दो चार दिनों के अन्दर सब, पूरी करके यहाँ तैयारी।
तीरथ दर्शन को चले गये, राकेश सहित सब ब्रह्मचारी।।89।।

।। सम्मेद शिखर की वन्दना ।।

दूजे दिन सबही ब्रह्मचारी, सम्मेद शिखर जी में जाकर।
गिरिराजा के दर्शन करते, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
कर तीन वन्दना पर्वत की, जाकर कई अन्य तीरथों में।
वन्दनायें कर सब दीक्षार्थी, वापस आ गये ललितपुर में।।90।।

यहाँ ललितपुर के भक्तों ने, राकेश सहित सब भाइयों की।
अपने अंतरंग के भावों से, शुभ रस्म अदा की गोदी की।।
राकेश भाई गुरु के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
पैदल चलके गुरु के संग में, अन्तस में अति हरषाते हैं।।91।।

गुरुसंघ चाँदपुर से होके, आ गया देवगढ़ तीरथ में।
वहाँ की विशाल प्रतिमाओं को, धर लीना अपने हृदय में।।
पर्वत की महा वन्दना कर, संघ यहाँ से भी बढ़ जाता है।
आकर के पुनः ललितपुर में, कुछ समय यहीं ठहरता है।।92।।

श्री गुरुवर ने आदेश दिया, यहाँ पर ही सभी भाइयों को।
वहाँ पर भी कार्य बिनोली में, सब जावो अपने नगरों को।।
आचार्य प्रभु अब यहाँ से भी, कदमों को सहर्ष बढ़ाते हैं।
श्री सिद्धक्षेत्र द्रोणागिर में, निज संघ सहित ठहराते हैं।।93।।

।। वीना में सभी भाईयों की गोदभराई ।।

श्री विनोद भाई जी ब्रह्मचारी, रहवासी बीना नगरी के।
यहाँ सबसे पहले आये थे, सब दीक्षार्थीगण मिल करके।।
अब बीना बड़ी बजरिया से, ब्रह्मचारी सभी भाइयों का।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, निकला था जुलूस बिनोली का ।।94।।

बीना के सबई जैनियों ने, दूल्हे सम सजे भाइयों की।
अपने अंतरंग के भावों से, हर घर में गोद भराई की।।
श्री विनोद और अजय के घर, सबही दीक्षार्थी भाइयों की।
घरवालों ने गोदी भरकर, भावों में बहुत तसल्ली की।।95।।

।। राकेश भाई का प्रवचन बीना में ।।

संदीप सरल ब्रह्मचारी ने, राकेश भाई ब्रह्मचारी से।
श्री अनेकांत जिन मन्दिर में, प्रवचन कराये आनंद से।।
बीना नगरी के श्रावक जन, प्रवचन सुनने ब्रह्मचारी के।
आये थे सहर्ष हजारों में, अंतरंग भावों में हरषाके।।96।।

बीना से चलकर सभी भाई, आ गये पथरिया नगरी में।
रात्रि में गोद भराई हुई, श्री अरुण भाई के आँगन में।।
यहाँ सवई मुहल्ले वालों ने, दीक्षार्थी के घर आकर के।
सब ही भाइयों की गोदभरी, अंतरंग में भारी हरषा के।।97।।

फिर दूजे दिन दो बजे बाद, एक हाथी पर बैठा करके।
निकला था जुलूस बिनोली का, सब भैयों का अति हरषाके।।
अब सब ही दीक्षार्थी मिलके, इक दूजे के ग्रह नगरों में।
बारी बारी से गये सहर्ष, उन सबकी गोद भराई में।।98।।

तब ही आचार्य प्रभु का संघ, घुवारा से आया भगवाँ में।
ब्रह्मचारी गण भी जा पहुँचे, गुरुराजा के श्री चरणों में।।
भगवाँ के सबई श्रावकों ने, आचार्य प्रवर की अनुमति से।
सबही दीक्षार्थी भइयों का, गोदी भरदी अति आनंद से।।99।।

दूजे दिन जुलूस निकाला था, भैयों को सहर्ष सजा करके।
नगरी के सबई मुहालों में, कई घोड़ों पर बैठा करके।।
उन्नीस पंचानवे विदा हुआ, जनवरी छियानवे आया था।
भगवाँ नगरी से गुरु संघ, द्रोणागिरि में पधराया था।।100।।

।। पंच कल्याणक द्रोणगिरि में ।।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा का उत्सव, फरवरी चार से तीरथ में।
अति ही आनंद से शुरू हुआ, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।
श्री विशदसिन्धु ऐलक जी की, अरु मेरुचन्द्र पंडित जी की।
दीक्षा कल्याणक के दिन में, मुनि दीक्षा हुई दोनों जन की।।101।।

गुरु संघ यहाँ से कर विहार, आ गया मलहरा नगरी में।
अगवानी कर यहाँ के श्रावक, अति हर्षाये मन गगरी में।।
तब यहाँ जतारा के श्रावक, गुरुराजा के ढिंग आ करके।
विनती करते हैं श्री गुरु से, चरणों में शीष झुका करके।।102।।

हे गुरुवर सबही दीक्षार्थी, भाईयों की परम बिनोली को।
ले जाने की अनुमति चाहत, हे स्वामी नगर जतारा को।।
श्री गुरुवर की आज्ञा पाकर, बारह फरवरी छियानवे में।
सब भैयों को संग में लेकर, आ गये वह लोग जतारा में।।103।।

।। जतारा नगर में बिनोली ।।

दूजे दिन सबई भाइयों ने, तेरह फरवरी छियानवे में।
आहार किये अति आनंद से, राकेश भाई के ही ग्रह में।।
सामायिक के पश्चात् यहाँ, सब ही दीक्षार्थी भाइयों को।
दूल्हे की तरह सजा करके, जिन मन्दिर ले गये दर्शन को।।104।।

फिर सजे हुए घोड़ों पर ही, सब भाइयों को बैठा करके।
निकला था जुलूस बिनोली का, संग में कई गाजों बाजों के।।
उस आनंद यात्रा के संग में, सारी नगरी के नरनारी।
नचते गाते चल रहे साथ, शासन के भी कई अधिकारी।।105।।

मारग में जैन अजैन सहर्ष, सब ही दीक्षार्थी भाइयों का।
श्रीफल नगदी अरु रोरी से, करते हैं अंतरंग से टीका।।
दोनों ही तरफ कतारों में, यहाँ खड़े हजारों नर नारी।
राकेश भाई की बोल रहे, सबही आनंद से जयकारी।।106।।

यहाँ सरस्वती शिशु मन्दिर के आचार्यों ने नित अंतरंग से।
नगरी के परम आदमी का, अभिनंदन कीना आनंद से।।
नगरी के सबई मुहल्लों में, सब ही ब्रह्मचारी भाइयों का।
गाजों बाजों का साथ सहर्ष, निकला था जुलूस बिनोली का।।107।।

फिर रात्रि में घर वाले सब, अरु मिलके रिश्तेदारों ने।
गोदी भर दी सब भैयों की, वहाँ सभी मुहल्ले वालों ने।।
ये कलश तीसरा पूर्ण हुआ, श्री विमर्श सिन्धु जीवन पथ का।
आचार्य प्रभु के ही संघ में, वैराग्य हृदय में धरने का।।108।।

।। इति तीसरा कलश ।।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

चतुर्थ कलश

है प्रथम नमन उनको मेरा, जिनने निकृष्ट दुष्ट युग में।
बिन भोगे तन मन के वैभव, तज दिये सभी बालापन में।।
वे श्रेष्ठ महा मुनिराज कई, विचरा करते हैं भारत में।
भूलों को सत्पथ दिखलाना, रहता है उनकी चाहत में।।1।।

जिनका वैभव जिनकी वाणी, शुभ पिछि कमंडल है केवल।
शत्रु व मित्र सभी जन में, जिनकी दृष्टि रहती निर्मल।।
जिनने पापी के पाप सहज, निज ज्ञानकला से हर लीने।
संताप मिटा करके उनका, समता के गुण सिखला दीने।।2।।

वह सकल व्रतों को धारत हैं, रत्नत्रय है उनका गहना।
उनकी स्वासों में दशलक्षण, सोलह कारण उनका सपना।।
वह महा मोह को मथते हैं, कृष करने सभी कषायों को।
सब जीवों की रक्षा करते, नित करते सभी उपायों को।।3।।

जिनकी चर्या को लख करके, श्रावक जन अति हरषाते हैं।
जिनके उपदेशों को सुनके, पापी तक पुण्य कमाते हैं।।
जिनने अध्यात्म पताका को, अपनी चर्या से लहराके।
भारत की सभी दिशाओं को, नापा जिनने पैदल जाके।।4।।

उन मुनियों के श्री चरणों में, हम अपना शीष झुकाते हैं।
इस महाकाव्य के लिखने को, हृदय में उन्हें सजाते हैं।।
यहाँ सरस्वती को शीष नवा, हम चौथा कलश शुरू करते।
श्री विमर्श सिन्धु मुनिनाथा का, आगे का अब वर्णन लिखते।।5।।

।। एक आमसभा जतारा में ।।

अब नगर जतारा वालों ने, बाजार बीच चौराहे पर।
सुन्दर पांडाल बनाया था, साहर्ष श्रावकों ने मिलकर।।
ब्रह्मचारी सवई भाइयों को, तब वहाँ मंच पर बैठाकर।
सम्मान किया गणमान्यों ने, उन सबका भारी हर्षाकर ।।6।।

श्री कपूरचन्द जी बंसल ने, राकेश भाई ब्रह्मचारी का।
गुणगान किया था अन्तस से, देखे-परखे जीवन पथ का।।
माइक पर उनने बोला था, इस सुत ने नगर जतारा का।
वैराग्य धारकर हृदय में, सम्मान बढ़ाया हम सबका।।7।।

श्री सुभाषचन्द जी सिंघई और प्रकाशचन्द्र ने अंतरंग से।
परिवार सहित भैया जी की, तारीफ करी निज हृदय से।।
इस कुल ने ऐसा सुत जनके, बहुमान बढ़ाया नगरी का।
भैया जी ने व्रत धारण कर, सिर ऊँचा किया सभी जन का।।8।।

।। टीकमगढ़ में जुलूस बिनोली का ।।

ब्रह्मचारी सबई जतारा से, टीकमगढ़ नगरी में आये।
यहाँ के श्रावक गोदी भरके, अंतर में भारी हरषाये।।
टीकमगढ़ के हैं रहवासी, वीरेन्द्र भाई जी ब्रह्मचारी।
अति धूमधाम से निकला था, यहाँ भी जुलूस अतिशयकारी ।।9।।

आचार्य प्रभु तब संघ सहित, आ गये थे पन्ना नगरी में।
यहाँ ही सब दीक्षार्थी आ गये, अति हर्षा के मन गगरी में।।
आचार्य प्रवर के चरणों में, उन सबने शीष झुका करके।
अति आदर से दर्शन कीने, गुरु का आशीष हृदय धरके।।10।।

।। पन्ना में जुलूस बिनोली का ।।

तब पन्ना नगरी के श्रावक, श्री गुरुवर से आज्ञा लेकर।
यहाँ गोद भराई करते हैं, सब भैयों की अति हर्षाकर।।
दूजे दिन पन्ना नगरी में, ब्रह्मचारी सबई भाइयों का।
अति धूमधाम के ही संग में, निकला था जुलूस बिनोली का ।।11।।

श्री विरागसिन्धु आचार्य प्रभु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
देवेन्द्रनगर में आकर के, निज संघ सहित रुक जाते हैं।।
देवेन्द्र नगर के सभी भक्त, नगरी की सीमा पर आकर।
अगवानी करते हैं संघ की, अन्तस भावों से हर्षाकर।।12।।

तब नगरी के गणमान्यों ने, यहाँ केन नदी से जल लाके।
श्री गुरु के चरण पखारे थे, अंतरंग में भारी हर्षाके।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को लेकर आये थे, श्री जिन मन्दिर के प्रांगण में।।13।।

।। बिम्ब प्रतिष्ठा देवेन्द्र नगर में ।।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा का उत्सव, देवेन्द्र नगर के प्रांगण में।
फरवरी बीस से शुरू हुआ, उन्नीस छियानवे के सन् में।।
पंडित श्री बाबूलाल पठा, यहाँ प्रमुख प्रतिष्ठाचार्य थे।
देवेन्द्रकुमार सौंरई वाले, इस उत्सव में सहयोगी थे।।14।।

पंडित जी ने विधिपूर्वक ही, यह बिम्ब प्रतिष्ठा नगरी में।
अति आनंद से करवाई थी, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।
फरवरी बाइस को श्री गुरु ने, दीक्षार्थी जन को आनंद से।
अभ्यास यहाँ करवाया था, आहारों का उत्तम विधि से ।।15।।

।। दीक्षार्थी भाईयों का केशलौंच ।।

श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने, दीक्षा कल्याणक के दिन में।
सब भाईयों को आदेश दिया, निज केशलौंच कीजे हित में।।
दीक्षाओं का पावन दिन था, भाइयों का तेइस फरवरी को।
सो केशलौंच कीना सबने, संयम का पथ अपनाने को।।16।।

कर राजकीय शृंगार यहाँ, सबही दीक्षार्थी भाइयों का।
सामायिक के ही बाद सहर्ष, निकला था जुलूस बिनोली का।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
वो जुलूस भाइयों को लेकर, पहुँचा दीक्षा के स्थल में।।17।।

श्री विरागसिन्धु आचार्य गुरु, दीक्षा स्थल पर आनंद से।
निज संघ के साथ विराजे थे, अपनी आसन पर पहले से।।
दीक्षार्थीगण वहाँ जाकर के, गुरु चरणों में झुक जाते हैं।
आशीष पायकर श्री गुरु का, अन्तस में अति हरषाते हैं।।18।।

आचार्य प्रवर ने तभी वहाँ, सब ही दीक्षार्थी भाइयों को।
कीना संकेत बैठने का, संयम पथ के परवानों को।।
तब तीन क्षुल्लकों को गुरु ने, ऐलक पद की दीक्षा देकर।
संग में त्रय ब्रह्मचारी जन को, ऐलक पद दीना हर्षाकर।।19।।

।। राकेश की ऐलक दीक्षा ।।

फिर अन्य सात ब्रह्मचारी भी, क्षुल्लक पद की दीक्षा लेकर।
गुरु चरणों में झुक जाते हैं, अन्तस में भारी खुश होकर।।
राकेश भाई ब्रह्मचारी ने, श्री विराग सिन्धु मुनिनाथा से।
ऐलक पद गुरु से पाया था, विनती करके अति आनंद से।।20।।

राकेश भाई ब्रह्मचारी अब, ऐलक पद पाके हृदय से।
श्री 'विमर्श सिन्धु' कहलाते हैं, नया नाम यहाँ पाके गुरु से।।
तेरह दीक्षायें ये हुई सहर्ष, तेईस फरवरी छियानवे में।
श्री गुरुवर के कर कमलों से, देवेन्द्र नगर के आँगन में।।21।।

तब आस पास के नगरों से, इन दीक्षाओं के लखने को।
लक्ष्याधिक पब्लिक आई थी, ये दृश्य हृदय में धरने को।।
दूजे दिन नये दीक्षार्थियों की, आचार्य संघ के सान्निध्य में।
मुख शुद्धि क्रिया हुई पूरी, विधिपूर्वक अन्तस भावों में।।22।।

श्री विमर्श सिन्धु ऐलक जी ने, आहार क्रिया में पहले दिन।
अपने भावों से नियम लिया, नहीं तेल खायेंगे आजीवन।।
अरु छह महीने को मौन लिया, ऐलक जी ने अति आनंद से।
णमोकार महाव्रत को लीना, तप के हेतु निज अन्तस से।।23।।

उनके यहाँ माता पिता भी थे, उनके अंतरंग के भावों से।
ब्रह्मचर्य महाव्रत लीना था, आजनम यहाँ गुरुराजा से।।
ऐलक विमर्श सिन्धु जी अब, अन्तस से शुद्ध क्रिया करके।
जिनमन्दिर जी से निकले थे, अपने क्रम को चित्त में धरके।।24।।

श्री विमर्श सिन्धु ऐलक जी का, वा दिना बहुत ही आनंद से।
श्री सनतकुमार के चौके में, पड़गाहन होता है विधि से।।
चौ तरफ बैठ के सभी लोग, आहार सहर्ष देते चित्त से।
पर अन्तराय आ जाता है, वहाँ कर्म असाता आने से।।25।।

ऐलक जी उठके चले गये, मुस्काकर अपने भावों से।
पर मात पिता रोते रह गये, इस अन्तराय के आने से।।
नव दीक्षित साधु के पीछे, सब दौड़े गये वसतिका में।
पाने को तनक तसल्ली ही, अपने ही कल्पित भावों में।।26।।

पहले दिन का उपवास रहा, दूजे दिन का भी अन्तराय।
वहाँ समता रहती भावों में, जहाँ आतम का हित ही दिखाय।।
कुछ आवश्यक निर्देश दिये, श्री गुरुवर ने नये सन्तों को।
आगम सिद्धांतों के माफिक, संयम के पथ पर चलने को।।27।।

।। श्रेयांसगिरि में गुरुसंघ।।

श्री विरागसिन्धु आचार्य गुरु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
श्रेयांसगिरि में आकर के, संघ के संग में रुक जाते हैं।।
पर्वत की परम गुफाओं में, प्रभु आदिनाथ जिनराजा के।
संघ के संग में नये सन्तों ने, दर्शन कीने अति हरषाके।।28।।

।। कटनी में गुरु संघ ।।

गुन्नोर पवई से होकर के, संघ आया कटनी नगरी में।
यहाँ अगवानी करके श्रावक, अति हर्षाये मन गगरी में।।
अन्तरायों ने यहाँ नहीं छोड़ा, श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी को।
हफ्ता में दो दिन कम से कम, वह आते फर्ज निभाने को।।29।।

।। गीष्म कालीन वाचना कटनी में ।।

अब यहाँ के सभी श्रावकों ने, गरमी में सहर्ष वाचना की।
श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा से, अंतरंग भावों से विनती की।।
आचार्य प्रवर ने तभी यहाँ, भव्यों के अन्तस को लखकर।
स्वीकृति दे दई वाचना की, अपने शिष्यन से चर्चाकर।।30।।

अब यहाँ वाचना शुरू हुई, जय धवला जी की पुस्तक की।
आचार्य प्रवर के श्रीमुख से, सब जीवों के आतम हित की।।
यहाँ एक घंटा भी कक्षा में, आचार्य प्रवर निज शिष्यों को।
आलाप पद्धति का स्वाध्याय, साहर्ष कराते थे नित को।।31।।

।। आचार्य संघ बहोरी बंद में ।।

आचार्य प्रभु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
बहोरीबंद तीरथ में आके, प्रभु दर्शन को ठहराते हैं।।
श्री विमर्श सिन्धु ऐलक जी को, यहाँ अंतराय ने नहीं छोड़ा।
वह अपना फर्ज निभाने को, बनकर आ जाते हैं रोड़ा।।32।।

श्री शान्तिनाथ के दर्शन कर, संघ आगे कदम बढ़ाता है।
सीहोरा आने के पहले, एक जंगल में रुक जाता है।।
तब वहाँ अचानक रात्रि में, बरसात हुई थी पानी की।
तिरपाल तानकर भक्तों ने, वहाँ रक्षा की गुरुराजों की।।33।।

।। सीहोरा में आचार्य संघ ।।

होते ही सुबह सभी गुरुवर, सीहोरा नगर पधारे थे।
यहाँ अगवानी कर भव्यों ने, श्री गुरु के चरण पखारे थे।।
चौकों की परम व्यवस्था हुई, आचार्य संघ की नगरी में।
श्री विमर्श सिन्धु ऐलक जी को, फिर भी अंतराय हुआ उसमें।।34।।

सब सीहोरा से गुरुसंघ, आया था सहर्ष जबलपुर में।
यहाँ अगवानी करके श्रावक, अति हरषाये अंतापुर में।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुसंघ सहर्ष पधराया था, श्री लार्डगंज के मन्दिर में।।35।।

आचार्य संघ से मिलन हुआ, यहाँ विशुद्ध सिन्धु मुनिराजा का।
दोनों संघों का मिलन देख, मन हर्षाया श्रावक जन का।।
श्री सुरेश सरल ने श्री गुरु के, यहाँ पहली बार किये दर्शन।
जिनने भावों से लिखे यहाँ, कई ऋषियों के जीवन दर्शन।।36।।

कुछ दिना बाद आचार्य संघ, यहाँ से भी कदम बढ़ाता है।
श्री पिसनहारी की मढ़िया में, आकर के अति हरषाता है।।
यहाँ षाढ़ सुदी चौदस के दिन, श्री गुरुवर के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, उन्नीस छियानवे के सन् का।।37।।

।। वर्षायोग जबलपुर में (1996) का ।।

श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी का, इस पिसनहारी मढ़िया में।
पहला चऊमासा होय रहा, उन्नीस छियानवे के सन् में।।
गोम्मटसार जी कर्मकाण्ड, मढ़िया जी के चऊमासे में।
तत्त्वार्थ वृत्ति कातंत्र आदि, के ग्रन्थ निरत कक्षाओं में।।38।।

श्री विरागसिन्धु आचार्य गुरु, संघस्थ सभी साधु जन को।
नियमित ही रोज पढ़ाते थे, उनके ही उत्तम जीवन को।।
संस्कार शिविर का आयोजन, दसलक्षण के प्रिय पर्वों में।
होता है यहाँ पर आनंद से, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।39।।

श्री विमर्श सिन्धु ऐलक जी भी, नितही शिवरार्थी भाइयों को।
प्रतिक्रमण कराते भावों से, उनकी ही आतम के हित को।।
चऊमासे के पश्चात् यहाँ, होवत पिच्छिका परिवर्तन।
श्री विमर्श सिन्धु ऐलक स्वामी, जिसका करते हैं संचालन।।40।।

आचार्य प्रभु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कोनी जी अतिशय तीरथ में, दर्शन करने रुक जाते हैं।।
यहाँ से भी चलके गुरुराजा, आ गये कटंगी नगरी में।
श्रावक यहाँ के अगवानी कर, अति हर्षायें मन गगरी में।।41।।

।। कल्पद्रुप विधान कटंगी में ।।

आचार्य संघ के सान्निध्य में, यहाँ कल्पद्रुम मंडल विधान।
अति ही आनंद से होता है, जग शान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।
इस महाकाव्य का लेखक भी, इस उत्सव में यहाँ आया था।
आचार्य संघ के दर्शन कर, अन्तस में अति हरषाया था ।।42।।

।। आचार्य संघ कुण्डलपुर में ।।

श्री विरागसिन्धु आचार्य गुरु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कुण्डलपुर तीरथ में आके, संघ के संग में रुक जाते हैं।।
यहाँ विमर्शसिन्धु ऐलक जी ने, अपने गुरुराजा के संग में।
बड़े बाबा के दर्शन कीने, अति हर्षाके अपने मन में।।43।।

।। आचार्य संघ नैनागिर में ।।

दमोह पथरिया होके संघ, अब आया था नयनागिर में।
पारस प्रभु के दर्शन करके, अति हरषाया अपने उर में।।
श्री विमर्श सिन्धु ऐलक जी को, अन्तराय सदा ही आने पर।
सेहत पर असर पड़ा भारी, कभी उलटी भी हो जाने पर।।44।।

ऐलक जी की सेहत लखके, गुरुवर को चिंता हुई भारी।
अब इनके नित आहारों की, दो बहिनें करतीं तैयारी।।
यहाँ वैद्यराज जी ने लखके, टीवी बतला दीनी इनको।
तब दूध नमक मीठा त्यागा, ऐलक जी ने आतम हित को।।45।।

।। सिद्धचक्र विधान घुवारा में ।।

अब नैनागिर से कर विहार, संघ आया घुवारा नगरी में।
यहाँ अगवानी करके श्रावक, अति हर्षाये मन गगरी में।।
श्री सिद्धचक्र मंडल विधान, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।
अति ही आनंद से होता है, घुवारा नगरी के प्रांगण में।।46।।

।। आचार्य संघ करगुवाँ जी में ।।

अब बड़गाँव से होकर के, संघ आया क्षेत्र करगुवाँ में।
गुरु के गुरु का दर्शन करके, खुश हुए सभी निज अन्तस में।।
श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी ने, सम्राट तपस्वी श्री गुरु के।
यहाँ पहली बार किये दर्शन, अति हरषाके दादा गुरु के।।47।।

त्रेपनवी पुण्यतिथि पावन, आदिसागर मुनिनाथा की।
सब शिष्य मनाते हैं उनके, भूमि पर तीर्थ करगुवाँ की।।
अपने सब शिष्यों के संग में, श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने।
गुरुराजा के दर्शन करके, यहाँ से भी कदम बढ़ा दीने।।48।।

अब नगर ओरछा से होके, संघ आया था टीकमगढ़ में।
सीमा पर करके अगवानी, श्रावक अति हर्षाये उर में।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को सब लेके आये, बाजारपुरा के मन्दिर में।।49।।

।। अध्यात्म वाचना टीकमगढ़ में ।।

आध्यात्मिक वाचना हुई यहाँ, एक हफ्ते की गुरु के मुख से।
त्रय दिन की विद्वत संगोष्ठी, यहाँ होती है अति आनंद से।।
श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी ने, त्रय दिन तक इस संगोष्ठी में।
विद्वानों के अनुभव लीने, हर्षित होकर के अन्तस में।।50।।

अध्यात्म मनोबल था ऊँचा, श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी का।
अति श्रेष्ठ मनोबल होने से, मिट गया रोग इनके तन का।।
श्री विजय मति गणिनी माता, आचार्य प्रवर के दर्शन को।
यहाँ संघ के संग में आईं थी, पूरी करने निज इच्छा को।।51।।

।। सिद्धक्षेत्र सोनागिर में ।।

दोनों संघों का मिलन हुआ, वात्सल्यमयी अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई यहाँ आनंद से कुशल समाचारी।।
आचार्य प्रभु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
पृथ्वीपुर दतिया से होकर, सोनागिर में ठहराते हैं।।52।।

यहाँ चन्द्रप्रभ की प्रतिमा के, दर्शन कीने अति आनंद से।
गिरिराजा के दर्शन करके, बढ़ जाते हैं सोनागिर से।।
अब होके डबरा नगरी से, आचार्य गुरु महाराजा के।
बढ़ चले भिण्ड की ओर कदम, संयम पथ के सरताजा के।।53।।

ग्वालियर नगरी की सीमा में, श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा की।
नगरी के सबई श्रावकों ने, अति आनंद से अगवानी की।।
दूजे दिन चर्या करके गुरु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
यहाँ भिण्ड नगर के सभी भक्त, संघ का विहार करवाते हैं।।54।।

मेंहगाँव होय के गुरुसंघ, आ गया भिण्ड की नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हर्षाये मन गगरी में।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को लाये थे श्रावक, नगरी के सदर जिनालय में।।55।।

।। 1997 का वर्षायोग भिण्ड में ।।

उन्नीस जुलाई के दिन में, यहाँ श्री गुरु के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, उन्नीस संतानवे के सन् का।।
यहाँ दोनों टाइम श्री गुरु के, प्रवचन होते हैं हितकारी।
जिनको सुनके ऐलक जी की, खिल गई आतम की क्यारी।।56।।

यह भिण्ड नगर में चौमासा, श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी का।
गुरुवर के संग में दूजा है, उन्नीस संतानवे के सन् का।।
श्री विमर्श सिन्धु ऐलक जी ने, यहाँ शुरू किया कविता लिखना।
'जीवन है पानी की बूँद' यह है प्रसिद्ध इनकी रचना।।57।।

ऐलक जी की इस रचना को, गुरुओं ने और श्रावकों ने।
पढ़ करके बहुत सराहा है, जैनेतर सबई भाइयों ने।।
ऐलक जी ने इस रचना को, अपने अंतरंग के भावों से।
गुरुवर को यहाँ सुनाया था, अत्यन्त मधुर मीठे स्वर से।।58।।

आचार्य प्रभु ने खुश होकर, ऐलक जी को अति आनंद से।
मंगल आशीष दिया भारी, कविता को सुनकर भावों से।।
यहाँ हुए अनेकों धर्मकार्य, इस नगरी के चऊमासे में।
अति धूमधाम के साथ सभी, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।59।।

आचार्य संघ के रुकने से, मेला सा यहाँ भरा रहता।
हर रात दीवाली सी लगती, दिन सावन के जैसा लगता।।
संस्कार शिविर भी शुरू हुआ, यहाँ दस लक्षण के पर्वों में।
अति ही आनंद से भाग लिया, छह शतक श्रावकों ने जिसमें।।60।।

श्री विमर्श सिन्धु ऐलक जी ने, तेला भी किया रत्नत्रय में।
निरंतराय पारणा हुई यहाँ, श्री विमल जैन के चौके में।।
भक्तों ने अति हर्षा करके, तब तेला के उद्यापन में।
कई चाँदी के उपकरण यहाँ, तब दीने सहर्ष मन्दिरों में।।61।।

अब वर्षायोग समाप्त हुआ, तब आठ नवम्बर के दिन में।
छठवाँ आचार्य पदारोहण, यहाँ मना गुरु का नगरी में।।
श्री विमर्श सिन्धु ऐलक जी ने, तब पिच्छि के परिवर्तन में।
कार्यक्रम का कीना संचालन, गुरु आज्ञा को धरके चित्त में।।62।।

श्री विमर्श सिन्धु ऐलक जी के, गृहस्थाश्रम के मातापितु ने।
आज सहर्ष गुरुराजा से, दो प्रमिताओं के व्रत लीने।।
फिर शीतकालीन वाचना भी, आचार्य प्रवर के श्रीमुख से।
अप्रैल माह तक चली यहाँ, गुरु भक्तों के अति आग्रह से।।63।।

।। आचार्य संघ फूप ग्राम में ।।

छह मई को श्री आचार्य प्रवर, उन्नीस अठानवे के सन् में।
यहाँ से भी कदम बढ़ते हैं, अपने संघ को लेके संग में।।
अब फूप ग्राम में आके संघ, चर्या करता अति आनंद से।
यहाँ विमर्शसिन्धु ऐलक जी को, आया अंतराय असाता से।।64।।

श्री विहर्षसिन्धु ऐलक जी को, दूजे दिन यहाँ आहारों में।
आचार्य प्रवर ने भेजा था, ऐलक जी के संग चौका में।।
श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी को, उस दिन भी कर्म असाता से।
अंतराय हुआ आहारों में, छोटा सा बाल निकलने से।।65।।

आचार्य प्रभु को ऐलक जी, अंतराय तीन हो जाने से।
दुर्बल से दिखने लगे यहाँ, तब लगातार अंतराओं से।।
सो अगले दिन आचार्य प्रभु, ऐलक जी के संग चौका में।
आहार कराने स्वयं गये, ममता जगने से अन्तस में।।66।।

।। संघ इटावा में ।।

तब निरंतराय आहार हुआ, उस दिना सहर्ष ऐलक जी का।
सो विहार यहाँ से होना है, संघस्थ सभी महाराजों का।।
दूजे दिन तेरह मई को संघ, पहुँचा था नगर इटावा में।
अगवानी कर श्रावकबंधु, यहाँ हर्षाये अपने उर में ।।67।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुसंघ को सब ले जाते हैं, श्री लालपुरा मन्दिरजी में।।
भक्तामर शिविर लगा न्यारा, यहाँ ग्रीष्मकालीन वाचना में।
बालक अरु वृद्ध जवानों ने, अन्तस से भाग लिया जिसमें।।68।।

।। सिरसागंज में आचार्य संघ ।।

आचार्य प्रभु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
सिरसागंज नगरी में आके, चर्या करने रुक जाते हैं।।
श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी को, अंतराय यहाँ पर होने से।
एक दिना यहाँ ही रुके रहे, आचार्य प्रवर की आज्ञा से।।69।।

उस ही दिन श्री आचार्य गुरु, यहाँ से विहार कर जाते हैं।
श्री तीरथक्षेत्र वटेश्वर में, संघ के संग में रुक जाते हैं।।
श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी को, दूजे दिन भी सिरसागंज में।
करमों का लेख न मिटने से, अंतराय हुआ आहारों में।।70।।

श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी का, आहार तीसरे दिन करके।
सिरसागंज से होवत विहार, श्रावक जन को संग में लेके।।
रात्रि विश्राम किया था तब, ऐलक संघ ने इक थाने में।
हो गया धन्य पुलिस थाना, जिन ऋषियों के ठहराने में।।71।।

दूजे दिन पहुँचे ऐलक जी, श्री सिद्धक्षेत्र बटेश्वर में।
अपनी आतम के हित हेतु, प्रभु नेमिनाथ के चरणों में।।
ऐलक दीक्षा का समारोह, पच्चीस जून अंठानवे में।
गुरु राजा के कर कमलों से, श्री सिद्धक्षेत्र बटेश्वर में।।72।।

श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी ने, इस समारोह का आनंद से।
अति उत्तम कीना संचालन, आचार्य प्रभु की अनुमति से।।
इस समारोह के बाद गुरु, शौरीपुर तीरथ में आये।
नेमिप्रभु के दर्शन करके, अंतरंग में भारी हरषाये।।73।।

श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी ने, जीवन पानी की बूँद भजन।
अपनी वाणी से सुना यहाँ, जनता का जीत लिया था मन।।
आचार्य प्रवर ने प्रिय शिष्य का अन्तस से भजन सराहा था।
कोयल सम मीठी वाणी सुन, श्री गुरु का मन हरषाया था।।74।।

।। शौरीपुर में आचार्य संघ ।।

यहाँ भिण्ड इटावा के श्रावक, विनती करने चऊमासे की।
गुरुवर के पास पधारे थे, उन्नीस अंठानवे के सन् की।।
तब भिण्ड नगर के भक्तों को, आशीष मिला चऊमासे का।
अब विहार यहाँ से होता है, संघ के संग में गुरुराजा का।।75।।

कई ग्रामों नगरों से होकर, गुरुराजा कदम बढ़ाते हैं।
चंवल अंचल की धरती को, पद कमलों से महकाते हैं।।
तब चंवल को गुरुराजा ने, संघस्थ सभी महाराजों को।
नौका से कीनी पार सहर्ष, कच्चे मारग से आकर के।।76।।

।। आचार्य संघ भिण्ड नगर में ।।

अब भिण्ड नगर के नर नारी, नगरी की सीमा पर जाकर।
ऐतिहासिक करते अगवानी, गुरुराजों की अति हर्षाकर।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुसंघ को लेके गये सभी, यहाँ के ही परेड जिनालय में।।77।।

।। 1998 का वर्षायोग भिण्ड में ।।

यहाँ षाढ़ सुदी चौदस को ही, श्री गुरु संघ के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, उन्नीस अंठानवे के सन् का।।
अब हुए अनेकों धर्मकार्य, इस नगरी के चऊमासे में।
अति धूमधाम के साथ सभी, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।78।।

यह भिण्ड नगर का चौमासा, श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी का।
तीजा चऊमासा गुरुसंग में, उन्नीस अंठानवे के सन् का।।
जब वर्षायोग समाप्त हुआ, तब आठ नवम्बर के दिन में।
सप्तम आचार्य पदारोहण, मनता है संघ के सान्निध्य में।।79।।

।। श्री अतिशय क्षेत्र बरासों में ।।

पिच्छि परिवर्तन का समारोह, इस भिण्ड नगर के आँगन में।
अति आनंद से सम्पन्न हुआ, ऐलक जी के संचालन में।।
इस समारोह के बाद गुरु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
श्री अतिशय क्षेत्र बरासों में, संघ के संग में आ जाते हैं।।80।।

।। मुनिदीक्षा समारोह बरासों में ।।

चौदह तारीख दिसम्बर को, उन्नीस अंठानवे के सन् में।
तेरह दीक्षाएँ हुई सहर्ष, गुरुवर के द्वारा तीरथ में।।
तब यहाँ कमेटी वालों ने, अति सुन्दर मंच बनाया था।
आचार्य प्रभु को संघ सहित, वहाँ मंचासीन कराया था।।81।।

पंडित नीरज जी सतना ने, संचालन इस आयोजन का।
अति ही आनंद के साथ किया, पालन कर गुरु की आज्ञा का।।
कई ऐलक और क्षुल्लकों संग, श्री विमर्शसिन्धु ऐलक जी ने।
मुनिपद की दीक्षा धारण की, अपनी ही आतम में रमने।।82।।

श्री रमेशचन्द्र जी ब्रह्मचारी, गुरुवर से दीक्षा ले करके।
मुनि विश्ववीर बन जाते हैं, संयम को हृदय में धरके।।
तब आस पास के नगरों से, यह दृश्य हृदय में धरने को।
लक्ष्याधिक जनता आई थी, गुरुओं के पावन दर्शन को।।83।।

दीक्षा के बाद परम गुरु के, उस जनता ने जयकारों से।
धरती आकाश हिला दीना, जय जय के पावन नारों से।।
यहाँ आये सबई दर्शकों ने, इस समारोह की अन्तस से।
अति भूरि भूरि सराहना की, खुश होकर भारी आनंद से।।84।।

श्री पूज्य विमर्शसागर जी ने, दो लिखी पंक्तियाँ अन्तस से।
जग जन की आतम के हेतु, हमने यहाँ लिखी जिन्हें मन से।।
''काँटों में भी जीवन तेरा, फूलों सा खिल जायेगा।
खोज रहा है जिसको तू, वह पलभर में मिल जायेगा''।।85।।

जब पर से नाता छोड़ यहाँ, तू अपना ध्यान लगायेगा।
तू चाह रहा जिसको मन से, वह तू ही खुद बन जायेगा।।
यह लिखी पंक्तियाँ श्री गुरु की, जग जन के अन्तस भावों में।
नितप्रति ही गूँजा करती हैं, सुख दुख की दोनों घड़ियों में।।86।।

।। भिण्ड नगर में आचार्य संघ ।।

श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा जी, श्री अतिशय क्षेत्र बरासों से।
तब भिण्ड नगर में आये थे, शिष्यों के संग अति आनंद से।।
यहाँ भिण्ड नगर के भक्तों ने, नई साल उन्नीस निन्यानु में।
गुरु संघ की कीनी अगवानी, दूजी तिथि पहले महीने में।।87।।

।। आ. पुष्पदंत सागर जी से मिलन ।।

श्री पुष्पदंत आचार्य गुरु, यहाँ संघ के संग में आये थे।
वह गुरु संघ से मिल करके, अन्तस में अति हरषाये थे।।
वात्सल्य मिलन गुरुराजों का, नगरी की जनता ने लखके।
आनंद अश्रु बरसाये थे, वात्सल्यता को चित्त में धरके ।।88।।

जनवरी तीस को नगरी में, कवि सम्मेलन जिनदर्शन का।
दोपहर समय में होता है, अति आनंद से जिन सन्तों का।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, कविता कीनी अति आनंद से।
जिसको सुनकर श्रोताओं ने, की बहुत प्रशंसा अन्तस से ।।89।।

तब पुष्पदंत सागर जी ने, मुनि विमर्शसिन्धु की कविता को।
अन्तस से बहुत सराहा था, मुनिराजा की गुण क्षमता को।।
श्री विरागसिन्धु आचार्य प्रभु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।।
कई ग्रामों नगरों से होकर, वह पुनः भिण्ड आ जाते हैं।।90।।

श्री विमर्शसिन्धु जी मुनिराजा, आचार्य प्रवर के श्री संघ में।
करते रहते हैं विहार सदा, अपनी ही आतम के हित में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, दो बरसों में श्री गुरुवर से।
संस्कृत के ही कई ग्रन्थों का, अध्ययन कीना निज भावों से।।91।।

।। 1999 का वर्षायोग भिण्ड में ।।

सत्ताइस जुलाई के दिन में, श्री गुरु संघ के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, उन्नीस निन्यानवे के सन् का।।
मुनिपद का पहला चौमासा, यह भिण्ड नगर के आँगन में।
गुरु के संग में मुनिराजा का, होवत चैत्यालय मन्दिर में।।92।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, संघ के सबही गुरु भाइयों में।
लोकप्रियता अर्जित की भारी, संचालन और वचनिका में।।
श्री मुकट सप्तमीं को ही यहाँ, दीक्षाओं के आयोजन में।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, संचालन कीना था जिसमें।।93।।

तब सात हुईं थीं दीक्षायें, इस नगरी में ऐलक पद की।
लक्ष्याधिक श्रावक आये थे, यहाँ प्यास बुझाने अँखियों की।।
यहाँ हुए अनेकों धर्मकार्य, इस नगरी के चऊमासे में।
अति धूमधाम के साथ सभी, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।94।।

प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक वदी अमावस में।
भक्तों ने सहर्ष मनाया था, श्री गुरु के पावन सान्निध्य में।।
उसही दिन सब गुरुराजों ने, विधिपूर्वक ही चऊमासे का।
निष्ठापन कीना आनंद से, उन्नीस निन्यानवे के सन् का।।95।।

।। पंचकल्याणक भिण्ड में ।।

इस चऊमासे में शिष्यों को, आचार्य प्रवर ने श्री मुख से।
त्रिलोकसार का गहन रोज, स्वाध्याय कराया आनंद से।।
जिनबिम्ब प्रतिष्ठा हुई यहाँ, छब्बीस जनवरी के दिन से।
यहाँ कीर्ति स्तम्भ परिसर में, इस नगरी में अति आनंद से।।96।।

इस उत्सव के पश्चात् गुरु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
अब बुंदेलों की धरती को, पद कमलों से महकाते हैं।।
श्री विशुद्ध सिन्धु मुनिराजा ने, झाँसी नगरी में गुरुसंघ की।
नगरी के सभी श्रावकों संग, अति आनंद से अगवानी की।।97।।

।। करगुवाँ तीरथ में गुरुसंघ ।।

झाँसी नगरी का किला और, यहाँ के प्रसिद्ध म्यूजियम का।
अवलोकन कीना गुरुओं ने, इक दिन इनकी गुणवत्ता का।।
यहाँ से भी संघ करके विहार, आ गया करगुवाँ तीरथ में।
यहाँ पार्श्वनाथ के दर्शन कर, अति हर्षाया अपने उर में।।98।।

।। पंचकल्याणक करगुवाँ जी में ।।

जिन बिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, उन्नीस मार्च को तीरथ में।
अति आनंद से सम्पन्न हुआ, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।
इक क्षुल्लक दीक्षा होती है, दीक्षा कल्याणक के दिन में।
श्री बाबूलाल मड़ावरा की, यहाँ दो हजार ईसा सन् में।।99।।

तब विश्वज्योति जी नाम रखा, श्री गुरुवर ने क्षुल्लक जी का।
यहाँ ही श्री गुरु से मिलन हुआ, वरदत्त सागर मुनिराजा का।।
श्री विरागसिन्धु आचार्य गुरु, अपने संघ को संग में लेके।
जाते हैं क्षेत्र शिखर जी को, दर्शन करने गिरराजा के।।100।।

।। प्रथक संघ मुनिराजा का ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के, तन में कमजोरी दिखने से।
यह लम्बी यात्रा करने को, गुरु को नहीं लगे सही तन से।।
सो विश्वपूज्य मुनि के संग में, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा को।
एक संघ बनाकर छोड़ा था, यहाँ आस पास में रहने को।।101।।

श्री विरागसिन्धु मुनिराजा जी, संघस्थ साधुओं के संग में।
सम्मेद शिखर की ओर बड़े, प्रभु दर्शन की अभिलाषा में।।
यह चौथा कलश हुआ पूरा, श्री विमर्श सिन्धु जीवन पथ का।
सत्ताइस वर्ष की उम्मर का, मुनिपद की पावन दीक्षा का।।102।।

।। इति चौथा कलश ।।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

पाँचवाँ कलश

।। मंगलाचरण ।।

महावीर प्रभु के शासन को, जिनने सत् शासन माना है।
उनके ही शासन में जिनने, निज आतम को पहिचाना है।।
जो अपने ही वचनामृत से, अध्यात्म सुधा बरसाते हैं।
जग–जन के कालुष भावों को, गुणसागर में नहलाते हैं।।1।।

उन सभी महा मुनिराजों के, चरणों में शीश झुका अपना।
स्थिर करता हूँ अंतरंग को, पूरा करने मन का सपना।।
मिथ्यादृष्टि आगे चलकर, सत् सम्यग्दृष्टि बन जाता।
सम्यग्दृष्टि नीचे गिरकर, मिथ्यात्व हृदय में अपनाता।।2।।

हर आतम का निर्मल स्वभाव, सत् ज्ञानमयी बतलाया है।
पुद्गल के संग में रहने से, यहाँ मूढ़ दृष्टि कहलाया है।।
काया से वस्त्र उतरने पर, आतम नहीं होती हीन भार।
भावों का भार उतरने पर, होती है आतम निर्विकार।।3।।

पर से तजने पर राग यहाँ, कुछ त्याग नहीं बतलाया है।
निज से ही राग तजेगा जो, वह ही निर्ग्रन्थ कहाया है।।
निज भाव सदा शीतल होते, पर भाव बदलते हैं भाई।
निज भावों में रहने वाले, होते आतम के हितदाई।।4।।

सत् समयसार का सार सही, जो स्व–पर को समझाते हैं।
वह महा मुनीश्वर भावों से, आतम का हित उपजाते हैं।।
यहाँ सभी भटकते जीवों को, जो सम्यक् पथ बतलाते हैं।
वे विमर्शसिन्धु जी मुनिराजा, आतम को निरत तपाते हैं।।5।।

अब पंचम कलश शुरू करते, जिसमें एक श्रेष्ठ कहानी है।
बिन भोगे त्याग दिया वैभव, जिसकी यह सही निशानी है।।
श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने, क्या अनुपम बाग लगाया है।
फल फूल लगे जिनमें उत्तम, जिनने जग को महकाया है।।6।।

उन फूलों में एक महाफूल, श्री विमर्शसिन्धु गुण के सागर।
उसही सागर से भर ली है, हमने अपने मन की गागर।।
वह गागर ही यहाँ छलक रही, मुनिराजा के गुण गाने को।
निज जीवन के अंधियारे में, आस्था के दीप जलाने को।।7।।

।। झाँसी नगरी में मुनिसंघ ।।

श्री विशद विमर्श दोनों साधु, ससंघ करगुवाँ तीरथ से।
झाँसी नगरी में पधराये, गुरु भक्तों के अति आग्रह से।।
सीमा पर नगरी के श्रावक, गुरुओं की करते अगवानी।
गुरुओं के चरण पखारे थे, यमुना से ला उज्ज्वल पानी ।।8।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
सन्तों को लेकर आये सब, नगरी के बड़े जिनालय में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, दोपहर बाद अति आनंद से।
मृदुवाणी से प्रवचन कीने, गुरु भक्तों के अति आग्रह से।।9।।

।। गुरुसंघ पवाजी में ।।

अब दोनों संघों के मुनिवर, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
आकर के नगर बवीना में, चर्या करने रुक जाते हैं।।
यहाँ से भी चल के दोनों संघ, आ गये सहर्ष पावागिर में।
दर्शन करके प्रभु वीरा के, अति हर्षाये अपने उर में।।10।।

।। मुनिसंघ तालबेहट में ।।

यहाँ भिण्ड नगर के गुरुभक्त, दोनों संघ के महाराजों का।
अन्तस् से विहार कराते हैं, धरके भी ध्यान व्यवस्था का।।
अब पवाक्षेत्र से दोनों संघ, आगे निज कदम बढ़ाते हैं।
यहाँ तालवेहट के भक्त सभी, अगवानी कर हरषाते हैं।।11।।

अप्रैल पाँच को विशदसिन्धु, संघ के संग में अति आनंद से।
प्रथक विहार कर जाते हैं, इस तालबेहट की नगरी से।।
विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, संघ के संग में यहाँ ही रहके।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, भव्यों का हित चित में धरके।।12।।

सोलह अप्रैल कहा पावन, तब वीर जयंती नगरी में।
अति धूमधाम से मनती है, श्री विमर्शसिन्धु के सान्निध्य में।।
अति ही विशाल आनंद यात्रा, तब निकली पूरी नगरी में।
श्री मुनि के पावन चरणों का, प्रक्षाल हुआ था हर घर में।।13।।

यहाँ ग्रीष्मकालीन वाचना को, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा से।
इस नगरी के गणमान्यों ने, विनती की अंतरंग भावों से।।
श्री मुनिवर ने सब भक्तों के, अंतरंग के भावों को लखकर।
स्वीकृति दे दी यहाँ वाचन की, संघस्थ मुनि से चरचा कर।।14।।

तब सम्यग्ज्ञान शिविर लगा, इक महीने का इस नगरी में।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के, संघ के ही पावन सान्निध्य में।।
नित प्रातः से भक्तामर पर, प्रवचन होते हैं गुरु मुख से।
दोपहर बाद कक्षा लगती, छहढाला की अति आनंद से।।15।।

नगरी के सारे श्रावकजन, इस ज्ञानयज्ञ में आ करके।
नित नये पापों से बच जाते, मुनिश्री की वाणी चित धरके।।
ये शिविर समापन होता है, सत्ताइस मई को आनंद से।
शिवरार्थी अति खुश होते हैं, कुछ नियम लेय के मुनिश्री से।।16।।

रात्रि का भोजन तज करके, रोजाना दर्शन पूजन का।
लेते हैं नियम सभी श्रावक, नित स्वाध्याय भी करने का।।
आजन्म त्याग कीना सबने, गुटका तम्बाकू सिगरेट का।
बाजारू पेय पदार्थ सभी, भोजन तज दीना होटल का।।17।।

उपयोग तजा है चमड़े का, अरु त्यागा तीन मकारों को।
आजन्म तजे हैं जमीकंद, अरु त्यागा अनछाने जल को।।
कई नियम लिये हैं भव्यों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा से।
जीवन को सफल बनाने को, बचने को नित नये पापों से।।18।।

अब दो हजार ईसा सन् की, इकतीस मई को आनंद से।
कीना है गमन मुनिसंघ ने, इस तालबेहट की नगरी से।।
इस बुन्देलों की धरती को, श्री विमर्शसिन्धु ने आनंद से।
महकाया रोज गमन करके, अपने पावन श्री चरणों से।।19।।

।। अतिशय क्षेत्र सेरोन जी में ।।

होकर संघ ग्राम जखोरा से, सेरोन क्षेत्र पर आया था।
श्री शान्तिनाथ के दर्शन कर, अन्तस् में अति हरषाया था।।
यहाँ ग्राम जखोरा के श्रावक, विनती करते मुनिराजा से।
हे नाथ! हमारे नगर चलो, यह विनय हमारी भावों से।।20।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, भक्तों के भावों को लखकर।
स्वीकृति दे दी वहाँ चलने की, संघस्थ मुनि से चर्चाकर।।
श्रुत पाँचे का पावन उत्सव, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।
साहर्ष मनाते हैं श्रावक, निजके ही ग्राम जखोरा में।।21।।

।। सिद्धचक्र विधान तालबेहट में ।।

दूजे दिन दोनों मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
तब तालबेहट की नगरी में, आकर के अति हरषाते हैं।।
यहाँ आठ जून से शुरू हुआ, श्री सिद्धचक्र मंडल विधान।
मुनिसंघ के पावन सान्निध्य में, जग की शान्ति का अनुष्ठान।।22।।

तब श्रुतनंदी मुनिराजा का, संघ तालबेहट में आया था।
श्री विमर्शसिन्धु मुनि के संघ से, मिल करके अति हर्षाया था।।
दोनों संघों का मिलन यहाँ, होता है अति अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, आनंद से कुशल समाचारी।।23।।

अब यहाँ जखोरा के श्रावक, मुनिराजा के श्री चरणों में।
विनती करते हैं अन्तस् से, चलने को नगर जखोरा में।।
अब पुनः जखोरा ग्राम ओर, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
साहर्ष चरण बढ़ जाते हैं, भक्तों की विनती चित्त धर के।।24।।

।। गुरुराजा ग्राम जखौरा में ।।

अब ग्राम जखौरा के श्रावक, अपनी नगरी की सीमा पर।
करते हैं संघ की अगवानी, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
यहाँ सभी श्रावकों ने चित से, मुनिश्री के चरण पखारे थे।
घृत के दीपों से आरती कर, निज मन के दीप उजारे थे।।25।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, सब आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को सब ले जाते हैं, श्री पारसनाथ जिनालय में।।
जब लोगों को मालूम हुआ, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा जी।
सत्ताइस वर्ष के होय गये, संयम पथ के सरताजा जी।।26।।

अट्ठाइसवीं जन्म जयंती भी, मुनिराजा की इस नगरी में।
सब भक्त मनाते हैं मिलके, अति हर्षाके मन गगरी में।।
इस उत्सव में कई नगरों के, गुरुभक्त यहाँ पर आये थे।
विनयांजली देके श्री गुरु को, अन्तस् में अति हरषाये थे।।27।।

उस दिन नगरी के भक्तों ने नगरी के हर चौराहों पर।
मीठा भी वितरित करवाया, जनता में भारी हरषाकर।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के, गृहस्थाश्रम के लघु भ्राता ने।
मुनि श्री के चरण पखारे थे, जीवन में पावनता भरने।।28।।

श्री विश्वकीर्ति मुनिराजा जी, ससंघ यहाँ पर आये थे।
दोनों संघों के साधुजन, मिलकर के अति हर्षाये थे।।
यह दोनों संघ के साधुजन, एक ही गुरु से दीक्षा लेकर।
आतम का हित उपजाते हैं, संयम को भावों में धरकर।।29।।

मुनि विश्वकीर्ति संघ सहित, यहाँ चार दिना संघ में रहके।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, अपनी मंजिल चित में धरके।।
अट्ठाइस जून को शाम समय, श्री विमर्शसिन्धु संघ के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, तब दो हजार ईसा सन् में।।30।।

बाँसी चिगलौआ हो करके, गुरु बानपुर के तीरथ में।
आ करके अति हरषाये थे, दर्शन कर शान्ति जिनालय में।।
तब महरौनी के गुरु भक्त, आ गये बानपुर तीरथ में।
दोनों ही महा मुनिराजों को, ले जाने को निज नगरी में।।31।।

।। मुनिसंघ मड़ावरा में ।।

दूजे दिन दोनों महामुनि, आ गये नगर महरौनी में।
यहाँ अगवानी करके श्रावक, ले गये बड़े जिन मन्दिर में।।
अब चौथे दिन श्री गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
आ करके नगर मड़ावरा में, विश्राम हेतु रुक जाते हैं।।32।।

।। अतिशय क्षेत्र गिरार जी में ।।

यहाँ ग्यारह भव्य जिनालय हैं, तिनके दर्शन वन्दन करके।
श्री गिरार क्षेत्र की ओर बढ़े, आदि प्रभु को चित्त में धरके।।
दोपहर बाद मुनि राजा ने, अपनी अमृतमयी वाणी से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, बचने को नित नये पापों से।।33।।

श्री गिरारगिरि के तीरथ में, कई नगरों के श्रावक आये।
मुनिराजों के दर्शन करके, अंतरंग में भारी हरषाये।।
निज नगरी में चऊमासे की, यहाँ सभी श्रावकों ने गुरु से।
दोनों कर जोड़ करी विनती, अपने अन्तस मयी भावों से।।34।।

पर महरौनी के भव्यों को, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का।
आशीष सहित अति हर्षाके, वरदान मिला चऊमासे का।।
दसवीं तारीख जुलाई में, श्री गिरारगिरि के तीरथ से।
दोनों ही महामुनिराजों का, हो गया गमन अति आनंद से।।35।।

।। पुनः मड़ावरा में मुनिसंघ ।।

दूजे दिन नगर मड़ावरा में, दोनों मुनिवर आ जाते हैं।
यहाँ अगवानी करके श्रावक, अन्तस् में अति हरषाते हैं।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
संघ को श्रावक लेकर आये, नगरी के मुख्य जिनालय में।।36।।

दो दिवस यहाँ मुनिराजा ने, अपनी पावन मृदुवाणी से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, गुरु भक्तों के अति आग्रह से।।
अब दोनों ही मुनिराजों का, साहर्ष मड़ावरा नगरी से।
हो गया गमन महरौनी को, भक्तों के संग अति आनंद से।।37।।

।। अगवानी महरौनी में ।।

यहाँ महरौनी की सीमा पर, तब खड़े हजारों नरनारी।
मुनियों की करने अगवानी, जनता के संग कई अधिकारी।।
सीमा पर ही श्रावक जनने, मुनिश्री के चरण पखारे थे।
घृत के दीपों से आरती कर, निजमन के दीप उजारे थे।।38।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिराजों को लेकर पहुँचे, श्रावक जन बड़े जिनालय में।।
उस दिन नगरी को भक्तों ने, दुल्हन की तरह सजाया था।
कई तोरण द्वार बना उनपे, केशरिया ध्वज लहराया था।।39।।

।। वर्षायोग महरौनी में ।।

पन्द्रह तारीख जुलाई में, मुनिराजों के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, यहाँ दो हजार ईसा सन् का।।
तब आस पास के नगरों से, इस आयोजन के लखने को।
श्रावक जन आये हजारों में, ये दृश्य हृदय में धरने को।।40।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, प्रयोजन भी चऊमासे का।
समझाया था श्रावक जन को, इसमें भी है हित आतम का।।
जिस भी नगरी में चऊमासा, मुनिराजा चित से करते हैं।
वहाँ के श्रावक सन्तों के संग, संयम को चित में धरते हैं।।41।।

उत्सव यहाँ गुरु पूर्णिमा का, सोलह तारीख जुलाई में।
भक्तों ने सहर्ष मनाया था, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के, चरणों का करके प्रक्षालन।
जिनवाणी भेंट करी गुरु को, अपने मन को करने पावन।।42।।

यहाँ मनी जयंती आनंद से, सत्रह तारीख जुलाई में।
महावीर प्रभु के शासन की, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
तब हुए अनेकों धर्मकार्य, इस पावनतम चऊमासे में।
अति धूमधाम के साथ सभी, भक्तों की आतम के हित में।।43।।

।। भक्तामर का शिविर लगा ।।

भक्तामर शिक्षण शिविर यहाँ, लगा अगस्त के महीने में।
नगरी के सारे श्रावक जन, शामिल भी होते थे जिसमें।।
जब भी गुरु मुख से कहते थे, श्लोक यहाँ भक्तामर के।
तब आनंदित हो जाते थे, अन्तस मन सुनने वालों के।।44।।

लगता था जैसे झर रहे हों, यहाँ फूल सुगंधित वृक्षों से।
चहुँ ओर बरसता था आनंद, सुनने वालों के अंतरंग से।।
मुकुट सप्तमी के दिन में, निर्वाण दिवस पारस प्रभु का।
भक्तों ने सहर्ष मनाया था, सान्निध्य पाकर गुरुराजा का।।45।।

आजादी का था परम पर्व, पन्द्रह अगस्त के ही दिन में।
रक्षाबंधन का पर्व मना, उस दिन श्री गुरु के सान्निध्य में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, अपने पावन मृदु वचनों से।
सच्चा महत्त्व इन पर्वों का, समझाया था अति आदर से।।46।।

तीन सितम्बर के दिन से, यहाँ शुरू पर्यूषण पर्वों में।
संयम की पूर्ण साधना की, लोगों ने मुनिवर के संग में।।
दस दिन तक श्री मुनिराजा ने, अपनी पावनतम वाणी से।
दस धर्मों पर व्याख्यान किया, बचने को नित नये पापों से।।47।।

।। क्षमावाणी पर्व 14 सितम्बर में ।।

क्षमा पर्व पर मुनिराजा, श्रावक जन को समझाते हैं।
स्व पर को क्षमा करेंगे जो, वह क्षमावान कहलाते हैं।।
आगे भी समझाया गुरु ने, सत् क्षमा माँगना दुश्मन से।
वह ही मानव इस दुनिया में, सत् क्षमावान है जो मन से।।48।।

जिनने यहाँ जग के जीवों से, नहीं रखा बैर कोई मन में।
अंतरंग भावों में भी जिनके, रहती है क्षमा सभी जन में।।
वो ही मानव निज–आतम का, कल्याण यहाँ कर सकते हैं।
ऐसा मुनिवर ने समझाया, वो ही भव से तर सकते हैं।।49।।

।। अहिंसा रैली ।।

मुनिवर की वाणी सुन करके, जनता के आँसू निकल पड़े।
निज बैर मिटाने रिपुओं से, सब ही लोगों के कदम बड़े।।
गाँधी की जन्म जयंती पर, दो अक्टूबर को नगरी में।
एक रैली सहर्ष निकाली थी, जनता ने गुरु के सान्निध्य में।।50।।

सत धर्म अहिंसा का जुलूस, नगरी के सबई मुहल्लों में।
अति धूमधाम से निकला था, एक आनंद यात्रा के संग में।।
नगरी के जैन अजैन सभी, इस यात्रा में शामिल होकर।
अपना कर्त्तव्य निभाते हैं, हिंसामयी कर्मों को तजकर।।51।।

।। वीर प्रभु का निर्वाण दिवस ।।

मुनिराजों के यहाँ रहने से, मेला सा सदा लगा रहता।
हर रात दिवाली सी लगती, दिन सावन के जैसा लगता।।
प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक बदी अमावस में।
अति धूमधाम से मनता है, ऋषियों के पावन सान्निध्य में।।52।।

।। आ. पद्मनंदी से मिलन ।।

उस ही दिन श्री मुनिराजा ने, विधिपूर्वक ही चऊमासे का।
विस्थापन कीना आनंद से, यहाँ दो हजार ईसा सन् का।।
आचार्य पद्मनंदी स्वामी, ससंघ यहाँ पर पधराये।
मुनि संघ श्रावकों के संग में, अगवानी कर अति हरषाये।।53।।

वात्सल्य मिलन यहाँ सन्तों का, होता है अति अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, अन्तस से कुशल समाचारी।।
श्री पद्मनंदी मुनिनाथा ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा की।
यहाँ बहुत प्रशंसा कीनी थी, चारित्र और वचनामृत की।।54।।

।। श्रुतनंदी मुनि का आगमन ।।

श्री पद्मनंदी आचार्य प्रवर, अब यहाँ से कदम बढ़ाते हैं।
दो दिना बाद मुनि श्रुतनंदी, ससंघ यहाँ पधराते हैं।।
दोनों संघों के ऋषियों का, यहाँ मिलन हुआ अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, अन्तस से कुशल समाचारी।।55।।

।। दोनों संघों का वात्सल्य मिलन ।।

दोनों संघ के साधु मिलकर, इस महरौनी की नगरी में।
एक मन्दिर में दो माह रहे, अति हर्षाके मन गगरी में।।
प्रवचन भी दोनों संत यहाँ, इक ही मंडप में करते थे।
शुद्धि लेकर नित चर्या को, सब साधु साथ निकलते थे।।56।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा की, अति श्रेष्ठ साधना को लखके।
यहाँ श्रुतनंदी मुनिराजा ने, की बहुत प्रशंसा खुश होके।।
श्री श्रुतनंदी मुनिराजा ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा को।
सुकुमाल मुनि सा बतलाया, लख इनकी कठिन तपस्या को।।57।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनि के संघ का, चौदह तारीख दिसम्बर में।
होवत पिच्छि का परिवर्तन, इस ही नगरी के प्रांगण में।।
इस आयोजन में मुनिराजा, नई पिच्छि लेकर भव्यों को।
जूनी पिच्छि यहाँ पर देते, संयम के पथ पर आने को।।58।।

।। विश्वकीर्तिसागर का आगमन ।।

श्री विश्वकीर्तिसिन्धु मुनिवर, ससंघ यहाँ पर पधराये।
श्री विमर्शसिन्धु भक्तों के संघ, अगवानी कर अति हर्षाये।।
तीनों संघों का मधुर मिलन, होता है यहाँ अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की होवत है, ऋषियों में कुशल समाचारी।।59।।

श्री विनम्रसिन्धु ऐलक के संग, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने।
पूजन का शिविर लगाया था, भक्तों को अति शिक्षित करने।।
इस महाशिविर में छात्रों ने, अभिषेक और पूजा करना।
अंतरंग भावों से सीखा था, संयम को भी चित्त में धरना।।60।।

श्री श्रुतनंदी जी प्रवचन में, कहते हैं अति ही आनंद से।
पितु सा सम्मान दिया हमको, श्री विमर्शसिन्धु ने अन्तस से।।
भविष्य काल में मुनिवर से, हो मिलन कोई भी नगरी में।
श्री श्रुतनंदी जी कहते हैं, यह भाव हमारे अंतरंग में।।61।।

दोनों संघों ने विहार किया, अपनी मंजिल चित्त में धरके।
श्री विमर्शसिन्धु जी यहीं रहे, श्रावकजन की श्रद्धा लखके।।
जनवरी बीस को मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
महरौनी के सब नरनारी, अँखियों से जल बरसाते हैं।।62।।

जैसे बिटिया की विदा सदा, माँ करती है आँसू भरकर।
वैसी ही विदा यहाँ पर की, मुनिसंघ की भक्तों ने रोकर।।
तब मुनिवर ने समझाया था, मुनिसंघ आते जाते रहते।
उनके पावन उपदेशों को, बिरले ही जन चित्त में धरते।।63।।

आठ माह में हमने यहाँ, जो ज्ञानामृत बरसाया है।
भवदधि को पार करेगा वो, जिसके यह हृदय समाया है।।
मेरा संदेश हृदय धरना, मेरी होगी सत् यादगार।
मेरा सत् भक्त वही होगा, जो होगा खुद का मददगार।।64।।

।। मुनिसंघ मड़ावरा में ।।

हम मुनि रूप में ही केवल, जा सकते हैं इस नगरी से।
जो धर्म यहाँ बरसाया है, हृदय में रखना सदा उसे।।
श्री विमर्श सिन्धु मुनिराजा जी, साढूमल नगरी से होकर।
आये थे नगर मड़ावरा में, ईर्यापथ को चित्त में धरकर।।65।।

बारह दिन रहके नगरी में, अध्यात्म सुधा बरसाया था।
दर्शन कर सभी जिनालय में, यहाँ से भी कदम बढ़ाया था।।
सीरोन क्षेत्र से होकर गुरु, पधराये तीर्थ नवागढ़ में।
यहाँ पारस प्रभु के दर्शन कर, अति हर्षाये अपने उर में।।66।।

सामायिक करके दूजे दिन, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
गुरु बड़ागाँव के तीरथ में, आकर के अति हरषाते हैं।।
तब सात दिना का समय दिया, इस सिद्धक्षेत्र के तीरथ में।
यहाँ धर्म प्रभावना हुई भारी, श्री मुनिवर के प्रवचनों में।।67।।

।। मुनिसंघ घुवारा में ।।

अब बड़ागाँव से चल करके, गुरु आये घुवारा नगरी में।
सीमा पर करते अगवानी, श्री विमदसिन्धु संघ के संग में।।
तब यहाँ हजारों भक्तों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, अंतरंग में भारी हरषाके।।68।।

।। मुनि विमदसागर से मिलन ।।

दोनों संघों का मिलन देख, घुवारा नगरी के नरनारी।
हो गये हैं आत्मविभोर सभी, ये दृश्य देख अतिशयकारी।।
यह दोनों संघ के मुनिराजा, हैं परम शिष्य इक ही गुरु के।
अंतरंग भावों से मिले यहाँ, आतम का हित चित में धरके।।69।।

।। सिद्धचक्र विधान घुवारा में ।।

दूजी तिथि मार्च महीना से, घुवारा नगरी के प्रांगण में।
श्री सिद्धचक्र मंडल विधान, होता गुरुओं के सान्निध्य में।।
पंडित श्री रमेशचंद जी ने, विधिपूर्वक इस आयोजन को।
आनंद के साथ कराया था, स्व पर की आतम के हित को।।70।।

ग्यारह तारीख मार्च में ही, दो सहस्र एक ईसा सन् में।
रथयात्रा सहर्ष निकाली थी, मंडल के यहाँ समापन में।।
दोनों ही यह मुनिराजों ने, यात्रा के सहर्ष समापन में।
प्रवचन कीने अति आनंद से, वर्णी इंटर विद्यालय में।।71।।

पश्चात् सहर्ष आयोजन के, श्री विमदसिन्धु मुनिराजा ने।
अपने संघ को संग में लेके, यहाँ से भी कदम बढ़ा दीने।।
कुछ घंटे बाद विमर्शसिंधु श्री विश्वपूज्य मुनि के संग में।
घुवारा से कदम बढ़ा देते, ईर्यापथ को धर के चित में।।72।।

।। मुनिसंघ रामटोरिया में ।।

दो दिन के बाद पहुँच जाते, गुरु रामटोरिया नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानीकर, अति हर्षाये मन गगरी में।।
नगरी में पाँच जिनालय हैं, अति सुन्दर और मनोहारी।
अन्तस से दर्शन करते हैं, यहाँ आकर के संयमधारी।।73।।

।। णमोकार मंत्र का अखंड पाठ ।।

नवकार मंत्र का अखंड पाठ, नौ दिन तक का इस नगरी में।
अति आनंद से सम्पन्न हुआ, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
चौबीस मार्च को मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
शाहगढ़ नगरी की सीमा पर, कुछ भीड़ देख रुक जाते हैं।।74।।

।। मुनिसंघ शाहगढ़ में ।।

श्री विशुद्धसिन्धु मुनिराजा ने, ससंघ श्रावकों के संग में।
गुरुभ्राता की अगवानी की, शाहगढ़ नगरी की सीमा में।।
दोनों संघों का मिलन हुआ, यहाँ भावों से अतिशय कारी।
फिर रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, संघों में कुशल समाचारी।।75।।

।। मुनिश्री विशुद्धसागर जी से मिलन ।।

गुरु भ्राताओं का मिलन देख, लखने वाले श्रावक जन के।
नयनों में आँसू छलक पड़े, भावों में वात्सल्यता लखके।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुराजों को लेकर श्रावक, आये थे बड़े जिनालय में ।।76।।

अप्रैल माह की सोलहवी, तारीख रही मंगलकारी।
जब वीर जयंती समारोह, होता है यहाँ अतिशयकारी।।
महावीर प्रभु जिनराजा की, दोनों गुरुओं के सान्निध्य में।
इक आनंद यात्रा निकली थी, नगरी के सबई मुहल्लों में ।।77।।

नगरी के चौक चौराहे पर, एक मंडप में मुनिराजों के।
प्रवचन हुए मंगलकारी, महावीरा के जीवन पथ के।।
वहाँ जैन अजैन सभी भाई, गुरुओं की वाणी सुन करके।
अभिभूत हुए निज भावों में, आतम का हित चित में धरके ।। 78।।

।। कारीटोरन में मुनिसंघ ।।

कुछ दिन के बाद विमर्शसिन्धु, शाहगढ़ से कदम बढ़ाते हैं।
कारीटोरन के तीरथ में, दर्शन करने रुक जाते हैं।।
फिर गिरारगिरि से हो करके, आये थे नगर बरायठा में।
यहाँ श्रुत पाँचें का समारोह, मनता है संघ के सान्निध्य में।।79।।

।। पूजन शिक्षण शिविर बरायठा में ।।

इक्कीस मई से दस दिन का, इसही नगरी के प्रांगण में।
पूजन का शिक्षण शिविर लगा, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।।
दस दिन तक श्री मुनिराजा ने, अपनी पावन मृदु वाणी से।
भव्यों की आतम के हित में, प्रवचन कीना अति आनंद से।।80।।

।। बण्डा नगरी में मुनिसंघ ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, दूजी तिथि जून महीना में।
हो गया विहार बरायठा से, बण्डा का मारग धर चित में।।
अब चार जून को मुनिराजा, बण्डा नगरी में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।81।।

कुछ यहाँ के भव्य श्रावकों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा की।
चुपके से सही परीक्षा ली, तप ज्ञान और नित चर्या की।।
संयम की कठिन परीक्षा में, मुनिराजा खरे उतरते हैं।
संतुष्ट होय के श्रावक जन, अब चरण वन्दना करते हैं।।82।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, यहाँ रुकके बड़े जिनालय में।
दो दिन तक अमृत बरसाया, अति हर्षा के मन आलय में।।
श्री शान्तिनाथ का मन्दिर अरु, यहाँ नेमिगिरि के तीरथ के।
दर्शन कीने अति आनंद से, श्री शान्तिनाथ की मूरत के।।83।।

।। बण्डा से विहार मुनिसंघ का ।।

अब आठ जून को मुनिराजा, दो सहस्र एक ईसा सन् में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, संघस्थ श्रावकों के संग में।।
कर्रापुर में आके मुनिवर, नित चर्या को रुक जाते हैं।
दोपहर बाद सामायिक कर, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।।84।।

।। अगवानी सागर में ।।

अंकुर कॉलोनी के श्रावक, सागर नगरी की सीमा पर।
अगवानी करते हैं संघ की, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
यहाँ भव्यों ने मुनिराजा के, प्रक्षाल किया पद कमलों का।
अपने अंतरंग के भावों से,जल लाकर बेबस नदिया का।।85।।

।। सागर की अंकुर कॉलोनी में ।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को सब लेके आये, कॉलोनी के जिनमन्दिर में।।
सामायिक के पश्चात् यहाँ, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
प्रवचन हुए मंगलकारी, सिद्धांतमयी जिन आगम के।।86।।

श्री विद्यासागर गुरुवर का, बारह तिथि जून महीना में।
मुनि दीक्षा दिवस मनाया था, यहाँ मुनिसंघ के सान्निध्य में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, अपनी पावन मृदुवाणी से।
श्री गुरुवर विद्यासागर के, गुण गाये थे अति आनंद से।।87।।

।। 29वीं जन्म जयन्ती सागर में ।।

उन्तीसवाँ जन्म महोत्सव भी, दो सहस्र एक ईसा सन् में।
अति धूमधाम से मनता है, मुनिवर का एक कॉलोनी में।।
कई नगरों से श्रावक बन्धु, इस समारोह में आये थे।
विनयांजलि देके मुनिवर को, अन्तस में अति हरषाये थे।।88।।

उस दिन नगरी के भक्तों ने, गुब्बारों सहित झंडियों से।
गुरु की विश्राम वसतिका को, तब सजा दिया कई रंगों से।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा भी, नित की आहार क्रिया करके।
जब लौटे यहाँ वसतिका में, तब बदला रूप वहाँ लखके।।89।।

।। मुनिवर की सीख भक्तों को ।।

कमरे के भीतर नहीं गये, बाहर ही बैठ गये मन से।
भयभीत होय तब भक्तों ने, यहाँ पूछा था गुरुराजा से।।
हे मुनिवर क्या हम लोगों से, कोई गलती होय गई भारी।
जो कमरे में नहीं गये आप, यह बता दीजिये गुणधारी।।90।।

श्री विमर्श सिन्धु मुनिराजा ने, तब बतलाया उन लोगों को।
यह आप हटाओ कमरे से, पहले इस सभी सजावट को।।
ये सभी सजावट नकली है, तब भक्त कहत हैं श्री गुरु से।
इससे हमको मतलब नाहीं, गुरु कहते हैं उन भक्तों से।।91।।

इन कार्यों से होवत निंदा, यहाँ धर्म और धर्मात्मा की।
तब भक्तों को आ गई समझ, श्री गुरुवर के अनुशासन की।।
था चौमासे का समय निकट, सो भक्त सभी चऊमासे की।
विनती करते हैं मुनिवर से, इस ही नगरी में करने की।।92।।

तब मुनिराजा जी कहते हैं, नगरी के उन गणमान्यों से।
अब आप गया नगरी जाके, अनुमति लाओ गुरुराजा से।।
यहाँ से दो श्रावक बंधु तब, पत्री लेकर श्री मुनिवर की।
गया नगर को गये सहर्ष, अनुमति लेने चऊमासे की ।।93।।

श्री गुरुराजा के चरणों में, वह अपना शीश झुकाते हैं।
श्री फल का अर्घ्य चढ़ा करके, अपना मन्तव्य बताते हैं।।
श्री विमर्श सिन्धु मुनिराजा का, चऊमासा सागर नगरी में।
करने की अनुमति दे दीजे, आशीष सहित एक पत्री में।।94।।

।। गुणमति आर्यिका का मिलन ।।

श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने, अति हरषाके निज भावों में।
चऊमासे की अनुमति दे दी, मुनिसंघ को सागर नगरी में।।
गुणमति आर्यिका माताजी, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
दर्शन करने कॉलोनी में, पधराई थी संग में संघ के।।95।।

दोनों संघों में विधिपूर्वक, अतिआनंद से अतिशयकारी।
रत्नत्रय की यहाँ हुई श्रेष्ठ, अन्तस से कुशल समाचारी।।
अब गया नगर से गुरुभक्त, वापस सागर आ जाते हैं।
आचार्य प्रवर का लिखा पत्र, मुनिराजा को दिखलाते हैं।।96।।

।। उपेक्षा बनी वरदान ।।

श्री गुरुवर की पत्री पढ़के, मुनिराजा अति हरषाते हैं।
स्वीकृति देकर चऊमासे की, सागर का मान बढ़ाते हैं।।
श्री बाहुबली सागर जी को, तब कुछ श्रावक मोराजी से।
यहाँ कॉलोनी के मन्दिर में, वह छोड़ गये थे चुपके से।।97।।

।। विमर्श सिन्धु की समझायस ।।

इस कॉलोनी के श्रावकजन, उन लोगों पर झुँझलाते हैं।
श्री विमर्श सिन्धु मुनिराजा जी, उनको भी यह समझाते हैं।।
यह एक संत कहाँ जावेगा, है निकट समय चौमासे का।
भैया हृदय को बड़ा करो, यह समय अभी है साहस का।।98।।

हम दो जन जहाँ विराजेंगे, वहाँ तीन बैठ सकते भाई।
कोई भी अड़चन नहीं होगी, यह बात सही है हित दाई।।
मुनिराजा की समझायस से, सब श्रावक चुप हो जाते हैं।
श्री बाहुबली सागरमुनि का, चऊमासा यहीं कराते हैं।।99।।

यह कथा बहुत ही लम्बी है, जो समझ गये होंगे पाठक।
इसको यहाँ पूरा लिखना भी, नहीं होगा कोई हित कारक।।
ये पंचम युग का दुष्ट काल, है बहुत स्वार्थी दुखदाई।
इसमें साहस रखने वाले, होवत आतम के हितदाई।।100।।

।। 2001 का वर्षायोग अंकुर कॉलोनी में ।।

अब षाढ़ सुदी पूनम के दिन, मुनिराजों के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, दो सहस्र एक ईसा सन् का।।
तीनों मुनियों का चऊमासा, अंकुर कॉलोनी परिसर में।
हो गया समय पर स्थापित, अति ही सुन्दर आयोजन में।।101।।

तब आस पास के नगरों से, इस आयोजन के लखने को।
यहाँ आये हजारों नरनारी, गुरुवाणी चित में धरने को।।
उस ही दिन गुरु पूर्णिमा का, उत्सव गुरुओं के सान्निध्य में।
अति धूमधाम से मना सहर्ष, अंकुर कॉलोनी परिसर में।।102।।

दूजे दिन वीरा शासन की, गुरुओं के पावन सान्निध्य में।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, स्व पर की आतम के हित में।।
तब हुए अनेकों धर्म कार्य, इस पावनतम चौमासे में।
अति धूमधाम के साथ सभी, श्री विमर्श सिन्धु के सान्निध्य में।।103।।

।। भक्तामर शिविर ।।

यहाँ भक्तामर का शिविर लगा, श्री मुनिवर के निर्देशन में।
कॉलोनी के सब श्रावक जन, शामिल नित होते थे जिसमें।।
श्री मुनिवर मीठी वाणी से, जब भक्तामर गाया करते।
तब सुनने वाले श्रोता जन, निज साँसे थाम लिया करते।।104।।

रक्षा बन्धन पर मुनिश्री ने, जब सात शतक मुनिराजों की।
यहाँ कथा सुनाई थी पावन, ऋषियों पर अत्याचारों की।।
तब सुनने वाले श्रोता जन, सिसक सिसक के अँखियों से।
आँसुओं की धार बहाते हैं, गुरु वाणी सुनके हृदय से।।105।।

श्री दसलक्षण का महापर्व, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।
व्रत उपवासों के साथ मना, संयम पथ को धरके चित में।।
दसधर्मों पर व्याख्यान हुए, श्री विमर्श सिन्धु मुनिराजा के।
जिनको सुनके अभिभूत हुए, सारे श्रावक इस नगरी के ।।106।।

।। क्षमावाणी अंकुर कॉलोनी में ।।

फिर क्षमा महोत्सव पर्व यहाँ, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।
अति धूमधाम के साथ मना, भव्यन की आतम के हित में।।
यहाँ क्षमा पर्व का मुनि श्री ने, वास्तविक सत् रूप बताया था।
सत्क्षमा माँग के क्षमा करो, यह ही सबको समझाया था।।107।।

दो भव्य यहाँ श्री मुनिवर से, ब्रह्मचर्य महाव्रत को ले के।
आगे मुनिवर बन जाते हैं, सच्चा संयम पथ अपनाके।।
पूजा का शिक्षण शिविर लगा, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।
सब लोग सुबह से आ जाते, पूजन के हेतु जिनालय में।।108।।

।। दो कृतियों का विमोचन ।।

यहाँ लोकार्पण भी हुआ तभी, श्री मुनिवर की दो कृतियों का।
प्रकाशन यहीं कराया था, गुरु भक्तों ने इन कृतियों का।।
पहली ''शंका की एक रात'', दूजी ''हे वन्दनीय गुरुवर''।
दोनों कृतियों को लिख गुरु ने, करुणा कीनी सारे जग पर।।109।।

दसवाँ आचार्य पदारोहण, श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा का।
अति धूमधाम से मना यहाँ, सान्निध्य पाकर मुनिराजा का।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, अपने ही गुरु महाराजा का।
गुणगान किया था अन्तस् से, गुरुवर के उत्तम कार्यों का।।110।।

।। चऊमासे का निष्ठापन ।।

प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक वदी अमावस में।
आनंद से भक्त मनाते हैं, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
उस ही दिन तीनों मुनियों ने, विधिपूर्वक ही चऊमासे का।
निष्ठापन कीना आनंद से, दो सहस्र एक ईसा सन् का।।111।।

चऊमासे के पश्चात् यहाँ, एक सर्वोत्तम आयोजन में।
पिच्छि का होवत परिवर्तन, ऋषिराजों की आतम हित में।।
श्रावक जन नई पिच्छि देवे, मुनिराजों के कर कमलों में।
जूनी पिच्छि लेवत गुरु से, संयम धारण करके चित में।।112।।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा का उत्सव, श्री मंगलगिरि के तीरथ में।
इस समय यहाँ पर होना था, गुरु देवनंदी के सान्निध्य में।।
उन लोगों ने मुनिराजा को, श्रीफल का अर्घ्य चढ़ा करके।
आमंत्रित कीना मुनीश्वर को, चरणों में शीश झुका करके।।113।।

था विसंवाद उसमें भारी, मुनिराज श्री इस कारण से।
शामिल नहीं होते हैं उसमें, रहने को दूर विवादों से।।
अब कॉलोनी से रहली को, हो गया गमन मुनिराजा का।
ये पंचम कलश हुआ पूरा, श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ का।।114।।

।। इति पंचम कलश ।।

ब्र. राकेश जी अपने अध्ययनकक्ष में। साथ में पिता श्री सनत कुमार, माता श्रीमती भगवती देवी, भाभी स्नेहलता, बड़े भ्राता राजेश कुमार, लघु भ्राता चक्रेश कुमार, बुआ शीला देवी, छोटी बहिन महिमा। पीछे दिख रहे हैं वे पुरस्कार जो राकेश ने बैडमिंटन और शतरंज में जीते थे।

जब जतारा आए तो उनका पूर्व का
चित्र और पुरस्कार पूछने लगे–हमें क्यों छोड़ गए?

ब्र. राकेश जी एवं ब्र. विनोद जी जतारा में।
जैसे सोच रहे हों–इन वस्त्रों से कब मुक्त होंगे? (1995)

ब्र. राकेश जी ललितपुर के एक
देवालय की छत पर। वर्षायोग : 1995 के समय।

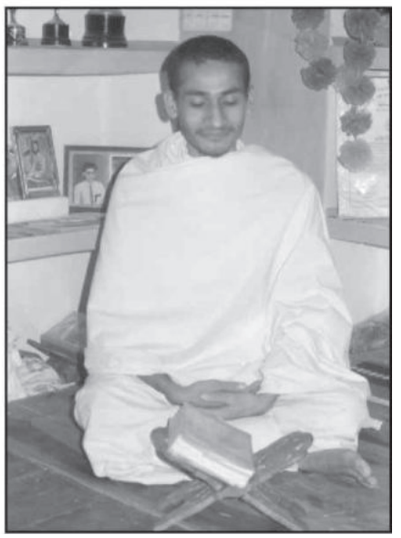

वैराग्य-पथ के पथिक ने अध्ययन कक्ष से
स्वाध्याय का काम लेना शुरू कर दिया।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

छठवाँ कलश

।। मंगलाचरण ।।

शुद्धोपयोग मयी आतम ने, घातक कर्मी मल को धोकर।
अठ दस दोषों का नाश किया, छियालीस सुगुण पाके हितकर।।
उस केवलज्ञानी आतम ने, सर्वत्र जगत के द्रव्यन के।
पर्याय सहित गुण भी जाने, सत रूप अरूपों को उनके ।।1।।

यहाँ नमस्कार करता हूँ मैं, उन सभी प्रभु अरहंतों को।
जिनने शुद्धात्म रूप श्रेष्ठ, बतलाया श्रावक संतों को।।
दूजा करते हम नमस्कार, गणधर स्वामी भगवन्तों को।
जो चार ज्ञान के धारक हैं, उन सभी श्रेष्ठ गुणवन्तों को ।।2।।

उनने प्रभुवर की वाणी को, मन:पर्यय ज्ञान सुधा पाके।
अपने अंतरंग के भावों से, झेली थी उपकारी बनके।।
अठ–दस भाषा के साथ श्रेष्ठ, लघु सात शतक भाषाओं में।
जग जीवों को हित बतलाया, यहाँ स्याद्वादता के संग में।।3।।

गणधर स्वामी के बाद यहाँ, इस युग में थे तीजे ज्ञायक।
वो कुन्द कुन्द आचार्य प्रवर, जिन आमनाय के हैं नायक।।
उनके भी बाद हुए हैं यहाँ, शतकाधिक श्री आचार्य प्रवर।
जिनने शुद्धातम बनने को, दिखलाई पावन श्रेष्ठ डगर।।4।।

उनके पावन श्री चरणों में, हम सविनय शीष झुकाते हैं।
यह कारज श्रेष्ठ बनाने को, उनही को हृदय बिठाते हैं।।
अब उनको शीश झुकाते हैं, जिनने आशीष दिया हमको।
अपने अंतरंग के भावों से, इस महाकाव्य के लिखने को।।5।।

वह हैं आचार्य विरागसागर, यहाँ गणाचार्य कहलाते हैं।
दो सौ शिष्यों को निरत यहाँ, संयम का पथ दिखलाते हैं।।
जिनने यहाँ लाखों भक्तों को, आतम का हित समझाया है।
उनके श्री पावन चरणों में, हमने यहाँ शीष झुकाया है।।6।।

अब सरस्वती को वन्दन हैं, अपना श्रुत ज्ञान बढ़ाने को।
चंचल चित्त को स्थिर करने, यह कारज सफल बनाने को।।
अब उनको शीष झुकाता हूँ, जो इसी काव्य के हैं नायक।
वह विमर्श सिन्धु मुनिराजा हैं, रत्नत्रय के उत्तम साधक।।7।।

।। ढाना नगरी में मुनिसंघ ।।

रहली पटना के मारग में, है ढाना ग्राम बहुत सुन्दर।
रहते हैं जैन अजैन सभी, आनंद से नगरी के अन्दर।।
यहाँ सभी श्रावकों ने मिलके, अपनी नगरी की सीमा पर।
दोनों ही महामुनिराजों की, अगवानी की अति हर्षाकर।।8।।

।। चतुर्थ मुनिदीक्षा समारोह ।।

दोपहर बाद सामायिक कर, गुरु यहाँ से कदम बढ़ाते हैं।
पटना बुजुर्ग के श्रावकजन, अगवानी कर हरषाते हैं।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, चौदह तारीख दिसम्बर में।
चौथा मुनि दीक्षा दिवस मना, अति आनंद से इस नगरी में ।।9।।

कई नगरों के श्रावक बंधु, इस समारोह में आये थे।
विनयांजली देके श्री गुरु को, अन्तस में अति हरषाये थे।।
फिर यहाँ के सभी श्रावकों ने, श्री विमर्श सिन्धु मुनिराजा से।
यहाँ शीतकालीन वाचना की, विनती की अंतरंग भावों से।।10।।

।। शीतकालीन वाचना पटना में ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, भव्यन के भावों को लखकर।
स्वीकृति दी सहर्ष वाचना की, संघस्थ मुनि से चरचाकर।।
अब रोज सुबह से होता है, मुनिराजा के पावन मुख से।
पंचास्तिकाय की गाथा का वचनामृत अन्तस भावों से।।11।।

मध्यान्ह समय नित होता है, उत्तम वाचन छहढाला का।
जिसको सुनके हर्षित होता, अंतरंग भी सब श्रोताओं का।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा जी, छहढाला निरत पढ़ाते हैं।
विस्तार सहित सब लोगों को, यहाँ सही अर्थ समझाते हैं।।12।।

सम्यग्दर्शन की सत् महिमा, मुनिराजा जी नित भव्यन को।
विस्तार सहित समझाते हैं, निज की आतम के दर्शन को।।
सम्यग्दर्शन परम श्रद्धा से, हो जाता ज्ञान चरित्र संग में।
रत्नत्रय को पाकर आतम, शुद्धातम होती पल भर में।।13।।

भरतेश्वर चक्री को पल में, सम्यक्त्व हृदय में धरने से।
पलभर में केवलज्ञान हुआ, तजते ही कपड़ों को तन से।।
पर पंगु सम्यग्दर्शन से, नहीं हो पाता हित आतम का।
इससे संसार नहीं नशता, यह कहना है जिनवाणी का।।14।।

।। विकलांग सम्यग्दर्शन की परिभाषा ।।

सम्यग्दर्शन विकलांग यहाँ, संसार भ्रमण करवाता है।
शंकित रहने से श्रद्धा पर, वह रागद्वेष उपजाता है।।
स्कूल पास में रहने से, एक जैनी शिक्षक रोजाना।
गुरुवाणी सुनता रहता था, जीवन का हित लखके अपना।।15।।

सम्यग्दर्शन विकलांग शब्द, सुन करके वो शिक्षक भाई।
वह सोचत ऐसा शब्द कोई, नहीं है आगम में हितदाई।।
दूजे दिन वह कुछ भव्यों से, इसकी चर्चा करता चित से।
सम्यग्दर्शन पंगु होवत, नहीं सुना किसी मुनि के मुख से।।16।।

इसका मतलब मुनिराजा से, तुम समझ मुझे बतला देना।
ये विनती मेरी गुरुवर के, श्री चरणों तक पहुँचा देना।।
दूजे दिन सुबह वही श्रावक, मुनिवर के पास पहुँचते हैं।
शिक्षक के पूँछे वाक्य यहाँ, ज्यों के त्यों गुरु से कहते हैं।।17।।

तब मुनिराजा उन लोगों को, विस्तार सहित समझाते हैं।
जो मानव होवत अंगभंग, विकलांग वही कहलाते हैं।।
यहाँ आठ अंग से परिपूर्ण, सम्यग्दर्शन है आगम में।
विकलांग वही कहलाता है, एक अंग कमी होती जिसमें।।18।।

सुन करके सारे भक्त कहें, कर जोड़ श्री मुनिराजा से।
सम्यग्दर्शन की परिभाषा, हमने समझी है अन्तस से।।
हे स्वामी आगम की भाषा, वो शिक्षक नहीं समझ पाया।
हम लोग उसे बतला देंगे, जो यहाँ आपने समझाया।।19।।

फिर महामुनि बतलाते हैं, यहाँ रत्नकरण्ड की गाथा में।
श्री समंतभद्र आचारज ने, इसका उल्लेख किया हित में।।
ये अंगहीन सम्यग्दर्शन, भवसागर पार नहीं करता।
जैसे अक्षर से हीन मंत्र, विष की पीड़ा को नहीं हरता।।20।।

तुम रत्नकरण्ड की इक्कीसवीं, गाथा उसको पढ़वा देना।
इस गाथा में सारा विवरण, सत् लिखा उसे बतला देना।।
अब युवक प्रमाणित वो गाथा, उस शिक्षक को पढ़वाते हैं।
वह गाथा पढ़के शिक्षक के, तब सही नेत्र खुल जाते हैं।।21।।

पटनाबुजुर्ग की नगरी में, भक्ति मय गंगा बहने से।
श्री विमर्श भक्ति में रंगा सही, सारी नगरी अति आनंद से।।
नित पाँच बजे से भक्त सभी, जनवरी माह की सर्दी में।
श्री गुरु के पास पहुँच जाते, स्वाध्याय और गुरुभक्ति में।।22।।

।। रजवांस ग्राम के श्रावक पंडित ।।

रजवांस ग्राम के विज्ञ तभी, श्री सनत विनोद दोनों भाई।
पटना नगरी में मुनिवर के, दर्शन करते हैं सुखदाई।।
वह विनती करते हैं गुरु से, हे स्वामी हमरी नगरी में।
जिनबिम्ब प्रतिष्ठा उत्सव है, गजरथ फेरी के है संग में।।23।।

हे स्वामी संघ सहित चलिये, सान्निध्य देने उस उत्सव में।
यह विनय हमारी है भारी, हे परम आपके चरणों में।।
तब सहज भाव से मुनि श्री, कहते हैं उन विद्वानों से।
उत्सव में सान्निध्य देने की, अनुमति लाओ मेरे गुरु से।।24।।

पंडित श्री सनत कहे गुरु से, तलवा लख के मुनिराजा का।
हे गुरु आपके पग तल में, है चिन्ह परम गजरेखा का।।
वो चिन्ह सही घोषित करता, हे गुरु आप सारे जग में।
जिन धर्म पताका आनंद से, फहरावेंगे आतम हित में।।25।।

पंडित की वाणी को सुनकर, मुनिराजा कुछ मुस्काते हैं।
फिर अपने ही गुरुराजा को, पत्री लिखने लग जाते हैं।।
पत्री लेकर के पंडित द्वय, पूरा करने मन का सपना।
श्री गुरु के पास पहुँच करके, मन्तव्य बताते हैं अपना।।26।।

।। मुनिवर की परीक्षा ।।

एक दिना यहाँ कुछ शंकालु, शंकित करके निज भावों को।
आये थे सहज वसतिका में, मुनिवर की सही परीक्षा को।।
एक बजे रात में मुनिराजा, सामायिक करते दिखे इन्हें।
चुपचाप वहाँ से वह लौटे, निज में ही लखके लीन उन्हें।।27।।

वह तीन बजे रात्रि में फिर, मुनिवर को लखने आते हैं।
लख सामायिक में लीन उन्हें, आश्चर्यचकित रह जाते हैं।।
अब उलटे पाँव लौटके वह, अपने घर को वापस आये।
निज के ही शंकित भावों पर, अंतरंग में भारी पछताये।।28।।

अब सुबह सबेरे आठ बजे, वो सभी युवक मुनिराजा के।
ढिग आकर माफी माँगत हैं, चरणों में शीष झुका करके।।
तब मुनिश्री कहते उनसे, माफी चाहत किस गलती की।
हमको तो कोई ज्ञात नहीं, तुम बात बताओगे मन की।।29।।

उन लोगों ने उस घटना का, सब हाल गुरु को बतलाया।
एक ईर्ष्यालु जन ने हमको, ऐसा करने को उकसाया।।
हे नाथ अभी हम लोग सभी, बहकावे में आकर उसके।
ये गलत कदम उठा बैठे, तुमरी चर्या पर शक करके।।30।।

हे नाथ यहाँ हम लोग सभी, निज अन्तस से इस गलती की।
कर जोड़ अभी माफी चाहत, अपने दुष्कृत अपराधों की।।
मुनिराजा जी तब कहते हैं, कोई फर्क नहीं आता हमको।
अपनी चर्या कैसे करनी, हम नहीं बताते हैं परको।।31।।

नित की चर्या अपने मन से, आतम के हित को करते हैं।
यहाँ नहीं किसी को दिखलाने, ये भाव हृदय में धरते हैं।।
अब कभी भविष्य में कोई भी, साधु पर शंका नहीं करना।
नहीं धूमिल करना भावों को, ये मेरी सीख हृदय धरना।।32।।

झंझट नहीं पालो हृदय में, स्वाध्याय करो अन्तस मन से।
यह ही जीवन का सही सार, बच जाओगे जग बन्धन से।।
दूजे दिन ही इस नगरी में, स्वाध्याय संघ बन जाता है।
गुरु की वाणी चित्त में धरके, आतम का हित उपजाता है।।33।।

।। पटनागंज में मुनि संघ ।।

पटना बुजुर्ग से मुनिराजा, अब आगे कदम बढ़ाते हैं।
पटनागंज तीरथ में आके, अन्तस में अति हरषाते हैं।।
इस तीर्थक्षेत्र में हैं सुन्दर, जिन मन्दिर तीस मनोहारी।
श्री पार्श्वनाथ की सहस्रफणी, यहाँ प्रतिमा है अतिशयकारी।।34।।

मुनिसुव्रत अरु प्रभु वीरा की, प्रतिमायें हैं पद्मासन में।
अति ही सुन्दर अतिशयकारी, तेरह फुट की अवगाहन में।।
इस तीरथ की अनुपम शोभा, श्री सहस्रकूट जिनालय का।
अन्तस भी अति हरषाया था, दर्शन करके मुनिराजों का।।35।।

तब तीन दिना मुनिराजों ने, इस अतिशयकारी तीरथ के।
दर्शन कीने अति आनंद से, अतिशयकारी जिन देवों के।।
दोनों ही मुनि करके विहार, अब आये रहली नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हरषाये मन गगरी में।।36।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, वैराग्यनंदी मुनि के संघ से।
वात्सल्य मिलन यहाँ होता है, ऋषिराजों में अति आनंद से।।
यहाँ पूज्य आर्यिका माता का, संघ रुका हुआ था पहले से।
वह मुनिश्री के दर्शन करती, अपने अंतरंग के भावों से।।37।।

।। आचार्य देवनंदी जी से मिलन ।।

पश्चात् यहाँ से मुनिराजा, पटना बुजुर्ग आ जाते हैं।
आचार्य प्रवर देवनंदीजी, तब संघ सहित यहाँ आते हैं।।
मुनिद्वय ने भक्तों के संग में, नगरी की सीमा पर जाकर।
आचार्य संघ की अगवानी, अन्तस से की अति हर्षाकर।।38।।

वात्सल्य मिलन यहाँ होता है, मुनिराजों में अतिशयकारी।
फिर रत्नतत्रय की हुई यहाँ, ऋषियों में कुशल समाचारी।।
आहारों के पश्चात् सहर्ष, आचार्य प्रवर देवनंदी का।
रहली की ओर विहार हुआ, हित धरके अपनी आतम का।।39।।

रजवाँस ग्राम के विज्ञ तभी, चिट्ठी लेकर श्री गुरुवर की।
पटना बुजुर्ग में आय गये, नगरी में बिम्ब प्रतिष्ठा की।।
पत्री पढ़कर मुनिराजा ने, रजवाँस नगर में आने की।
स्वीकृति दे दी उन विज्ञों को, जिनबिम्ब प्रतिष्ठा उत्सव की।।40।।

।। रजवाँस ग्राम में मुनिसंघ ।।

अब दोनों ही मुनिराजों ने, यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे।
ढाना अरु सागर से होकर, रजवाँस नगर में आये थे।।
नगरी के सबई श्रावकों ने, सीमा पर जाकर नगरी की।
ऐतिहासिक कीनी अगवानी, दोनों ही मुनि महाराजों की।।41।।

यहाँ सभी श्रावकों ने मिलके, मुनि श्री के चरण पखारे थे।
घृत के दीपों से आरती कर, अंतरंग के दीप उजारे थे।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेके पहुँचे थे, नगरी के ही जिन मन्दिर में।।42।।

मुनिराजा ने संक्षिप्त यहाँ, अपने पावन मृदु वचनों से।
प्रवचन दीना आतम हित में, बचने को नित नये पापों से।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के, पावन आशीष से नगरी में।
झण्डारोहण का कार्य हुआ, प्रतिष्ठा महामहोत्सव में।।43।।

।। मुनिश्री द्वारा बारिस की चेतावनी ।।

श्री मुनिवर ने यहाँ भक्तों को, संकेत दिया इक दो दिन में।
बारिस भी यहाँ हो सकती है, कुछ हैरानी होगी जिसमें।।
यहाँ सावधान ही रहने की, उत्सव में बड़ी जरूरत है।
चौकस इन्तजाम करो भाई, यह मेरे मन की चाहत है।।44।।

।। आर्यिका आदर्शमति माताजी का आगमन ।।

जो मुनिवर ने बतलाया था, दो दिन के बाद महोत्सव में।
बारिस भी हुई बहुत भारी, लथपथ पाण्डाल हुआ जिसमें।।
उस समय आदर्शमति माता, ससंघ पधारी नगरी में।
वे भीग गईं सब मातायें, इस बे मौसम की बारिस में।।45।।

रजवाँस नगर के भक्तों में, उन सभी पूज्य माताओं की।
अपने अंतरंग के भावों से, उनके अनुकूल व्यवस्था की।।
वे सभी आर्यिका मातायें, दर्शन करने मुनिराजा के।
मुनिश्री के पास पहुँचती हैं, अंतरंग में भारी हरषाके।।46।।

दोनों संघ के अंतरंग से, वहाँ मिलन हुआ अति हितकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, सन्तों में कुशल समाचारी।।
अब पूज्य आर्यिका माताजी, दोपहर बाद संघ के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाती हैं, इर्यापथ को धरके चित्त में।।47।।

जलवृष्टि अधिक हो जाने से, उखड़ा पाण्डाल देख सबने।
वहाँ नया पांडाल बना दीना, खुलवाकर उसको भक्तों ने।।
श्री गुलाबचन्द्र जी पुष्प और, दोनों विद्वत इस नगरी के।
मंत्रों का करते रहे जाप, टल जाने को इस संकट के।।48।।

दोनों मुनिवर सामायिक में, यहाँ अपना ध्यान लगाते हैं।
इस संकट के टल जाने को, निज आतम में रम जाते हैं।।
तब गर्भ कल्याणक के दिन से, पाँचों दिन ही इस उत्सव में।
मौसम पूरा अनुकूल रहा, गजरथ की फेरी के हित में।।49।।

तब बिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, गजरथ की फेरी के संग में।
अति आनंद से सम्पन्न हुआ, मुनि संघ के पावन सान्निध्य में।।
जिनबिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, हो रहा बरोदिया नगरी में।
श्री विशद सिन्धु गुरुभ्राता के, आनंद से पावन सान्निध्य में।।50।।

।। बरोदिया में मुनि संघ ।।

श्री विशदसिन्धु मुनिराजा ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनि के ढिग में।
भेजा था कुछ गणमान्यों को, आमंत्रित करने उत्सव में।।
श्री विमर्शसिन्धु जी मुनिराजा, गुरुभ्राता की चिट्ठी पढ़कर।
आ गये बरोदिया नगरी में, यहाँ समारोह को पूरा कर।।51।।

।। पुनः रजवाँस में मुनिसंघ ।।

वात्सल्य मिलन यहाँ होता है, गुरु भ्राताओं का हितकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई यहाँ, अन्तस से कुशल समाचारी।।
यहाँ के उत्सव के बाद गुरु, वापस रजवाँस पुनः आये।
यहाँ के श्रावक गुरु को लखके, अन्तस में भारी हरषाये।।52।।

यहाँ के श्रावक यह चाहत थे, कुछ दिना रहे संघ नगरी में।
सो श्री गुरु से अनुमति लेने, वे गये सभी सिलवानी में।।
श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा के, यहाँ शीष झुकाके चरणों में।
मुनिवर के रुकने की आज्ञा, तब माँगी थी निज नगरी में।।53।।

आचार्य प्रभु कहते उनसे, यह कहो आप मुनिराजा से।
सिलवानी ओर विहार करो, दोनों ही मुनि अति आनंद से।।
होके उदास सभी श्रावक, वापस आ गये सिलवानी से।
गुरु का आदेश कहा मुनि से, अति दुखित होय भारी मन से।।54।।

दोनों विद्वान कहत मुनि से, यदि सिलवानी को नहीं जाते।
तो कुछ दिन का सान्निध्य यहाँ, हम सभी आपका पा जाते।।
श्री गुरुवर का आदेश यहाँ, सुनकर के उन विद्वानों से।
सिलवानी जाने को मुनिवर, तत्क्षण तैयार हुए चित्त से।।55।।

तब नगरी के गणमान्यों ने, अनुरोध किया मुनिराजा से।
आहार क्रिया करके स्वामी, आगे बढ़ना अति आनंद से।।
चर्या करने श्री मुनिराजा, अति आग्रह से गणमान्यों के।
शुद्धि ले करके निकल गये, मन के अनुसार विधि लेके।।56।।

।। आहारों की विधि नहीं मिली ।।

कई चौकों से निकले स्वामी, पर विधि नहीं मिल पाने से।
बाजार तरफ बढ़ जाते हैं, यहाँ सभी विधि मिल जाने से।।
आनंदित हुए सभी श्रावक, गुरु का पड़गाहन होने से।
पर मारग में से लौट पड़े, उस श्रावक की कोई गलती से।।57।।

सत् विधी नहीं मिल पाने से, उस दिन कोई भी चौके में।
मुनिवर ने मुद्रा छोड़ दई, जाकर के श्री जिनमन्दिर में।।
सब भक्त गुरु के पास गये, अंतराय बड़ा हो जाने से।
मुनिराज यहाँ से जाने को, तैयार दिखे तब अन्तस से।।58।।

वहाँ पाँव पकड़ के सभी भक्त, विनती करते गुरुराजा से।
हे स्वामी आज यहीं रुकिये, इस अंतराय के कारण से।।
कल आहारों के बाद आप, साहर्ष गमन करना यहाँ से।
यदि आप यहाँ से चले गये, तब चर्चा होगी हर मुख से।।59।।

सब जैनेतर बन्धु यहाँ के, यह बोलेंगे हम लोगों से।
भूखे ही चले गये मुनिवर, आहार करा नहीं पाने से।।
तब मुनिश्री ने संकेत किया, कल की नहीं कोई बता सकता।
ऐसी कोई निश्चित बात नहीं, आहार सही कल हो सकता।।60।।

अब मुनिराजा रुक जाते हैं, सब लोगों के अति आग्रह से।
दूजे दिन पड़गाहन होता, एक चौके में अति आनंद से।।
करमों ने नहीं छोड़ा गुरु को, पहली ही अंजुली के जल में।
अंतराय हुआ गुरुराजा को, दूसरे दिन भी उस चौके में।।61।।

यहाँ विधि का लेख लिखा जो भी, नहीं कोई उसे मिटा सकता।
गुरु की वाणी सच ही निकली, कल की नहीं कोई बता सकता।।
अंजुली को छोड़ मुनिराजा, आये थे सहर्ष वसतिका में।
पर लोग दुखित होते भारी, ऐसी घटना से अंतरंग में।।62।।

राई भर भी नहीं घटे कछु, तिल भर भी ना बड़ सकता है।
लिख दिया विधाता ने जो कुछ, वो कभी नहीं मिट सकता है।।
लोगों को दुखित देख करके, मुनिवर ने यही सुनाई थी।
जो कर्म किये नित पूरब में, यह उनकी ही भरपाई थी।।63।।

।। समझौता मुनिराजा से ।।

तब नगरी के सब लोगों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा से।
दोनों कर जोड़ विनय कीनी, नहीं आज गमन कीजे यहाँ से।।
श्री विश्वपूज्य मुनिवर ने भी, अनुरोध किया मुनिराजा से।
स्वास्थ बिगड़ भी सकता है, ऐसी हालत में चलने से।।64।।

जब मुनिराजा जी नहीं माने, तब भक्त कहें चर्या हित में।
हे नाथ आज ही गमन करो, पर मेरी बात धरो चित में।।
पहला जो ग्राम मिलेगा अब, हे स्वामी वहीं ठहर जावें।
दूजे दिन नित चर्या करके, वहाँ से फिर आगे बढ़ जावें।।65।।

।। रजवाँस से विहार मुनिश्री का ।।

श्रावकजन की बातें सुनके, मुनिराजा कुछ मुस्काते हैं।
फिर तीन बजे इस नगरी से, संघ के संग बढ़ जाते हैं।।
दो मील यहाँ से चलने पर, एक ग्रंट ग्राम मिल जाता है।
सबही भक्तों के आग्रह पर, मुनिसंघ यहीं रुक जाता है।।66।।

यह छोटी बस्ती होने से, नहीं जैन यहाँ कोई रहता था।
नहीं कोई शाला भवन रहा, फिर भी उत्साह गजब का था।।
एक ठाकुर बन्धु की दुकान, भक्तों ने खाली करवा कर।
अनुकूल व्यवस्था बनवाई, बस्ती के लोगों से मिलकर।।67।।

।। ग्रंट ग्राम में आहारचर्या ।।

अब उचित कक्ष में भक्तों ने, मुनिराजों को ठहराया था।
दूजे दिन सुबह श्रावकों ने, चौका यहाँ सहर्ष लगाया था।।
रजवाँस ग्राम के जैनीजन, मुनियों का पड़गाहन करके।
प्रासुक आहार कराते हैं, नवधा भक्ति चित्त में धरके।।68।।

मुनिराजों के यहाँ रुकने से, इस बस्ती के सब नरनारी।
दर्शन करके मुनिराजों के, उत्साहित हुए बहुत भारी।।
मुनिराजों की चर्या लखकर, वो सोच रहे अपने मन में।
हो गये धन्य हम लोग सभी, आकर के इनके चरणों में।।69।।

रजवाँस ग्राम से गुरुभक्त, तब यहाँ सैकड़ों आये थे।
लख निरंतराय गुरु की चर्या, अन्तस में अति हरषाये थे।।
फिर सामायिक के बाद यहाँ, श्री राम लखन सीता जी पर।
प्रवचन हुए मुनिराजा के, उनकी उत्तम मर्यादा पर।।70।।

जिनको सुनने इस बस्ती के, सब ही मानव जन आये थे।
गुरु की मार्मिक मृदु वाणी को, सुनकर के अति हरषाये थे।।
श्री राम लखन सीता जी ने, चौदह बरसों तक जंगल में।
कभी माँसाहार नहीं कीना, फल फूल लिये निज भोजन में।।71।।

उनकी संतान सभी होकर, कुछ माँसाहार किया करते।
अपना सर्वस्व नाश के वह, निज आतम से धोखा करते।।
वहाँ पर बैठे सब लोगों ने, मुनिश्री की वाणी सुन करके।
तज दीना माँसाहार सहर्ष, आतम का हितचित में धरके।।72।।

लेकर के नियम सभी श्रोता, खुश होकर के निज भावों में।
गुरु चरणों में झुक जाते हैं, गुरु के जयकारों के संग में।।
प्रवचन पश्चात् गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई मील दूर तक श्री गुरु को, वह सब पहुँचाने जाते हैं।।73।।

।। ईश्वरबारा में मुनिसंघ ।।

रजवाँस नगर के भक्तों को, गुरु का रुकना इस बस्ती में।
बन गई अनोखी यादगार, जिसकी चर्चा है हर घर में।।
दोनों मुनिवर दो ब्रह्मचारी, कई भक्त श्रावकों के संग से।
होकर के नगरी बाँदरी से, आया संघ ईश्वरबारा में।।74।।

यहाँ के पर्वत पर है मन्दिर, श्री शान्तिकुन्थु अरह जिन का।
पर्वत की महा वन्दना कर, हरषाया मन मुनिराजों का।।
यह ईसुरबारा तीर्थक्षेत्र, श्री सुधासिन्धु मुनि पुंगव का।
है जन्म स्थान महापावन, इस युग के ज्ञान गुणीश्वर का।।75।।

चर्या करके सामायिक कर, गुरु यहाँ से कदम बढ़ाते हैं।
सीहोरा से होकर गुरुवर, सीहरमऊ में आ जाते हैं।।
दोपहर बाद मुनिराजा ने, यहाँ भक्तजनों के आग्रह से।
इस नगरी के चौराहे पर, प्रवचन कीने मृदुवाणी से।।76।।

।। सिलवानी में गुरु चरणों में ।।

श्री विमर्शसिन्धु जी मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
सिलवानी नगरी में आकर, अन्तस में अति हरषाते हैं।।
गुरु भाई यहाँ भक्तों के संग, नगरी की सीमा पर जाकर।
गुरु भ्राताओं की अगवानी, करते हैं भारी हरषाकर।।77।।

गुरु भ्राताओं से मिलन हुआ, वात्सल्यमयी अतिशयकारी।
सब गुरुराजों से गले मिले, श्री विमर्शसिन्धु समताधारी।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक अनुपम यात्रा के संग में।
गुरुवर के चरणों में आये, अति हर्षाकर निज भावों में।।78।।

यहाँ तीन प्रदक्षिणा देकर के, मुनिराजा ने गुरु चरणों की।
रज लगा स्वयं के माथे पर, गुरु से त्रय बार नमोस्तु की।।
अब मुनिश्री ने गुरुराजा से, अंतरंग भावों से विनती की।
हे परम आपके चरणों में, रहके इच्छा तप करने की।।79।।

अपने शिष्य के गुरुराजा ने, लखकर भक्तिमय भावों को।
अन्तस से बहुत प्रशंसा की, आशीष बहुत देके उसको।।
श्री गुरुराजा कहते सबसे, वात्सल्य मिलन सब संघों का।
होते रहने से बहुत बड़ा, हित होता है रत्नत्रय का।।80।।

हम सब संघों का एक जगह, मिलते रहने से आतम में।
शक्ति संचार हुआ करता, सत् मूलाचार पालने में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, कुछ दिना गुरु के सान्निध्य में।
निज आत्म साधना कीनी थी, समता धरके शुभ भावों में।।81।।

।। सिलवानी से विहार ।।

श्री विरागसिन्धु आचार्य गुरु, संघस्थ साधुओं के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, निर्मोही बनकर के चित में।।
श्री विमर्शसिन्धु जी मुनिराजा, गुरु के संग में करके विहार।
इस धन्य घड़ी को पा करके, खुश होते हैं मन में अपार।।82।।

।। टड़ा में आचार्य संघ ।।

सीहरमऊ होके गुरुसंघ, आ गया टड़ा की नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हर्षाये मन गगरी में।।
श्री विरागसिन्धु आचार्य गुरु, गणमान्यों के अति आग्रह से।
कुछ समय टड़ा को देते हैं, चरचा करके निज शिष्यों से।।83।।

यहाँ सात दिना गुरुराजा ने, मन्दिर परिसर में आनंद से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, अपनी पावन मृदुवाणी से।।
तब बालक वृद्ध जवान सभी, गुरुवाणी चित्त में धरने को।
मन्दिर परिसर में आते थे, नित नये पापों से बचने को।।84।।

अब टड़ा नगर से गुरुराजा, अपने संघ को लेके संग में।
कदमों को सहर्ष बढ़ाते हैं, अगली मंजिल धरके चित्त में।।
गुरु पठा और केवलारी से, धर गये सहजपुर का रस्ता।
तब तक भाई बोले गुरु से, यह अति ही लम्बा है रस्ता।।85।।

।। जंगल में भटक गये ।।

इस जंगल से सीधे निकले, तब पाँच मील बच सकते हैं।
शिष्यों से चर्चा कर गुरुवर, उस जंगल से चल सकते हैं।।
तब आगे चलता वो मानव, जब काफी आगे निकल गये।
अब रास्ता नहीं दिखत आगे, सब लोग रास्ता भटक गये।।86।।

जब राह नहीं सूझी कोई, अरु शाम समय हो जाता है।
तब जंगल में ही रुकने का, श्री गुरु का मन बन जाता है।।
अब शिष्यों से चरचा करके, उस बियावान जंगल ही में।
आचार्य प्रवर रुक जाते हैं, शिष्यों अरु भक्तों के संग में ।।87।।

।। संवाद बस्ती वालों से ।।

इस जंगल के उस पार बसी, बस्ती में रहने वालों को।
जब पता चला वो जा पहुँचे, बस्ती में लाने गुरुजन को।।
तब वहाँ सैकड़ों में मानव, विनती करते गुरुराजा से।
हे स्वामिन्! चलकर बस्ती में, वहाँ रुकियेगा अति आनंद से।।88।।

उन सब ही बस्ती वालों से, आचार्य प्रवर ऐसा कहते।
हम जैन दिगम्बर साधु हैं, रात्रि में विहार नहीं करते।।
इस ही जंगल में सब साधु, विश्राम करेंगे हम चित से।
तब बस्ती वाले कहते हैं, संकोचित हो श्री गुरुवर से।।89।।

ये महा भयानक जंगल है, हिंसक पशु यहाँ विचरते हैं।
जंगल में लख मानव तन को, वो कुछ भी यहाँ कर सकते हैं।।
हे स्वामिन्! बस्ती में चलिये, हम सभी प्रार्थना करते हैं।
तब श्रीगुरु कहते हैं उनसे, हम ध्यान प्रभु का धरते हैं।।90।।

इसको मजाक नहीं समझो, ये बात हमारी चित धरिये।
ये जगह भयानक है भारी, इस कारण से बस्ती चलिये।।
जब गुरु ने बात नहीं मानी, रुक गये वहाँ ही जंगल में।
तब बस्ती के सारे मानव, वहाँ आय गये गुरु के ढिंग में।।91।।

।। जंगल में सामायिक ।।

अब एक जगह सारे साधु, सामायिक करने लगते हैं।
तब चारों तरफ अलाव जला, वह लोग सुरक्षा करते हैं।।
वहाँ दंश परिषह को सहके, साधक आनंदित अन्तस से।
सामायिक करते रहे संत, नाता रखके निज आतम से।।92।।

गुरुओं की परम साधना में, मानव जन ने उस बस्ती के।
सा–अतिशय पुण्य कमाया था, रक्षा के भाव हृदय धरके।।
जब सुबह हुआ तो सूरज ने, गुरुराजों के दर्शन करके।
कीना था सफर शुरू अपना, जीवों का हित चित्त में धरके।।93।।

।। जंगल से सुबह विहार ।।

अब सुबह होत बस्ती वाले, गुरु चरणों में झुक जाते हैं।
आशीष पाय के गुरुवर का, अन्तस में अति हरषाते हैं।।
श्री गुरुराजा शिष्यों के संग, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
तब सहजपुर गुरुराजा के, वह लोग सभी संग जाते हैं।।94।।

।। संघ सहजपुर में ।।

यहाँ सहजपुर के जैनों ने, उन सबही बस्ती वालों का।
सम्मान किया था श्री फल से, उनके अति उत्तम कार्यों का।।
कुछ दिन रहके गुरुराजा ने, इस सहजपुर में आनंद से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, अपनी पावन मृदुवाणी से।।95।।

आचार्य प्रवर शिष्यों के संग, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
महाराजपुरा में आ करके, विश्राम हेतु रुक जाते हैं।।
दूजे दिन श्री आचार्य प्रवर, चर्या करके सामायिक कर।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, ईर्यापथ को चित में धरकर।।96।।

अब शाम समय आ गये गुरु, बीना बारह के तीरथ में।
यहाँ शान्तिनाथ के दर्शन कर, अति हर्षाये अपने उर में।।
फिर प्रात: ही दर्शन करके, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
देवरी नगरी में आकर के, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।97।।

आचार्य प्रभु संघ के संग में, नगरी के सभी जिनालय के।
दर्शन करते हैं आनंद से, संग में एक आनंद यात्रा के।।
दो दिन के बाद गुरुराजा, यहाँ से विहार कर जाते हैं।
गौरझामर सुरखी से होकर, नित आगे कदम बढ़ाते हैं।।98।।

सागर नगरी के पास एक, अंकुर कॉलोनी है प्रियकर।
जो बट का वृक्ष बनी है अब, अनुपम समृद्धि को पाकर।।
हैं तीन जिनालय अति सुन्दर, इस कॉलोनी के परिसर में।
जहाँ तीन शतक जैनी भाई, पूजा करते आतम हित में।।99।।

।। अंकुर कॉलोनी में गुरुवर ।।

उस ही कॉलोनी में गुरुवर, तब संघ सहित पधराये थे।
यहाँ श्रावक भी अगवानी कर, अन्तस में अति हरषाये थे।।
तब कॉलोनी के श्रावकजन, श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा के।
भावों से चरण पखारत हैं, बेबस से निर्मल जल लाके।।100।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, श्री विश्वपूज्य मुनि के संग में।
चऊमासा कीना था यहाँ पर, दो सहस्र इक ईसा सन् में।।
इस कारण से यहाँ के श्रावक, उत्साहित दिखे बहुत भारी।
क्योंकि मुनिश्री का चऊमासा, हो गया बड़ा अतिशयकारी।।101।।

आचार्य प्रवर की आज्ञा से, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने।
जिनमन्दिर जी के प्रांगण में, आतम हित के प्रवचन कीने।।
ये छठवाँ कलश हुआ पूरा, श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ का।
उन्तीस वर्षों की उम्मर का, अरु सात वरष के संयम का।।102।।

।। इति छठवाँ कलश ।।

राकेश भैया जी अपनी दादी बेनी बाई के साथ

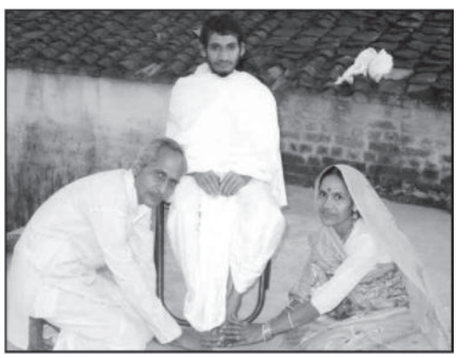

'आचरण को प्रणाम' : माता-पिता चरण स्पर्श करते हुए।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

सातवाँ कलश

।। मंगलाचरण ।।

सुकुमाल मुनि के चरणों में, हम सादर शीष झुकाते हैं।
स्वर्गों सम सुख को तजके जो, मुनि मारग को अपनाते हैं।।
बत्तीस रानियाँ अति सुन्दर, जिनके मन को बहलाती थीं।
दीपक की ज्योति को लखके, उनकी अँखियाँ भर आती थीं।।1।।

जिनको सरसों के दाने तक, कोमल तलवों में चुभ जाते।
जो रतनों के उजयारे से, अपने मन को राहत पाते।।
जिनने सूरज को नहीं लखा, महलों में सुख भोगा करते।
वो ही सुकुमाल मुनि बनके, जंगल में तप करने लगते।।2।।

निकला था खून तभी इनके, पैदल चलने में तलवों से।
उसको चख एक लोमड़ी ने, तन भखा इन्हीं का आकर के।।
सुकुमाल महा मुनिराजा के, अब आह नहीं निकली तन से।
उनकी ही त्याग भावना का, चारित्र सभी पढ़ते मन से।।3।।

ये विवरण पूरा लखने को, सुकुमाल चरित्र पढ़ना भाई।
पढ़के हृदय में धर लेना, होगा आतम को हितदाई।।
अब परम शारदा माता को, हम अपना शीष झुकाते हैं।
यह कारज सफल बनाने को, हृदय में उन्हें सजाते हैं।।4।।

विस्तार बढ़ाने तभी सहर्ष, अंकुर कॉलोनी मन्दिर का।
वहाँ पास पड़ी हुई भूमि में, आयोजन होवत पूजन का।।
कलशारोहण भी हुआ तभी, कॉलोनी के जिन मन्दिर में।
अति धूमधाम के साथ सहर्ष, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।5।।

त्रय दिन तक इस कॉलोनी में, हुई धर्म प्रभावना भी भारी।
आचार्य संघ के रुकने से, सब जैनों में अतिशयकारी।।
श्री गौराबाई जिनालय के, गणमान्य यहाँ पर आये थे।
चरणों में शीष झुका गुरु के, अन्तस में अति हरषाये थे।।6।।

फिर विनती करते हैं गुरु से, श्री गौराबाई जिनालय में।
महावीर जयंती का उत्सव, हो परम आपके सान्निध्य में।।
श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने, भव्यों के भावों को लखकर।
स्वीकृति दी वीर जयंती की, अपने शिष्यों से चरचाकर।।7।।

अंकुर कॉलोनी से गुरुवर, मोराजी जी भवन पहुँच जाते।
श्री बाहुबली के दर्शन कर, अंतरंग में भारी हरषाते।।
त्रय दिन के बाद गुरुराजा, भक्तों के आग्रह करने पर।
श्री गौराबाई जिनालय में, पधराये थे अति हर्षाकर।।8।।

।। महावीर जयंती सागर में ।।

यहाँ वीर जयंती का उत्सव, कटरा मन्दिर के प्रांगण में।
अति धूमधाम से मनता है, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।
मन्दिर के बाहर प्रांगण में, एक धर्मसभा का आयोजन।
पांडाल बनाकर किया तभी, भक्तों ने उत्तम मन भावन।।9।।

श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने, संदेश परम महावीरा का।
जन-जन को यहाँ सुनाया था, अति पावन सत्य अहिंसा का।।
आचार्य प्रभु के सत्य वचन, सुनके यहाँ कई अजैनों ने।
अंतरंग से माँस तजा खाना, हिंसा भी तजके उन सबने।।10।।

इस उत्सव के पश्चात् गुरु, संघस्थ साधुओं के संग में।
मोराजी भवन पुनः पहुँचे, एक आनंद यात्रा के संग में।।
अब आयोजन हो रहे रोज, मोराजी भवन परिसर में।
स्व-पर की आतम के हित के, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।11।।

अब रोज सुबह से होता है, भक्तामर गाथा का वर्णन।
आचार्य प्रवर के श्री मुख से, श्री मानतुंग मुनि का स्तवन।।
दोपहर बाद नित होता है, वाचन श्री राजवार्तिक का।
इस गाथा में अति ही पावन, वर्णन है सम्यग्दर्शन का।।12।।

श्रुत पाँचे का पावन उत्सव, मोराजी भवन परिसर में।
अति धूमधाम से मनता है, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।
जिनवाणी की पावन यात्रा, उस दिन नगरी में आनंद से।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, निकली थी सभी मुहल्लों से।।13।।

।। सागर से विहार मुनिवर का ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, अपने गुरुवर की आज्ञा से।
श्री विनर्घसिन्धु के साथ सहर्ष, विहार किया तब सागर से।।
अब नया संघ मुनिराजा का, श्रेयांसगिरि के दर्शन को।
चल पड़ता है मोराजी से, चित्त में धरके गुरुराजा को।।14।।

।। बाहुबली सागर से मिलन ।।

कर्रापुर से होकर के संघ, बण्डा नगरी में पधराया।
यहाँ शान्तिनगर के मन्दिर में, भक्तों ने संघ को ठहराया।।
श्री बाहुबली सिन्धु मुनिवर, वह बालाचार्य कहाते हैं।
इनसे मिलके दोनों मुनिवर, अन्तस में अति हरषाते हैं।।15।।

चर्या करके सामायिक कर, संघ यहाँ से कदम बढ़ाता है।
दलपतपुर नगरी में आके, विश्राम हेतु रुक जाता है।।
दूजे दिन चर्या करके संघ, श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिरि को।
यहाँ से भी कदम बढ़ाता है, श्री पारसप्रभु के दर्शन को।।16।।

।। मुनिसंघ नैनागिरि में ।।

अब दोनों मुनि महाराजों ने, श्री सिद्धक्षेत्र नैनागिरि में।
पर्वत की परम वन्दना की, अति हर्षा के अपने उर में।।
श्री पार्श्वप्रभु का समोशरण, इस ही पर्वत पर आया था।
यहाँ से ही पाँच मुनीन्द्रों ने, महामुक्ति का पद पाया था।।17।।

दो दिन रुक के मुनिराजों ने, यहाँ पार्श्वप्रभु जिनराजा के।
चरणों में ध्यान लगाया था, अपनी ही आतम में रमके।।
दो दिन के बाद मुनिसंघ ने, यहाँ से भी कदम बढ़ाया था।
शाहगढ़ घुवारा भगवाँ में भी, जिनधर्म ध्वजा फहराया था।।18।।

।। मुनिसंघ द्रोणगिरि में ।।

श्री पार्श्वगिरि के दर्शन कर, दोनों साधु यहाँ से चलके।
द्रोणागिरि तीरथ में आये, ईर्यापथ को चित में धरके।।
श्री गुरुदत्तादि मुनिन्द्रों ने, इस द्रोणगिरि के पर्वत से।
निर्वाण महापद पाया था, छुटकारा पाकर करमों से।।19।।

पैंतीस जिनालय हैं सुन्दर, पर्वत पर महा मनोहारी।
जिनके दर्शन को आवत हैं, हर रोज हजारों नरनारी।।
छोटी सम्मेद शिखर जी भी, इस तीरथ को सब कहते हैं।
दर्शन करने को देव यहाँ, स्वर्गों से आते रहते हैं।।20।।

।। मुनिसंघ मलहरा में ।।

दर्शन करके दोनों साधु, छोटी सम्मेद शिखर जी के।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, ईर्यापथ को चित में धरके।।
भक्तों के संग दोनों मुनिवर, आ गये मलहरा नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हरषाये मन गगरी में।।21।।

चर्या करके सामायिक कर, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
विंध्याचल की पावन धरती, पद कमलों से महकाते हैं।।
अब शाम समय दोनों साधु, एक बस्ती में रुक जाते हैं।
वहाँ की शाला में श्रावक जन, जिन सन्तों को ठहराते हैं।।22।।

।। गुलगंज में मुनिसंघ ।।

होते ही सुबह यहाँ से गुरु, भक्ति करके बढ़ जाते हैं।
गुलगंज ग्राम के मन्दिर में, दर्शन करने रुक जाते हैं।।
यहाँ भागचन्द इन्दु पंडित, सब जैन श्रावकों के संग में।
अगवानी करते हैं संघ की, आनंदित होकर के चित में।।23।।

अब भागचन्द इन्दु पंडित, अंतरंग से मुनिदीक्षा लेके।
पारस सागर बन जाते हैं, आचार्य महापदवी पाके।।
पारस सागर के चरणों में, हम सादर शीष झुकाते हैं।
इस महाकाव्य के लिखने को, उनको भी हृदय बिठाते हैं ।।24।।

ऋषियों ने पुन: विहार किया, यहाँ से भी सामायिक करके।
आ गये छतरपुर नगरी में, ईर्यापथ को चित में धरके।।
नगरी के सबई श्रावकों ने, सीमा पर द्वय मुनिराजों की।
अपने अंतरंग के भावों से, जयकारों संग अगवानी की।।25।।

।। छतरपुर में मुनिसंघ ।।

यहाँ के श्रावक शुभ भावों से, श्री विमर्श सिन्धु मुनिराजा के।
प्रक्षाल करत हैं चरणों का, यमुना से पावन जल लाके।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिराजों को लेकर आये, नगरी के बड़े जिनालय में।।26।।

तब पाँच दिना यहाँ रुका संघ, श्रावक जन के अति आग्रह से।
अब रोज सुबह से होते हैं, प्रवचन भी श्री गुरु के मुख से।।
फिर सामायिक के बाद यहाँ, वाचन होवत छहढाला का।
विस्तार सहित समझाया था, गुरुराजा ने हित आतम का।।27।।

।। बमीठा में मुनिसंघ ।।

छठवें दिन दोनों मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
आकर के नगर बमीठा में, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।
श्री विशल्य सिन्धु मुनिराजा का, यह जन्म स्थान कहाता है।
इन दोनों महा मुनिराजों में, गुरुभाई का प्रिय नाता है।।28।।

।। मारग का एक प्रसंग ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा को, नवधा भक्ति से पड़गाकर।
उनके परिवार जनों ने ही, आहार कराये हरषाकर।।
दोपहर बाद मुनिराजों ने, यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे।
मारग में सूरज छिपने से, एक बीहड़ में ठहराये थे।।29।।

तब तक एक बस्ती वालों को, यह पता चला कि बीहड़ में।
दो नग्न मुनीश्वर बैठे हैं, अत्यन्त कठिन इस गर्मी में।
तब बस्ती वाले दौड़ पड़े, उन मुनिराजों के लखने को।
वह पास आयके बैठ गये, लख ध्यान मग्न मुनिराजों को।।30।।

।। बातचीत बस्ती वालों से ।।

जब ध्यान हुआ पूरा गुरु का, तब इक मानव गुरु से कहता।
हे नाथ! व्यवस्था करने को, क्या कोई साथ नहीं रहता।।
श्री विमर्शसिन्धु ने कहा तभी, मुस्करा करके उस मानव से।
बन जाती सभी व्यवस्थायें, हमरी इस पिछी कमंडल से।।31।।

मेरा मतलब है भोजन से, वो मानव गुरु से कहता है।
नित दूध चाय अरु पानी की, कब कौन व्यवस्था करता है।।
हे बन्धु दिन में एक बार, भोजन हम लोग सदा करते।
मुनिराजा कहते हैं उससे, रात्रि में भोजन नहीं करते।।32।।

भोजन करने के साथ सदा, हम पानी पीते एक बार।
हम जैन दिगम्बर साधु हैं, निज आतम की करते समार।।
कोई वस्तु की आवश्यकता हो, तो सेवा का अवसर देकर।
बेझिझक बता दो हे स्वामी! वो मानव कहता हर्षाकर।।33।।

दो तखत होंय तो ला दीजे, यह मुनिश्री कहते हैं उससे।
हम लोग उन्हीं पर बैठेंगे, कुछ और नहीं चहिये तुमसे।।
कुछ लोग वहाँ से घर जाके, दो तखत सहर्ष ले आये थे।
गुरुओं के पास बिछा करके, अन्तस में अति हरषाये थे।।34।।

फिर एक मनुष्य ने पूछा था, गुरुवर यहाँ से कहाँ जावेंगे।
हम दोनों ही छै बजे सुबह, पन्ना नगरी को चल देंगे।।
क्या पन्ना वाले जानत हैं, कि आप यहाँ पर ठहरे हैं।
या फोन उन्हें हम कर देवें, उनका नम्बर हम जानत हैं।।35।।

जैसा तुम उचित यहाँ जानो, गुरुराजा कहते हैं उनसे।
वह चले गये अपने घर को, आशीष लेय के अंतरंग से।।
पन्ना वालों को वह मानव, घर जाकर फोन लगाते हैं।
गुरुओं के यहाँ ठहरने की, सारी स्थिति समझाते हैं।।36।।

त्रय घंटा बाद कई श्रावक, पन्ना से यहाँ पर आये थे।
वैयावृत्ति कर गुरुओं की, वह रात यहीं ठहराये थे।।
ऐसे कई अवसर आये हैं, जब जैनेतर बन्धु मिलके।
जिन गुरुओं की सेवा करते, आदर के भाव हृदय धरके।।37।।

।। भावों की महिमा ।।

मुनियों को कभी गमन में ही, मारग में सूरज छिप जाता।
तब बस्ती की शाला में संघ, आनंद के साथ ठहर जाता।।
तब शिक्षक ही छात्रों के संघ, गुरुओं की सभी व्यवस्था के।
इंतजाम करत हैं आदर से, जब भाव रहत हैं सेवा के।।38।।

।। भावों से सब कारण बनते ।।

पर अन्य बिजाती सन्तन की, जैनी जन सेवा नहीं करते।
उन लोगों के कोई कार्यों में, आदर के भाव नहीं धरते।।
यह सत्य लिखा हमने भाई, इसको धर लेना हृदय में।
समभाव सदा रखना चाहिये, यह सभी लिखा है आगम में।।39।।

मानवता सीखो सब भाई, उन सेवा करने वालों से।
आतम रहती हैं पाक साफ, मानवता हृदय बसाने से।।
जिनके यहाँ भाव स्वार्थी हैं, वह मानवता के दुश्मन हैं।
पर की नजरों में गिरने से, गंदला भी उनका जीवन है।।40।।

।। अविवेक से हानि ।।

जिन सन्तों के प्रति है लगाव, अब भी अजैन बंधुओं में।
जिसकी यह ताजी है मिशाल, जो दिखी यहाँ इन लोगों में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा की, श्रावक वैयावृत्ति करके।
घी को नहीं पोंछा तब उनने, तन से ही श्री गुरुराजा के।।41।।

कुछ समय बाद लाखों चींटी, आ गई श्री गुरु के तन पर।
भक्षण कीना गुरु के तन का, उन चींटियों ने घी को लखकर।।
वैयावृत्ति यहाँ करने में, जो नहीं विवेक लगाते हैं।
अविवेक रूप सेवा करके, वह निश्चित पाप उपाते हैं।।42।।

वैयावृत्ति सब करो सहर्ष, लेकिन विवेक रखके उसमें।
तुमको भी पुण्य मिलेगा वहाँ, गुरु को समता होवे जिसमें।।
श्री विमर्शसिन्धु के जीवन की, आगे अब कथा बढ़ाते हैं।
जो पता चली कुछ स्रोतों से, उसको ही यहाँ दरशाते हैं।।43।।

।। मुनिसंघ पन्ना में ।।

हीरों की नगरी पन्ना में, अब नर हीरा पधराते हैं।
इनकी अगवानी कर श्रावक, अन्तस में अति हरषाते हैं।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को सब लेके आये, नगरी के प्रमुख जिनालय में।।44।।

श्री जिनमन्दिर के द्वारे पर, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, गणमान्यों ने अति हरषाके।।
फिर मन्दिर में मुनिराजों ने, दर्शन कर सभी वेदियों के।
पौर्वाह्णिक ही स्वाध्याय किया, आतम का हित चित में धरके।।45।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा जी, चर्या करने निकले चित से।
तब शान्तिकुमार के चौके में, पड़गाहन होता है विधि से।।
श्री गुरु को नवधा भक्ति से, ले गये सहर्ष वह चौके में।
वहाँ जल ही लेते हैं केवल, गुरुराजा निज आहारों में।।46।।

तब शोक लहर छा जाती है, गुरु के आहार ना होने से।
गृहणी तो रोने लगी बहुत, गुरुवर के भूखे रहने से।।
तब पता चला वहाँ लोगों को, गुरुवर को पित्त खराबी से।
इस बड़ी कठिन बीमारी में, हो जाती अरुचि अहारों से।।47।।

पन्ना नगरी में चार दिना, तब रहते दोनों मुनिराई।
यहाँ आहारों में देख भाल, करते हैं श्रावक हितदाई।।
चौथे दिन पन्ना से गुरुसंघ, कदमों को सहर्ष बढ़ाता है।
देवेन्द्र नगर के मारग में, गुरु भ्राता संघ मिल जाता है।।48।।

।। विनिश्चयसागर जी से मिलन ।।

तब दोनों ही महा मुनियों का, गुरु भाई विनिश्चय सागर से।
वात्सल्य मिलन हो जाता है, मारग में ही अति आनंद से।।
दोनों संघों का सुखद मिलन, यहाँ होता है अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की होवत है, आनंद से कुशल समाचारी।।49।।

।। देवेन्द्रनगर में मुनिसंघ ।।

दोनों संघ के मुनिराजों ने, अन्तस भावों से मिल करके।
अपनी अपनी रस्ता पकड़ी, ईर्यापथ को चित्त में धरके।।
श्री विमर्शसिन्धु दोनों साधु, देवेन्द्रनगर में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।50।।

दोनों मुनियों को श्रावक जन, एक आनंद यात्रा के संग में।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, लेकर आये जिनमन्दिर में।।
यहाँ दोनों ही मुनिराजों ने, अपनी पावन मृदुवाणी से।
धर्मामृत यहाँ बरसाया था, जिन आगम के सिद्धांतों से।।51।।

।। नागोद में मुनिसंघ ।।

सामायिक करके मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
नागोद नगर में आकर के, जिनमन्दिर में रुक जाते हैं।।
दूजे दिन सुबह सवेरे से, प्रवचन होते मुनिराजों के।
फिर आहारों की क्रिया हुई, नवधा भक्ति चित में धरके।।52।।

दोपहर समय मुनिराजों ने, अपनी अन्तस की आतम से।
प्रतिक्रमण बड़ा यहाँ कीना था, वह दिन चौदस का होने से।।
अपरान्ह काल की बेला में, गुरु यहाँ से भी बढ़ जाते हैं।
तब लोग यहाँ के गुरु संग में, कुछ मील दूर तक जाते हैं।।53।।

मुनिराजों पर तब रस्ते में, जलवृष्टि हुई बहुत भारी।
जिसको सहते हैं मुनिराजा, समता धर के मन में भारी।।
पर आगे बढ़ना ऋषियों का, आनंद के साथ रहा जारी।
परिषह सह लेना सन्तों की, आतम को होवत हितकारी।।54।।

प्रक्षाल सदा ही होवत है, ऋषियों के पावन चरणों का।
पर बारिस ने उस दिन कीना, प्रक्षाल सहर्ष पूरे तन का।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा से, संघस्थ मुनि तब पूछत हैं।
कुछ पता आपको है इसका, कि आज कहाँ पर रुकना है।।55।।

तब विमर्शसिन्धु ने बतलाया, आगे कोई बस्ती मिलने पर।
हम आज वहाँ ही रुकेंगे, कोई शाला आदि दिखने पर।।
जब तलक उजेला है भाई, तब तलक रास्ता चले चलो।
अब मौसम भी हो गया साफ, सो मंजिल तक तो बढ़े चलो।।56।।

तब ही बस को रुकवा करके, एक मानव नीचे आता है।
मुनियों के पास पहुँच के वो, पद कमलों में झुक जाता है।।
वह कहता है मुनिराजों से, हम सतना नगरी में रहते।
है पंकज जैन नाम हमरा, वहाँ मुनियों की सेवा करते।।57।।

मुनिसंघ की सेवा समिति में, अध्यक्ष आज हूँ सतना का।
हे नाथ मुझे अवसर दीजे, चरणन की सेवा करने का।।
हे स्वामी मेरे संग चलिये, शाला का भवन यहीं पर है।
उसमें ही आप ठहर जाना, रुकने को वो अति बेहतर है।।58।।

।। एक शाला में रात्रि विश्राम ।।

तब पंकज ने उस शाला में, एक कमरा साफ कराया था।
उसमें दोनों मुनिराजों को, अति आदर से ठहराया था।।
सतना को करके फोन तभी, पंकज ने वहाँ के भक्तों को।
पाटा आदि सब बुलवाये, मुनियों की परम व्यवस्था को।।59।।

अतिशीघ्र समिति के लोगों ने, यहाँ आकर के मुनिराजों की।
वैयावृत्ति के साथ सहर्ष, रुकने की पूर्ण व्यवस्था की।।
पंकज के साथ सभी मानव, तब रात वहीं रुक जाते हैं।
मुनिराजों की सेवा करके, अन्तस में अति सुख पाते हैं।।60।।

।। सतना में मुनिसंघ ।।

तब दोनों मुनि महाराजों ने, प्रातः का सामायिक करके।
सतना की ओर विहार किया, ईर्यापथ को चित में धरके।।
सतना नगरी की सीमा पर, तब खड़े सैकड़ों नरनारी।
ऋषियों की करने अगवानी, खुश होकर के मन में भारी।।61।।

यहाँ भक्तों ने मुनिराजों के, यमुना के अति निर्मल जल से।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, जयकारों संग अति आनंद से।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनियों को वह लेकर आये, नगरी के ही जिनमन्दिर में।।62।।

यहाँ सभी श्रावकों ने मिलने, मन्दिर जी के दरवाजे पर।
घृत के दीपों से आरती की, मुनिराजों की अति हर्षाकर।।
उस ही दिन से हो गये शुरू, प्रवचन भी यहाँ मुनिराजों के।
नित आठ बजे से मन्दिर में, परमात्म प्रकाश की गाथा के।।63।।

रोजाना होवत स्वाध्याय, अरु सायंकाल में गुरु भक्ति।
जिसमें नित शामिल होता है, सतना नगरी का हर व्यक्ति।।
था चऊमासे का समय निकट, सो सतना के श्रावक जन ने।
निज नगरी में चऊमासे की, विनती कीनी गुरु से सबने।।64।।

हे स्वामी सतना नगरी में, चऊमासा कर हम लोगों की।
कृतकृत्य आतमा को करिये, बरसा करके धर्मामृत की।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा जी, तब कहते सतना वालों से।
चऊमासे की अनुमति लाओ, श्री विरागसिन्धु गुरुराजा से।।65।।

।। 2002 का वर्षायोग सतना में ।।

तब सतना के श्रावक बन्धु, गुरुराजा के ढिग जा करके।
निज नगरी में चऊमासे की, अनुमति लाये अति हर्षाके।।
तब षाढ़ सुदी चौदस के दिन, मुनिराजों के चऊमासे का।
कलशा होता है स्थापित, यहाँ दो हजार दो के सन् का।।66।।

तब सरस्वती भवन में ही, तेईस जुलाई के दिन में।
यह कार्य हुआ था भव्य यहाँ, अति ही सुन्दर आयोजन में।।
श्री रविन्द्र कुमार जी जैन साव, यहाँ कलशा के स्थापन का।
सौभाग्य प्राप्त कर लेते हैं, उपयोग सही कर लक्ष्मी का।।67।।

इस समारोह के संचालक, सिद्धार्थ जैन ने आनंद से।
सम्पन्न कराया यह कारज, आशीष पाकर ऋषिराजों से।।
दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीरा शासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, पूजन करके प्रभु वीरा की।।68।।

इस तरह यहाँ वो कार्य हुए, जो हुए अन्य चऊमासों में।
अति धूमधाम के साथ सभी, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
अब सुबह शाम दोनों टाइम, जो प्रवचन होते मुनिश्री के।
श्री विमर्शसिन्धु जी उनमें से, कुछ प्रश्न यहाँ चित में धरके।।69।।

छह बजे शाम को रोजाना, यह प्रश्न यहाँ पूछे जाते।
प्रोत्साहित उन्हें किया जाता, जिनके उत्तर सत ही आते।।
अगस्त आठ से शिविर लगा, मुनिश्री की परम प्रेरणा से।
दो महीने तक वो चला यहाँ, इस चऊमासे में आनंद से।।70।।

जिसमें श्रावकगण रोजाना, धवल वस्त्र धारण करके।
इस धर्मसभा में नित आते, टोपी भी धवल लगा करके।।
मातायें बहिनें केशरिया, परिधानों में सजके धजके।
आया करती थीं निरत यहाँ, भावों से शिवरार्थी बनके।।71।।

दोनों मुनिवर यहाँ रोजाना, जो अध्ययन श्रेष्ठ कराते थे।
उसको ही यहाँ शिवरार्थी जन, हृदय में सहर्ष सजाते थे।।
गुरुवर से सुने सुवाक्यों का, जो शुद्ध उच्चारण करता था।
गणमान्यों के कर कमलों से, पुरस्कार उसे ही मिलता था।।72।।

इस महाशिविर में भव्यों ने, दोनों ही महा मुनिराजों से।
धर्मामृत का रसपान किया, उत्साहित होकर भावों से।।
श्रद्धा अरु श्रेष्ठ समर्पण भी, शिविरार्थी जिनके अन्तस में।
तब सराहनीय रहा भारी, रहके उत्तम अनुशासन में।।73।।

।। मुनिश्री की एक रचना ।।

शिवरार्थी जन को मुनिराजा, एक कविता तभी सुनाते हैं।
उस कविता को हम भावों से, इस कागज पर दरशाते हैं।।
कभी किसी का दिल दुख जाये, ऐसे बोल कभी मत बोल।
घावों पर मरहम लग जाए, ऐसे बोल रहत अनमोल।।74।।

मात पिता का आदर करके, धर्म मार्ग चलते रहना।
श्रावक का कर्त्तव्य कहा है, गुरुजन की सेवा करना।।
धन वैभव यह महल खजाना, कुछ भी साथ न जायेगा।
सुबह खिला जो फूल बाग में, शाम समय मुरझायेगा।।75।।

श्री विमर्शसिन्धु जी महामुनि, कविराजा उत्तम दरजे के।
कवितायें रोज कहा करते, प्रवचनों में अति हरषाके।।
''जीवन है पानी की बूँद'' ये कविता श्री गुरु ने लिख के।
प्रसिद्धि बहुत बड़ी पाई, कविता के बोल स्वयं कहके।।76।।

।। मनाया दसलक्षण पर्व ।।

दसलक्षण के प्रिय पर्वों में, ग्यारह तारीख सितम्बर से।
दस धर्मों पर होता वाचन, मुनिराजों के पावन मुख से।।
दोपहर बाद नित होता है, तत्त्वार्थ सूत्र का श्रेष्ठ कथन।
जिन मन्दिर जी के प्रांगण में, तत्त्वों का अति सुन्दर वर्णन।।77।।

।। क्षमावाणी पर्व मना ।।

दस दिन तक सभी श्रावकों ने, सत् संयम को धरके चित में।
व्रत सहित साधना कीनी थी, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
फिर क्षमावाणी का पर्व मना, बाईस सितम्बर के दिन में।
समभाव बना करके सबने, अति श्रेष्ठ क्षमाधारी मन में।।78।।

कई नगरों के श्रावक बन्धु, इस आयोजन में आये थे।
मुनिराजों के दर्शन करके, अन्तस में अति हरषाये थे।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, अपनी पावन मृदुवाणी से।
समझाया था श्रावक जन को, पहली सत्क्षमा अहिंसा से।।79।।

।। क्षमाधर्म पर उपदेश ।।

मृदुता लाना अन्तस मन में, सत् क्षमा धर्म कहलाता है।
क्रोधादिक के मिट जाने पर, आतम निर्मल बन जाता है।।
दो श्रावक पन्ना नगरी से, श्री गुरुवर के ढिंग आये थे।
चरणों में शीष झुका उनने, अपने मंतव्य बताये थे।।80।।

हे स्वामी हमरी मातेश्वरी, पीड़ित है बहु बीमारी से।
डॉक्टर साहब ने मना किया, कुछ होगा नहीं दवाओं से।।
वह मरण समाधि चाहत है, यह इच्छा है उनके मन की।
हे स्वामी ऐसी कृपा करे, इच्छा पूरण होवे उनकी।।81।।

यदि आप हमें आज्ञा देवें, तब उन्हें आपके चरणों में।
लेकर हम उनको आ जावें, उनकी ही आतम के हित में।।
तब मुनिश्री कहते उनसे, श्रेयांसगिरि के तीरथ में।
हमरे गुरुदेव विराजे हैं, संघस्थ साधुओं के संग में।।82।।

।। चन्द्रानी देवी पन्ना से ।।

वहाँ लेकर जाओ माँ जी को, श्री गुरु के पावन चरणों में।
वहाँ पूर्ण साधना हो सकती, माता जी की आतम हित में।।
हमरे संघ में यहाँ कोई भी, नहीं साथ आर्यिका माता है।
वह यहाँ साधना करवातीं, हमरे संघ में यह अड़चन है।।83।।

कुछ श्रावक पन्ना नगरी से, माताजी को लेकर संग में।
सतना नगरी में आय गये, मुनिश्री के पावन चरणों में।।
वो विनती करते हैं गुरु से, चरणों में शीश झुका करके।
इन्कार नहीं करिये स्वामी, माँ जी की हालत चित धरके।।84।।

उस माँ के पुत्रों बहुओं का, मुनिश्री के चरणों में झुकना।
सत् चमत्कार हो गया वहाँ, मुनियों के चरणों में पड़ना।।
मुनिराज श्री करुणा करके, कहते हैं उन सब लोगों से।
इनको पहनाओ शुद्ध वस्त्र, रंगीन हटा इनके तन से।।85।।

अब धवल वस्त्र में माँ जी का, सत नया रूप बन जाता है।
यह रूप देख घर वालों का, अन्तस भी अति हरषाता है।।
अब मुनिवर ने माँ से पूछा, क्या भाव समाधि करने के।
तब माँ जी ने सहमति दीनी, सिर को ही वहाँ हिला करके।।86।।

।। उपदेश छपकराज को ।।

वहाँ कहा बहु ने माँ जी से, तुमरा है पुण्य प्रबल भारी।
जो मिले मुनीश्वर के दर्शन, इस हालत में अतिशय कारी।।
तब मुनिराजा मृदुवाणी से, उस माता को समझाते हैं।
अनादिकाल से सब प्राणी, इस जग में चक्कर खाते हैं।।87।।

भोगोपभोग अरु संग्रह में, फँसकर ही चारों गतियों के।
अनंतबार दुख भोगे हैं, केवल पर में ममता धरके।।
यह धन वैभव रिस्ते नाते, नहीं हुए किसी के भी अपने।
इनके ही संग में रह करके, नित ही देखे झूठे सपने।।88।।

नहीं किया स्वयं की आतम का, उपकार किसी भी जीवन में।
इस कारण काल अनादि से, भ्रमण कीना चहुँ गतियों में।।
अब तजके सभी विभावों को, आतम का हित स्वीकार करो।
तज करके सभी कषायों को, संयम का मारग हृदय धरो।।89।।

यह मोह कर्म जग जीवों का, पहले नम्बर का दुश्मन है।
इससे बचने को जीवन में, केवल संयम सत् साधन है।।
चन्द्राणी देवी मुनिवर के, प्रसन्न हुई उद्बोधन से।
फिर विनती की कर जोड़ वहाँ, दीक्षा लेने की गुरुवर से।।90।।

।। आर्यिका दीक्षा सतना में ।।

मुनिवर ने तब माता जी के, परिवार जनों से चरचा कर।
परिग्रह का त्याग कराया था, विधिपूर्वक ही दीक्षा देकर।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, उन पूज्य आर्यिका माता का।
यहाँ विलक्ष्य श्री जी नाम रखा, समतामयी भाग्य विधाता का।।91।।

श्री विलक्ष्य श्री आर्यिका माता, प्रसन्न दिखीं अब भावों से।
मुनिश्री की वाणी सुन करके, चारों आहार तजे मन से।।
तब पाठ समाधि मरण वहाँ, मुनिराज सुनाते हैं उनको।
जिसको अंदर से सुनती है, माता जी आतम के हित को।।92।।

।। विलक्ष्य श्री माता जी की समाधि ।।

अब श्री छपक के दर्शन को, आ गये हजारों नरनारी।
अपने अंतरंग के भावों में, श्रद्धा धरके अतिशयकारी।।
दस बजे अचानक माँ जी ने, नश्वर काया समभावों से।
मुनिद्वय के चरणों में त्यागी, नाता रखके निज आतम से।।93।।

दोनों मुनिराज वसतिका में, आकर सामायिक करते हैं।
उस दिन दोनों ही महामुनि, उपवास हृदय में धरते हैं।।
साढ़े ग्यारह पर भक्त सभी, माँ जी का शव इक डोली में।
संस्कार स्थल ले जाते हैं, एक पावन यात्रा के संग में।।94।।

।। पूजन शिविर ।।

दोपहर बाद में भक्त सभी, मुनियों के पावन सान्निध्य में।
श्रद्धांजलि सभा यहाँ करते, श्रद्धा धरके अन्तस मन में।।
पन्द्रह अक्टूबर के दिन से, द्वय मुनिराजों के सान्निध्य में।
पूजा का शिक्षण शिविर लगा, नौ दिन का ही इस नगरी में।।95।।

श्री समोशरण की रचना कर, प्रभु को उसमें पधराया था।
विधिपूर्वक वह पूजा करके, भव्यों का मन हरषाया था।।
छह बजे सुबह से रोजाना, शिवरार्थी जन पूजा करते।
नौ बजे सहर्ष गुरुराजा की, पावन वाणी चित में धरते।।96।।

आनंद की गंगा बही रोज, नौ दिन तक सतना नगरी में।
प्रभु जी की रथ यात्रा निकली, उत्सव के पूर्ण समापन में।।
श्रीमती वन्दना जैन सहर्ष, आँसू भरके निज अँखियों में।
कहतीं इतना आनंद हमें, नहीं मिला कभी इस जीवन में।।97।।

इतना आनंद यहाँ आया, इस समोशरण की रचना में।
साक्षात प्रभु का समोशरण, कैसा होगा सुन्दरता में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, इस सतना के चऊमासे में।
परमात्म प्रकाश की गाथा का, अनुवाद किया था हिन्दी में।।98।।

कई ग्रन्थों का पद्यानुवाद, यहाँ किया श्री मुनिराजा ने।
जिसका आनंद प्रथम लीना, श्रोता बन निर्मल सतना ने।।
स्वाध्याय समय एक सज्जन ने, मुनिराजा के पद कमलों का।
रोकत भये श्री प्रक्षाल किया, परिचय देके निज श्रद्धा का।।99।।

।। ज्ञानाभ्यास का अंतराय ।।

तब एक सज्जन ने पूछा था, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा से।
अब तो भक्ति में लोग यहाँ, उपसर्ग करत हैं आनंद से।।
यह ज्ञानाभ्यास के अंतराय, नहीं लोग जानते हैं इसको।
ऐसा मुनिवर ने समझाया, मुस्कान सहित उन सज्जन को।।100।।

श्री मुनिवर की नित चर्या से, यहाँ के श्रावक उत्साहित थे।
जिसकी चर्चा सब आपस में, सम्यक भावों से करते थे।।
प्रभुवीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक वदी अमावस में।
अति धूमधाम से मनता है, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।101।।

उस ही दिन दोनों मुनिराजा, विधिपूर्वक ही चऊमासे का।
निष्ठापन करते हैं चित से, इस दो हजार दो के सन् का।।
ये कलश सातवाँ पूर्ण भया, श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ का।
इकतीस वर्ष की उमर का, अरु सात वर्ष के संयम का।।102।।

।। इति सातवाँ कलश ।।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

आठवाँ कलश

।। मंगलाचरण ।।

उन सभी बाल बालाओं का, भावों से नमन यहाँ करते।
जो माता पिता बुजुर्गों की, सत् सेवा में तत्पर रहते।।
गुरुजन की सेवा भक्ति में, जिनका सत् भाव समर्पित है।
उनको भी मेरी अंतरंग से, सत् महा वन्दना अर्पित है।।1।।

उन सबही दौलत वालों को, अन्तस से नमन यहाँ मेरा।
जो शिक्षा में उपयोग करत, अपनी दौलत का बहुतेरा।।
अब नमन उन्ही को करता हूँ, जिनने असहाय गरीबों को।
धमार्थ बनाये अस्पताल, उन सबकी मुफ्त चिकित्सा को।।2।।

उनको भी नमन यहाँ मेरा, मानवता श्रेष्ठ रही जिनमें।
नित दया क्षमा सच्चाई की, सरिता बहती निज के मन में।।
अरु नमन यहाँ उसको मेरा, जो पुरातत्त्व के रक्षक हैं।
नित आयतनों के लालच बिन, अध्यक्ष और व्यवस्थापक है।।3।।

भावों से नमन यहाँ उनको, जो आगम में रुचियाँ रखके।
मन्दिर निर्माण कराते हैं, अपनी सद् द्रव्य लगा करके।।
अब नमन उन्हीं को है मेरा, जो जीर्णोद्धार करा करके।
जस का तस उसे बनाते हैं, सत् मूलरूप चित में धरके।।4।।

है बारम्बार नमन उनको, अनमोल सम्पदा को जिनने।
रक्षा कर सहर्ष बचाया है, जो सभी आयतन हैं जूने।।
उन सबको नमन यहाँ मेरा, ख्याति की मूरख नहीं जिनमें।
जिनने मुनि भेष धरा चोखा, रमने को अपनी आतम में।।5।।

अब सरस्वती को वन्दन है, अपने दृढ़ भाव बनाने को।
हृदय में उन्हें सजाता हूँ, इस महाकाव्य के लिखने को।।
अब वन्दन करता हूँ मन से, इस महाकाव्य के नायक का।
ये कलश आठवाँ लिखता हूँ, उनके ही पावन चारित का।।6।।

अब आगे कथा बढ़ाता हूँ, गुरु विमर्श सिन्धु जीवन पथ की।
सतना से अब होगा विहार, ये चर्चा माह नवम्बर की।।
मुनिसंघ ने सतना नगरी से, जब आगे कदम बढ़ाये थे।
तब नगरी के श्रावक जन ने, अंखियों से जल बरषाये थे।।7।।

अमरपाटन की ओर सहर्ष, मुनिराजा कदम बढ़ाते हैं।
पर सूरज के छिप जाने से, इक शाला में रुक जाते हैं।।
आगे जाने पर एक जगह, सतना नगरी के भक्तों ने।
नवधा भक्ति से मुनियों को, आहार कराये थे सबने।।8।।

।। अमरपाटन में मुनिसंघ ।।

अमरपाटन में मुनिराजा, तब दूजे दिन पधराये थे।
सीमा पर करके अगवानी, यहाँ के श्रावक हरषाये थे।।
यहाँ नगरी के गणमान्यों ने, दोनों ही महा मुनिराजों के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, अंतरंग में भारी हरषाके।।9।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिराजों को लेकर के सब, आ गये यहाँ जिनमंदिर में।।
श्री विनर्घ्यसिन्धु मुनिराजा जी, इस ही नगरी में जन्मे हैं।
यहाँ की पावनतम गलियों में, गुरु बालापन में खेले हैं।।10।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा से, यहाँ शीतकालीन वाचना की।
श्री फल का अर्घ्य चढ़ा करके, अंतरंग भावों से विनती की।।
श्रेयांसगिरि में जा करके, श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा से।
वाचन की अनुमति ले आओ, ये मुनिश्री कहते हैं सबसे।।11।।

।। अमर पाटन में शीतकालीन वाचना ।।

तब नगरी के श्रावक बन्धु, श्रेयांसगिरि में जा करके।
अनुमति वाचना की लाये, गुरुराजा से अति हरषाके।।
हो गई वाचना शुरू सहर्ष, स्वपर की आतम के हित में।
मुनिराजा के पावन मुख से, दोनों टायम इस नगरी में।।12।।

वाचन होता है रोज सुबह, प्रवचनसार की गाथा का।
दोपहर बाद होता वाचन, पुरुषारथ सिद्ध्युपाय का।।
एक दिवस यहाँ मुनिराजों की, इस ही नगरी के प्रांगण में।
पिच्छिका होवत परिवर्तन, एक सुन्दरतम आयोजन में।।13।।

तब नई पिच्छिका मुनिश्री को, दे करके भक्त सभी चित से।
संयम धारण करने वाले, जूनी पिच्छि लेवत मुनि से।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, चौदह तारीख दिसम्बर में।
पंचम मुनि दीक्षा समारोह, यहाँ मना एक आयोजन में।।14।।

।। उपा. आत्मासागर से मिलन ।।

कई ग्रामों नगरों के श्रावक, इस समारोह में आये थे।
गुणगान यहाँ करके गुरु का, अंतरंग में अति हरषाये थे।।
श्री आत्मासागर उपाध्याय, पधराये पाटन नगरी में।
दोनों मुनियों से मिल करके, अति हर्षाये मन गगरी में।।15।।

।। सतना से विहार ।।

श्रेयांसगिरि में मुनिवर के, गुरुराजा जी संघ के संग में।
तीरथ पर सहर्ष विराजे थे, प्रभु आदिनाथ के चरणों में।।
अब दोनों ही मुनिराज यहाँ, गुरुवर की आज्ञा पा करके।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, श्रेयांसगिरि चित में धरके।।16।।

नागोद होयकर मुनिराजा, श्रेयांसगिरि में पधराये।
यहाँ गुरुभाई भक्तों के संग, अगवानी कर अति हरषाये।।
गुरु भ्राताओं संग मुनिराजा, श्री गुरु के पास पहुँच जाते।
वहाँ तीन प्रदक्षिणा देकर के, गुरु के चरणों में झुक जाते।।17।।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा का उत्सव, श्रेयांसगिरि के तीरथ में।
तब होय रहा था आनंद से, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।
तब महरौनी के श्रावक भी, इस तीर्थक्षेत्र पर आये थे।
आचार्य प्रवर के चरणों में, उन सबने शीष झुकाये थे।।18।।

वो विनती करते हैं गुरु से, हमरी नगरी महरौनी में।
श्री विमर्शसिन्धु का सान्निध्य हो, जिनबिम्ब प्रतिष्ठा उत्सव में।
हे नाथ हमें स्वीकृति दीजे, मुनिसंघ को वहाँ ले जाने की।
अरु मुनिवर को आज्ञा दीजे, वह समारोह करवाने की।।19।।

।। श्रेयांसगिरि से विहार ।।

आचार्य प्रवर ने तभी वहाँ, उन लोगों की बातें सुनकर।
स्वीकृति दे दी वहाँ जाने की, मुनिराजों को अति हर्षाकर।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, श्री गुरु की आज्ञा धर चित में।
श्रेयांसगिरि से गमन किया, श्री विनर्घसिन्धु मुनि के संग में।।20।।

दो सहस्र तीन ईसा सन् में, जनवरी महीना सर्दी का।
मारग में कोहरा फैला था, कोई पता नहीं था सूरज का।।
हो रहा गमन मुनिराजों का, इतनी भारी हिम सर्दी में।
टायम से इन्हें पहुँचना था, जिनबिम्ब प्रतिष्ठा उत्सव में।।21।।

इतनी भारी सर्दी में भी, ऊपर से बारिश हुई वहाँ।
कितनी शक्ति जिन मुनियों में, इसकी चर्चा कर रहा जहाँ।।
गिर रही ओस की बूँदें भी, मुनिराजों के तन के ऊपर।
नहीं कोई आह निकलती है, देखो इनकी शक्ति चलकर।।22।।

यहाँ कोट और स्वेटर में भी, सर्दी लग रही हम लोगों को।
संग में चल रहे श्रावक कहते, देखो इनके साहस बल को।।
गुरुदेव बिजावर से होके, टीकमगढ़ नगरी में आये।
सीमा पर करके अगवानी, यहाँ श्रावक भारी हरषाये।।23।।

।। मुनिसंघ महरौनी में ।।

चर्या करके दोपहर बाद, गुरु यहाँ से कदम बढ़ाते हैं।
महरौनी नगरी की सीमा, पद कमलों से महकाते हैं।।
यहाँ खड़े हजारों नरनारी, नगरी के बाहर सीमा पर।
मुनियों की करने अगवानी, केशरिया ध्वज कर में लेकर।।24।।

यहाँ भक्तों ने अति आनंद से, ऋषियों के चरण पखारे थे।
घृत के दीपों से आरती कर, अंतरंग के दीप उजारे थे।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
प्रवेश किया मुनिराजों ने, उत्तम नगरी महरौनी में।।25।।

।। ललितपुर में मुनिसंघ ।।

दो दिवस बाद मुनिराजों ने, यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे।
साहर्ष ललितपुर में आके, जिनमन्दिर में ठहराये थे।।
यहाँ भक्तों ने मुनिराजों की, ऐतिहासिक कीनी अगवानी।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, यमुना से ला निर्मल पानी।।26।।

।। इन्द्रध्वज मंडल विधान ।।

श्री इन्द्रध्वज मंडल विधान, यहाँ डोड़ाघाट जिनालय में।
प्रारंभ हुआ अति आनंद से, द्वय मुनिराजों के सान्निध्य में।।
दूजे दिन सुबह मुनिराजा, मृदु वचनों में समझाते हैं।
जिन आगम के सिद्धांत सही, मुक्ति का पथ बतलाते हैं।।27।।

।। मुनिराजा का उद्‌बोधन ।।

कहते हैं आतम ज्ञान साथ, प्रभु की आराधना करने से।
परम शान्ति का निमित्त सही, बनता आतम में रमने से।।
व्यवहारिक ज्ञानी त्याग सदा, बहिरंग भावों से करता है।
तत्त्वों का ज्ञाता त्याग सहर्ष, अपने अंतरंग से करता है।।28।।

आगे मुनिराजा कहते हैं, कर्त्तव्य का पालन करने से।
संस्कारित जीवन बनता है, जैनत्व सुरक्षित रहने से।।
व्यक्ति की पूजन नहीं कही, गुण की पूजन बतलाई है।
चेहरे की पूजन नहीं कही, चारित्र पूजन हितदाई है।।29।।

फरवरी सात से आठ दिना, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने।
धर्मामृत नित बरसाया था, आतम का हित चित में धरने।।
श्री मुनिवर ने समझाया था, जो मनुष निराशा में जीते।
वह जीते जी निज जीवन में, सत् परमानंद नहीं पाते।।30।।

अहंकार जीवन पथ में, विकृति बड़ी कहलाती है।
इसमें अपयश ही मिला सदा, यशकीर्ति सब नश जाती है।।
देखो रावण का अहंकार, स्वर्णमयी लंका खो करके।
अपयश ही बड़ा कमाया है, परनारी को चित में धरके।।31।।

श्री मुनिवर ने समझाया था, जो मनुष्य निराशा में जीते।
वह जीते जी निज जीवन में, सत् परमानंद नहीं पाते।।
जिस मानव ने परमानंद को, पा लीना है निज जीवन में।
वह कभी निराश नहीं होता, अपने कोई भी कारज में।।32।।

।। महरौनी में मुनिसंघ ।।

अब दोनों ही मुनिराजों ने, सोलह तारीख फरवरी में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाया था, महरौनी को धरके चित में।।
सीमा पर सबई श्रावकों ने, दोनों ही महामुनिराजों की।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, अति आनंद से अगवानी की।।33।।

यहाँ नगरी के गणमान्यों ने, मुनियों के चरण पखारे थे।
घृत के दीपों से आरती कर, अंतरंग के दीप उजारे थे।।
नाचत गावत सारे श्रावक, एक आनंद यात्रा के संग में।
दोनों ही महामुनिराजों को, प्रवेश कराते नगरी में।।34।।

।। पंचकल्याणक महरौनी में ।।

ब्यालीस वर्षों के बाद सहर्ष, इस महरौनी की नगरी में।
था बिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, श्री विमर्शसिन्धु के सान्निध्य में।।
यहाँ दोनों मुनि महाराजों ने, पत्थर की कई प्रतिमाओं में।
परमेश्वर को पधराया था, सत् सूरी मंत्र देकर उनमें।।35।।

उन्नीस तारीख से शुरू हुआ, उत्सव फरवरी महीने में।
पच्चीस तिथि को सम्पन्न हुआ, दो सहस्र तीन ईसा सन् में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, यहाँ पाँच दिनों तक भव्यों को।
कई सूत्र सहर्ष बतलाये थे, नित सुखमयी जीवन जीने को ।।36।।

मुनिराजा ने उपदेश दिया, नित सदाचरण अपनाने का।
यह जीवन में कर्त्तव्य श्रेष्ठ, भवसागर से तिर जाने का।।
फिर बतलाया मुनिराजा ने, यदि सुख चाहो जो जीवन में।
तब रहो समर्पित भावों से, निजधर्म ध्वजा फहराने में।।37।।

वेलेन्टाइन डे इस दुनिया में, है काम वासना का साधन।
इससे स्तर गिरता जाता, मर्यादा का हो रहा हनन।।
मर्यादा के पालन हेतु, सब इस निकृष्ट कुरीति से।
अपने को दूर सदा रखिये, रहने को घर में समता से।।38।।

पंडित श्री विमल सोंरया ने, यह समारोह महरौनी में।
विधिपूर्वक ही करवाया था, आनंदित होकर अन्तस में।।
अब दोनों महामुनिराजों ने, उत्सव सम्पन्न करा करके।
बीना की तरफ विहार किया, गुरु की आज्ञा चित में धरके।।39।।

।। महरौनी से विहार ।।

महरौनी से पाली होकर, गुरु वालावेहट पहुँच जाते।
इस तीरथ के दर्शन करके, अंतरंग में भारी हरषाते।।
चर्या करके सामायिक कर, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
मालव अंचल की धरती को, पद कमलों से महकाते हैं।।40।।

।। बीना नगर में मुनि संघ ।।

खिमलासा और बसारी हो, गुरु बीना में पधराये थे।
यहाँ गुरुभ्राता भक्तों के संग, अगवानी कर हरषाये थे।।
वहाँ दोनों ही मुनिराजों ने, गुरु भ्राताओं से मिल करके।
अति यथायोग्य नमोस्तु की, रत्नत्रय को चित में धरके।।41।।

फिर दोनों मुनि महाराजों ने, जा करके वहाँ वसतिका में।
श्री गुरुवर के दर्शन कीने, हरषाके भारी अंतरंग में।।
यहाँ दोनों मुनि महाराजों ने, कुछ दिना गुरु के संग रहके।
अति श्रेष्ठ साधना कीनी थी, आतम का हित चित में धरके।।42।।

।। बीना से विहार ।।

महावीर जयंती का उत्सव, तब यहाँ इटावा मन्दिर में।
अति धूमधाम से मनता है, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।
श्री विमर्शसिन्धु संघ के संग में, गुरुवर की आज्ञा पाकर के।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, ईर्यापथ को चित में धरके।।43।।

।। मुँगावली में मुनिसंघ ।।

बीना से चलकर मुनिसंघ, आ गया मुँगावली नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हरषाये मन गगरी में।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेकर जाते हैं, नगरी के मुख्य जिनालय में।।44।।

यहाँ आठ दिना रहके संघ ने, नित ही अमृत बरसाया था।
नगरी के सबई श्रावकों को, उसका रसपान कराया था।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा जी, अपनी कोयल सम वाणी से।
नित कविता पाठ सुनाते थे, खुद रची हुई रचनाओं से।।45।।

तब सुनने वाले श्रोतागण, खुश होकर अंतस भावों से।
जयकारा बहुत लगाते थे, मुनिराजों का अति आनंद से।।
यहाँ राजू भैया ब्रह्मचारी, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा की।
कोयल सम वाणी को सुनके, अभिव्यक्ति करते हैं मन की।।46।।

हे स्वामी सुस्वर नाम कर्म, है उदय आप के वचनों में।
जिस लय से भक्ति पढ़ते हो, आनंद बहु आता है उसमें।।
यदि आगम के ग्रन्थों को भी, अपनी पावन मृदु वाणी से।
उपयोगी होंगे जग जन को, इस ही लय में समझाने से।।47।।

।। ट्रैक्टर ट्रॉली और औरत ।।

श्री मुनिवर ने ब्रह्मचारी से, स्वर की तारीफ बड़ी सुनकर।
स्वागत कीना था अंतरंग से, अपने भावों में मुस्काकर।।
जंगल को जाते एक सुबह, मुनिवर कहते हैं भक्तों से।
देखो भैया उस ट्रैक्टर को, वह दौड़ रहा अति तेजी से।।48।।

।। मुनिश्री का चिंतन ।।

तब श्रावक कहते हैं गुरु से, ट्रॉली नहीं होने से उसमें।
वह दौड़ रहा अति तेजी से, यह कारण है उस ट्रैक्टर में।।
इक उदाहरण से मुनि श्री, जब समझाते उन लोगों को।
यहाँ औरत रूपी ट्रॉली ही, इस मानव रूपी ट्रैक्टर को।।49।।

नहीं तेज भागने देती है, इस कारण को जानो मन में।
मानव भी तेज दौड़ सकता, यदि यह ट्रॉली न हो संग में।।
इस औरत रूपी ट्रॉली ने, इस मानव रूपी ट्रैक्टर को।
यहाँ फँसा लिया जग जालों में, उसकी सत् इच्छा शक्ति को।।50।।

यह औरत रूपी ट्रॉली जब, जुड़ जाती मानव ट्रैक्टर में।
वह पराधीन हो जाता है, अपनी ही सब इच्छाओं में।।
जो मानव यहाँ बच जायेगा, इस औरत रूपी ट्रॉली से।
वह शाश्वत सुख पा जायेगा, छुटकारा पा जग जालों से।।51।।

मुनिश्री की बातें सुन करके, वो श्रावक सोचत हैं मन में।
ये कितना उत्तम चिंतन है, मुनिश्री का आतम के हित में।।
वो श्रावक बड़े प्रभावित थे, मुनिश्री की श्रेष्ठ सरलता से।
अति पावन उत्तम चर्या से, अंतरंग के ज्ञानाराधना से।।52।।

।। अतिशय क्षेत्र भौरासा में ।।

एक हफ्ता बाद मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
भौरासा तीरथ पर आकर, दर्शन करने रुक जाते हैं।।
मुनि संघ ने अन्तस भावों से, इस तीरथ में दर्शन करके।
यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे, अगली मंजिल चित में धरके।।53।।

।। मंडीबामौरा में मुनिसंघ ।।

मंडी बामौरा नगर श्रेष्ठ, यहाँ पर दोनों मुनिराजों की।
नगरी के सब गणमान्यों ने, अति आदर से अगवानी की।।
यहाँ बीस दिना रुक के संघ ने, अपनी पावन मृदु वाणी से।
सत् धर्मामृत बरसाया था, बचने को नित नये पापों से।।54।।

यहाँ तत्त्व प्रेमी हैं भव्य सभी, मुनिवर की तत्त्व की चर्चा में।
हर दिन ही भाग लिया करते, स्व पर की आतम के हित में।।
तब नगर ललितपुर में दीक्षा का, पता चला मुनिराजों को।
उनके ही गुरु दीक्षा देंगे, आतम हित में कई शिष्यों को ।।55।।

।। मंडीबामौरा से विहार ।।

अब दोनों मुनि महाराजों ने, ललितपुर चित्त में धरके।
भक्तों के साथ विहार किया, दर्शन करने गुरुराजा के।।
दूजे दिन संघ खुरई पहुँचा, यहाँ भावना मति आर्यिका के।
संघ ने भक्तों के साह सहर्ष, अगवानी की अति हरषाके।।56।।

।। भावनामति आर्यिका संघ से मिलन ।।

दोनों संघों का मिलन दृश्य, था यहाँ बहुत आनंदकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई सहर्ष, सन्तों में कुशल समाचारी।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, यहाँ भव्यों के अति आग्रह से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, अपनी पावन मृदुवाणी से।।57।।

।। खुरई से विहार ।।

दूजे दिन दोनों मुनिराजा, चर्या करके सामायिक कर।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, भावों में मंजिल को धरकर।।
तब सभी आर्यिका मातायें, भक्तों के संग मुनिराजों को।
कुछ दूरी तक संग जाती हैं, अति आनंद से पहुँचाने को।।58।।

।। ललितपुर में मुनिसंघ ।।

खिमलासा में आ जाने पर, दोनों ही मुनि महाराजों की।
श्री विशाश्री आर्यिका संघ ने, भक्तों के संग अगवानी की।।
दूजे दिन चर्या करके संघ, अपनी मंजिल धरके चित में।
बालाबेहट पाली होकर, आया था नगर ललितपुर में।।59।।

यहाँ नगरी की गौशाला में, दोनों ही महामुनिराजा की।
नवधा भक्ति के साथ सहर्ष, चर्या हुई थी आहारों की।।
अंतराय उदय में होने से, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा को।
आहारों में अंतराय हुआ, संयमपथ के सरताजा का।।60।।

गुरु भ्राताओं ने भक्तों संग, नगरी की सीमा पर जाकर।
मुनिराजों की अगवानी की, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनियों को लेकर गये भक्त, नगरी के अटा जिनालय में।।61।।

।। गुरुराजा के पद कमलों में ।।

यहाँ तीन प्रदक्षिणा देकर के, गुरुराजा के पद कमलों में।
मुनियों ने शीष झुकाया था, अति हरषा के अपने उर में।।
गुरु संघ के सभी साधुओं की, यहाँ दोनों ही मुनिराजों से।
अंतरंग से हुई समाचारी, अति आनंद से रत्नत्रय की।।62।।

।। ललितपुर से विहार ।।

श्री विरागसिन्धु गुरु के द्वारा, यहाँ आठ जून के ही दिन में।
इक्कीस हुई जिन दीक्षायें, दो सहस्र तीन ईसा सन् में।।
श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा का, संघस्थ साधुओं के संग में।
छत्तीसगढ़ को हो गया गमन, ईर्यापथ को धरके चित में।।63।।

।। चंदेरी में मुनिसंघ ।।

श्री विमर्शसिन्धु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
सैरोन जी तीरथ में आकर, दर्शन करके रुक जाते हैं।।
यहाँ से चलके तीनों मुनिवर, आ गये चंदेरी नगरी में।
अगवानी कर यहाँ के श्रावक, अतिहर्षाये मन गगरी में।।64।।

।। श्री स्वभावसागर से मिलन ।।

श्रीस्वभावसिन्धु मुनिराजा से, यहाँ मिलन हुआ आनंदकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई सहर्ष, सन्तों में कुशल समाचारी।।
यहाँ की प्रसिद्ध चौबीसी अरु, खंदारगिरि के दर्शन कर।
मुनिसंघ यहाँ से बढ़ जाता, थूवोन जी को चित में धरकर।।65।।

।। अतिशय क्षेत्र थूवोन जी में ।।

श्री आदिनाथ जिनराजा की, यहाँ प्रतिमा है खड़गासन में।
अति सुन्दर और मनोहारी, पच्चीस फुट की अवगाहन में।।
पच्चीस जिनालय तीरथ में, अति सुन्दर और मनोहारी।
जिनके दर्शन कर भावों से, खुश हुए यहाँ संयमधारी।।66।।

चर्या करके सामायिक कर, संघ यहाँ से कदम बढ़ाता है।
बरखेड़ा बस्ती में आकर, यहाँ शाला में रुक जाता है।।
अशोकनगर के जैनी जन, इस शाला में पधराये थे।
वैयावृत्ति कर मुनियों की, अन्तस में अति हरषाये थे।।67।।

।। अशोकनगर में मुनिसंघ ।।

वह श्रावक बन्धु आनंद से, मुनिराजों के पद कमलों में।
श्री फल का अर्घ्य चढ़ाते हैं, प्रवेश हेतु निज नगरी में।।
दूजे दिन सुबह मुनिराजा, अशोकनगर में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।68।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिराजों को लेकर पहुँचे, गुरुभक्त गंज के मन्दिर में।।
नगरी के सबई श्रावकों ने, मन्दिर जी के दरवाजे पर।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, मुनिराजों का अति हर्षाकर।।69।।

था चऊमासे का समय निकट, यहाँ भव्यों ने श्री गुरुवर से।
इसही नगरी में करने की, विनती कीनी थी अंतरंग से।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, भव्यों के भावों को लखकर।
इस नगरी में चऊमासे की, स्वीकृति दीनी अति हर्षाकर।।70।।

।। 2003 का वर्षायोग अशोकनगर में ।।

तब सभी श्रावकों ने मिलके, गुरु आज्ञा को धरके चित में।
सुन्दर पाण्डाल बनाया था, यहाँ जिनमन्दिर के बाजू में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, बारह तारीख जुलाई में।
चऊमासा होवत स्थापित, दो सहस् तीन ईसा सन् में।।71।।

श्री रमेशचन्द्र जी चौधरी को, इस चऊमासे के कलशा का।
अति आनंद से सौभाग्य मिला, यहाँ स्थापन करवाने का।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, सच्चा महत्त्व चऊमासा का।
श्रावकजन को समझाया था, ये उत्सव है आतम हित का।।72।।

।। मुनिराजा का उद्बोधन ।।

वर्षा ऋतु के इन महीनों में, पानी के बहुत बरसने से।
लघु जीव उपजते हैं भारी, गलियाँ अति गीली रहने से।।
साधु श्रावक इन महीनों में, अधिकाधिक नहीं चला करते।
हिंसा पापन से बचने को, संयम पथ को चित में धरते।।73।।

साधु श्रावक दोनों मिलकर, चऊमासा सदा किया करते।
आगम की यह परिपाटी है, जिनधर्मी राह यही चलते।।
कई नगरों के श्रावक बन्धु, इस समारोह में आये थे।
मुनिश्री का सुनके संबोधन, अन्तस में अति हरषाये थे।।74।।

इस अशोक नगर चौमासे में, मुनिराजा के पावन मुख से।
अध्यातम सुधा बरसता है, दोनों टायम अति आनंद से।।
आषाढ़ सुदी पूनम के दिन, यहाँ उत्सव गुरु पूर्णिमा का।
सहर्ष मनाते श्रावक गण, सान्निध्य पाकर मुनिराजों का ।।75।।

फिर मनी जयंती आनंद से, दूजे दिन वीरा शासन की।
नगरी के गंज जिनालय में, पूजन करके प्रभु वीरा की।।
यहाँ हुए अनेकों धर्म कार्य, जो हुए अन्य चऊमासों में।
अति ही आनंद के साथ सभी, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।76।।

।। भक्तामर शिविर नगरी में ।।

नगरी में पहली बार सहर्ष, एक शिविर लगा भक्तामर का।
तब सभी श्रावकों ने इसमें, गुणगान किया आदि प्रभु का।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, पद्यानुवाद भक्तामर का।
अति उत्तम गायन शैली में, इस अंतराल में कीना था।।77।।

।। अशोकनगर जेल में प्रवचन ।।

फिर यहाँ जेल के अंदर भी, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
प्रवचन हुए मृदुवाणी से, आग्रह से जेल प्रशासन के।।
सब कैदी और प्रशासक भी, मुनिराजा की वाणी सुनके।
अन्तस में भाव विभोर हुए, उस वाणी को चित में धरके।।78।।

फिर सभी कैदियों ने वहाँ पर, अश्रुपूरित निज भावों से।
सारे व्यसनों का त्याग किया, लेकर के नियम श्री गुरु से।।
अब यहाँ पर्यूषण पर्वों में, मृदुवचनों ने मुनिराजा के।
अध्यातम रस से सराबोर, अन्तस कर दिये श्रावकों के।।79।।

मन को निर्मल करने वाली, मुनिवर ने मार्मिक वाणी से।
सत्क्षमा धर्म की व्याख्या को, यहाँ क्षमा पर्व पर भावों से।।
जिसको सुनकर श्रोताओं ने, अपने अन्तस आचरणों में।
वरषों के बैर भुला करके, स्नेह भरा निज अंतरंग में।।80।।

।। चौथे युग सा लग रहा यहाँ ।।

श्री सुभाषचन्द्र वकील तभी, कहते हैं अंतरंग भावों से।
चौथा युग सा लग रहा अभी, मुनिवर की पावन चर्या से।।
नगरी के सबई मुहल्लों में, श्री विमर्शसिन्धु के चारित की।
हर घर में चर्चा होय रही, ज्ञानमयी अनुपम वाणी की।।81।।

श्री सुभाषचन्द्र जी ए.डी.जे., नित धर्मसभा में आकर के।
अति ही आनंद के साथ यहाँ, दर्शन करते मुनिराजों के।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा की, वाणी सुनके वह हृदय में।
तब अंकित भी कर लेते थे, खुश हो करके भारी मन में।।82।।

श्री रमेश चौधरी सभापति, अरु बाबूलाल बरोदिया ने।
मुनिचर्या का गुणगान किया, नगरी के सबई श्रावकों ने।।
प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक वदी अमावस में।
भव्यों ने सहर्ष मनाया था, ऋषियों के पावन सान्निध्य में।।83।।

उस ही दिन दोनों मुनिराजा, विधिपूर्वक ही चऊमासे का।
अन्तस से करते निष्ठापन, दो सहर्ष तीन ईसा सन् का।।
जब चऊमासा प्रारंभ हुआ, तब का प्रसंग सुखदकारी।
गुरु चरणों में विनती करते, निज भावों से इक ब्रह्मचारी।।84।।

हे परम समाधि करवादो, यह भाव हमारे हैं मन के।
भवदधि से पार करा देना, हमरे तारनहारा बनके।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, साहर्ष समाधि करने के।
ब्रह्मचारी के लख भाव सही, आशीष दिया अति हरषाके।।85।।

।। समाधिव्रत ब्रह्मचारी जी को ।।

ब्रह्मचारी ने अन्तस मन से, श्री मुनिवर के निर्देशन में।
कर दई साधना शुरू यहाँ, धर भाव समाधि के चित में।।
कम्मर में भी तकलीफ बड़ी, ब्रह्मचारी को इस कारण से।
चलना फिरना था बन्द सभी, बस लेटे रहते थे तन से।।86।।

केवल लेटे ही रहने से, कुछ फोड़ा भी हो गये इनको।
डॉक्टर साहब नित आते थे, उन फोड़ों की ही ड्रेसिंग को।।
ब्रह्मचारी की सेवा करने, संग रहता था नाती उनका।
जब ब्रह्मचारी ने व्रत लिया, तब महीना रहा जुलाई का।।87।।

।। ब्रह्मचारी जी की मुनिदीक्षा ।।

इक दिना यहाँ ब्रह्मचारी ने, की विनय महा मुनिराजा से।
हाथों से सही इशारा कर, जिनदीक्षा की अन्तस मन से।।
मुनिवर भावों से जान गये, अब दीक्षा चाहत ब्रह्मचारी।
गुरु ने दीक्षा संस्कार किये, ब्रह्मचारी में अतिशयकारी।।88।।

फिर पिच्छि दी उनके कर में, उपकरण रहा जो संयम का।
श्री विश्वतीर्थसागर जी यहाँ, तब नाम रखा मुनिराजा का।।
जब स्वाँश उखड़ने लगी वहाँ, कुछ समय बाद मुनिराजा की।
तब पाठ समाधि सुना वहाँ, संबोधा आतम को उनकी।।89।।

श्री विश्वतीर्थ सागर जी ने, छब्बीस सितम्बर के दिन में।
नश्वर काया का त्याग किया, दो सहस्र तीन ईसा सन् में।।
अब यहाँ हजारों में श्रावक, मुनिराजा के पावन शव को।
गौशाला में ले गये सहर्ष, संस्कार क्रिया के करने को।।90।।

गौशाला में संस्कार किया, श्री विश्वतीर्थ मुनि के शव का।
मुनिश्री की परम प्रेरणा से, निर्माण हुआ वहाँ छतरी का।।
श्री सेठ पदमचन्द्र का बेटा, राजीव निरत मुनि चरणों की।
सेवा करता था अंतरंग से, चर्या लखकर मुनिराजा की।।91।।

इक दिन राजीव मुनिश्री के, विनती करता है चरणों में।
हे नाथ शील व्रत दे हमको, रख लीजे अपने ही संघ में।।
मुनिश्री ने कहा तभी उससे, क्यों चाहो हो रहना संघ में।
घर में तकलीफ तुम्हें कोई, क्या कमी तुम्हारे है घर में।।92।।

घर में तकलीफ नहीं कोई, नहीं कमी कोई मेरे घर में।
संसार दुखों का सागर है, हम फँसे इसी के चक्कर में।।
राजीव कहत मुनिराजा से, छुटकारा पाने को इससे।
हम संघ में रहना चाहें हैं, व्रत लेकर अपनी मर्जी से।।93।।

यहाँ मात पिता की सम्मति भी, अति आवश्यक जानो इसमें।
मुनिराजा कहते राजीव से, ये सर्वोत्तम है इस युग में।।
राजीव कहत है मुनिवर से, तब शीष झुका के चरणों में।
कल माता और पिता जी को, हम लेकर आवेंगे संग में।।94।।

।। राजीव भाई को पाँच वर्ष का व्रत ।।

यहाँ आकर मात पिता जी ने, अपने सुत का निश्चय लखके।
व्रत लेने की स्वीकृति दे दी, मन मस्तिक को संयत करके।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, राजीव भाई को आनंद से।
तब पाँच वर्ष का दिया यहाँ, ब्रह्मचर्य महाव्रत भावों से।।95।।

श्री मुनिवर ने अपनी पिच्छि, यहाँ पिच्छि के परिवर्तन में।
राजीव भाई को दई सहर्ष, आशीष सहित आयोजन में।।
पिच्छि पाकर मुनिराजा की, राजीव भाई की अंतरंग से।
हो गई भावना पूर्ण सहर्ष, मन की मुराद मिल जाने से।।96।।

अब मुनिश्री का होगा विहार, ये भनक लगी कुछ लोगों को।
तब अश्रु पूरित होय गये, सब सुनते ही इस चर्चा को।।
साहर्ष गमन के पहले ही, मुनिश्री ने यहाँ प्रवचनों में।
श्रावक जन को बतलाया था, जिन आगम के सिद्धान्तों में।।97।।

सन्तों का नित बिहार करना, आतम को होवत हितकारी।
जैसे नदिया का नीर स्वच्छ, निर्मल रहता अतिशयकारी।।
जिस तरह रुका जल गड्ढों में, अपनी उज्ज्वलता खो देता।
साधु भी एक जगह रहके, आतम का अहित बना लेता।।98।।

।। अशोकनगर से विहार ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा भी, ससंघ यहाँ से अब अपने।
कदमों को सहर्ष बढ़ाते हैं, आतम का हित पूरा करने।।
तब नगरी के सारे श्रावक, निज अँखियों में आँसू भरके।
छै मील दूर तक साथ गये, पीछे पीछे श्री गुरुवर के।।99।।

।। चाँदखेड़ी क्षेत्र में मुनिसंघ ।।

श्री विनम्रसिन्धु मुनिराजा भी, अपने संघ को लेके संग में।
अति आनंद से चल रहे साथ, श्री विमर्शसिन्धु मुनि के संग में।।
मुनिसंघ गुना छबड़ा होके, नित आगे कदम बढ़ाते हैं।
आदिप्रभु के दर्शन करने, चाँदखेड़ी में रुक जाते हैं।।100।।

यहाँ आदिनाथ की मूरत है, अति सुन्दर और मनोहारी।
जिनका दर्शन वन्दन करके, अति हरषाये संयमधारी।।
राजीव भाई ब्रह्मचारी ने, श्री मुनिवर का आशीष पाके।
वस्त्रों को कीना परिवर्तन, त्यागी का भेष हृदय धरके।।101।।

दोनों ही संग के साधुगण, यहाँ चाँदखेड़ी के तीरथ में।
आनंद से बारह दिना रहे, प्रभु आदिनाथ के चरणों में।।
चौबीस अप्रैल को ऋषियों ने, दो सहस्र चार ईसा सन् में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे, ईर्यापथ को धरके चित में।।102।।

।। कोटा नगरी में मुनि संघ ।।

बाराँ होकर के साधुगण, कोटा नगरी में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
मुनियों को लेकर गये सभी, छावनी के श्रेष्ठ जिनालय में।।103।।

यहाँ ग्रीष्मकाल के वाचना की, गणमान्यों के अति आग्रह से।
स्वीकृति दे दी मुनिराजा ने, चरचा करके संघ वालों से।।
मुनिराजा ने पावन मुख से, यहाँ दोनों टायम मंदिर में।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, स्व पर की आतम के हित में।।104।।

।। मुनिश्री की पावन करुणा ।।

यहाँ मई का महीना होने से, गरमी ने तेवर दिखलाये।
कई जन के स्वास्थ्य खराब हुए, जो गर्मी सहन न कर पाये।।
ज्वर के संग उलटी होय रही, राजीव भाई ब्रह्मचारी को।
तब चिंता हुई बहुत भारी, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा को।।105।।

यहाँ एक बजे मुनिराजा ने, चौका का मेवा बुलवाकर।
राजीव भाई ब्रह्मचारी को, खिलवा दीना था समझाकर।।
थोड़ा सा मेवा खाने पर, हो गया वमन ब्रह्मचारी को।
तब हुए दुखित श्रावक भारी, लख ब्रह्मचारी की हालत को।।106।।

वैयावृत्ति करने वाले जब, चले गये वापिस घर को।
तब तेल लेयकर मुनिश्री, संग में लेके एक क्षुल्लक को।।
यहाँ क्षुल्लक ने ब्रह्मचारी के, दोनों हाथों को पकड़ लिया।
वहाँ मुनिश्री ने ब्रह्मचारी के, सिर का मालिश सहर्ष किया।।107।।

पन्द्रह मिनटों तक मुनिश्री, ब्रह्मचारी के सिर कन्धे का।
साहर्ष यहाँ मालिश करके, सहलाते तन ब्रह्मचारी का।।
सांत्वना देकर के मुनिवर, आये थे सहर्ष वसतिका में।
ब्रह्मचारी ने अहसास किया, गुरु मात पिता तीनों गुरु में।।108।।

दूजे दिन कहा मुनीश्वर ने, अपने पावन प्रवचनों में।
हर मानव में सेवा साहस, होना चाहिये आचरणों में।।
वैयावृत्ति का सही महत्त्व, मुनिवर ने ऐसा समझाया।
दुखियों की सेवा के फल को, मुक्ति का मारग बतलाया।।109।।

।। केशवराय पाटन में मुनिसंघ ।।

कोटा नगरी से मुनिसंघ ने, बूँदी की तरफ विहार किया।
केशवराय पाटन तीरथ के, दर्शन का भी आनंद लिया।।
यहाँ मुनिसुव्रत जिनराजा की, मूरत है परम मनोहारी।
जिसको नहीं तोड़ सके शत्रु, ऐसी है वो अतिशयकारी।।110।।

।। बूँदी नगरी में मुनिसंघ ।।

इस तीरथ के दर्शन करके, गुरु यहाँ से भी बढ़ जाते हैं।
बूँदी नगरी में आकर के, सीमा पर ही रुक जाते हैं।।
यहाँ खड़े हजारों नरनारी, मुनिसंघ की करने अगवानी।
पद कमलों के प्रक्षालन को, चंबल से लाकर के पानी।।111।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक अनुपम यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को श्रावक ले जाते, नगरी के भव्य जिनालय में।।
यहाँ मन्दिर जी के द्वारे पर, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, गणमान्यों ने अति हरषाके ।।112।।

।। पंचकल्याणक बूँदी में ।।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, बूँदी नगरी के परिसर में।
अति धूमधाम से हुआ तभी, ऋषियों के पावन सान्निध्य में।।
पश्चात् यहाँ से मुनिराजा, कदमों को सहर्ष बढ़ाते हैं।
करुणामयी पावन भावों में, ईर्यापथ को अपनाते हैं।।113।।

।। रामगंजमंडी में मुनिसंघ ।।

छब्बीस जून को मुनिसंघ, आ गया रामगंज मंडी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, झुक गये गुरु के चरणों में।।
गणमान्यों ने श्री गुरुवर के, पद कमलों का प्रक्षाल किया।
घृत के दीपों से आरती कर, अन्तस में अति आनंद लिया।।114।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
मुनियों को लेकर गये सभी, नगरी के श्रेष्ठ जिनालय में।।
पश्चात् यहाँ जिन मन्दिर में, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
अति ही मार्मिक मृदुवाणी से, प्रवचन हुए अध्यातम के।।115।।

था चऊमासे का समय निकट, सो भव्य सभी इस नगरी के।
विनती करते मुनिराजा से, यहीं करने की अति हर्षाके।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, भव्यों के भावों को लखकर।
स्वीकृति दे दी चऊमासे की, संघ के सन्तों से चरचा कर।।116।।

।। 2004 का वर्षायोग रामगंजमंडी में ।।

अब चार जुलाई के दिन में, श्री मुनिसंघ के चऊमासे का।
यहाँ कलश हुआ था स्थापित, दो सहस्र चार सन् ईसा का।।
श्री अनंत जैन बागड़िया को, इस कलश के स्थापना का।
अति पावन ही सौभाग्य मिला, आशीष सहित मुनिराजा का।।117।।

तब आसपास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
श्रावक जन आये हजारों में, मुनियों के दर्शन करने को।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, उस दिन अपने प्रवचनों में।
गुणगान किया चऊमासे का, आतम का हित उपजाने में।।118।।

दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीरा शासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, पूजन करके प्रभु वीरा की।।
पारस प्रभु का निर्वाण दिवस, सावन सुदी सातें के दिन में।
अति धूमधाम से मना यहाँ, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।119।।

नहीं रहा धर्म से रिक्त कोई, दिन भी यहाँ इस चऊमासे में।
हर दिन भी होते रहे कार्य, मुनिराजों के आतम हित में।।
ये कलश आठवाँ पूर्ण हुआ, श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ का।
इकतीस वर्षों की उम्मर का, अरु आठ वर्ष के संयम का।।120।।

।। इति आठवाँ कलश ।।

बड़े भ्राता राजेश जी एवं छोटे भ्राता चक्रेश जी के मध्य ब्र. राकेश जी।

बड़ी भगिनी कमला जी एवं लघु भगिनी प्रियंका के मध्य ब्र. राकेश जी।

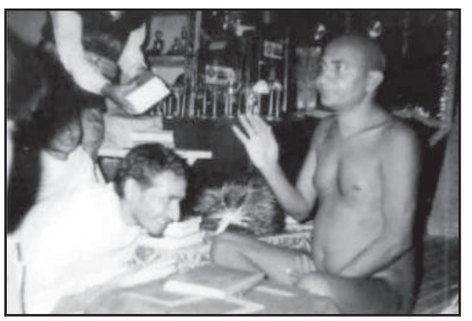

आचार्यवर्य श्री भरतसागर जी (अब समाधिस्थ) से
मधुबन में आशीर्वाद पाते हुए। (सन् 1996)

मेंहदी के बाद आया क्रम नेत्रांजन का, लगाया भाभी ने।

लोगों की आँखों में समा गया बिनौली का दृश्य।
आगे हैं–ब्र. राकेश भैया,
इनके पीछे छः भाई और जतारा प्रसन्न।

बिनौली के बाद भैया जी संत हो जावेंगे अतः छोटी बहिन प्रियंका ने
'अंतिम पारिवारिक राखी' बांधी सभी भाईयों को। समीप ही माता श्री विराजित हैं।

राजकुमारों की सफल पंक्ति। बिनौली के लिए तैयार सातों वीर बहादुर।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

नवमाँ कलश

।। मंगलाचरण ।।

जिनके तप बल की चर्चा भी, होती रहती है जग जन में।
उन बाहुबली स्वामी जी को, हम शीष झुकाते चरणन में।।
जिनने यहाँ चक्रपति को भी, जल थल नजरों के युद्धों में।
निज स्वाभिमान की रक्षा को, यहाँ हरा दिया था पलभर में।।1।।

तब चक्र चलाता चक्रपति, अपने ही भाई के ऊपर।
वह चक्र चला जाता वापस, इनके चरणों का वंदन कर।।
जिस वैभव को इक भाई भी, भाई पर चक्र चला सकता।
धिक्कार यहाँ उस वैभव को, ये बाहुबली का मन कहता।।2।।

तब राजपाट तज के सारा, वैराग्य भाव धारण करके।
अन्तर आतम में लीन भये, संसार विधाओं को तजके।।
कैलाश शिखर पर बाहुबली, अति घोर तपस्या करते हैं।
वह धरा भरत चक्री की है, कुछ कसक हृदय में धरते हैं।।3।।

चरणों में बामी बनी तभी, बेलें चढ़ गईं तन के ऊपर।
किन्तु नहीं केवलज्ञान हुआ, ये भान हृदय में रहने पर।।
प्रभु आदिनाथ की वाणी में, यह कथन सुनाई पड़ता है।
सुन करके जिसे भरतचक्री, बाहुबली पास पहुँचता है।।4।।

श्री बाहुबली के चरणों में, निज शीष झुका करके अपना।
कहता है चक्री हे भगवन्, यह जग तो है केवल सपना।।
फिर कहें प्रभु कैसे समझा, यह धरा भरत चक्री की है।
अनगिनत भरत हो गये यहाँ, फिर कहो धरा किस किसकी है ।।5।।

अब बाहुबली स्वामी जी को, अन्तरंग के भावों में धरके।
यह कथन बढ़ाता हूँ आगे, अपने मन को स्थिर करके।।
हो रहा रामगंज मण्डी में, श्री विमर्शसिन्धु का चऊमासा।
दो सहस्र चार ईसा सन् में, निज आतम में करने वासा ।।6।।

हर रोज सुबह मन्दिर जी में, ग्यारह तारीख जुलाई से।
भक्तामर पर प्रवचन होता, इक घंटे का गुरु के मुख से।।
मुनिश्री अपनी मृदुवाणी से, नित समय सार समझाते हैं।
भव सागर से तर जाने का, आगममय मार्ग सुझाते हैं।।7।।

पन्द्रह अगस्त में मुनिश्री का, जनता के भारी आग्रह पर।
आजादी पर प्रवचन होता, आजाद भगत नेता जी पर।।
नगरी के नेता अधिकारी, मुनिवर की वाणी सुनने को।
जनता के साथ सहर्ष आये, संदेश हृदय में धरने को ।।8।।

एक राष्ट्र बोध नामक रचना, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा की।
हो गई पाठ्यक्रम में शामिल, शिक्षा में एम.पी. शासन की।।
श्री विमर्शसिन्धु आचार्य गुरु, यहाँ पहले ही मुनिराजा हैं।
जिनकी कोई लिखी हुई रचना, पाठ्यक्रम में शामिल होती है।।9।।

।। पूजन शिविर ।।

मुनिश्री की परम प्रेरणा से, एक शिविर लगा है पूजन का।
नगरी में तीन सितम्बर से, अति आनन्द से तेरह दिन का।।
जिसमें लेते हैं भाग सहर्ष, जिनधर्मी सारे नर नारी।
प्रातः अभिषेक और पूजन, होता है नित अतिशयकारी।।10।।

नौ बजे यहाँ पर होते हैं, प्रवचन पूज्य मुनिराजा के।
जिसमें नित चरचा होती हैं, संस्कारों की अति हरषाके।।
अन्तिम दिन ही मुनिराजश्री, एक कविता यहाँ सुनाते हैं।
जिसमें मानव का परिचय ही, सुन्दर ढंग से करवाते हैं।।11।।

यहाँ सही आदमी का परिचय, जो कविता में करवाया है।
उसको सुनकर श्रोताओं का, अन्तस भी यहाँ गरमाया है।।
मानव का सच्चा रूप सहर्ष, जो मुनिवर ने दिखलाया है।
वह रूप आदमी का हमने, इस कागज पर दरशाया है।।12।।

।। मुनिश्री की रचना ।।

कह कहके अपना दे रहे, सबको दगा अपने।
खाकर दगा फिर भी यहाँ, सँभला नहीं है आदमी।।
अपना जमीर खोने पर, सोहरत किसे मिली।
पानी का मूल्य है यहाँ, सस्ता है आदमी।।13।।

जैसा करोगे कर्म नित, वैसा ही फल पा जाओगे।
क्यों भाग्य पाने के लिये, तरसा सदा यह आदमी।।
हृदय की क्रूरता से, ठग कर स्वयं का जीवन।
आदमीयता नशाकर, रहता सदा यह आदमी।।14।।

अति वासना हृदय में, पशुओं सरीखा जीवन।
जीने को इस जगत में, जिन्दा रहत यह आदमी।।
विपरीत राह चलकर, जीने की एक तमन्ना।
संसार की भँवर बीच, उलझा रहत यह आदमी।।15।।

हर समय धोखा खायके, सँभला नहीं है वह कभी।
खुद की जलाई आग में, जलता सदा यह आदमी।।
निर्लज्यता की पीयकर, मदिरा हमेशा चाव से।
ईमान के पटल पर, गायब रहत यह आदमी।।16।।

जिन आत्मीयता को भूलकर, नित स्वार्थ में जीया सदा।
अपने बनाये जाल में, फँसता सदा यह आदमी।।
यह पंक्तियाँ मुनिराज ने, सबको सुनाई थी इधर।
इस आदमी को आदमी, बनना जरूरी है मगर।।17।।

।। एक चमत्कार है श्रद्धा का ।।

मुनिराजा से यहाँ कहतीं हैं, मुनिभक्त कल्पना भावों से।
हे स्वामी हमरे पतिदेव, जिनधर्म नहीं माने मन से।।
तब मुनिश्री कहते उससे, दर्शनार्थ यहाँ लावो उनको।
दूजे दिन पति पत्नि दोनों, यहाँ आये थे गुरुदर्शन को।।18।।

मुनिश्री का लखके तेज पुंज, वह अन्तस में हरषाते हैं।
दोनों कर जोड़ सुधी मन से, गुरु चरणों में झुक जाते हैं।।
तब मुनिश्री ने आदेश दिया, पूजन में उन्हें बैठने का।
वो सहर्ष बैठ गये पूजा में, आदेश मानकर मुनिश्री का।।19।।

पूजन के बाद विनोद भाई, अन्तस में अति हरषाते हैं।
आनंद उन्हें यहाँ आया जो, वह सजनी को बतलाते हैं।।
तब ही उनका एक केश यहाँ, एक बड़ी रकम के लेने का।
उसकी आशा तज दीनी थी, क्योंकि वह था कई सालों का।।20।।

वह आसामी खुद आ करके, उस ही दिन कर्ज चुकाता है।
पूजन का ही फल मान यहाँ, वह हृदय में हरषाता है।।
श्री विनोद भाई मुनिराजा के, तब परम भक्त बन जाते हैं।
बन जैनधर्म के अनुयायी, अब आस्था बहुत दिखाते हैं ।।1।।

।। केशलोंच रामगंजमंडी में ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, तारीख चार अक्टूबर में।
केशों का लोंचन किया सहर्ष, श्रद्धा धरके अपने उर में।।
नगरी के सारे श्रावक जन, तब केशलोंच के लखने को।
मुनिराजा के ढ़िग आय गये, वह क्रिया हृदय में धरने को।।22।।

यह केशलोंच मुनिराजा के, कई युवकों ने निज जीवन में।
पहली ही बार करत देखे, इस रामगंज की मंडी में।।
ये बाल खींचते समय यहाँ, मुनिराजा को अपने तन में।
कितनी पीड़ा होती होगी, यह माँ बहिनें सोचत मन में।।23।।

जब बाल खींचते मुनिराजा, तब चेहरों पर माताओं के।
करुणा के भाव उभर आते, मुनिश्री की कोमलता लखके।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, वा दिन समतामयी भावों से।
उपवास यहाँ पर कीना था, केशलोंच क्रिया के कारण से।।24।।

अब यहाँ नवम्बर महीने में, हो गया शुरू गुरु सान्निध्य में।।
श्री कल्पद्रुम मंडल विधान, दो सहस्र चार ईसा सन् में।।
ब्रह्मचारी जय निशांत जी ने, विधिपूर्वक इस आयोजन को।
सम्पन्न यहाँ करवाया था, धर करके भक्ति भावों को।।25।।

प्रभुवीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक वदी अमावस में।
अति धूमधाम से मनता है, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
उसही दिन दोनों मुनियों ने, विधिपूर्वक ही चऊमासे का।
निष्ठापना कीनी आनंद से, तब बंधन टूटा सीमा का।।26।।

मुनिराजों की प्रिय पिच्छिका, परिवर्तन इक आयोजन में।
यहाँ होवत है अति आनंद से, इक्कीस नवम्बर के दिन में।।
यहाँ सभी श्रावकों ने मिलके, ऋषियों को नई पिच्छि देकर।
जूनी पिच्छिका वापस ले ली, संयम व्रत को चित में लेकर।।27।।

।। रामगंजमंडी से विहार ।।

दस दिना बाद दोनों मुनिवर, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
तब नगरी के सारे श्रावक, अँखियों से जल बरसाते हैं।।
नगरी के सब श्रावक बन्धु, मुनिराजों के पहुँचाने को।
कई मील दूर तक साथ गये, अन्तस की प्यास बुझाने को।।28।।

।। भानपुरा में मुनिसंघ ।।

दो दिन के बाद मुनिराजा, यहाँ भानपुरा में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।
सीमा पर सभी श्रावकों ने, मुनिराजा के पद कमलों का।
प्रक्षाल किया अति आनंद से, जल लाके निर्मल चंबल का।।29।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
लेकर आते हैं भक्त सहर्ष, मुनिराजों को जिन मन्दिर में।।
प्रवचन भी होने लगे यहाँ, दोनों ही टाइम ऋषियों के।
जिनको सुनने नित आते थे, यहाँ जैनाजैन सभी मिलके।।30।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, चौदह तारीख दिसम्बर में।
सप्तम मुनि दीक्षा दिवस मना, दो सहस्र चार ईसा सन् में।।
इस समारोह में बाहर से, कई नगरों के श्रावक आये।
गुणगान यहाँ करके गुरु का, अन्तस में भारी हरषाये।।31।।

इस तन के जनक मुनिश्री के, श्री सतनकुमार जतारा से।
पधराये थे इस उत्सव में, गुरु के दर्शन करने चित से।।
श्री सनतकुमार श्रेष्ठी जी का, गणमान्यों ने अति आनंद से।
सम्मान किया अतिशयकारी, यहाँ शाल श्रीफल माला से।।32।।

श्री मुनिवर ने प्रवचनों में, एक कविता यहाँ सुनाई थी।
सब स्वारथ के साथी जग में, यह सच्ची बात बताई थी।।
यहाँ चार लाइनें कविता की, जो मुनिवर ने बतलाई हैं।
कागज पर उन्हें लिखी हमने, वो सभी बहुत हितदाई हैं।।33।।

।। रचना श्री मुनिवर की ।।

नहीं करो यकीन यहाँ कोई, झूठी कसमों अरु वादों का।
वह जीस्त यहाँ पर है भाई, यह सफर है झूठे रिस्तों का।।
जिसको कहते यह है मेरा, उसने लूटा है अंतरंग से।
ये नगर लुटेरों की दुनिया, बचके भी रहना है इससे।।34।।

मुनिराजा के प्रवचन होते, रोजाना यहाँ अतिशयकारी।
उनकी धार्मिक मृदुवाणी से, यहाँ हुई प्रभावना भी भारी।।
नगरी के नेता अरु अफसर, प्रवचन सुनके मुनिराजा के।
गुणगान करते हैं भावों से, हर रोज सभा में आकर के।।35।।

।। भानपुरा में पूजन शिविर ।।

पच्चीस दिसम्बर के दिन से, इस भानपुरा की नगरी में।
दस दिवसी पूजा शिविर लगा, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।।
ये पहला अवसर मिला श्रेष्ठ, इस भानपुरा की जनता को।
जब पूजा शिविर लगा कोई, जीवन को सफल बनाने को।।36।।

इस नगरी के सारे श्रावक, शामिल होने इस पूजन में।
छह बजे सुबह आ जाते थे, पूजन के इस आयोजन में।।
गणतंत्र दिवस के दिना यहाँ, श्री नगर पालिका प्रांगण में।
मुनिराजा ने प्रवचन कीने, लोगों का आग्रह धर चित में।।37।।

।। गणतंत्र दिवस पर प्रवचन ।।

तब हिन्दू मुस्लिम सिक्ख जैन, इस आयोजन में आये थे।
मुनिश्री की मार्मिक वाणी सुन, अन्तस में वह हरषाये थे।।
श्री विमर्श सिन्धु मुनिराजा ने, अपने प्रेरक प्रवचनों में।
राष्ट्रीय एकता की अनुपम, बतलाई सही बात राष्ट्र हित में।।38।

आदर का भाव एक सा हो, सब धरमों अरु भाषाओं में।
तब सही एकता हो सकती, मानव के अंतरंग भावों में।।
न हिन्दू है न मुस्लिम कोई, नहीं जैन सिक्ख कोई ईसाई।
सबसे पहले भारतवासी, यह राष्ट्र एकता हितदाई।।39।।

जब पशुधन की रक्षा होगी, तब राष्ट्र धर्म का निर्वाहन।
जनता में अंतरंग से होगा, तब पूर्ण अहिंसा का पालन।।
यहाँ मानव में मानवता का, सहवास सही हो जावेगा।
तब राजधर्म हर मानव के, मन के अन्दर बस जावेगा।।40।।

नगरी की सबई समाजों ने, मुनिश्री के मार्मिक वचनों को।
हृदय से बहुत सराहा था, वचनों की अनुपम शैली को।।
श्री मुनिवर के मन का आशय, यहाँ सर्वधर्म सम भावों से।
उस दिन जनता ने आँका था, अंतरंग की हर धाराओं से।।41।।

श्री विमर्शसिन्धु जी मुनिराजा, निज मधुर सुरीली वाणी से।
नित गजलें गीत सुनाते थे, जैनागम के अति आनंद से।।
यहाँ वेदी की प्रतिष्ठा अरु, कलशारोहण का आयोजन।
अति ही आनंद के साथ हुआ, जिन बिम्बों का शुभ स्थापन।।42।।

यह त्रिदिवसी आयोजन भी, अन्तिम जनवरी महीने में।
सान्निध्य में हुआ मुनिसंघ के, दो सहस्र पाँच ईसा सन् में।।
मुनिश्री की पावन कृपा से, श्री शान्तिनाथ मंडल विधान।
सोलह दिवसी हो गया यहाँ, जग शान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।43।।

।। सपने में केवलज्ञान की झलक ।।

सपने में केवलज्ञान हुआ, मुनिराजा को इक रात्रि में।
वह पद्मासन में बैठे हैं, ध्यानस्थ होय के जंगल में।।
वो नींद खुले पर मिटा सभी, जो देख रहे थे सपने में।
इस युग में केवलज्ञान कभी, हो भी नहीं सकता जीवन में।।44।।

ढाई महीना रहके गुरु ने, इस भानपुरा की नगरी में।
कई धार्मिक कार्य कराये थे, स्व पर की आतम के हित में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, तप ज्ञान और चर्या लखके।
गद–गद हैं सारे नरनारी, इस भानुपरा की नगरी के।।45।।

दूजी तिथि मार्च महीना में, गुरु यहाँ से भी बढ़ जाते हैं।
तब नगरी के सारे श्रावक, अँखियों से जल बरसाते हैं।।
इस नगरी की सारी समाज, मुनिराजा के पहुँचाने को।
पाँच किलोमीटर तक गई, अंतरंग की प्यास बुझाने को।।46।।

।। भवानीमंडी में मुनि संघ ।।

भैंसोदामण्डी होकर संघ, छठवीं तिथि मार्च महीने में।
आ गया भवानीमण्डी में, दो सहस्र पाँच ईसा सन् में।।
यहाँ दोनों मुनि महाराजों की, भक्तों ने सीमा पर जाकर।
अपने अंतरंग के भावों से, अगवानी की अति हरषाकर।।47।।

।। मुनि स्वभावसागर से मिलन ।।

श्री स्वभावसिन्धु मुनिराजा से, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का।
अति ही आनंद से सीमा पर, हो गया मिलन अन्तर मन का।।
तब यहाँ नमोस्तु होती है, शुभ भावों से अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई सुखद, सन्तों में कुशल समाचारी।।48।।

अब दोनों संघों को श्रावक, एक आनंद यात्रा के संग में।
नगरी में प्रवेश कराते हैं, जिन मंदिर जी के प्रांगण में।।
मन्दिर जी के दरवाजे पर, गणमान्यों ने ऋषिराजों की।
अपने अंतरंग के भावों से, घृत के दीपों से आरती की।।49।।

तब तीन दिना तक आनंद से, दोनों ही संघ इस नगरी में।
इक साथ वसतिका में ठहरे, वात्सल्यता को धरके चित में।।
दोनों ही संघ अति आनंद से, संग में ही प्रवचन करते थे।
चर्या के समय सबई साधु, नगरी में साथ निकलते थे।।50।।

।। भवानीमंडी से विहार ।।

वात्सल्य देख इन ऋषियों का, सारे श्रावक इस नगरी के।
कर रहे प्रशंसा अन्तस से, ऋषिराजों की अति हरषाके।।
श्री विमर्शसिन्धु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
इस राजस्थानी धरती को, पद कमलों से महकाते हैं।।51।।

।। अतिशयक्षेत्र केथुली में ।।

ग्यारह तारीख को मुनिराजा, साहर्ष मार्च के महीने में।
आ गये केथुली तीरथ पर, ईर्यापथ को धरके चित में।।
श्री शान्तिनाथ मंडल विधान, इस अतिशयकारी तीरथ में।
तब धूमधाम के साथ हुआ, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।52।।

तब आसपास के नगरों से, इस आयोजन के लखने को।
यहाँ आये सैकड़ों नरनारी, महा मुनिराजाओं के दर्शन को।।
आयोजन के पश्चात् गुरु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुक के, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।53।।

।। रावतभाटा में मुनिराजा ।।

चौदह तारीख को मुनिसंघ, सर्वोत्तम मार्च महीने में।
पहुँचा था रावतभाटा में, दो सहस्र पाँच ईसा सन् में।।
तब तीन दिना तक मुनिश्री ने, रावतभाटा की नगरी में।
अध्यात्मसुधा बरसाया था, स्व पर की आतम के हित में।।54।।

तब फूलचन्द हरसौरा जी, संगनी संग यहाँ पधारे थे।
मुनिश्री की वाणी सुन उनने, अंतरंग के दीप उजारे थे।।
वह सोनगढ़ी श्रावक होके, कहते हैं अपनी संगनी से।
मुनिश्री के पावन चरणों में, तुम शीष झुकाओ आनंद से।।55।।

।। मुनिश्री की वाणी का असर ।।

सम्यग्दर्शन की चर्चा कर, मुनिश्री ने पावन वचनों से।
हमरी भटकी प्रिय आतम को, आईना दिखला दीना चित से।।
संयम के बिना कोई आतम, परमात्मा नहीं कभी बनती।
आतम-आतम के रटने से, आतम शुद्धात्म न हो सकती।।56।।

परमात्मा बनने को आतम, रत्नत्रय धारण करती है।
गुणस्थानों को परिवर्तित कर, अरहंत आत्मा बनती है।।
फिर पाके केवलज्ञान श्रेष्ठ, करमों का नाम मिटा करके।
सिद्धालय में जा बसती है, निर्विकारता चित्त धरके।।57।।

यहाँ फूलचन्द हरसौरा जी, मुनिवर की वाणी को सुनके।
अन्तस में अति हरषाये थे, सच्चाई को चित में धरके।।
तीन दिना रहके मुनिवर, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
आ करके भेंसरोडगढ़ में, नित चर्या सहर्ष बनाते हैं।।58।।

।। बोराव नगर में मुनिसंघ ।।

उन्नीस मार्च को मुनिसंघ, दो सहस्र पाँच ईसा सन् में।
बोराव नगर में पधराया, ईर्यापथ को धरके चित में।।
नगरी के सारे श्रावकगण, नगरी की सीमा पर जाकर।
अगवानी करते हैं संघ की, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।59।।

नगरी के सबई श्रावकों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा से।
कुछ समय यहीं को देने का, अनुरोध किया निज भावों से।।
नौ दिन का समय मुनिश्री ने, भक्तों के भावों को लखकर।
बोराव नगर को दिया तभी, संघस्थ मुनि से चरचाकर।।60।।

यहाँ दोनों टायम मुनिश्री ने, अपनी पावन मृदुवाणी से।
धर्मामृत नित बरसाया था, बचने को नित नये पापों से।।
सत्ताईस मार्च को मुनिराजा, दो सहस्र पाँच ईसा सन् में।
ईर्यापथ को चित में धरके, आये ये नगर सिंगोली में।।61।।

।। सिंगोली में यागमंडल विधान ।।

नगरी के सारे श्रावकगण, नगरी की सीमा पर जाकर।
अगवानी करते हैं संघ की, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
तब सात दिनों का हुआ यहाँ, श्री याग महामंडल विधान।
मुनियों के पावन सान्निध्य में, जग की शान्ति का अनुष्ठान।।62।।

।। चेची नगरी में मुनिसंघ ।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, अन्तिम दिन यात्रा श्री जी की।
सान्निध्य पाकर मुनिराजों का, सारी नगरी में निकली थी।।
अप्रैल तीन को मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
चेची नगरी में आकर गुरु, जिन मन्दिर में ठहराते हैं ।।63।।

।। शान्तिनाथ विधान चेची में ।।

श्री शान्तिनाथ मंडल विधान, नगरी के ही जिन मन्दिर में।
अति ही आनंद के साथ हुआ, ऋषियों के पावन सान्निध्य में।।
श्री विजयनगर के गुरुभक्त, इस ही नगरी में आये थे।
ऋषियों के पावन चरणों में, उन सबने शीष झुकाये थे।।64।।

बेदी की परम प्रतिष्ठा है, हे स्वामी हमरी नगरी में।
वहाँ चलने की स्वीकृति दीजे, सान्निध्य देने उस उत्सव में।।
श्री विमर्श सिन्धु मुनिराजा ने, भक्तों के भावों को लखकर।
स्वीकृति दे दी वहाँ आने की, संघस्थ मुनि से चरचाकर।।65।।

।। मुनि विप्रणसागर से मिलन ।।

अप्रैल सात को महामुनि, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
ठुकराई नगरी में आकर, नितचर्या को रुक जाते हैं।।
यहाँ विप्रणसागर के संघ ने, दोनों ही महामुनिराजों की।
नगरी की सीमा पर जाकर, अति आनंद से अगवानी की।।66।।

।। अतिशय क्षेत्र बिजौलिया में ।।

चर्या करके दोपहर बाद, गुरु यहाँ से भी बढ़ जाते हैं।
आ करके तीर्थ बिजौलिया में, प्रभु दर्शन को ठहराते हैं।।
यहाँ शिलालेख में लिखा मिला, कि पारस प्रभु जिनराजा पर।
कमठेश्वर ने उपसर्ग किया, इसही तीरथ की भूमि पर।।67।।

यहाँ पर ही केवलज्ञान हुआ, तब पार्श्वनाथ जिनराजा को।
बारह सौ छब्बीस संवत् का, ऐसा ही लेख मिला सबको।।
दो दिन रहके मुनिराजों ने, इस अतिशयकारी तीरथ में।
अति भावपूर्ण दर्शन कीने, आतम हित को धरके चित में।।68।।

।। बिजौलिया क्षेत्र से विहार ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, तेरह अप्रैल पाँच सन् में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे, ईर्यापथ को धर के चित में।।
ऊँदरा खेड़ा से होकर गुरु, महुआ कस्बा में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।69।।

।। महावीर जयंती महुआ में ।।

महावीर जयंती समारोह, अति आनंद से इस बस्ती में।
सब भक्त मनाते हैं मिलके, ऋषियों के पावन सान्निध्य में।।
दोपहर बाद इस बस्ती में, श्री शान्तिनाथ मंडल विधान।
तब हुआ गुरु के सान्निध्य में, जग शान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।70।।

।। अतिशय क्षेत्र चँवलेश्वर में ।।

अप्रैल बाईस को महामुनि, महुआ से कदम बढ़ाते हैं।
धामनिया बस्ती से होकर, चँवलेश्वर में आ जाते हैं।।
श्री पार्श्वप्रभु जिनराजा का, इस चँवलेश्वर के तीरथ में।
तब समोशरण भी आया था, यह मिलता लेख शिलाओं में।।71।।

जो वर्तमान में प्रतिमा है, श्री पार्श्वनाथ जिनराजा की।
कई वर्षों पहले तीरथ में, वह धरती में से निकली थी।।
हर दिन ही आते रहते हैं, यहाँ जैन अजैन सैकड़ों में।
दर्शन करते प्रभु पारस का, अति हर्षाके अपने उर में।।72।।

।। शाहपुर में मुनिसंघ ।।

चँवलेश्वर से भी मुनिराजा, कदमों को सहर्ष बढ़ाते हैं।
पारोली नगरी में आकर, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।
अप्रैल तीन को मुनिराजा, आये थे शाहपुर नगरी में।
यहाँ अगवानी करके श्रावक, अति हर्षाये मन गगरी में।।73।।

यहाँ चार दिना तक लगातार, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा को।
आहारों में अंतराय हुए, संयम पथ के सरताजा को।।
इस कारण से मुनिराजा को, कमजोरी होय गई तन में।
सो भक्तों के अति आग्रह से, चौदह दिन रुके शाहपुर में।।74।।

।। विजयनगर में मुनिसंघ ।।

चौदह मई को श्री मुनिवर ने, यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे।
अरनिया कोठिया से होकर, गुरु विजयनगर में आये थे।।
यहाँ के सारे श्रावक बन्धु, नगरी की सीमा पर जाकर।
अगवानी करते हैं संघ की, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।75।।

यहाँ भक्त जनों ने मुनिश्री के, पद कमलों का प्रक्षाल किया।
गुरु के चरणों में शीष झुका, अति आनंद से आशीष लिया।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के, यहाँ भक्तों ने चरणोदक को।
माथे पर सहर्ष लगाया था, अंतरंग में धर सत् श्रद्धा को ।।76।।

।। वेदी प्रतिष्ठा विजयनगर में ।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेके गये सभी, मन्दिर के पास वसतिका में।।
यहाँ बेदी की प्रतिष्ठा भी, त्रिदिवसीय इक आयोजन में।
छब्बीस मई से शुरू हुई, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।77।।

अट्ठाईस मई को अन्तिम दिन, श्री चन्द्रप्रभ जिन मन्दिर में।
प्रतिमाओं को पधराया था, अति सुन्दर नई वेदिका में।।
शिखरों पर कलशारोहण भी, अट्ठाईस मई के शुभ दिन में।
अति ही आनंद के साथ हुआ, दो सहस्र पाँच ईसा सन् में।।78।।

पंडित श्री रतनलाल जी ने, इस आयोजन को नगरी में।
विधिपूर्वक सहर्ष कराया था, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
बाईस दिना मुनिसंघ रहा, इस नगरी में अति आनंद से।
तब रोजाना प्रवचन होते, मुनिराजा की मृदुवाणी से।।79।।

इस बीच अनेकों नगरों के, गुरुभक्त यहाँ पर आये थे।
चऊमासे को गुरु चरणों में, उन सबने शीष झुकाये थे।।
तब सिंगोली के श्रावकगण, श्री विरागसिन्धु गुरुराजा से।
चऊमासे की अनुमति लाये, श्री मूड़बद्री के तीरथ से।।80।।

।। चाँपानेरी में मुनिसंघ ।।

पन्द्रह तारीख जून महीना, दो सहस्र पाँच ईसा सन् में।
यहाँ से भी गमन किया गुरु ने, ईर्या पथ को धरके चित में।।
दूसरे दिन चाँपानेरी में, आकर गुरुदेव ठहर जाते।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अन्तस में भारी हरषाते।।81।।

बारह दिन तक गुरुराजा ने, गणमान्यों के अति आग्रह से।
यहाँ धर्मामृत बरसाया था, अपनी पावनतम वाणी से।।
सत्ताईस जून को महामुनि, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुकके, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।82।।

।। भीलवाड़ा में मुनिसंघ ।।

रूपाहेली रायला होकर, गुरु तीन जुलाई के दिन में।
भीलवाड़ा में पधराये थे, दो सहर्ष पाँच ईसा सन् में।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, नगरी की सीमा पर जाकर।
नगरी के सबई श्रावकों ने, अगवानी की अति हर्षाकर।।83।।

मुनिराजों को श्रावक जनने, श्री सुभाष नगर कॉलोनी में।
अति आनंद से ठहराया था, मन्दिर के पास वसतिका में।।
तब पाँच दिना मुनिराजा ने, श्री सुभाषनगर कॉलोनी में।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, स्वपर की आतम के हित में।।84।।

।। भीलवाड़ा से विहार ।।

छठवें दिन महा मुनीन्द्रों ने, नगरी के सभी जिनालयों में।
जिनदेवों के दर्शन कीने, अति हर्षा के अपने उर में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, ग्यारह तारीख जुलाई में।
भीलवाड़ा से होवत विहार, दो सहस्र पाँच ईसा सन् में।।85।।

।। मुनि विनम्रसागर जी से मिलन ।।

यहाँ दोनों ही मुनिवृन्दों का, गुरु भक्त सहर्ष सिंगोली के।
करवाते हैं मंगल विहार, सम्पूर्ण व्यवस्था चित धरके।।
मारग में तब मुनिराजों का, श्री विनम्रसिन्धु गुरु भ्राता से।
आठ मील चलने पर ही, हो गया मिलन वात्सल्यता से।।86।।

दोनों संघ के साधुजन में, वहाँ हुई नमोस्तु सुखकारी।
रत्नत्रय की फिर हुई यहाँ, ऋषियों में कुशल समाचारी।।
फिर दोनों ही मुनिसंघ सहर्ष, निज मंजिल ओर चले जाते।
कुछ ग्रामों नगरों में रुकके, जिनधर्म पताका फहराते ।।87।।

।। उपाध्याय आत्मासागर जी से मिलन ।।

तब दोनों गुरु मुनिराजों का, आत्मासागर उपझाया से।
जोगड़िया घाटा नगरी में, हो गया मिलन वात्सल्यता से।।
दोनों संघ के ऋषिराजों में, तब हुई नमोस्तु सुखकारी।
रत्नत्रय की फिर हुई वहाँ, आनंद से कुशल समाचारी।।88।।

।। सिंगोली में मुनिसंघ ।।

श्री विमर्शसिन्धु जी मुनिराजा, अपने संघ को लेके संग में।
धनगाँव ग्राम से होकर के, आ गये नगर सिंगोली में।।
नगरी के सबई श्रावकों के, सीमा पर जाकर मुनिश्री की।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, अति आनंद से अगवानी की।।89।।

यहाँ सभी श्रावकों ने मिलके, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, अंतरंग में भारी हरषाके।।
गायन वादन के साथ सभी, एक आनंद यात्रा के संग में।
मंगल प्रवेश कराते हैं, मुनियों को नगर सिंगोली में।।90।।

अब दोनों मुनि महाराजों ने, मन्दिर जी में दर्शन करके।
मृदुवाणी से प्रवचन कीने, सुख दुख दोनों चित में धरके।।
ये नगर जिला नीमच में है, है राजस्थान नियर इसके।
नीमच की ये तहसील बड़ी, अंतरगत एम.पी. शासन के।।91।।

।। 2005 का वर्षायोग सिंगोली में ।।

इक्कीस जुलाई के दिन में, मुनिराजों के चऊमासे का।
यहाँ कलशा होवत स्थापित, दो सहस्र पाँच ईसा सन् का।।
पंडित शैलेन्द्र शास्त्री ने, इस अतिश्रेष्ठ आयोजन का।
माइक पर कीना संचालन, विधिपूर्वक पूरे कार्यक्रम का।।92।।

पहले कलशा का स्थापन, प्रमोद कुमार ने करवाया।
रामगंजमंडी से आकर, यह सौभाग्य सहर्ष पाया।।
दूसरे कलशे का स्थापन, श्री जयकुमार सिंगोली ने।
अति आनंद से करवाया था, सौभाग्य पाय करके इनने।।93।।

तीजा कलशा प्रकाशचन्द, अरु चौथा नेमिचन्द्र जी ने।
सौभाग्य पायकर करवाया, सिंगोली नगर निवासी ने।।
इस समारोह के लखने को, कई नगरों के श्रावक आये।
मुनिराजों के दर्शन करके, वह अंतस में अति हर्षाये।।94।।

श्री मानतुंगमुनि के मोती, यह रचना श्री मुनिराजा की।
लोकार्पण इसका हुआ यहाँ, यह उपलब्धि चऊमासे की।।
यहाँ हुए अनेकों धर्म कार्य, जो हुए अन्य चऊमासों में।
अति धूमधाम के साथ सभी, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।।95।।

।। पन्द्रह अगस्त को संबोधन ।।

आजादी पर मुनिराजा ने, पन्द्रह अगस्त के शुभ दिन में।
प्रवचन दीना आजादी पर, यहाँ तहसील के आँगन में।।
मुनिराज श्री कहते पहले, हम सभी लड़ते थे डण्डों से।
अब सभी यहाँ पर रोजाना, लड़ते रहते हैं झण्डों से।।96।।

यहाँ धर्म नीति में झण्डों को, अपना ऊँचा बतला करके।
हम लोग सदा लड़ते रहते, हिंसा को अपने चित धरके।।
आजादी पाकर के हम सब, आपस में नहीं सीखे रहना।
आजादी हमने नहीं समझी, केवल हमने सीखा लड़ना।।97।।

राष्ट्रीय तिरंगे झण्डे को, सब धर्मी यदि स्वीकार करें।
तब जातिगत सारे झगड़े, नहीं होंगे यह विश्वास करें।।
जातिगत झगड़े नहीं होंगे, तो सभी रहेंगे मिलजुल के।
तब श्रेष्ठ एकता से होगा, उत्थान राष्ट्र का बढ़ चढ़ के।।98।।

आगे मुनिवर समझाते हैं, अपनी पावन मृदु वाणी से।
इसमें कोई अहित नहीं होगा, सब धर्म निजी पालो मन से।।
जिनधर्मी अगर तिरंगे को, जिनधर्म का झण्डा मानेंगे।
तो सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र, उस झण्डे में दिख जावेंगे।।99।।

यदि सहर्ष तिरंगे को हिन्दू, निज धर्म का झण्डा मानेंगे।
तब ब्रह्मा विष्णु महेश उन्हें त्रय रंगों में दिखलावेंगे।।
यदि मुस्लिम भाई तिरंगे को, इस्लाम धरम का मानेंगे।
त्रय अंक सात सौ छियासी भी, उस झण्डे में मिल जावेंगे ।। 100।।

यदि सहर्ष तिरंगे झण्डे को, ईसाई हृदय में धर लेंगे।
तब गाड–सन–होली गेस्ट, तीनों इक साथ वहाँ होंगे।।
आतंक अशान्ति उस ही दिन, इस भारत में मिट जावेगी।
सत् शान्ति और अहिंसा भी, यहाँ हर दिल में आ जावेगी।।101।।

नगरी के जैन अजैन और, शासन के भी कई अधिकारी।
इस आयोजन में आये थे, हर धरमों के उपमाधारी।।
मुनिराजा का यह राष्ट्रप्रेम, सब श्रोताओं ने लख करके।
अन्तस से बहुत सराहा था, गुरुवाणी को चित में धरके।।102।।

तब चार सितम्बर के ही दिन, इस सिंगोली की नगरी में।
अध्यात्मिक कवि सम्मेलन भी, होता ऋषियों के सान्निध्य में ।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, अपनी कविता के माध्यम से।
जनता के मन को जीत लिया, अपनी कोयल सम वाणी से।।103।।

।। मुनिवर को आचार्य पद की घोषणा ।।

आचार्य विरागसागर जी ने, चऊमासे में कुंथुगिरि के।
छह शिष्यों को आचारज पद, घोषित कीना अति हरषाके।।
ये छहों शिष्य जहाँ पर होवे, वह सभी आज के ही दिन से।
आचार्य परम कहलावेंगे, मैं घोषित करता हूँ मन से।।104।।

यह शिष्य जहाँ पर भी होवें, वहाँ की समाज इन शिष्यों को।
आचार्य महापद दे देवे, चित्त धरके हमारी आज्ञा को।।
जो घोषित हैं आचार्य परम, दो सहस्र पाँच ईसा सन् में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, था नाम इन्हीं छह शिष्यन में।।105।।

।। आचार्य पद नहीं स्वीकारा ।।

पर विमर्शसिन्धु मुनिराज श्री, थे बहुत दूर गुरुराजा से।
यह पद लेना स्वीकार न था, इनको समाज के माध्यम से।।
यहाँ सहज श्री मुनिराजा ने, कह दीना सब गणमान्यों से।
यह पद लेना उत्तम होता, गुरुराजा के कर कमलों से।।106।।

ये श्रेष्ठ भावना निज शिष्य की, जब पता चली गुरुराजा को।
तब हुआ शिष्य पर नाज इन्हें, लख के शिष्य की निस्पृहता को।।
यहाँ छात्र और छात्राओं का, उन्तीस सितम्बर के दिन में।
प्रतिभा सम्मान हुआ उत्तम मुनियों के पावन सान्निध्य में।।107।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, तब प्रतिभाशाली छात्रों को।
आशीष दिया अति हरषाके, उनके समृद्धि जीवन को।।
प्रभुवीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक वदी अमावस में।
भक्तों ने सहर्ष मनाया था, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।108।।

।। सिद्धचक्र विधान सिंगोली में ।।

तारीख आठ नवम्बर से, श्री सिद्धचक्र मंडल विधान।
होता है नगर सिंगोली में, जग की शान्ति का अनुष्ठान।।
श्री उदयचन्द्र जी शास्त्री ने, यह समारोह इस नगरी में।
अति आनंद से करवाया था, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।109।।

उस ही दिन दोनों मुनियों ने, विधिपूर्वक ही चऊमासे का।
निष्ठापन कीना सहर्ष यहाँ, हित धरके अपनी आतम का।।
पिच्छि परिवर्तन समारोह, सोलह तारीख नवम्बर में।
सम्पन्न हुआ अति आनंद से, इसही नगरी के आँगन में।।110।।

।। सिंगोली से विहार ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, पच्चीस नवम्बर के दिन में।
हो गया गमन सिंगोली से, ईर्यापथ को धरके चित में।।
मुनिराजा ने इस नगरी से, जब अपने कदम बढ़ाये थे।
तब बालक वृद्ध जवानों की, अँखियों ने जल बरसाये थे।।111।।

इस नगरी के सारे श्रावक, श्री मुनिवर के पहुँचाने को।
कई मील दूर तक जाते हैं, अंतरंग की प्यास बुझाने को।।
वोराब ग्राम से होकर के, गुरु आगे कदम बढ़ाते हैं।
रावतभाटा में आकर गुरु, चर्या करने रुक जाते हैं।।112।।

।। रावतभाटा में मुनिसंघ ।।

रावतभाटा के भक्त सहर्ष, नगरी की सीमा पर जाकर।
मुनिसंघ की करते अगवानी, हृदय में भारी हर्षाकर।।
वहाँ ही भक्तों ने मुनिवर के, पद कमलों का प्रक्षाल किया।
घृत के दीपों से आरती कर, अति आनंद से आशीष लिया।।113।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के, यहाँ भक्तों ने चरणोदक को।
माथे पर सहर्ष लगाया था, हृदय में धर सत् श्रद्धा को।।
ये नवमाँ कलश हुआ पूरा, श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ का।
एक महाकवि के जीवन का, नौ बरषों के सत् संयम का।।114।।

।। इति नवमाँ कलश ।।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

दसवाँ कलश

।। मंगलाचरण ।।

इस दुनिया के धन वैभव को, बिन भोगे तजा यहाँ जिनने।
उन बाल ब्रह्म मुनिराजों को, भावों से नमन किया हमने।।
मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारों से, जिन संतों का कोई काम नहीं।
अपनी आतम में रमते हैं, कोई दूजा उनको काम नहीं।।1।।

जग के जालों से बचने को, जो मुनि मारग अपनाते हैं।
संयम में ही चित धरते जो, वो ही मुनिवर कहलाते हैं।।
इन ही मुनियों के चरणों में, हम सादर शीष झुकाते हैं।
इस महाकाव्य के लिखने को, उनको ही हृदय बिठाते हैं।।2।।

जिस श्रावक के घर तपोनिधि, निर्ग्रन्थ महा मुनिराजों के।
आहार सहर्ष होते रहते, उन सब ही धर्म जहाजों के।।
अरु संघपति बन करके भी, जो जन विहार करवाते हैं।
उन साधर्मी बंधुजन को, हम सादर शीष नवाते हैं।।3।।

अब सरस्वती को वन्दत हैं, अपना श्रुत ज्ञान बढ़ाने को।
चंचल चित्त को स्थिर करने, अरु कारज सफल बनाने को।।
वन्दन भी करता हूँ उनको, जो इसी काव्य के नायक हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिराजा हैं, आचारज पद को घोषित हैं।।4।।

उनने लिख दी कवितायें कई, जैनागम को चित में धरके।
वह भावलिंगी मुनिराजा हैं, चौथे युग जैसे संयम के।।
उन महामुनि को वन्दत हैं, जिनने आशीष दिया हमको।
वे सदा रहें हमरे चित्त में, उन विशुद्ध सिन्धु मुनिनाथा को।।5।।

जो है सो है की बहती है, जिनके संघ में अविरल धारा।
जयवन्त नमोस्तु शासन का, जहाँ गूँज रहा उत्तम नारा।।
उनकी ही सुखद प्रेरणा से, यह कार्य शुरू कीना हमने।
अनुपम शब्दों में इसे लिखूँ, यह ठान लई मेरे मनने।।6।।

अब आगे कथा बढ़ाते हैं , श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ की।
संयम के श्रेष्ठ समुन्दर की, आगम के अनुपम ज्ञाता की।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को सब लेके जाते, सुपारसनाथ जिनालय में ।।7।।

।। अहिंसा सर्किल का शिलान्यास ।।

कोटा बैरियर के पास सहर्ष, उसही दिन रावतभाटा में।
शिलान्यास अहिंसा सर्किल का, यहाँ हुआ गुरु के सान्निध्य में।।
यहाँ पवन कुमार शास्त्री ने, श्री मुनिवर के निर्देशन में।
विधिपूर्वक यहाँ कराया था, नगरी की जनता के हित में।।8।।

यहाँ जैन अजैन सभी भाई, आये थे इस आयोजन में।
श्री मुनिवर की वाणी सुनके, सब हरषाये अपने मन में।।
उन्तीस नवम्बर के दिन से, इस रावतभाटा नगरी में।
श्री कल्पद्रुम मंडल विधान, यहाँ हुआ गुरु के सान्निध्य में ।।9।।

।। आठवाँ मुनिदीक्षा समारोह ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, चौदह तारीख दिसम्बर में।
अष्टम मुनिदीक्षा दिवस मना, दो सहस्र पाँच ईसा सन् में।।
तब आस पास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
श्रावक जन आये हजारों में, गुरुवाणी चित्त में धरने को।।10।।

यहाँ सिंगोली की बहिनों ने, मंगलाचरण कीना भावों से।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, कल्याण सेठ ने आनंद से।।
श्री जम्बूकुमार श्रेष्ठीवर ने, मुनिश्री की आरती करने का।
सौभाग्य यहाँ पर पाया था, सत् दीप उजाने अन्तस का।।11।।

श्री विशर्मसिन्धु मुनिराजा ने, अपनी पावन मृदुवाणी से।
उत्तम उपाय बतलाया है, बचने को जग आकुलता से।।
संयम ही केवल सेतु है, संसार भ्रमण से बचने का।
संयम बिन पार नहीं होगी, जीवन पथ की कोई नौका।।12।।

सच्चे संयम का मारग ही, केवल शिवपुर को जाता है।
इस पर चलने वाला राही, अपना मुकाम पा जाता है।।
मुनिश्री ने लिखी एक रचना, स्वर गुरु के प्रति समर्पण के।
जिसका लोकार्पण हुआ यहाँ, कविता में बोल रहे जिसके।।13।।

।। शीतकालीन वाचना रावतभाटा में ।।

रावतभाटा के श्रावक जन, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा से।
यहाँ शीतकालीन वाचना की, विनती करते हैं अन्तस से।।
श्री गुरुवर ने तब भक्तों के, अन्तस भावों को लख करके।
स्वीकृति वाचना की उनको, दे दीनी थी अति हरषाके।।14।।

अब यहाँ वाचना शुरू हुई, श्री समयसार की गाथा की।
तब प्रमुख वाचना रही यहाँ, गोम्मटसार आगम पथ की।।
श्री अजितप्रसाद शास्त्री जी, कुलपति बनें इस वाचन में।
श्री फूलचंद संजय शास्त्री, सहयोगी इस आयोजन में।।15।।

।। नववर्ष पर कवि सम्मेलन ।।

पश्चात् यहाँ पर होता है, आयोजन कवि सम्मेलन का।
इस नई साल के आने पर, आयोजन यह अभिनंदन का।।
इसमें कई उत्तम कवियों ने, अध्यातम गीत सुना करके।
मन सराबोर यहाँ कीना था, अति आनंद की वर्षा करके।।16।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, जन-जन के भारी आग्रह से।
कुछ मार्मिक गीत सुनाये थे, अपनी कोयल सम वाणी से।।
श्रोता जन के तन मन भींगे, श्री गुरुवर की रस वर्षा से।
रुक जाने पर कविताओं के, प्यासे रह गये श्रोता मन से।।17।।

।। रावतभाटा से विहार ।।

इस नये वर्ष का शुभारंभ, मुनिश्री की अनुपम कृपा से।
शुभ कार्यों से भरपूर रहा, यहाँ सोच रहे श्रोता मन से।।
जनवरी अठारह को स्वामी, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुक के, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।18।।

।। बोरावनगर में मुनि संघ ।।

इक्कीस जनवरी में मुनिश्री, बोराव नगर में पधराये।
नगरी की सीमा पर श्रावक, अगवानी कर अति हर्षाये।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
सब भक्त सहर्ष लेकर जाते, मुनिसंघ को पूज्य जिनालय में।।19।।

।। श्री रत्नत्रय विधान ।।

इक्कीस जनवरी से ही यहाँ, श्री रत्नत्रय मंडल विधान।
तब हुआ गुरु के सान्निध्य में, जग की शान्ति का अनुष्ठान ।।
पण्डित धरणेन्द्र शास्त्री ने, विधिपूर्वक ही ये आयोजन।
अति आनंद से करवाया था, मुनिवर का पाके निर्देशन।।20।।

जनवरी तीस को मुनिराजा, सन् दो हजार छह ईसा में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, आतम का हित धरके चित में।।
मुनिराजों ने तब रुक करके, सिंगोली और बिजौलिया में।
जिनधर्म ध्वजा फहराई, स्व-पर की आतम के हित में।।21।।

।। बूँदी नगरी में मुनिसंघ ।।

बूँदी नगरी में पहुँचा संघ, तेरह तारीख फरवरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हरषाये अपने चित में।।
अठरा तारीख फरवरी से, बूँदी के परम जिनालय में।
नई वेदी की प्रतिष्ठा हुई, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।22।।

फरवरी बीस को वेदी पर, श्री शीतलनाथ जिनेश्वर को।
अति आनंद से पधराया था, त्रय लोकों के परमेश्वर को।।
श्री उदयचन्द्र शास्त्रीजी ने, विधिपूर्वक इस आयोजन को।
सानंद सम्पन्न कराया था, आतम का हित उपजाने को।।23।।

।। श्री शान्तिनाथ विधान हुआ ।।

छब्बीस तारीख फरवरी से, नागदी बाजार जिनालय में।
श्री शान्तिनाथ विधान हुआ, सन् दो हजार छह ईसा में।।
आलोद नगर के श्रावक जन, यहाँ मुनिश्री के ढिग आये थे।
चरणों में शीष झुका उनने, अपने मंतव्य बताये थे।।24।।

हे स्वामी हमरी नगरी में, है सिद्धचक्र मंडल विधान।
सो उसमें सान्निध्य देने की, हमको स्वीकृति कीजे प्रदान।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, उन सबके भावों को लखके।
आशीष सहित स्वीकृति दीनी, वहाँ आने की मुस्का करके ।।25।।

।। अलोद नगर में मुनि संघ ।।

अब चार मार्च को मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कुछ ही दूरी पर जाकर के, एक इण्डष्ट्री में रुक जाते हैं।।
होते ही सुबह श्री गुरुवर, यहाँ से विहार कर जाते हैं।
अलोद नगर में आकर के, यहाँ की गलियाँ महकाते हैं।।26।।

यहाँ के सारे श्रावक बन्धु, नगरी की सीमा पर जाकर।
संघ की करते हैं अगवानी, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
यहाँ नगरी के गणमान्यों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, चंवल से निर्मल जल लाके।।27।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेकर आये थे, मन्दिर के पास वसतिका में।।
छठवीं तिथि मार्च महीना में, यहाँ सिद्धचक्र मंडल विधान।
होता है संघ के सान्निध्य में, समता शान्ति का अनुष्ठान।।28।।

श्री पवनकुमार जी शास्त्री ने, यहाँ दो हजार छह ईसा में।
विधिपूर्वक ही ये आयोजन, करवाया था आतम हित में।।
तारीख बीस को मुनिराजा, यहाँ से भी मार्च महीने में।
कर देते हैं मंगल विहार, ईर्यापथ को धरके चित्त में।।29।।

।। बूँदी नगर में मुनिसंघ ।।

अप्रैल पाँच को महामुनि, बूँदी नगरी में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।
श्री विमर्शसिन्धु जी मुनिराजा, इस ही दिन बूँदी नगरी में।
अति आनंद से पधराये थे, संघस्थ साधुओं के संग में।।30।।

।। मुनि विनम्रसागर जी से मिलन बूँदी में ।।

यह एक गुरु के परम शिष्य, दोनों ही महा मुनिराजा हैं।
वात्सल्य में श्रेष्ठ समुन्दर हैं, संयम पथ के सरताजा हैं।।
इन दोनों गुरुभ्राताओं का, इसही नगरी के आँगन में।
स्नेह मिलन हुआ भावों से, खुश होकर के भारी मन में।।31।।

पश्चात् यहाँ मुनिराजों ने, अपने अंतरंग के भावों से।
रत्नत्रय की चरचा कीनी, तिर जाने को भव सागर से।।
दोनों मुनिराजा संघ सहित, ठहरे यहाँ साथ वसतिका में।
दोनों मुनियों की हुई साथ, आहार क्रिया एक चौके में।।32।।

।। शिखर का शिलान्यास ।।

तब हुआ शिखर का शिलान्यास, यहाँ रजतगृह कॉलोनी में।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, पहले से बने जिनालय में।।
श्री नरेन्द्र जैन पंडित जी ने, विधिपूर्वक ही आयोजन को।
मुनियों के पावन सान्निध्य में, सम्पन्न कराया था इसको।।33।।

।। देवपुरा में नित चर्या ।।

दूजे दिन सुबह मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
आकर के देवपुरा में ही, नित चर्या को रुक जाते हैं।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, यहाँ ही आहार क्रिया करके।
यहाँ से भी कदम बढ़ा दीने, ईर्यापथ को चित में धरके।।34।।

।। कोटा नगरी में मुनिसंघ ।।

तालेड़ा नगरी से होकर, कुन्हाड़ी ग्राम पहुँच करके।
जिन मन्दिर में रुक जाते, रात्रि विश्राम हृदय धरके।।
दूजे दिन सुबह मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
अप्रैल महीना की नवमीं, तिथि में कोटा आ जाते हैं।।35।।

यहाँ मोहनलाल महावर ने, संग साथ हजारों भक्तों के।
अगवानी की मुनिराजों की, नगरी की सीमा पर जाके।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के, गणमान्यों ने अति हरषाके।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, चंवल से निर्मल जल लाके।।36।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेके गये सभी, श्री रामपुरा जिनमन्दिर में।।
मारग में सबई श्रावकों ने, अपने ही घर के द्वारों पर।
गुरु चरणों का प्रक्षाल किया, अन्तस भावों में हर्षाकर।।37।।

।। रामपुरा जिनमन्दिर में ।।

आहार चर्या सामायिक कर, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
विज्ञाननगर जिन मन्दिर में, गुरु आकरके रुक जाते हैं।।
दूजे दिन चर्या करके गुरु, श्री रामपुरा जिन मन्दिर में।
वापस ही सहर्ष चले आये, भक्तों का आग्रह धर उर में।।38।।

।। महावीर जयंती ।।

यहाँ वीर जयंती समारोह, ग्यारह अप्रैल परम दिन में।
अति धूमधाम के साथ मना, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
उस दिन प्रातः शोभायात्रा, निकली इस कोटा नगरी में।
इस गाथा में जिसका वर्णन, नहीं कर सकते हम शब्दों में।।39।।

अब आस पास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
श्रावक जन आये हजारों में, गुरु वाणी चित में धरने को।।
इस कोटा नगरी के भीतर, अड़तालीस मन्दिर हैं विशाल।
जिनमें नित पूजा करते हैं, श्रावक बंधु तज आल जाल।।40।।

।। नसियाँ जी में मुनिसंघ ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, नगरी के सभी जिनालयों में।
जिनराजों के दर्शन कीने, एक आनंद यात्रा के संग में।।
दूजे दिन दोनों मुनिराजा, एक आनंद यात्रा के संग में।
नसियाँ जी में पधराये थे, आगम का झण्डा ले कर में।।41।।

यहाँ सभी मुहालों के श्रावक, मुनिराजा के ढिग आ करके।
चऊमासे की विनती करके, श्रीफल का अर्घ्य चढ़ा करके।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, उनके भावों को चित्त धरके।
मुस्काके कहा सभी जन से, देखेंगे आगे चल करके।।42।।

तारीख अठारह को मुनिसंघ, अप्रैल महीना में चलकर।
खटकड़ नगरी में आये थे, कुछ ग्रामों नगरों से होकर।।
नगरी के सबई श्रावकों ने, भक्ति भावों से मुनिसंघ की।
अगवानी की अति आनंद से, सीमा पर जाकर नगरी की।।43।।

।। पीपलिया में मुनिसंघ ।।

दूजे दिन नित चर्या करके, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कुछ ग्रामों नगरों में जाकर, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।
छब्बीस अप्रैल को मुनिराजा, पहुँचे पीपलिया नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हर्षाये मन गगरी में।।44।।

।। उपाध्याय संयमसागर से मिलन ।।

श्री संयम सागर उपझाया, ठहरे थे इस ही नगरी में।
रत्नत्रय के उत्तम साधक, सागर है समता भावों में।।
दोनों ऋषियों का हुआ यहाँ, वात्सल्य मिलन अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, भावों से कुशल समाचारी।।45।।

सामायिक कर दोपहर बाद, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
देई नगरी में आकर गुरु, जिनमन्दिर में ठहराते हैं।।
दो दिन रुक के मुनिराजा ने, यहाँ भक्तों के अति आग्रह से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, अपनी पावन मृदुवाणी से।।46।।

नैनवाँ नगर के भक्त सभी, मुनिराजा के ढिंग पधराये।
मुनिराजों के दर्शन करके, अंतरंग में भारी हरषाये।।
नैनवाँ नगर में चलने को, उन सबने अन्तस भावों से।
श्रीफल का अर्घ्य चढ़ा करके, विनती कीनी मुनिराजा से।।47।।

।। नैनवाँ नगरी में मुनिसंघ ।।

मुनिराजा ने कृपा करके, आशीष सहित उन भक्तों को।
स्वीकृति दे दी अति हरषाके, नैनवाँ नगर में चलने को।।
उन्तिस अप्रैल को मुनिराजा, नैनवाँ नगर में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।48।।

इस ही नगरी के प्रांगण में, हैं नौ जिनमन्दिर अति विशाल।
यहाँ चार शतक घर के जैनी, पूजा करते तज आल जाल।।
अक्षय तृतीया का समारोह, दूजे दिन नगर नैनवाँ में।
अति ही आनंद के साथ मना, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।49।।

।। ग्रीष्मकालीन वाचना नैनवाँ में ।।

यहाँ ग्रीष्मकालीन वाचना भी, तारीख एक मई महीने से।
श्री समयसार की शुरू हुई, मुनिराजा के पावन मुख से।।
दोपहर बाद कक्षा लगती, छहढाला की जिन मन्दिर में।
तब बाल अबाल सभी बन्धु, नित ही शामिल होते इसमें।।50।।

सोलह तिथि जून महीने से, श्री पारसनाथ जिनालय में।
कलशारोहण का समारोह, होवत मुनियों के सान्निध्य में।।
श्री नरेन्द्र कुमार शास्त्री जी ने, दूजे दिन याग मंडल विधान।
अति आनंद से करवाया था, सुख शान्ति को यह अनुष्ठान।।51।।

।। कलशारोहण नैनवाँ में ।।

तब ध्वजा और कलशारोहण, तीजे दिन ही जिन मन्दिर की।
शिखरों के ऊपर हुआ यहाँ, निर्देशन में मुनिराजा की।।
तब आस पास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
गुरुभक्त हजारों आये थे, मुनिश्री के दर्शन करने को।।52।।

।। 33वाँ जन्मोत्सव ।।

कोटा नगरी के श्रावक जन, श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा से।
चऊमासे की अनुमति लाये, तमिलनाडु के नगरों से।।
तैंतीसवाँ जन्म महोत्सव भी, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का।
मिल गया नैनवाँ नगरी को, आनंद के साथ मनाने का।।53।।

है जन्म नवम्बर पन्द्रह का, लेकिन स्कूल तिथि लख के।
छब्बीस जून को मना यहाँ, जन्मोत्सव भारी हरषा के।।
गुरुदेव नैनवाँ नगरी से, छठवीं तारीख जुलाई में।
बड़गाँव नगर में आये थे, श्री विश्वपूज्य मुनि के संग में।।54।।

कोटा नगरी के श्रावक जन, श्री गुरुवर की अगवानी को।
बड़गाँव नगर में आये थे, लेकर केशरिया झण्डा को।।
भक्तों के साथ विहार किया, गुरुवर ने सात जुलाई को।
रिद्धि सिद्धि कॉलोनी से, कोटा नगरी पधराने को।।55।।

।। कोटा नगरी में मुनिसंघ ।।

तब नयापुरा चौराहे पर, थे खड़े हजारन नर नारी।
मुनिसंघ की करने अगवानी, खुश होकर के मन में भारी।।
यहाँ नगरी के गणमान्यों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, चंबल से निर्मल जल लाके।।56।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुवर को लेके आये सब, नसियाँ जी के जिन मंदिर में।।
मारग में सबई श्रावकों ने, निज द्वारों पर मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, अंतरंग में भारी हरषा के।।57।

उस दिन नगरी को भक्तों ने, दुल्हन की तरह सजाया था।
कई तोरण द्वार बना उनमें, केशरिया ध्वज लहराया था।।
नगरी के सबई श्रावकों ने, अपने घर के दरवाजों में।
तब वन्दनबार लगाये थे, हर्षित होकर निज भावों में।।58।।

मुनिसंघ को लेकर के जुलूस, होकर के प्रमुख मुहल्लों से।
नसियाँ जी के जिन मन्दिर में, आ जाता है अति आनंद से।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, यहाँ आदिनाथ जिनराजा के।
चरणों का वन्दन किया सहर्ष, अंतरंग में भारी हरषा के।।59।।

।। 2006 वर्षायोग कोटा में ।।

यहाँ दस तारीख जुलाई में, श्री मुनिसंघ के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, सन् दो हजार छह ईसा का।।
अब आस पास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
श्रावक जन आये हजारों में, गुरु वाणी चित्त में धरने को।।60।।

पन्द्रह तारीख जुलाई से, यहाँ शिविर लगा भक्तामर का।
जिसमें होता है नित वाचन, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का।।
जीवन है पानी की बूँद, यह रचना है मुनिराजा की।
जिसका लोकार्पण हुआ तभी, यहाँ बहुत प्रशंसा हुई जिसकी।।61।।

हर रविवार को प्रवचन भी, मुनिराजा के पावन मुख से।
अति ही विशेष हुआ करते, आतम हित के अति आनंद से।।
पन्द्रह अगस्त का प्रवचन भी, उम्मेद सिंह स्टेडियम में।
मुनिराजा ने यहाँ किये सहर्ष, आजादी को धरके चित में।।62।।

गणमान्य कई इस नगरी के, इस समारोह में आये थे।
मुनिश्री की मार्मिक वाणी सुन, अन्तस में अति हरषाये थे।।
हर रविवार के प्रवचन में, यहाँ जैन अजैन सभी आते।
मुनिश्री की वाणी चित्त धरके, अन्तस में भारी सुख पाते।।63।।

पश्चात् पर्यूषण पर्वों के, यहाँ क्षमावाणी आयोजन में।
मुनिराजा ने समझाया था, सत् क्षमा सभी धारो मन में।।
क्षमा माँगकर क्षमा किया, जिस प्राणी ने जग जीवों को।
वह क्षमा धर्म हितकारी है, जीवन पथ में उस प्राणी को।।64।।

।। विद्वत् संगोष्ठी कोटा में ।।

मुनिश्री की मार्मिक वाणी सुन, वहाँ बैठे सब श्रोताओं ने।
आपस में क्षमा सहर्ष माँगी, आतम का हित धरके उनने।।
यहाँ बीस सितम्बर के दिन से, त्रिदिवसीय एक आयोजन में।
राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी हुई, कोटा नगरी के आँगन में।।65।।

इस गोष्ठी में भारत भर से, मूर्धन्य विद्वान् पधारे थे।
जिनने अपनी प्रिय वाणी से, आगम के दीप उजारे थे।।
वहाँ हुए अनेकों धर्म कार्य, जो हुए अन्य चऊमासों में।
अति धूमधाम के साथ सभी, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।66।।

।। पूजन प्रशिक्षण शिविर कोटा में ।।

तारीख तीन अक्टूबर से, दादावाड़ी जिनमन्दिर में।
पूजा का शिक्षण शिविर लगा, मुनि महाराजों के सान्निध्य में।।
जिसमें ग्यारह सौ शिविरार्थी, टाइम से मन्दिर में आकर।
पूजन विधि को सीखा करते, मुनिराजा से अति हर्षाकर।।67।।

।। प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस ।।

ये दस दिवसी आयोजन की, नगरी के सबई श्रावकों में।
चर्चा का विषय बना उत्तम, यहाँ आस पास के क्षेत्रों में।।
प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, तब कार्तिक वदी अमावस में।
अति धूमधाम से मना यहाँ, मुनि संघ के पावन सान्निध्य में।।68।।

।। पिच्छिका परिवर्तन समारोह ।।

उस ही दिन दोनों मुनियों ने, विधिपूर्वक ही चऊमासे का।
निष्ठापन यहाँ सम्पन्न किया, विचरण करने को बन्धन का।।
पिच्छि परिवर्तन का उत्सव, अट्ठाईस अक्टूबर के दिन में।
सम्पन्न हुआ अति आनंद से, यहाँ दो हजार छह के सन् में।।69।।

मुनिवर की जूनी पिच्छि तब, हेमन्त कुमार ने लेकर के।
ले लिया शीलव्रत आनंद से, निज हृदय में श्रद्धा धरके।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, नगरी के मुख्य जिनालयों में।
भक्तामर विधान कराये थे, जाकर के सबई मुहालों में।।70।।

।। आचार्य पदारोहण गुरु महाराज का ।।

आचार्य पदारोहण भी यहाँ, सोलहवाँ गुरु महाराजा का।
आनंद के साथ मनाया था, सान्निध्य पाकर मुनिराजा का।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, तारीख आठ नवम्बर में।
भक्तामर विधान कराया था, तल बंडी के जिन मन्दिर में।।71।।

यहाँ आर.के. पुरम कॉलोनी, जहाँ मुनिसंघ के सान्निध्य में।
भक्तामर विधान हुआ पावन, दसवीं तारीख नवम्बर में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के, तेरह तारीख नवम्बर में।
प्रवचन हुये आतम हित के, महावीर नगर कॉलोनी में।।72।।

।। नवमाँ मुनिदीक्षा समारोह ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, चौदह तारीख दिसम्बर में।
नौवाँ मुनिदीक्षा दिवस मना, यहाँ दो हजार छह के सन् में।।
जिसमें कई नगरों के श्रावक, इस समारोह में आये थे।
उनने अंतरंग के भावों से, श्री मुनिवर के गुण गाये थे ।।73।।

क्रमवार हुए कई आयोजन, कोटा के प्रमुख मुहालो में।
धार्मिकता को चित्त में धरके, मुनिवर के पावन सान्निध्य में।।
कहीं सम्यग्ज्ञान शिविर लागा, कहीं भक्तामर मंडल विधान।
कहीं शिलान्यास नये मन्दिर का, कहीं प्रवचन होते हैं महान।।74।।

कहीं झण्डारोहण होता है, मन्दिर की ऊँची शिखरों पर।
कहीं शान्तिनाथ विधान हुए, मुनियों के सान्निध्य को पाकर।।
मुनिसंघ ने कोटा नगरी में, सात माह तक रह करके।
अध्यात्म सुधा नित बरसाया, भव्यों का हित चित में धरके।।75।।

।। कोटा नगरी से विहार ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, उन्नीस फरवरी के दिन में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे, दो सहस्र सात ईसा सन् में।।
जब भक्तजनों को पता चला, तब मन्दिर जी में आकर के।
रुकने की विनय करी गुरु से, नित अँखियों में आँसू भरके।।76।।

जिनने जीता है मोह कर्म, वह मोह फास में नहीं बँधते।
मोहीजन को वहीं छोड़ गुरु, आगे का रास्ता चित धरते।।
जगपुरा होयके मुनिराजा, नित आगे कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुकके, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।77।।

।। झालरापाटन में मुनिसंघ ।।

छब्बीस फरवरी में श्री गुरु, आ गये झालरापाटन में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हर्षाये अपने मन में।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेके गये सभी, श्री शान्तिनाथ जिनालय में।।78।।

यहाँ शान्तिनाथ की मूरत है, अतिशयकारी खड़गासन में।
अति सुन्दर और मनोहारी, बारह फुट की अवगाहन में।।
यहाँ दोनों महामुनिराजों ने, प्रभु शान्तिनाथ जिनराजा के।
अंतरंग से दर्शन कीने थे, त्रय पदधारी महाराजा के।।79।।

कुछ समय यहाँ देके गुरु ने, दोनो टायम जिन मन्दिर में।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, स्व-पर का हित धरके उर में।।
श्री भक्तामर मंडल विधान, फाल्गुन सुदी पूनम के दिन में।
अति ही आनंद से हुआ यहाँ, मुनिसंघ के पावन सान्निध्य में।।80।।

।। पिड़ावा में मुनिसंघ ।।

एक हफ्ता बाद श्री मुनिवर, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
इस राजस्थानी धरती को, पद कमलों से महकाते हैं।।
दो दिन के बाद श्री मुनिवर, आ गये हैं नगर पिड़ावा में।।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, हर्षाय रहे अपने उर में।।81।।

यहाँ जैन दिगम्बर श्वेताम्बर, अरु सोनगढ़ी भ्राताओं ने।
अंतरंग के श्रद्धा भावों से, अगवानी की संघ की सबने।।
एक हफ्ते तक मुनिराजा ने, अपनी पावन मृदुवाणी से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, बचने को नित नये पापों से।।82।।

जिनको सुनने शुभ भावों से, सब जैनी भाई मिल करके।
जिनमन्दिर में आया करते, आतम का हित चित में धरके।।
तब सोनगढ़ी बन्धु जनने, मुनिराजों को पड़गाहन कर।
प्रासुक आहार कराये थे, नवधा भक्ति चित में धरकर।।83।।

।। भवानी मंडी में मुनिसंघ ।।

यहाँ सभी मुमुक्षु मंडल ने, मुनिवर की पावन चर्या की।
अपने अंतरंग के भावों से, अति भूरि भूरि प्रशंसा की।।
मुनिराज पिड़ावा से चलके, आ गये भवानीमंडी में।
अति भव्य हुई थी अगवानी, यहाँ पर नगरी की सीमा में।।84।।

यहाँ वीर जयंती समारोह, गणमान्यों के अति आग्रह से।
अति धूमधाम से मनता है, आशीष पाकर मुनिराजा से।।
तब जैन दिगम्बर श्वेताम्बर, दोनों समुदायों ने मिलके।
एकता का परिचय दीना था, निज भावों में समता धरके।।85।।

।। रामगंजमंडी में मुनिसंघ ।।

इकतीस मार्च को आनंद से, रथयात्रा निकली नगरी में।
नगरी के प्रमुख मार्गों से, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।।
अप्रैल तीन को मुनि संघ ने, यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे।
रामगंज मंडी में आ करके, जिन मन्दिर में ठहराये थे।।86।।

यहाँ के भक्तों ने मुनिसंघ की, नगरी की सीमा पर जाकर।
ऐतिहासिक कीनी अगवानी, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
सीमा पर ही श्रावक जन ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, चंबल से प्रासुक जल लाके।।87।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेके गये सभी, नगरी के मुख्य जिनालय में।।
कलशारोहण का समारोह, श्री आदिनाथ जिनालय में।
अति धूमधाम के साथ हुआ, मुनिसंघ के पावन सान्निध्य में।।88।।

।। पंचकल्याणक रामगंजमंडी में ।।

उन्नीस अप्रैल के दिना यहाँ, दो सहस्र सात ईसा सन् में।
श्री सनतकुमार शास्त्री जी ने, छोटे मन्दिर के परिसर में।।
फिर दो मई से ही शुरू हुआ, उत्सव जिनबिम्ब प्रतिष्ठा का।
मुनिश्री के पावन सान्निध्य में, प्रभु आदिनाथ महाराजा का।।89।।

भैया निशान्त ब्रह्मचारी ने, ये समारोह इस नगरी में।
विधिपूर्वक ही करवाया था, गजरथ के फेरों के संग में।।
नौ मई को दोनों मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुकके, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।90।।

मई के महीने में मुनिराजा, तपती हुई गर्म हवाओं में।
नित ही आगे बढ़ते जाते, अपनी मंजिल धरके चित में।।
ऊपर से सूरज की गरमी, नीचे तप रही धरती भारी।
मुनिश्री ऐसे में विहार करे, इनमें साहस अतिशयकारी।।91।।

।। कोटा नगरी में मुनिराजा ।।

बारह मई को श्री मुनिराजा पधराये कोटा नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हर्षाये मन गगरी में।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेकर जाते हैं, यहाँ की सरस्वती कॉलोनी में ।।92।।

।। पंचकल्याणक कोटा में ।।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, प्रारंभ हुआ तेरह मई से।
इस सरस्वती कॉलोनी में, विधिपूर्वक ही अति आनंद से।।
पंडित प्रदीप जी शास्त्री ने, मुनिराजा के निर्देशन में।
यह समारोह करवाया था, कोटा नगरी के आँगन में।।93।।

।। ज्ञान ज्योति शिविर–रामपुरा कॉलोनी में ।।

अठरा मई से प्रारंभ हुआ, यहाँ रामपुरा कॉलोनी में।
श्री ज्ञान ज्योति महाशिविर, दस दिन का कोटा नगरी में।।
तब सिद्धसेन जी मुनिराजा, संघस्थ साधुओं के संग में।
इस आयोजन में पधराये, आतम का हित धरके चित में।।94।।

रिद्धि सिद्धि कॉलोनी अरु, महावीर नगर के मन्दिर में।
वेदी प्रतिष्ठा अरु शिलान्यास, मानस्तम्भ का गुरु सान्निध्य में।।
पंडित जितेन्द्र शास्त्री जी ने, विधिपूर्वक इस आयोजन को।
सम्पन्न यहाँ करवाया था, कर सिरोधार्य गुरु आज्ञा को।।95।।

अब संघ के संग में मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुकके, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।
बाराँ नगरी में आ करके, गुरुदेव सहर्ष रुक जाते हैं।
दूजे दिन नित चर्या करके, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।।96।।

श्री विमर्शसिन्धु संघ के संग में, नित आगे कदम बढ़ाते हैं।
एम.पी. की पावन धरती को, पद कमलों से महकाते हैं।।
सेसई तीरथ के पहले ही, गुरु भक्तों न इक बस्ती में।
चौका की सहर्ष व्यवस्था की, यहाँ गेस्ट हाउस के प्रांगण में।।97।।

।। चर्या में समझौता नहीं ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा को, कुछ त्रुटि वहाँ दिखलाने से।
उपवास वहाँ हो जाता है, अंतराय हृदय में लेने से।।
तब संघ के दोनों साधु भी, अपने समतामयी भावों से।
उपवास यहाँ कर लेते हैं, चौके की गलत व्यवस्था से।।98।।

यहाँ लोगों को विश्वास हुआ, श्री मुनिवर चर्या पालन में।
समझौता नहीं किया करते, सूक्ष्म सी कोई गलती में।।
सामायिक करके मुनिराजा, यहाँ से कदम बढ़ाते हैं।
सेसई तीरथ में आ करके, प्रभु दर्शन को रुक जाते हैं।।99।।

।। शिवपुरी में मुनिसंघ ।।

पच्चीस जुलाई को मुनिवर, बढ़ जाते सेसई तीरथ से।
शिवपुरी नगर में आय गये, भक्तों के संग अति आनंद से।।
सीमा पर खड़े हजारों जन, केशरिया ध्वज लेके कर में।
मुनिराजा की अगवानी को, अति हर्षाके अपने उर में।।100।।

नगरी के सबई श्रावकों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, सिन्धु से उज्ज्वल जल लाके।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेके आये सभी, श्री पारसनाथ जिनालय में।।101।।

।। 2007 का वर्षायोग शिवपुरी में ।।

उन्नीस जुलाई के दिन में, मुनिसंघ के यहाँ चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, दो सहस्र सात ईसा सन् का।।
उस ही दिन गुरु पूर्णिमा अरु, दूजे दिन वीरा शासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, अनुमति से श्री मुनिराजा की।।102।।

उन्नीस अगस्त को मुनिराजा, जाकर के जेल परिसर में।
प्रवचन देते कैदीजन को, उनके ही जीवन के हित में।।
वहाँ कैदी और कर्मियों ने, मुनिश्री की वाणी सुन करके।
खोटे करमों का त्याग किया, जीवन का हित चित में धरके।।103।।

।। विद्वत् संगोष्ठी ।।

यहाँ हुये अनेकों धर्म कार्य, जो हुए अन्य चऊमासों में।
अति धूमधाम के साथ सभी, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
बारह अक्टूबर के दिन से, त्रिदिवसी एक आयोजन में।
विद्वत् संगोष्ठी हुई यहाँ, मुनिराजा के निर्देशन में।।104।।

भारतभर से विद्वान् श्रेष्ठ, इस गोष्ठी में पधराये थे।
मुनिराजा के दर्शन करके, अन्तस में अति हरषाये थे।।
पुरुषारथ सिद्धि उपाय ग्रन्थ, जिस पर ही सब विद्वानों ने।
अपने अपने आलेख पढ़े, जो स्वयं लिखे थे उन सबने।।105।।

।। पूजन प्रशिक्षण शिविर ।।

तेईस अक्टूबर के दिन से, दस दिवसी एक आयोजन में।
पूजा प्रशिक्षण शिविर लगा, श्री मुनिवर के निर्देशन में।।
आचार्य पदारोहण उत्सव, श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा का।
सोलहवाँ यहाँ मनाया था, गुणानुवाद करके उनका।।106।।

।। वीर निर्वाण दिवस ।।

प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक वदी अमावस में।
अति धूमधाम से मना यहाँ, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
उस ही दिन दोनों ऋषियों ने, विधिपूर्वक ही चऊमासे का।
निष्ठापन कीना आनंद से, चित धरके अपनी आतम का।।107।।

अठरा तारीख नवम्बर से, श्री सिद्धचक्र मंडल विधान।
अति ही आनंद से हुआ यहाँ, सुख शान्ति का यह अनुष्ठान।।
श्री सनत विनोद पंडित जी ने, मुनिराजा के निर्देशन में।
विधिपूर्वक यहाँ कराया था, अष्टाह्निका के प्रिय पर्वों में।।108।।

।। कल्पद्रुम विधान सेसई में ।।

अब लघु विहार कर मुनिश्री, सेसई तीरथ में पधराये।
यहाँ तीरथ के दर्शन करके, अंतरंग में भारी हरषाये।।
श्री कल्पद्रुम मंडल विधान, सेसई तीरथ के प्रांगण में।
अति धूमधाम के साथ हुआ, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।।109।।

।। पुनः शिवपुरी में ।।

इस उत्सव के पश्चात् गुरु, शिवपुरी पुनः पधराये थे।
नगरी के सबई सुभक्तों के, मन पुनः यहाँ हरषाये थे।।
यहाँ सात नवम्बर के दिन से, आचार्य विरागसागर जी का।
उत्सव मनता है आनंद से, मुनिदीक्षा रजत जयंती का।।110।।

मुनिवर ने श्री गुरुराजा को, निज श्रद्धा भाव समर्पित कर।
गुणगान यहाँ पर कीना था, गुरुराजा का अति हर्षाकर।।
''मेरा प्रेम स्वीकार करो'' मुनिश्री की पावन रचना का।
स्वरूपचन्द्र श्रेष्ठीवर ने, लोकार्पण किया यहाँ उसका।।111।।

जिन बिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, अठरा तारीख जनवरी से।
श्री शान्तिनाथ जिनराजा का, यहाँ शुरू हुआ था आनंद से।।
श्री जय निशान्त ब्रह्मचारी ने, मुनिराजा के निर्देशन में।
विधिपूर्वक यहाँ कराया था, छत्री मन्दिर के परिसर में।।112।।

।। ग्वालियर में मुनिसंघ ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, बारह तारीख फरवरी में।
यहाँ से भी कदम बढ़ा दीने, दो सहस्र आठ ईसा सन् में।।
सोनागिरि के दर्शन करके, ग्वालियर में संघ पहुँच जाता।
यहाँ भक्तों का अगवानी कर, अंतरंग भी भारी हरषाता।।113।।

यहाँ पर वेदी की प्रतिष्ठा, फालका बाजार के मन्दिर में।
अति ही आनंद के साथ हुई, अन्तिम फरवरी महीने में।।
श्री चन्द्रप्रकाश शास्त्री जी ने, उत्साहित होकर भावों में।
विधिपूर्वक यहाँ करायी थी, ऋषिराजा के निर्देशन में।।114।।

ग्वालियर से चलके मुनिसंघ, आ गया मुरैना नगरी में।
यहाँ अगवानी करके श्रावक, अति हर्षाये मन गगरी में।।
श्री नंदीश्वर मंडल विधान, यहाँ हुआ बगीची मन्दिर में।
सुख शान्ति का यह अनुष्ठान, मुनिराजा के निर्देशन में।।115।।

।। महावीर जयंती मुरैना में ।।

महावीर जयंती समारोह, छोटे मन्दिर के परिसर में।
अति ही आनंद से मना यहाँ, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
प्रभु जी की पावन रथयात्रा, साहर्ष मुरैना नगरी में।
अति धूमधाम से निकली थी, मुनिराजा के निर्देशन में।।116।।

।। आगरा नगरी में मुनिसंघ ।।

मुनिराज धौलपुर से होके, अब आगे कदम बढ़ाते हैं।
यू.पी. की पावन धरती को, पद कमलों से महकाते हैं।।
चौथे दिन महा मुनिराजा, आ गये आगरा नगरी में।
यहाँ खड़े हजारों नरनारी, श्री मुनिवर की अगवानी में।।117।।

।। श्रुतपंचमी समारोह आगरा में ।।

यहाँ श्रुत पाँचे का समारोह, छीपीटोला जिनमन्दिर में।
भक्तों ने सहर्ष मनाया था, जिनवाणी को धरके चित में।।
नगरी के प्रमुख मन्दिरों में, मुनिराजा के दर्शन करके।
मथुरा की ओर गमन कीना, ईर्यापथ को चित में धरके।।118।।

।। श्री सिद्धक्षेत्र चौरासी में ।।

मथुरा नगरी की सीमा पर, गुरु भक्तों ने मुनिराजा की।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, अति आनंद से अगवानी की।।
जम्बू स्वामी का मुक्ति स्थल, चौरासी मथुरा नगरी में।
यहाँ दर्शन करके मुनिसंघ, अति हर्षाया मन गगरी में।।119।।

श्री विमर्शसिन्धु जी मुनिराजा, संघस्थ साधुओं के संग में।
तब तीन दिना रहे भावों से, जम्बू स्वामी के चरणों में।।
ये दसवाँ कलश हुआ पूरा, श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ का।
चौंतीस वर्षों की उम्मर का, बारह वर्षों के संयम का।।120।।

।। इति दशवाँ कलश ।।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

ग्यारहवाँ कलश

।। मंगलाचरण ।।

दो लाख जैन प्रतिमाओं की, इस पंचम युग में भी जिनने।
इक साथ प्रतिष्ठा करवाई, शुभ भाव बना करके अपने।।
उन सभी पूज्य प्रतिमाओं को, भारत के मुख्य जिनालयों में।
अपने खरचा से भिजवाई, शहरों ग्रामों अरु नगरों में।।1।।

वह जीवराज श्री श्रेष्ठीवर, प्रिय पापड़ीवाल कहाते हैं।
उनके पावन श्री चरणों में, हम सादर शीष झुकाते हैं।।
संवत् पन्द्रह सौ पैंतालीस, विक्रम का समय सुहितकारी।
तब ही जयपुर की नगरी में, यह बिम्ब प्रतिष्ठा हुई न्यारी।।2।।

अब परम शारदा माता के, चरणों में शीष झुकाते हैं।
यह उत्तम कार्य बनाने को, हृदय में सहर्ष सजाते हैं।।
यहाँ उनको शीष झुकाते हैं, जो इसी काव्य के हैं नायक।
श्री समंतभद्र सम श्रद्धालु, अरु भूतबली से हैं ज्ञायक।।3।।

यहाँ सभी भटकते जीवों को, जो सम्यक् पथ बतलाते हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिराजा हैं, जो स्वयं उसे अपनाते हैं।।
ऐसे श्री गुरु के गुण अनेक, जो स्व-पर को हितकारी हैं।
सब लिखने का सामर्थ्य नहीं, बुद्धि कमजोर हमारी है।।4।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, जीवन चारित्र है बेमिसाल।
इसको हृदय में धरने से, कट जाते हैं अब आल जाल।।
श्री विमर्शसिन्धु जी महामुनि, जिन आगम के उत्तम ज्ञाता।
इनकी लख श्रेष्ठ साधना को, यहाँ संहनन भी शरमा जाता।।5।।

यह भावलिंगी मुनिराजा हैं, चौथे युग जैसा तप विशाल।
नहीं डिगा सका इनके तप को, पंचमयुग का विकराल काल।।
मुनिराजा के गुण लिखने को, नहीं बनी कोई कागज स्याही।
गुण हैं अनेक इनके अन्दर, लिखने में है बस कोताही।।6।।

अब आगे कथा बढ़ाते हैं, श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ की।
अध्यात्म के गुण ज्ञाता की, वात्सल्य के श्रेष्ठ समुन्दर की।।
जप तप के उत्तम साधक की, संयम पथ के संचालक की।
वैभव से बेभव बनने की, सर्वोदयी संत कथानक की।।7।।

।। फिरोजाबाद में मुनिसंघ ।।

श्री विमर्शसिन्धु संघ के संग में, मथुरा चौरासी तीरथ से।
निज आगे कदम बढ़ाते हैं, अपने समतामयी भावों से।।
कुछ ही दिन बाद मुनिराजा, फिरोजाबाद नगर आये।
यहाँ के श्रावक अगवानी का, निज भावों में अति हरषाये।।8।।

यहाँ यमुना के पावन जल से, भक्तों ने श्री मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, अंतरंग में भारी हरषाके।।
यहाँ मन्दिर सेठ छदामी का, मुनिराजा को उस मन्दिर में।
तब संघ सहित ठहराया था, मन्दिर के पास वसतिका में।।9।।

श्री भक्तामर मंडल विधान, नगरी के इसी जिनालय में।
अति धूमधाम से हुआ तभी, मुनिराजा के निर्देशन में।।
त्रय दिन के बाद मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
आकर के नगर आगरा में, सीमा पर ही रुक जाते हैं।।10।।

यहाँ खड़े हजारों नरनारी, झण्डा बैनर लेके कर में।
श्री मुनिसंघ की अगवानी को, एक आनंद यात्रा के संग में।।
यहाँ नगरी के गणमान्यों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, यमुना से निर्मल जल लाके।।11।।

।। 2008 वर्षायोग आगरा में ।।

तब मुनिसंघ के चौमासे का, चौदह तारीख जुलाई में।
कलशा होता है स्थापित, छीपीटोला जिनमन्दिर में।।
दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीरा शासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, निर्देशन में मुनिराजों की।।12।।

श्वेताम्बर साधु कमल मुनि, इस समारोह में आये थे।
मुनिश्री की चरण वन्दना कर, अन्तस में अति हरषाये थे।।
निर्मल सदन बना सुन्दर, जहाँ सभी कार्य चऊमासे के।
हो रहे बहुत ही आनंद से, सान्निध्य में महा मुनिराजों के।।13।।

।। भक्तामर शिक्षण शिविर ।।

भक्तामर शिक्षण शिविर लगा, यहाँ बीस जुलाई के दिन से।
हर रोज हजारों शिविरार्थी, आते थे जिसमें आनंद से।।
दो अक्टूबर से दस दिन का, श्री निर्मल सदन परिसर में।
पूजा प्रशिक्षण शिविर लगा, मुनिराजा के निर्देशन में।।14।।

श्री महावीराष्टक की क्लास, छीपीटोला जिनमन्दिर में।
दस दिन लागी श्रावक जन की, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
प्रभुवीरा का निर्वाण दिवस, अट्ठाईस अक्टूबर के दिन में।
वहाँ मना रहे सारे श्रावक, अति हर्षा के अपने मन में।।15।।

।। ग्यारहवाँ मुनिदीक्षा दिवस आगरा में ।।

उस ही दिन दोनों ऋषियों ने, विधिपूर्वक यहाँ चौमासे का।
निष्ठापन किया सहर्ष मन से, दो सहस्र आठ ईसा सन् का।।
ग्यारहवाँ मुनि दीक्षा उत्सव, मुनिश्री का नगर आगरा में।
अति धूमधाम के साथ मना, चौदह तारीख दिसम्बर में।।16।।

अब आस पास के नगरों से, कई भक्त यहाँ मुनिराजा के।
इस समारोह में आये थे, यहाँ सुमन चढ़ाने श्रद्धा के।।
कोटा नगरी से एक सहस्र, गुरु भक्त इसी आयोजन में।
श्रद्धा के सुमन चढ़ाने को, पधराये थे गुरु चरणों में।।17।।

।। पिच्छिका परिवर्तन समारोह ।।

इस ही दिन पिच्छि परिवर्तन, मुनिराजों ने अति आनन्द से।
सत्यार्थ अहिंसा चित धरके, कीना था अंतरंग भावों से।।
इक्कीस दिसम्बर के दिन से, श्री जैन भवन के प्रांगण में।
श्री शीतकालीन वाचना भी, प्रारंभ हुई स्व-पर हित में ।।18।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा जी, संघस्थ साधुओं के संग में।
चऊमासे के पश्चात् रहे, त्रयमाह आगरा नगरी में।।
फरवरी माह हो गया पूर्ण, यहाँ भक्तजनों की भक्ति में।
हो गई धर्ममय यह नगरी, मुनिराजा की गुण शक्ति में।।19।।

।। पंचकल्याणक आगरा में ।।

यहाँ एक मार्च से शुरू हुआ, उत्सव जिनबिम्ब प्रतिष्ठा का।
अति ही आनंद के साथ यहाँ, प्रभु आदिनाथ जिनराजा का।।
श्री जयनिशान्त ब्रह्मचारी ने, श्री मुनिवर के निर्देशन में।
यह समारोह करवाया था, विधिपूर्वक ही इस नगरी में।।20।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा की, प्रभावना से श्रावक जन का।
दिल सराबोर हो गया यहाँ, चारित्र लख के मुनिराजा का।।
इस नगरी की कई बहिनों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा से।
अब मोक्षमार्ग पर चलने का, आशीष लिया था अन्तस से।।21।।

।। आगरा से विहार ।।

इक्कीस मार्च को मुनिवर ने, यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे।
तब यहाँ हजारों भक्तों की, अँखियों में जल भर आये थे।।
गुरुदेव आगरा से चलके, आ गये बटेश्वर तीरथ में।
श्री अजितनाथ के दर्शन कर, अति हरषाये अपने उर में।।22।।

।। एटा नगरी में मुनिसंघ ।।

मुनिराज बटेश्वर से आगे, अब अपने कदम बढ़ाते हैं।
एटा नगरी की धरती को, पद कमलों से महकाते हैं।।
नगरी के सबई श्रावकों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा की।
जाकर नगरी की सीमा पर, अति हरषाके अगवानी की।।23।।

।। महावीर जयंती एटा में ।।

महावीर जयंती समारोह, एटा नगरी के आँगन में।
अति ही आनंद के साथ मना, मुनिराजा के निर्देशन में।।
तब आस पास के नगरों से, इस वीर जयंती उत्सव में।
मुनियों के पावन दर्शन को, श्रावकजन आये हजारों में।।24।।

मन्दिर परिसर में लोगों ने, सुन्दर पाँडाल बना करके।
प्रभुवीरा का अभिषेक किया, श्रद्धा के भाव हृदय धरके।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, अपनी कोयल सम वाणी से।
यह जीवन है पानी की बूँद, ये भजन सुनाया आनंद से।।25।।

मुनिराजा गाते रहे इसे, अपने अंतरंग के भावों से।
जनता भी सुनती रही वहाँ, साँसों को थाम सही दिल से।।
होते ही पूर्ण भजन जनता, यहाँ धन्य-धन्य के नारों से।
धरती आकाश हिलाती है, श्री मुनिवर के जयकारों से।।26।।

।। महावीर जी में मुनिसंघ ।।

इक्कीस दिना तक श्री गुरु ने, एटा नगरी के आँगन में।
धर्मामृत नित बरसाया था, स्व-पर के आतम के हित में।।
अब संघ सहित मुनिराज श्री, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों से होकर, चाँदनपुर में आ जाते हैं ।।27।।

यहाँ सुनयमति माता जी ने, जनता के संग मुनिराजा की।
श्री महावीर जी तीरथ पर, शुभ भावों से अगवानी की।।
अगवानी के पश्चात् यहाँ, दोनों संघों में अंतरंग से।
हुई पावन कुशल समाचारी, रत्नत्रय की अति आनंद से।।28।।

सारे जग की अनमोल कृति, रत्नों की प्रतिमा मन्दिर में।
जिनके दर्शन कर संत सभी, अति हर्षाये अपने उर में।।
प्रभुवीरा के दर्शन कीने, दोनों संघों ने सहर्ष साथ।
फिर चर्या हुई आहारों की, तीरथ प्रांगण में एक साथ।।29।।

।। मुनिवर महावीर जी में ।।

श्री सुनयमति माता जी यहाँ, अति ही विशुद्ध चर्या लखके।
अन्तस में अति हरषातीं हैं, ऐसे मुनि को चित में धरके।।
यहाँ एटा नगरी के श्रावक, मुनिराजा के ढिंग आये थे।
चरणों में शीष झुका उनने, अपने मंतव्य बताये थे।।30।।

।। एटा वाले विनती कर रहे चौमासे की ।।

हे स्वामी हमरी नगरी में, चलके चऊमासा करने की।
स्वीकृति दीजे कृपा करके, यह विनती है हम लोगों की।।
गुजरात प्रान्त में जा करके, आज्ञा लाओ श्री गुरुवर से।
निज नगरी में चऊमासे की, ऐसा मुनिश्री कहते उनसे।।31।।

श्री मुनिवर से पत्री लेकर, मुनि भक्त सभी तब एटा के।
श्री गुरु के ढिग गुजरात गये, आज्ञा लेने अति हरषाके।।
वहाँ जाकर के गुरुराजा से, श्रावक तब एटा नगरी के।
चिट्ठी देकर विनती करते, चऊमासे की मुनिराजा के।।32।।

श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने, भव्यों के भावों को लखकर।
मुनिराजा के चऊमासे की, स्वीकृति दे दी अति हर्षाकर।।
एटा नगरी के श्रावक जन, चऊमासे की चिट्ठी लेकर।
मुनिश्री के ढिग आ जाते हैं, गुरुराजा की स्वीकृति लेकर ।। 33।।

।। चऊमासे की स्वीकृति एटा को ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, गुरुराजा की चिट्टी पाकर।
स्वीकृति दे दी चऊमासे की, एटा वालों को मुस्काकर।।
तब भक्तों के संग मुनिश्री ने, अपने संघ को लेकर संग में।
एटा की तरफ विहार किया, ईर्यापथ को धरके चित में।।34।।

।। एटा नगरी में मुनिसंघ ।।

मुनिराज श्री संघ के संग में, नित आगे कदम बढ़ाते हैं।
कुछ ग्रामों नगरों में रुक के, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।
मुनिसंघ सहर्ष आ जाता है, एटा नगरी के आँगन में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हर्षाये अपने मन में ।।35।।

सीमा पर जाकर भक्त सभी, श्री विमर्शसिन्धु महाराजा के।
चरणों का करते प्रक्षालन, यमुना से पावन जल लाके।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
नगरी में प्रवेश कराते हैं, तब तीन जुलाई के दिन में।।36।।

यह शोभा यात्रा का जुलूस, मुनिराजों को लेकर संग में।
आ गया नगर के भीतर ही, श्री पारसनाथ जिनालय में।।
मारग में सबई श्रावकों ने, अपने घर के दरवाजों पर।
गुरु चरणों का प्रक्षाल किया, घृत के दीपों से आरती कर।।37।।

उस दिन भक्तों ने नगरी को, दुल्हन की तरह सजाया था।
कई स्वागत द्वार बना उनपे, केशरिया ध्वज लहराया था।।
श्री मुनिवर की अगवानी में शासन के और प्रशासन के।
अफसर अधिकारी आये थे, जनता के संग अति हर्षाके।।38।।

।। 2009 का वर्षायोग एटा में ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, अपनी पावन मृदुवाणी से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, मन्दिर प्रांगण में आनंद से।।
फिर षाढ़ सुदी चौदस के दिन, मुनिराजा के चऊमासे का।
कलशा स्थापित हुआ यहाँ, तब दो हजार नौ के सन् का।।39।।

तब आस पास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
गुरुभक्त हजारों में आये, गुरु वाणी चित्त में धरने को।।
दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीरा शासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, वाणी सुनकर मुनिराजा की।।40।।

यहाँ हुए अनेकों धर्मकार्य, इस नगरी के चऊमासे में।
अति धूमधाम के साथ सभी, मुनियों के पावन सान्निध्य में।।
यहाँ दोनों टायम रोजाना, प्रवचन होते भक्तामर के।
हर रविवार को होते हैं, प्रवचन विशेष अध्यातम के।।41।।

इस चऊमासे की उपलब्धि, यहाँ लगा शिविर बालकों का।
जिसमें सिखलाया गया उन्हें, करना सम्मान बुजुर्गों का।।
प्रभुवीरा का निर्वाण दिवस, निष्ठापन भी चऊमासे का।
पिच्छि परिवर्तन के संग में, जन्मोत्सव श्री मुनिराजा का।।42।।

है नियर फफोतु ग्राम यहाँ, जन्म स्थली सन्मति सागर जी।
वह गुरुवर के गुरुराजा हैं, तब करी वन्दना भी वहाँ की।।
रथ यात्रा वहाँ निकलती थी, छै अक्टूबर के पावन दिन में।
अति धूमधाम के साथ वहाँ, ऋषियों के पावन सान्निध्य में।।43।।

मुनि दीक्षा दिवस मना गुरु का, चौदह तारीख दिसम्बर में।
प्रवचन भी हुए मुनिश्री के, एटा के जेल परिसर में।।
तब यहाँ के मुख्य जिनालयों में, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
श्रावक जन के अति आग्रह से, प्रवचन हुए धर्मामृत के।।44।।

।। श्री सिद्धचक्र विधान एटा में ।।

चऊमासे के पश्चात् यहाँ, श्री सिद्धचक्र मंडल विधान।
अति धूमधाम के साथ हुआ, सुख शान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।
श्री वर्धमान जी सौंरया ने, मुनिराजा के निर्देशन में।
विधिपूर्वक यहाँ कराया था, अक्टूबर और नवम्बर में।।45।।

चऊमासे में जो कार्य हुए, श्री गुरुवर के निर्देशन में।
उनकी चर्चा हो रही सहर्ष, एटा नगरी के हर घर में।।
ग्यारह तारीख नवम्बर में, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का।
एटा नगरी से विहार हुआ, कम्पिल तीरथ को जाने का।।46।।

।। कम्पिल तीर्थ में मुनिसंघ ।।

मुनिराजा जी आ गये सहर्ष, चौदह तारीख नवम्बर में।
भक्तों के साथ गमन करके, कम्पिल तीरथ के आँगन में।।
दो दिना यहाँ रहके मुनिश्री, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
भक्तों सन्तों के साथ सहर्ष, एटा में फिर पधराते हैं।।47।।

यहाँ शीतकालीन वाचना भी, गणमान्यों के अति आग्रह से।
दो महीने की हो गई शुरू, मुनिराजा के पावन मुख से।।
रयणसार का महाग्रन्थ, है कुन्दकुन्द मुनिनाथा का।
वाचन हो रहा गुरुमुख से, स्व–पर की आतम के हित का।।48।।

।। पंच कल्याणक एटा में ।।

छठवीं फरवरी के दिन से, यहाँ दो हजार दस के सन् में।
जिनबिम्ब प्रतिष्ठा शुरू हुई, एटा नगरी के आँगन में।।
श्री जय निशान्त ब्रह्मचारी ने, मुनिराजा के निर्देशन में।
यह समारोह करवाया था, सारी विधियाँ धरके चित में।।49।।

कई बहिनों ने शुभ भावों से, दीक्षा कल्यणक के दिन में।
आजीवन व्रत ले लिया यहाँ, मुनिराजा से आतम हित में।।
यह बिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, श्री आदिनाथ महाराजा का।
अति आनंद से सम्पन्न हुआ, त्रय लोकों के सरताजा का।।50।।

।। एटा से विहार मुनिसंघ का ।।

फरवरी अठारह में मुनिश्री, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
मारग के ग्रामों नगरों में, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।
जयपुर की ओर मुनिराजा, नित कदम बढ़ाते जाते हैं।
अब राजस्थानी अंचल को, पद कमलों से महकाते हैं।।51।।

।। आचार्य भरतसागर जी से मिलन ।।

तेरह मारच को मुनिराजा, जयपुर नगरी में आये थे।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अन्तस में अति हरषाये थे।।
वात्सल्य मिलन यहाँ होता है, आचार्य भरत सागर जी से।
रत्नत्रय की हुई समाचारी, दोनों संघों में अंतरंग से ।।52।।

यहाँ वीर जयंती समारोह, सत्ताईस मारच के दिन में।
अति ही आनंद के साथ हुआ, दोनों ऋषियों के सान्निध्य में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, जयपुर के मुख्य जिनालयों में।
दर्शन कीने अति आनंद से, संघस्थ साधुओं के संग में।।53।।

।। सांगानेर क्षेत्र में मुनिसंघ ।।

अब तीस मार्च को मुनिराजा, श्री सांगानेर पहुँच जाते।
प्रभु आदिनाथ के दर्शन कर, अंतरंग में भारी हरषाते।।
यहाँ सात जिनालय हैं विशाल, तिनके दर्शन वन्दन करके।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, ईर्यापथ को चित में धरके ।।54।।

।। ऐलाचार्य नवीन सागर से मिलन ।।

मुनिसंघ सहर्ष ही आया था, यहाँ रेनवाल की नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हरषाये मन गगरी में।।
श्री नवीनसिन्धु मुनिनाथा से, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का।
वात्सल्य मिलन यहाँ होता है, दोनों संघों के ऋषियों का।।55।।

सामायिक करके मुनिसंघ, यहाँ से भी कदम बढ़ाता है।
कुछ ग्रामों नगरों में रुकके, जिनधर्म ध्वजा फहराता है।।
फागी होकर के मुनिराजा, अब मालपुरा में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।56।।

।। दो मुनि संघों से मिलन ।।

श्री इन्द्रनंदी मुनि के संघ से, होता है मिलन सुहितकारी।
रत्नत्रय की हुई क्षेम कुशल, ऋषियों में सहर्ष समाचारी।।
अप्रैल मार्च को नगरी में, कंचनसागर मुनिराजा से।
वात्सल्यमयी हो गया मिलन, दोनों संघों का अंतरंग से।।57।।

।। आचार्य बाहुबलीसागर जी से मिलन ।।

अप्रैल सात को मुनिसंघ, यहाँ से भी कदम बढ़ाता है।
शाम समय एक नगरी के, जिनमन्दिर में रुक जाता है।।
होते ही सुबह मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
मारग में बाहुबलीसागर, संघ के संग में मिल जाते हैं।।58।।

दोनों संघों का मिलन हुआ, यहाँ भावों से अतिशयकारी।
रत्नत्रय की चरचा हुई थी, ऋषियों में अति आनंदकारी।।
आचार्य प्रवर के आग्रह से, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा के।
आहार हुए थे साथ सहर्ष, मारग में ही अति हरषाके।।59।।

।। भीलवाड़ा में मुनिसंघ ।।

दूजे दिन सुबह मुनिराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुकके, अध्यात्म सुधा बरसाते हैं।।
अप्रैल बाईस में मुनिराजा, भीलवाड़ा में पधराते हैं।
यहाँ अगवानी करके श्रावक, निज भावों में हरषाते हैं।।60।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेके गये सभी, श्री सुभाषनगर के मन्दिर में।।
चालीस दिना रहके गुरु ने, वस्त्रों की उत्तम नगरी में।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, आतम का हित धरके चित में।।61।।

प्रातः छह पर नित होता था, स्वाध्याय यहाँ सबके संग में।
अरु आठ बजे प्रवचन होते, सम्यग्दर्शन पर मन्दिर में।।
दोपहर समय में रोजाना, श्री समयसार की गाथा पर।
कक्षा भी सहर्ष लगा करती, आतम का हित चित में धरकर।।62।।

ग्यारह मई के ही दिना यहाँ, श्री सुपार्श्वमति के आश्रम में।
अक्षय तृतीया का पर्व मना, मुनिराजा के निर्देशन में।।
अब एक जून तक सन्तों ने, श्री हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में।
गर्मी का काल व्यतीत किया, रम करके अपनी आतम में।।63।।

।। चितौड़गढ़ में मुनिसंघ ।।

दो जून सुबह मुनिराजा ने, यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे ।
चित्तौड़नगर में आकर के, जिनमन्दिर में ठहराये थे।।
श्रीविरागसिन्धु गुरुराजा का, तब उदयपुर की नगरी से।
मिलने का आया समाचार, मुनिराजों को कुछ सूत्रों से।।64।।

।। उदयपुर में मुनिराजा ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, यहाँ अन्तराय भी आने पर।
कर दिया विहार दोपहरी में, गुरुराजा की आज्ञा सुनकर।।
तेरह जून को मुनिराजा, संघस्थ साधुओं के संग में।
श्री गुरुराजा के दर्शन को, आ गये उदयपुर नगरी में।।65।।

यहाँ भक्तों के संग गुरुभ्राता, श्रीविमर्शसिन्धु मुनिराजा की।
अंतस से करते अगवानी, सीमा पर जाकर नगरी की।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को सब लेके आये, श्री आदिनाथ जिनालय में।।66।।

।। गुरु शिष्य का वात्सल्य मिलन ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, श्री गुरु के पावन चरणों में।
सादरमय शीष झुकाया था, अति हर्षाके अपने उर में ।।
गुरुराजा ने अपने शिष्य को, चरणों से सहर्ष उठा करके।
अपने सीने में छिपा लिया, वात्सल्य की गागर छलका के।।67।।

।। बहिनों का भाग्योदय ।।

कुछ समय पूर्व ही कोटा में, दो बहिनों ने श्री मुनिवर से।
संग रहने की स्वीकृति माँगी, आतम हित के शुभ भावों से।।
जब मुनिश्री ने इन्कार किया, तो बहिनें कहती हैं गुरु से।
आतम हित का आशीष सदा, देना चाहिये हमको चित से।।68।।

तब मुनिश्री ने समझाया था, श्री मूलसंघ में रहने का।
आशीष आप सबको मेरा, कल्याण वहीं पर करने का।।
आजन्म यहाँ कई बहिनों ने, श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा से।
ब्रह्मचर्य महाव्रत लीना था, आतमहित के निज भावों से।।69।।

मुनिराजा से आचार्य प्रवर, कहते हैं यहाँ उदयपुर में।
बहिनों की ड्रेस बदलवाना, होता अति आतम के हित में।।
अपन तो केवल निमित्त मात्र, कल्याण स्वयं सब करते हैं।
अपनी चर्या को लख करके, वह जन सब आगे बढ़ते हैं।।70।।

।। दिगम्बरी दीक्षायें ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, श्री गुरुवर की आज्ञा सुनके।
संघ में रहने की आज्ञा दी, बहिनों की ड्रेस बदलवाके।।
आचार्य प्रवर के द्वारा ही, तब उदयपुर की नगरी में।
छब्बीस दिगम्बर दीक्षायें, होती हैं आतम के हित में।।71।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, दीक्षाओं के आयोजन में।
संचालन कीना माईक पर, अति हर्षाके अपने मन में।।
तारीख आठ जुलाई में, आचार्य प्रवर की अनुमति से।
तब विहार किया मुनिराजा ने, इस उदयपुर की नगरी से।।72।।

।। डूँगरपुर में मुनिसंघ ।।

श्री गुरु शिष्य के दोनों संघ, कुछ दूरी तक संग जाते हैं।
लोहारिया को आचार्य प्रवर, यह डूँगरपुर को जाते हैं।।
श्री विमर्शसिन्धु जी संघ सहित, अठरा तारीख जुलाई में।
केशरिया जी के दर्शन कर, आ गये सहर्ष डूँगरपुर में।।73।।

नगरी के सबई श्रावकों ने, मुनिसंघ की सीमा पर जाके।
अगवानी कीनी अतिभव्य, अंतरंग में भारी हरषाके।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
मुनिसंघ को लेके गये सभी, श्री पारसनाथ जिनालय में।।74।।

।। 2010 वर्षायोग डूँगरपुर में ।।

अब षाढ़ सुदी चौदस के दिन, मुनिराजों के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, यहाँ दो हजार दस के सन् का।।
तब आस पास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
श्रावक जन आये हजारों में, मुनि मूरत चित में धरने को।।75।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा संग, त्रय क्षुल्लक है चऊमासे में।
हैं पाँच दीदियाँ साथ यहाँ, दो ब्रह्मचारी रहते संग में।।
श्री विश्वबन्धु क्षुल्लक जी अरु, क्षुल्लक श्री विश्वयोग सागर।
श्री अतुल्यसिन्धु क्षुल्लक संघ में, छलका रहे संयम की गागर।।76।।

।। भक्तामर शिक्षण शिविर ।।

दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीरा शासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, सत् ज्योति जला अहिंसा की।।
अट्ठाईस जुलाई के दिन से, महावीर नगर चैत्यालय में।
भक्तामर शिक्षण शिविर लगा, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।।77।।

श्री लक्ष्मीलाल भूखिया ने, इस महाशिविर के कलशा का।
स्थापन सहर्ष कराया था, करके उपयोग लक्ष्मी का।।
यहाँ रोजाना गुरु के मुख से, श्लोक एक का ही प्रवचन।
विस्तार सहित ही होवत है, भक्तामर गाथा पर मंथन।।78।।

इस नगरी के सारे श्रावक, तल्लीन होयकर आनंद से।
मुनिवर की पावन वाणी का, रसपान करत हैं भावों से।।
यहाँ हुए अनेकों धर्मकार्य, जो हुए अन्य चऊमासों में।
अति धूमधाम के साथ सभी, मुनिसंघ के पावन सान्निध्य में।।79।।

।। रक्षाबन्धन का श्रेष्ठ पर्व ।।

पन्द्रह अगस्त को मुनिश्री ने, आजादी को चित में धरकर।
अध्यातम के प्रवचन कीने, पावन राष्ट्रीय विचारों पर।।
रक्षाबन्धन का महापर्व, श्रावण सुदी पूनम के दिन में।
सब मिलके यहाँ मनाते हैं, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।।80।।

रक्षाबंधन की श्रेष्ठ कथा, मुनियों पर अत्याचारों की।
मुनिवर ने यहाँ सुनाई थी, बली के पापात्म विचारों की।।
यह कथा सबई श्रोताओं ने, सुन करके अन्तस भावों से।
अँखियों से जल बरसाया था, आहत होकर भारी मन से।।8।।

।। दसलक्षण महापर्व ।।

डूँगरपुर के श्रावकजन ने, तेरह तारीख सितम्बर से।
दसलक्षण पर्व मनाया था, दस दिन तक समता भावों से।।
दस धर्मों को श्री मुनिवर ने, अपनी अमृतमयी वाणी से।
विस्तार सहित समझाया था, सुख दुख दोनों ही माध्यम से।।82।।

यहाँ क्षमावाणी का आयोजन, चौबीस सितम्बर के दिन में।
तब हुआ बहुत ही आनंद से, मुनिश्री के पावन सान्निध्य में।।
मुनिराजा की वाणी सुनके, नगरी के सबई श्रावकों ने।
वरषों के बैर भुला करके, यहाँ क्षमा याचना की सबने।।83।।

पूजा प्रशिक्षण शिविर लगा, उनतीस सितम्बर के दिन से।
मुनिराजा के निर्देशन में, गणमान्यों के अति आग्रह से।।
श्री लक्ष्मीलाल भूखिया ने, चऊमासे के सब कार्यों में।
निज लक्ष्मी का उपयोग किया, अति हर्षाके अपने उर में।।84।।

पिच्छि परिवर्तन समारोह, चौदह तारीख नवम्बर में।
अति ही आनंद के साथ हुआ, इस ही नगरी के परिसर में।।
श्री लक्ष्मीलाल भूखिया को, जूनी पिच्छि श्री मुनिवर की।
पा जाने का सौभाग्य मिला, यह उपलब्धि चऊमासे की।।85।।

।। डूँगरपुर से विहार ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा का, जन्मोत्सव भी इस नगरी में।
नहीं मना पाये थे भक्त यहाँ, पन्द्रह तारीख नवम्बर में।।
क्योंकि गुरुवर की आज्ञा से, चौदह तारीख नवम्बर में।
कर दिया बिहार लोहारिया को, अति हर्षाके अपने उर में।।86।।

।। गुरु शिष्य का पावन मिलन ।।

गुरु भ्राताओं ने गुरु के संग, सीमा पर नगर लोहारिया की।
भारी जनता के साथ सहर्ष, मुनिराजा की अगवानी की।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, श्री गुरु के पावन चरणों में।
यहाँ शीष झुकाया था अपना, भूसात होयकर अंतस में।।87।।

।। गुरुता में भव्यता ।।

अपने शिष्य को गुरुराजा ने, हाथों से सहर्ष उठा करके।
निजवक्ष स्थल में छिपा लिया, समता की गागर छलका के।।
यह मिलन दृश्य लख भक्तों की, पावन तम दोनों अँखियों में।
खुशियों के जल भर आये थे, वात्सल्यता लख गुरुराजों में।।88।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
संतों का नगर प्रवेश हुआ, उत्तम अनुभूति के संग में।।
यहाँ बिम्ब प्रतिष्ठा का उत्सव, था गुरुराजा के सान्निध्य में।
बाँसवाड़ा के गणमान्य यहाँ, आये थे इस आयोजन में।।89।।

।। स्वीकृति समारोह की बाँसवाड़ा को ।।

उनने अन्तस से विनती की, श्री गुरु के पावन चरणों में।
आचार्य प्रतिष्ठा समारोह, हो नाथ हमारी नगरी में।।
श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने, भव्यों के भावों को लखकर।
स्वीकृति दे दी उन भक्तों को, आयोजन की अति हर्षाकर।।90।।

आचार्य प्रभु सौ शिष्यों संग, यहाँ से भी कदम बढ़ा करके।
बाँसवाड़ा नगर पधारे थे ईर्यापथ को चित में धरके।।
बाँसवाड़ा के गुरु भक्त सभी, आचार्य प्रवर के श्री संघ का।
आनंद से विहार कराते हैं, लोहारिया से बाँसवाड़ा का।।91।।

।। बाँसवाड़ा में आचार्य संघ ।।

बाँसवाड़ा की सारी समाज, नगरी की सीमा पर जाकर।
अगवानी करती हैं संघ की, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
यहाँ नगरी के गणमान्यों ने, प्रभु गणाचार्य महाराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, गाँधी सागर से जल लाके।।92।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुसंघ को प्रवेश कराते हैं, यहाँ बाहुबली जिनालय में।।
श्री विनम्रसिन्धु मुनिराजा भी, तारीख आठ दिसम्बर में।
निज संघ के साथ पधारे थे, बाँसवाड़ा की प्रिय नगरी में।।93।।

श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा का, नवमीं तारीख दिसम्बर में।
अट्ठाईसवाँ मुनिदीक्षा दिन, साहर्ष मना इस नगरी में।।
आचार्य प्रवर के शिष्यन् ने, गुरुराजा के गुण गा करके।
विनयांजलि दीनी अंतस से, निज भावों में श्रद्धा धरके।।94।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा अरु, श्री विनम्र सिन्धु मुनिराजा को।
आचार्य महापद देंगे गुरु, इन दोनों मुनि महाराजों को।।
यह समारोह होगा यहाँ पर, बारह तारीख दिसम्बर में।
इस राजस्थानी धरती पर, सन् दो हजार दस ईसा में।।95।।

अपने ही गुरु महाराजा से, इन दोनों मुनि महाराजों को।
आचार्य महापद मिलना है, इनकी लखके गुणवत्ता को।।
श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा जी, अपने इन दोनों शिष्यों को।
निज संघ सहित यहाँ आये हैं, आचार्य महापद देने को।।96।।

।। आचार्य पद पानेवाला पात्र कैसा हो ।।

आचारज पद पानेवाला, कैसा हो गुण में महामना।
उसका वर्णन यहाँ करते हैं, यह पूर्वाचार्यों का कहना।।
हो प्रज्ञावान परम ज्ञाता, आगम शास्त्रों का जानकार।
व्यवहार लोक से परिचित हो, अंतरंग भावों में निर्विकार।।97।।

निज पूजा और प्रतिष्ठा से, जो रहित यहाँ हो अंतरंग से।
उत्तेजित जो नहीं होते हैं, अत्यंत कठिनतम प्रश्नों से।।
जो प्रश्नों के पहले उत्तर, तैयार सदा चित में रखते।
अति ऊटपटांग प्रश्नों को भी, जो जनता के सहते रहते।।98।।

परनिंदा के यहाँ कोई कभी, नहीं भाव बने मन में जिनके।
हित मितप्रिय भाषा हो जिनकी, वह हैं सुपात्र सफल पद के।।
यहाँ गुणीजनों के द्वारा भी, जो लायक होय प्रशंसा के।
जो जानकार होवे अनुपम, यहाँ लोक रीत मरयादा के।।99।।

जो जैनधर्म प्रभावना में, तन मन से उद्यत रहते हों।
अरुविज्ञजनों का आदर भी, निस्वार्थ सदा ही करते हों।।
श्री नेमिचन्द्राचार्य परम, द्रव्यसंग्रह में यह लिखते हैं।
जिनमें यह गुण होवें उत्तम, आचार्य उसे यहाँ कहते हैं।।100।।

।। द्रव्यसंग्रह में आचार्य के लक्षण ।।

श्री ज्ञानाचार दर्शनाचार, हो वीर्याचार परम जिसमें।
अरु तपाचार निजभावों से, जो सदा लगाते स्वहित में।।
जो निरतिचार पालन करते, छत्तीस गुणों को अंतरंग से।
बारह तप छै आवश्यक भी, वह पालत हैं अभ्यंतर से।।101।।

।। श्री कुन्दकुन्दाचार्य नियमसार में ।।

दसधर्म साथ त्रय गुप्ति भी, अरु पंचाचार धरें मन में।
द्रव्य संग्रह में यह लिखा सही, आचार्य वही है अंतरंग में।।
श्री कुन्दकुन्द आचार्य परम, श्री नियमसार में लिखते हैं।
निज पंचेन्द्रिय रूपी गज का, जो दर्प दलित यहाँ करते हैं।।102।।

जो धीर वीर गम्भीर परम, शिष्यों को दीक्षित करने में।
अति निपुण साहसी भावों से, हैं योग्य प्रायश्चित देने में।।
हैं सूत्रार्थ में परम निपुण, सम्पन्न ज्ञानमयी भावों से।
प्रमाद रहित जिन की चर्या, सज्जित हैं गुण के गहनों से।।103।।

उपसर्ग विजेता होकर जो, बावीस परिषह सहते हों।
यहाँ आर्त रौद्र परिणामों से, जो रहित सदा ही रहते हो।।
जो शिष्यों का नित ही अनुग्रह, निग्रह भी चित से करते हैं।
अरु स्वाध्याय में लीन रहें, उनको आचारज कहते हैं।।104।।

नित दर्शन ज्ञान चारित्रादि, जो पंचाचार हृदय धरते।
अरु अन्य साधुओं को इसका, उपदेश सदा देते रहते।।
चौदह विद्याओं में भी अरु, पारंगत ग्यारह अंगों में।
हैं अटल सुमेरु के सम जो, धरती सम सहनशीलता में।।105।।

जो सात भयों से रहित रहे, हो शुद्ध गोत्र अरु जाति से।
करते नित शुद्ध क्रियायें जो, आचार्य वही हैं अंतरंग से।।
यह अध्यात्मिक दृष्टि से ही, आचारज के गुण बतलाये।
यह लिखे मिले गुण शास्त्रों में, हमने उनको यहाँ दरशाये।।106।।

।। लौकिक दृष्टि से आचार्यों के गुण ।।

अब लौकिक दृष्टि से जो गुण, आवश्यक हैं आचार्यों में।
वह कागज पर दरशाते हैं, हम अपनी यहाँ लेखनी से।।
शारीरिक गुण में आचारज, स्मार्ट और कद ऊँचा हो।
हँसमुख हो तन से तन्दुरुस्त, अरु शक्तिवान निरोगी हो।।107।।

हो चतुर बात का वजनदार, क्योंकि ऐसे ही व्यक्ति का।
होता है सही प्रभाव बहुत, जनता पर ऐसे मानव का।।
कोई प्रसंगवश यदि साधु, गर भाव विभोर हुआ मन से।
तो तुरंत भावनाओं पर भी, हो जाय नियंत्रण संयम से।।108।।

यहाँ कई विषयों का भी उसने, चिंतन कीना होवे अनुपम।
हर धर्म ज्ञान के साथ साथ, सामान्य ज्ञान होवे उत्तम।।
कई भाषाओं का श्रेष्ठ ज्ञान, होना चाहिये आचारज में।
प्रवचन भी ऐसे करता हो, हों धर्म समाज देश हित में।।109।।

गम्भीर धीरता के संग संग, हों भाव विनोदमयी उसमें।
वैचारिक बुद्धि के संग संग, चातुरता हो अति वाणी में।।
गम्भीर परिस्थिति में भी वह, पाता हो विजय समस्या पर।
हर विषयों का भी निराकरण, करता होवे अति हर्षाकर।।110।।

जो अंतर्मुखी के बाद सहर्ष, बहिर्मुखी भी होवें गुरुराजा।
पर की जो सभी समस्यायें, सुनते हों पर हित के काजा।।
हो पास कल्पना शक्ति गुण, जिससे समझें पर भावों को।
आवश्यकता के अनुसार उसे, समझावे आतम के हित को।।111।।

आचार्य प्रवर की नजरें भी, अति दूरदर्शता वाली हों।
जो हुईं अतीत में घटनायें, वह फिर से नहीं दुबारा हों।।
इसलिये सदा चौकन्ना भी, रहके श्री गुरुसंघ हित में।
अनुशासन रखवें योग्य सही, स्व-पर की आतम के हित में।।112।।

आचार्य संघ की प्रतिष्ठा, जयवंत बनाये रखने में।
माहिर जो होवें सुगर संत, वो ही आचार्य परम जग में।।
जो होकर आतम विश्वासी, संघ में विश्वास जगाता है।
संघ के उद्देश्य पूर्ति हेतु, प्रयत्नशील नित रहता है।।113।।

जो कुछ भी नियम प्रतिज्ञाएँ, यहाँ संघ के लिए बनाई हैं।
वह बनी अमल में लाने को, रखने को नहीं गिनाई हैं।।
जो स्वयं अमल यहाँ करते हैं, पर से भी सहर्ष कराते हैं।
यह कार्य सही करने वाले, आचार्य परम कहलाते हैं।।114।।

अपने ही शिष्यन के सन्मुख, आचार्य स्वयं निज चारित्र को।
आदर्श सहित ही पेश करें, जिससे शिष्यन् के भी मन को।।
अनुकरण उसी का करने की, इच्छा हो उनके भी मन में।
वह ही उत्तम आचार्य यहाँ, बतलाया है सब ग्रंथन में।।115।।

जो होवे दृढ़ निश्चय वाला, नहीं यहाँ कान का कच्चा हो।
उत्तम निर्णय करनेवाला, अरु आतम का विश्वासी हो।।
अपने पद का दुरुपयोग यहाँ, जो कोई नहीं कुछ करता हो।
वह ही उत्तम आचार्य यहाँ, जो सद्गुण का भी ग्राहक को।।116।।

श्री विरागसिन्धु आचार्य प्रभु, यह गुण लखके इन शिष्यों में।
इनको आचार्य बनाने का, निश्चय कर लेते हृदय में।।
आचार्य प्रवर ने तभी यहाँ, बारह तारीख दिसम्बर में।
आचारज पद का समारोह, कीना बाँसवाड़ा नगरी में।।117।।

।। आचार्यपद प्रतिष्ठापन समारोह ।।

लक्ष्यादिक जनता के सन्मुख, कई ऋषिराजों के सान्निध्य में।
विधिपूर्वक ही संस्कार किये, आचारज पद के मुनियों में।।
श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने, दोनों ही महा मुनिराजों को।
उपलब्ध कराया अंतस से, सत् धर्ममार्ग दर्शक पद को।।118।।

।। लघुता गुरु के सन्मुख मुनिराजा की ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनि के संग में, श्री विनम्रसिन्धु मुनिराजा को।
आचार्य महापद मिला श्रेष्ठ, आगम का ध्वज फहराने को।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिराजा ने, आचार्य महापद पा करके।
निज में लघुता दरशाई थी, सन्मुख अपने गुरुराजा के।।119।।

इक किरण मात्र में हूँ छोटी, श्री गुरुवर जैसे सूरज की।
गुण तो मुझ में सारे गुरु के, मेरे कर में पिच्छि इनकी।।
इनही का पास कमंडल है, अरु सभी शास्त्र गुरुराजा के।
जैसा आदेश करें गुरुवर, हम पालेंगे अति हरषा के।।120।।

हम पोस्टमेन की तरह सदा, गुरु का संदेश भिजावेंगे।
हर ग्रामों नगरों में जाकर, आगम की अलख जगावेंगे।।
श्री विमर्शसिन्धु ने ये विचार, श्री चरणों में अपने गुरु के।
अर्पित कीने थे अंतरंग से, अपनी लघुता को दरशाके।।121।।

इस महाकाव्य का लेखक भी, इस समारोह में आया था।
आचार्य पदारोहण लखके, अंतस में अति हरषाया था।।
आचार्य विरागसागरजी ने, तेरह तारीख दिसम्बर से।
यहाँ प्रायश्चित ग्रन्थ पढ़ाया था, विधिपूर्वक ही समभावों से।।122।।

आचार्य पद के अनुभव भी, नये बने यहाँ आचार्यों को।
विधि के अनुसार बताये थे, अपने संघ के अनुशासन को।।
आचार्य प्रभु ने तभी सहर्ष, यहाँ विमर्शसिन्धु मुनिराजा को।
श्री प्रायश्चित ग्रन्थ प्रदान किया, आचारज पद संचालन को।।123।।

।। बाँसवाड़ा से विहार ।।

इन दोनों नये आचार्यों ने, आशीष सहित गुरु आज्ञा से।
संघस्थ साधुओं के संग में, यहाँ से भी गमन किया चित से।।
दस मील यहाँ से जाने पर, संघ एक जगह रुक जाता है।
होते ही सुबह मुनि संघ को, एक समाचार मिल जाता है।।124।।

।। आ. सन्मति सागर जी की समाधि ।।

सम्राट तपस्वी दादागुरु, सन्मतिसागर गुरु राजा का।
हो गया समाधि मरण श्रेष्ठ, मासोपवासी महाराजा का।।
तब दोनों ही संघ रस्ते से, वापस आ गये बाँसवाड़ा में।
गुरुवर को धैर्य बंधाने को, चौबीस दिसम्बर के दिन में।।125।।

मुनियों के यहाँ पहुँचने से, आचार्य गुरु महाराजा को।
मुनिवर की समता वार्ता से, थोड़ा आराम मिला तन को।।
ये ग्यारह कलश हुए पूरे, श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ के।
आचारज पद स्थापन के, चौदह वरषों के संयम के।।126।।

।। इति ग्यारहवाँ कलश ।।

मढ़िया जी जबलपुर में परम पूज्य आचार्य विरागसागर जी के साथ ऐलक विमर्शसागर साथ में है मुनि विश्वजीत सागर जी, ऐलक विशल्यसागर जी, ऐलक विहर्षसागर जी ऐलक विनिश्चय सागर जी एवं क्षुल्लक विमदसागर जी।

देवेन्द्रनगर (पन्ना) म.प्र. के मंच पर
ब्र. राकेश राजकुमार के रूप में विराजित
(23.02.1996, तप कल्याणक का पावन दिवस, कुल 13 दीक्षाएं हुई थीं)

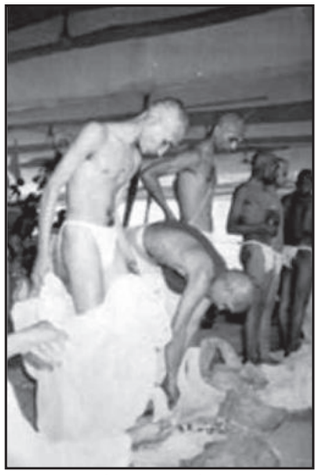

वस्त्रों का त्याग करते हुए।

लंगोटी त्याग की आज्ञा सुनने तैयार ऐलक विमर्शसागर जी।
साथ हैं ऐलक विभवसागर जी।

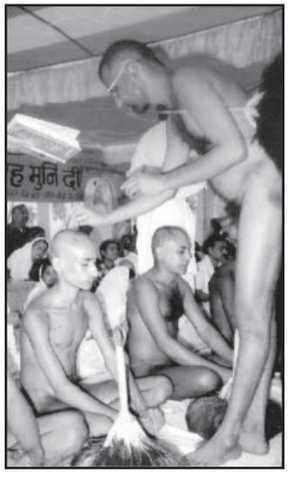

मुनि-दीक्षा संस्कार करते हुए
गुरुदेव विरागसागर जी।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

बारहवाँ कलश

।। मंगलाचरण ।।

श्री अतिशय क्षेत्र पिड़रुआ की, माटी का तिलक लगा करके।
पद कमलों का वन्दन करते, यहाँ के श्री आदि जिनेश्वर के।।
यहाँ डेढ़ शतक प्रतिमाएँ हैं, जो सात वेदियों पर राजत।
उनमें कई चौदह सौ सन् की, पूरी करती मन की चाहत।।1।।

दो चौक बने हैं मन्दिर में, शिखरें हैं चार गगनचुम्बी।
उन पर झण्डे लहराते हैं, साटन के उत्तम पचरंगी।।
एक वेदी पैंतीस फुट चौड़ी, जिस पर पारस आदि स्वामी।
पद्मासन मुद्रा में राजत, हैं श्वेत श्याम अन्तरयामी।।2।।

हैं सभी सात फुट की सुन्दर, वो प्रतिमायें अवगाहन में।
जिनके दर्शन कर लेने से, होते दुख दूर सभी छिन में।।
मुनिसुव्रत प्रभु की मूरत है, यहाँ चार फुटी अवगाहन में।
है श्यामवर्ण अतिशयकारी, सौहे सुन्दर पद्मासन में।।3।।

हर शनि अमावस को मेला, यहाँ भरता है अतिशयकारी।
जिनमें कई नगरों से आते, प्रभु भक्त हजारों नरनारी।।
वा दिन प्रभु का अभिषेक और, होता विधान मंगलकारी।
फिर सामूहिक यहाँ होता है, जलपान सभी का सुखकारी।।4।।

जिसकी मनसा पूरी होवत, यहाँ आकर प्रभु के दर्शन से।
कई बार यहाँ वो आ करके, भंडारा करते तन मन से।।
इस अतिशयकारी भूमि को, शतबार यहाँ वन्दन करके।
करता हूँ कार्य शुरू अपना, आदिप्रभु को चित में धरके।।5।।

गुरु विद्यासागर महामुनि, दो बार यहाँ पधराये थे।
आदीश्वर के दर्शन करके, अन्तस में अति हरषाये थे।।
उन महामुनि के चरणों में, हम सादर शीष झुकाते हैं।
इस महाकाव्य के लिखने को, हृदय में उन्हें बिठाते हैं।।6।।

अब सरस्वती को वन्दत हैं, जो स्वयं विराजे हृदय में।
वह होंय सहायी यहाँ हमे, इस महाकाव्य के लिखने में।।
यहाँ उनको शीष झुकाता हूँ, जो इसी काव्य के महानायक।
यह काव्य उन्हीं का लिखता हूँ, जो होगा सबको फलदायक।।7।।

।। आचार्य संघ घाटोल में ।।

अब दोनों नये आचार्य गुरु, आशीष सहित गुरु आज्ञा से।
संघस्थ साधुओं के संग में, करते हैं पुनः गमन यहाँ से।।
श्री विमर्शसिन्धु आचार्य गुरु, अठरा तारीख दिसम्बर में।
घाटोल नगर में आये थे, ईर्यापथ को धरके चित में।।8।।

यहाँ भरतेश्वरी माता जी ने, जनता के संग संघ के संग में।
अगवानी की अति हर्षाकर, जाकर नगरी की सीमा में।।
तब यहाँ जतारा नगरी से, गुरुभक्त सैकड़ों आय गये।
आचार्य प्रभु के दर्शन कर, अन्तस में अति हरषाय रहे।।9।।

वह सभी भक्त गुरुराजा से, चलने को नगर जतारा में।
अन्तस से विनती करते हैं, निजशीष झुकाके चरणों में।।
लेकिन गुरु ने उन भक्तों को, आशीष अकेला देकर के।
कोटा की ओर विहार किया, ईर्यापथ को चित में धरके।।10।।

।। आचार्य संघ प्रतापगढ़ में ।।

श्री विमर्शसिन्धु आचार्य प्रभु, होकर के ग्राम खमेरा से।
प्रतापगढ़ में पहुँच गये, संघ के संग में अति आनंद से।।
आचार्य सच्चिदानंद जी ने, निज संघ सहित गुरुराजा की।
नगरी की सीमा पर जाकर, जनता के संग अगवानी की।।11।।

दोनों ऋषियों का हुआ यहाँ, वात्सल्य मिलन अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, आनंद से कुशल समाचारी।।
चर्या करके सामायिक कर, गुरु यहाँ से कदम बढ़ाते हैं।
एम.पी. की पावन धरती को, पद रज से भी महकाते हैं।।12।।

जनवरी तीन को गुरुराजा, दोय सहस्र ग्यारह सन् में।
नीमच नगरी में पधराये, संघस्थ साधुओं के संघ में।।
सुभूषण मति आर्यिका ने, संघ की आर्यिकाओं के संग में।
गुरुसंघ की कीनी अगवानी, साहर्ष नगर की सीमा में।।13।।

।। आचार्य संघ नीमच में।।

दोनों संघों का हुआ सुखद, वात्सल्य मिलन अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, आनंद से कुशल समाचारी।।
जनवरी चार को गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुक के, आगम की अलख जगाते हैं।।14।।

।। आचार्य संघ सिंगोली में।।

श्री विमर्शसिन्धु आचार्य प्रभु, जनवरी माह की नवमीं में।
अपने संघ को संग में लेके, आ गये नगर सिंगोली में।।
विज्ञानमति आर्यिका माँ ने, नगरी की जनता के संग में।
गुरुसंघ की कीनी अगवानी, अति हर्षा के अपने उर में।।15।।

।। आर्यिका विज्ञानमती जी से मिलन ।।

उस दिन भक्तों ने नगरी को, दुल्हन की तरह सजाया था।
कई स्वागत द्वार बना उनमें, केशरिया ध्वज लहराया था।।
यहाँ हुआ सहर्ष दो संघों में, वात्सल्य मिलन अति हितकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, आनंद से कुशल समाचारी।।16।।

पहले से ही हो रहा यहाँ, श्री कल्पद्रुम मंडल विधान।
आर्यिका संघ के ही सान्निध्य में, जग की शान्ति का अनुष्ठान।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, माताजी के अति आग्रह से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, बचने को नित नये पापों से।।17।।

श्री कुमुदचन्द्र पंडित जी ने, गुरुवर की पावन वाणी को।
अन्तस् से बहुत सराहा था, अध्यात्ममयी जिनवाणी को।।
अजमेर नगर को धन्य करो, अपने पावनतम चरणों से।
ये विनयकरी पंडितजी ने, चरणों में शीष झुका गुरु से।।18।।

आचार्य विमर्शसागर जी अब, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुकके, जिन धर्मध्वजा फहराते हैं।
कहीं करते हैं विश्राम गुरु, कहीं चर्या सहर्ष बनाते हैं।
दोपहर बाद सामयिक कर, वहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।।19।।

।। आचार्य संघ कोटा में ।।

जनवरी माह की सोलहवीं, तिथि में श्रीगुरु संघ के संग में।
कोटा नगरी में पधराये, आतम का हित धरके चित में।।
महावीर नगर के भक्तों ने, नगरी की सीमा पर जाकर।
ऐतिहासिक कीनी अगवानी, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।20।।

यहाँ नगरी के गणमान्यों ने, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, चंवल से उज्ज्वल जल लाके।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को लेके आये सभी, महावीर नगर कॉलोनी में।।21।।

इक्कीस तारीख जनवरी से, त्रिदिवसी इस कॉलोनी में।
कलशारोहण का समारोह, होता गुरुवर के सान्निध्य में।।
आचार्य प्रवर को ज्ञात हुआ, कोटा की पावन धरती पर।
सरकार खोलने वाली है, बूचड़खाना हिंसा का घर।।22।।

।। कत्लखाने के विरोध में आंदोलन ।।

आचार्य प्रवर ने तभी तुरत, अध्यक्ष जैन पंचायत को।
अरु महापौर को बुलवाया, इस बाबत चर्चा करने को।।
गणमान्य और श्रेष्ठीवर भी, हर जाति के यहाँ आये थे।
आचार्य प्रभु ने उन सबको, इसके नुकसान गिनाये थे।।23।।

हिंसामयी कारज होने पर, सब अमन चैन नश जाता है।
मानवता नाही रहने पर, मानव दानव बन जाता है।।
अध्यक्ष और गणमान्यों ने, एक मीटिंग तुरत बुलाई थी।
बूचड़खाना रुकवाने को, एक समिति यहाँ बनाई थी।।24।।

।। सर्वधर्म सम्मेलन कोटा में ।।

जनवरी तीस को श्रीगुरु ने, बूचड़खाना रुकवाने को।
एक सम्मेलन में बुलवाया, सब धर्मों के गणमान्यों को।।
हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई, अधिकारी गण सबधर्मों के।।
इस सम्मेलन में आये थे, नेता भी श्रेष्ठ प्रशासन के।।25।।

यहाँ सर्व सम्मति से सबने, बूचड़खाना रुकवाने को।
सहमति दीनी शुभ भावों से, श्रीगुरु के इस आंदोलन को।।
आचार्य विमर्शसागर जी का, संदेश सबई अखबारों में।
बूचड़खाने का विरोध करो, यह छाया सबई विचारों में।।26।।

।। कोटा महापौर से चर्चा ।।

जैनाचार्य का विरोध देख, नगरी के सब संस्थानों ने।
संदेश प्रसारित किये रोज, सब जैनों और अजैनों ने।।
कोटा नगरी की महापौर, श्री रत्ना जैन परम गुरु से।
इस बाबत चर्चा करती हैं, चरणों में शीष झुका चित से।।27।।

तब श्री गुरु ने स्पष्ट कहा, तुम महापौर हो नगरी की।
इससे गौरवान्वित जैन सभी, यह राय यहाँ है जनता की।।
यदि जैनत्व की पहिचान बनो, तो जैनधर्म इस भारत में।
गौरवान्वित होगा निश्चय ही, शंका बिल्कुल न है इसमें।।28।।

।। आंदोलन का असर ।।

विनयावत होके महापौर, तब कहती हैं गुरुराजा से।
आशीष दीजिये आप हमें, जो कहा सहर्ष कर सकूँ उसे।।
अब हुकुम जैन काका कहते, गुरुराजा से नसियाँ जी में।
बूचड़खाने का विरोध यहाँ, आक्रामक हुआ सभीजन में।।28।।

अब जैनधर्म का असर सही, हो रओ है अन्य समाजों में।
कर रहे हैं विरोध सभी खुलके, बूचड़खाने का नगरी में।।
संदेश आपका हे गुरुवर, यहाँ राजस्थानी नगरों में।
पहुँचा प्रचार के माध्यम से, शासन में और प्रशासन में।।30।।

आचार्य प्रवर ने तभी यहाँ, समता से कहा सभी जन से।
पूरा शासन झुक सकता है, भारी विरोध के करने से।।
सब लोग विरोध करो भारी, इक साथ सभी जन तेजी से।
प्रस्ताव रद्द हो जावेगा, दो चार दिनों में शासन से।।31।।

।। जीत हुई गुरुवाणी की ।।

तब शान्तिलाल जी धारीवाल, शासन के मंत्री ने आकर।
आचार्य प्रवर को बतलाया, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
प्रस्ताव रद्द कर दिया यहाँ, लख विरोध यहाँ के लोगों का।
कोटा नगरी के परिसर में, बूचड़खाना खुलवाने का।।32।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, खुशखबरी सुन मंत्री जी से।
आभार सहित आशीष दिया, मंत्री जी को अति आनंद से।।
छब्बीस मार्च को गुरुवर ने, राजीव भाई ब्रह्मचारी को।
कोटा नगरी के परिसर में, आतम का हित उपजाने को।।33।।

।। ऐलक दीक्षा समारोह कोटा में ।।

ऐलक पद की दीक्षा दीनी, एक समारोह में आनंद से।
संयम मय जीवन जीने को, बचने को जग की उलझन से।।
राजीव भाई रहवासी हैं, एम.पी. में अशोकनगरी के।
हैं पदमकुमार जी के सुपुत्र, ललना सरोजरानी माँ के।।34।।

बी.एस.सी. तक शिक्षा लेकर, अध्यात्मिक शिक्षा पाने को।
गुरुदेव शरण में आय गये, भवसिन्धु पार उतरने को।।
आचार्य प्रवर ने नाम रखा, ऐलक विचिंत्यसागर उनका।
तब जयकारों से गूँज उठा, यहाँ आसमान भी कोटा का।।35।।

।। बाराँ नगरी में गुरुराजा ।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, अपने संघ को लेके संग में।
कोटा नगरी से विहार किया, ईर्यापथ को धरके चित में।।
कई ग्रामों नगरों से होकर, गुरु नित ही बढ़ते जाते हैं।
बाराँ नगरी में आकर गुरु, कुछ समय यहीं ठहरते हैं।।36।।

यहाँ पाँच दिना रहके गुरु ने, धर्मामृत नित बरसाया था।
नगरी के सबई श्रावकों को, उसका रसपान कराया था।।
तब भक्तामर मंडल विधान, श्री पारसनाथ जिनालय में।
अति ही आनंद के साथ हुआ, श्री गुरु के पावन सान्निध्य में।।37।।

।। गुना नगर में गुरुराजा ।।

छठवें दिन श्री आचार्य प्रभु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुकके, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।
कुछ दिन के बाद गुरुराजा, आ गये गुना की नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हर्षाये मन गगरी में।।38।।

बजरंगगढ़ पास गुना के ही, तीरथ है परम मनोहारी।
यहाँ शान्तिनाथ की प्रतिमा है, खड़गासन में अतिशयकारी।।
आचार्य प्रभु बजरंगगढ़ में, संघ के ही साथ वहाँ जाकर।
शान्तिप्रभु के दर्शन करते, निज भावों में अति हर्षाकर।।39।।

चर्या करके सामायिक कर, संघ यहाँ से कदम बढ़ाता है।
आकर शाढ़ोरा नगरी में, चर्या करने रुक जाता है।।।
दूजे दिन श्री आचार्य प्रभु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
एक बस्ती में आकर के गुरु, यहाँ शाला में रुक जाते हैं।।40।।

अशोकनगर के जैनी जन, इस शाला में पधारते हैं।
वैय्यावृत्ति कर ऋषियों की, अन्तस में अति हरषाते हैं।।
वह श्रावक बन्धु आनंद से, ऋषिराजों के पद कमलों में।
श्रीफल का अर्घ्य चढ़ाते हैं, पधराने को निज नगरी में।।41।।

।। आचार्य संघ अशोकनगर में ।।

दूजे दिन सुबह मुनिनाथा, अशोकनगर में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
श्री गुरु को लेकर के पहुँचे, गुरु भक्त गंज के मन्दिर में।।42।।

नगरी के सबई श्रावकों ने, मन्दिर जी के दरवाजे पर।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, गुरुराजा का अति हर्षाकर।।
था चऊमासे का समय पास, सो भव्यन ने गुरुराजा से।
इसही नगरी में करने की, विनती की अंतरंग भावों से।।43।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, भव्यों के भावों को लखकर।
इस नगरी में चऊमासे की, स्वीकृति दे दी अति हर्षाकर।।
नगरी के सबई श्रावकों ने, गुरु की स्वीकृति चित में धरके।
सुन्दर पाँडाल बनाया था, यहाँ बाजू में जिनमन्दिर के।।44।।

।। 2011 वर्षायोग अशोकनगर में ।।

तब षाढ़ सुदी चौदस के दिन, श्री गुरुवर के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, यहाँ दो हजार ग्यारह सन् का।।
मुनिराज अवस्था में गुरुवर, दो सहस्र तीन ईसा सन् में।
चऊमासा भी कर चुके यहाँ, रह करके जनता के दिल में।।45।।

दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीरा शासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, निर्देशन में गुरुराजा की।।
यहाँ हुए अनेकों धर्मकार्य, जो हुए अन्य चऊमासों में।
अति धूमधाम के साथ सभी, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।46।।

श्वेता नमिता दोनों बहिनें, आचार्य प्रवर की सहमति से।
संघ में प्रवेश कर जाती हैं, अपने अंतरंग के भावों से।।
इन दोनों सगी दीदियों ने, कोटा नगरी के आँगन में।
आजन्म शीलव्रत लीना था, गुरुवर से मार्च महीने में।।47।।

यहाँ चौमासे के पहले दिन, भक्तामर मंडल का विधान।
तब हुआ गुरु के सान्निध्य में, सुख शान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।
आचार्य अमितगति के द्वारा, कृत योगसार की प्राकृत में।
टीका लिख दी श्री गुरुवर ने, सन् ग्यारह के चऊमासे में।।48।।

निष्ठापन इस चऊमासे का, छब्बीस अक्टूबर के दिन में।
विधिपूर्वक किया श्री गुरु ने, दीपावली के पावन दिन में।।
प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, आचार्य प्रभु के सान्निध्य में।
अति धूमधाम के साथ मना, नगरी के गंज जिनालय में।।49।।

अध्यात्मिक कवि सम्मेलन भी, यहाँ हुआ तीस अक्टूबर में।
अति उत्तम कविता पाठ पढ़ा, आचार्य प्रभु ने भी जिसमें।।
आचार्य संघ की पिच्छिका, एक अति सुन्दर आयोजन में।
परिवर्तन हुआ सुहितकारी, इकतीस अक्टूबर के दिन में।।50।।

।। विमर्शलिपि का सृजन।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, चऊमासे में सन् ग्यारह के।
स्वतंत्र ''विमर्श लिपि'' का भी, सृजन कीना चिंतन करके।।
श्री गुरु की अति विलक्षण ये, प्रतिभा की भी परिचायक है।
इसमें विद्वान् शोध करावें, ये जनता को हित दायक हैं।।51।।

।। अशोकनगर से विहार ।।

साहित्य जगत ने इस लिपि को, उपलब्धि कहा बहुत भारी।
यदि शोध यहाँ पर होता है, तो होगी यह अतिशयकारी।।
पश्चात पिच्छि परिवर्तन के, गुरु यहाँ से भी बढ़ जाते हैं।
गुरु भक्त सैकड़ों भी संग में, अगले पड़ाव तक जाते हैं।।52।।

।। जतारा समाज गुरु चरणों में।।

शिवपुरी नगर की ओर तभी, श्री गुरु ने कदम बढ़ाये थे।
मारग की एक गऊशाला में, विश्राम हेतु ठहराये थे।।
यहाँ जैन समाज जतारा की, गुरुराजा के ढिंग आती है।
चरणों में शीष झुका करके, निज मन की बात बताती है।।53।।

।। जतारा समाज को प्रतिष्ठा की स्वीकृति ।।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, है परम जतारा नगरी में।
आशीष सहित स्वीकृति दीजे, पधराने की उस उत्सव में।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, भक्तों के भाव सुदृढ़ लखके।
स्वीकृति दे दी वहाँ आने की, निज शिष्यों से चरचा करके।।54।।

।। नई सराय में गुरुराजा ।।

महिदपुर होके गुरुराजा, तब नई सराय में आये थे।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतस में अति हरषाये थे।।
यहाँ की समाज के आग्रह से, कल्याण सुमन्दिर का विधान।
तब हुआ गुरु के सान्निध्य में, सुख शान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।55।।

आचार्य प्रभु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
मारग में सूरज छिपने से, एक शाला में रुक जाते हैं।।
दूजे दिन प्रातःकाल गुरु, सामायिक कर संघ के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, अपनी मंजिल धरके चित में।।56।।

आचार्य प्रभु अब मारग में, दर्शन कर सेसई तीरथ के।
एक कृषि फार्म में रुक जाते, छिप जाने से प्रिय सूरज के।।
प्रातः समय यहाँ से चलके, शिवपुरी नगर की सीमा में।
गुरु भक्त हजारों खड़े वहाँ, श्री गुरु की परम प्रतीक्षा में।।57।।

।। शिवपुरी में आचार्य संघ ।।

गुरु संघ वहाँ पर आते ही, भक्तों ने जय जयकारों से।
अगवानी कीनी गुरुसंघ की, अपने अंतरंग के भावों से।।
यहाँ नगरी के गणमान्यों ने, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, यमुना का निर्मल जल लाके।।58।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को सब लेकर आये, छतरी के श्रेष्ठ जिनालय में।।
यहाँ के दर्शन कर गुरुराजा, चन्द्रप्रभु मन्दिर में आये।
श्री गुरु की आरती करके यहाँ, श्रावक जन भारी हरषाये।।59।।

।। श्री कल्पद्रुम मंडल विधान ।।

बारह तारीख नवम्बर से, यहाँ चन्द्रप्रभु जिनालय में।
श्री कल्पद्रुम मंडल विधान, होता गुरुवर के सान्निध्य में।।
तब आस पास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
श्रावक जन आये हजारों में, गुरुवाणी चित में धरने को।।60।।

पश्चात् विधान समापन पर, बाईस नवम्बर के दिन में।
निकली थी गजरथ की यात्रा, गुरुराजा के निर्देशन में।।
श्री जी को रथ में बैठाकर, नगरी के प्रमुख मारगों से।
गायन वादन के साथ यहाँ, वह यात्रा निकली आनंद से।।61।।

।। अड़तीसवाँ जन्मोत्सव गुरु का ।।

लक्ष्याधिक जैन अजैन तभी, उस गजरथ यात्रा के संग में।
संग साथ चले महाराजों के, नगरी के सबई मुहालों में।।
आचार्य प्रभु का जन्मोत्सव, पन्द्रह तारीख नवम्बर में।
अति धूमधाम के साथ मना, यहाँ दो हजार ग्यारह सन् में।।62।।

।। कलशारोहण का समारोह ।।

कलशारोहण का समारोह, तेईस नवम्बर के दिन में।
छतरी मन्दिर की शिखरों पर, तब हुआ गुरु के सान्निध्य में।।
श्री राजकुमार जी जैन साब, यहाँ जड़ीबूटी के व्यापारी।
उनने पाया सौभाग्य परम, कलशारोहण का हितकारी।।63।।

।। शिवपुरी से विहार गुरु संघ का ।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, संघस्थ साधुओं के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे, चौबीस नवम्बर के दिन में।।
इस नगरी के गुरु भक्त सभी, मुनिराजा के पहुँचाने को।
अगले पड़ाव तक जाते हैं, अंतस की प्यास बुझाने को।।64।।

।। आचार्य संघ झांसी में ।।

गुरुदेव करैरा से होकर, उनतीस नवम्बर के दिन में।
झाँसी नगरी में पधराये, ईर्यापथ को धरके चित में।।
यहाँ के तब सभी जैनियों ने, नगरी की सीमा पर जाके।
ऐतिहासिक कीनी अगवानी, गुरुसंघ की भारी हरषाके।।65।।

।। अतिशयक्षेत्र करगुवाँ जी में ।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुसंघ को सब लेके आये, नगरी के बड़े जिनालय में।।
दोपहर बाद आचार्य प्रभु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
आकर के क्षेत्र करगुवाँ में, दर्शन कर अति हरषाते हैं।।66।।

यहाँ पारस प्रभु की मूरत है, पद्मासन में अतिशयकारी।
इनके दर्शन को आवत हैं, हर रोज सैकड़ों नरनारी।।
इस पुण्य क्षेत्र के दर्शन कर, तारीख एक दिसम्बर में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, ईर्यापथ को धरके चित में।।67।।

ओरछा से होकर पृथ्वीपुर, गुरुदेव दिगौड़ा में आये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।
आठ दिसम्बर को श्रीगुरु, वैरवारा नगरी में आकर।
प्रीतवार के प्रवचन करते, समता को भावों में धरकर।।68।।

।। ऐतिहासिक अगवानी जतारा में ।।

दोपहर बाद सामायिक कर, गुरु यहाँ से कदम बढ़ाते हैं।
आकर के नगर जतारा की, सीमा पर ही रुक जाते हैं।।
यहाँ खड़े हजारों नरनारी, गुरुवर की परम प्रतीक्षा में।
अगवानी को श्री गुरुवर की, केशरिया ध्वज लेके कर में।।69।।

।। आचार्य संघ जतारा में ।।

श्री गुरु के यहाँ पहुँचते ही, जनता ने जय जयकारों से।
धरती आकाश गुँजा दीना, जय जय के अनुपम नारों से।।
तब यहाँ सभी गणमान्यों ने, प्रासुक जल से गुरुराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, अंतरंग में भारी हरषाके।।70।।

यह नगर जतारा जन्मभूमि, आचार्य विमर्शसागर जी की।
लोगों का अधिक लगाव रहा, छवि लखने को गुरुराजा की।।
नगर पुत्र राकेश सहर्ष, एक महासंत बनके जग में।
सोलह बरसों के बाद आज, पधराये नगर जतारा में।।71।।

सो नगरी के सब श्रेष्ठी आज, अगवानी करने गुरुवर की।
अधिकारी मंत्री जनता संग, सीमा पर आये नगरी की।।
जनता ने सहर्ष जतारा को, दुल्हन की तरह सजाया था।
कई स्वागत द्वार बना उनपे, केशरिया ध्वज फहराया था।।72।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
आचार्य विमर्शसागर जी को, प्रवेश कराया नगरी में।।
निज द्वारों पर गुरु भक्तों ने, निर्मल जल से गुरुराजा के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, निज भावों से आरति करके।।73।।

।। गृहस्थ अवस्था के द्वार पर ।।

अब मात पिता भाई बहिनें, द्वारे पर अपने ही घरके।
पद कमलों का प्रक्षाल करें, अपने सपूत का हरषाके।।
वह शोभायात्रा आनंद से, अपने गुरुराजा को लेकर।
आई थी सहर्ष जिनालय में, कई चौराहों से ही होकर।।74।।

।। दूजा आचार्य पदारोहण ।।

तब हुए अनेकों श्रेष्ठ कार्य, इसही नगरी के आँगन में।
अति धूमधाम के साथ सभी, गुरुराजा के निर्देशन में।।
आचार्य विमर्शसागर जी का, यहाँ दो हजार बारह सन् में।
दूजा आचार्य पदारोहण, तब मना दिसम्बर बारह में।।75।।

।। मुनिदीक्षा दिवस समारोह ।।

आचार्य विमर्शसागर जी का, चौदह तारीख दिसम्बर में।
मुनिदीक्षा दिवस मनाते हैं, गुरु भक्त जतारा नगरी में।।
आचार्य विमर्शसागर विधान, वा दिना जतारा नगरी में।
अति ही आनंद के साथ किया, गुरु भक्तों ने जिनमन्दिर में।।76।।

यहाँ शीत कालीन वाचना भी, सोलह तारीख दिसम्बर से।
श्री रयणसार की हुई शुरू, आचार्य प्रवर के श्री मुख से।।
आँचल दीदी इन्जीनियर ने, अपने पितु से आज्ञा लेकर।
श्री गुरुसंघ में प्रवेश किया, आजन्म शील व्रत भी लेकर।।77।।

यह जीवन है पानी की बूँद, गीत रचित गुरुराजा का।
हर रोज शाम को गाते गुरु, स्व पर की आतम के हित का।।
हिन्दु मुस्लिम ईसाइयों ने, यह गीत सुना निज भावों से।
हो गया लोकप्रिय गीत यहाँ, जन जन को यहाँ आत्मा से।।78।।

।। आचार्य विशुद्धसागर जी से मिलन ।।

आचार्य विशुद्धसागर जी तब, इस नगरी में पधराये थे।
निज अग्रज की अगवानी कर, गुरुराजा अति हरषाये थे।।
दो मील दूर जाकर गुरु ने, अपने अग्रज गुरु भ्राता की।
अपने अंतरंग के भावों से, संघ के संग में अगवानी की।।79।।

पद कमलों का प्रक्षाल किया, यहाँ भक्तों ने गुरु भ्राता के।
घृत के दीपों से आरती की, गणमान्यों ने अति हरषाके।।
वात्सल्य मिलन यहाँ होता है, ऋषियों में तब अतिशयकारी।
रत्नत्रय की फिर हुई श्रेष्ठ, अंतस से कुशल समाचारी।।80।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
अपने अग्रज गुरु भाई को, प्रवेश कराया नगरी में।।
आचार्य विशुद्धसागर जी ने, दूजे दिन नित चर्या करके।
मंगल विहार किया यहाँ से, ईर्यापथ को चित में धरके।।81।।

।। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा जतारा में ।।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, फरवरी तीन को नगरी में।
अति आनंद से सम्पन्न हुआ, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।
नगरी के सब गणमान्यों ने, अन्तिम दिन श्री गुरुराजा से।
आभार सहित आशीष लिया, निर्विघ्न समापन होने से।।82।।

।। इस काव्य का लेखक जतारा में ।।

नगरी के सर्व कमेटी ने, गजरथ के श्रेष्ठ समापन पर।
आचार्य पुंगव अलंकरण, गुरु को दीना अति हर्षाकर।।
इस महाकाव्य का लेखक भी, तब नगर जतारा आया था।
आचार्य प्रभु के दर्शन कर, अन्तस में अति हरषाया था।।83।।

।। बिन्दु ही बनती है सिन्धु ।।

फरवरी सात में गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
तब नगरी के सारे श्रावक, अँखियों से जल बरसाते हैं।।
नगरी के बाल अबाल सभी, श्री गुरुवर के पहुँचाने को।
अगले पड़ाव तक जाते हैं, अंतस की प्यास बुझाने को।।84।।

।। आचार्य संघ पृथ्वीपुर में ।।

आचार्य विमर्शसागर स्वामी, संघस्थ साधुओं के संग में।
पृथ्वीपुर में आ गये सहर्ष, दसवीं तारीख फरवरी में।।
यहाँ की समाज ने सीमा पर, आचार्य प्रभु महाराजा की।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, अति भव्य यहाँ अगवानी की।।85।।

सीमा पर ही गणमान्यों ने, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, यमुना से निर्मल जल लाके।।
सारे श्रावक तब नगरी के, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को लेकर आये थे, श्री पारसनाथ जिनालय में।।86।।

।। सिद्धचक्र मंडल विधान पृथ्वीपुर में ।।

बारह तारीख फरवरी से, वसु दिवसी इसही नगरी में।
हुआ सिद्धचक्र मंडल विधान, बीस शतक बारह सन् में।।
ब्रह्मचारी ऋषभ शास्त्री ने, यह आयोजन इस नगरी में।
विधिपूर्वक ही करवाया था, गुरुराजा के निर्देशन में।।87।।

।। आचार्य विभवसागर जी से मिलन ।।

सोलह तारीख फरवरी में, श्री विशाश्री आर्यिका माँ का।
ससंघ आगमन हुआ यहाँ, गुरुराजा की गुरु बहिना का।।
आचार्य विभवसागर स्वामी, फरवरी बीस सन् बारह में।
इस नगरी में पधराये थे, संघस्थ साधुओं के संग में।।88।।

।। बिन्दु ही बनी महा सिन्धु ।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, संघस्थ साधुओं के संग में।
गुरुभ्राता संघ की अगवानी, कीनी हरषाकर भावों से।।
एक दिवस श्री आचार्य प्रभु, स्वाध्याय लीन थे भावों से।
तब एक सज्जन आके कहते, आचार्य गुरु महाराजा से।।89।।

।। आत्मा से मिल रहा हूँ ।।

तहसीलदार यहाँ आये हैं, हे परम आपसे मिलने को।
हो रहा मिलन अभी आतम से, यह बात बता दीजे उनको।।
इतने में वो अन्दर आकर, वहाँ बैठ गये थे समता से।
स्वाध्याय पूर्ण हो जाने पर, वह हाथ जोड़ कहते गुरु से।।90।।

हे नाथ आपकी अंतरंग से, आध्यात्मिक चर्या को सुनकर।
आनंद बहुत ही आया है, जो सुनी यहाँ वैसी लखकर।।
आचार्यश्री तब मुस्कुराकर, वात्सल्य पूर्वक कहते हैं।
ये आतम के आनंद सही, जो जानत उसको भावत हैं।।91।।

।। पृथ्वीपुर से विहार ।।

आचार्य विमर्शसागर जी से, तहसीलदार वार्ता करके।
अपने स्थान तक चले गये, गुरु की वाणी चित में धरके।।
फरवरी बीस में गुरुराजा, संघस्थ साधुओं के संग में।
करते हैं गमन पृथ्वीपुर से, निज मंजिल को धरके चित में।।93।।

।। वरुआसागर में गुरुराजा ।।

फरवरी बाईस में श्रीगुरु, आये थे वरुआसागर में।
यहाँ मिले विनिश्चलसागर से, अति हर्षाके अपने उर में।।
यहाँ मुनिश्री ने गुरुराजा की, नगरी की जनता के संग में।
अगवानी कीनी अति भव्य, हर्षित होकर भारी मन में।।93।।

।। अतिशय क्षेत्र करगुवाँ में ।।

श्रीविमर्शसिन्धु मुनिनाथा को, अंतराय हुआ आहारों में।
दो बजे विहार किया यहाँ से, संघस्थ साधुओं के संग में।।
फरवरी तेईस में गुरुराजा, आ गये करगुवाँ तीरथ में।
पारसप्रभु के दर्शन करके, अति हरषाये अपने उर में।।94।।

।। सिद्धक्षेत्र सोनागिरि में ।।

आचार्य विमर्शसागर जी को, हो गया वमन आहारों में।
फरवरी तेईस में श्रीगुरु को, अंतराय हुआ इस तीरथ में।।
चौबीस तारीख को चर्या कर, गुरु यहाँ से भी बढ़ जाते हैं।
झाँसी दतिया से होकर गुरु, सोनागिर में पधारते हैं।।95।।

।। आचार्य विरागसागर जी के दर्शन ।।

यहाँ श्री गुरु ने गुरुराजा के, चरणों में शीष झुकाया था।
श्री गुरु ने इन्हें उठा करके, सीने से सहर्ष लगाया था।।
जिनबिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, गुरु विरागसिन्धु के सान्निध्य में।
तब होय रहा था पहले से, इस सिद्धक्षेत्र सोनागिरि में।।96।।

श्री ज्ञानमति माताजी अरु, आचार्य मेरुभूषण जी से।
वात्सल्य मिलन यहाँ हुआ तभी, गुरुराजा का अति आनंद से।।
इस समारोह के बाद सहर्ष, श्री विरागसिन्धु गुरुराजा का।
श्री सोनागिरि से विहार हुआ, संग में श्री विमर्शसिन्धु जी का।।97।।

।। आचार्य संग ग्वालियर में ।।

अब गुरु शिष्य संघ के संग में, निज मंजिल को चित में धरके।
अति आनंद से बढ़ते जाते, मुक्ति के मारग पर चलके।।
तब सात मार्च सन् बारह में, डबरा नगरी से हो करके।
आ गये ग्वालियर नगरी में, ईर्यापथ को चित में धरके।।98।।

श्री विहर्षसिन्धु मुनिराजा ने, यहाँ दोनों ही गुरु संघों की।
अपने अंतरंग के भावों से, जनता के संग अगवानी की।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, गुरु भक्तों के अति आग्रह से।
कवितायें सहर्ष सुनाईं थीं, अपनी पावन मृदुवाणी से।।99।।

।। आचार्य संघ मुरैना में ।।

नगरी के सबई श्रावकों ने, यहाँ होली का दिन होने से।
कविताओं का आनंद लिया, मन की मुराद मिल जाने से।।
आचार्य प्रभु का महासंघ, अठरा मारच सन् बारह में।
साधु सन्तों के साथ सहर्ष, पधराया नगर मुरैना में।।100।।

।। आचार्य श्री विनिश्चयसागर जी से मिलन ।।

श्री विनिश्चयसागर मुनिराजा, तब मारग में मिल जाते हैं।
आचार्य प्रभु के दर्शन कर, अन्तस में अति हरषाते हैं।।
गुरुभ्राता से मिलन यहाँ, होता है अति अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, आनंद से कुशल समाचारी।।101।।

।। आचार्य संघ धौलपुर में ।।

आचार्य प्रभु संघों के संग, आ गये धौलपुर नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हर्षाये मन गगरी में।।
श्री विरागसिन्धु आचार्य प्रभु, चर्या करके संघ के संग में।
श्री चाँदनपुर की ओर बड़े, बाईस मार्च सन् बारह में।।102।।

।। आचार्य विमर्शसागर आगरा में ।।

श्री विमर्शसिन्धु आचार्य गुरु, संघस्थ साधुओं के संग में।
आगरा नगरी की ओर बढ़े, ईर्यापथ को धरके चित में।।
मधुनगर से होकर संघ, आ गया आगरा नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हर्षाये मन गगरी में।।103।।

इस नगरी के गणमान्यों ने, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, यमुना से निर्मल जल लाके।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुसंघ को सब लेके पहुँचे, छीपीटोला जिनमन्दिर में।।104।।

।। महावीर जयंती आगरा में ।।

महावीरजयंती समारोह, अप्रैल पाँच सन् बारह में।
अति धूमधाम से मना यहाँ, आचार्यसंघ के सान्निध्य में।।
एक आनंद यात्रा निकली थी, तब छीपीटोला मन्दिर से।
हरी पर्वत पर पहुँची थी, वह यात्रा अति ही आनंद से।।105।।

श्री वीरप्रभु की प्रतिमा को, बैठाकर स्वर्णमयीरथ में।
हरी पर्वत पर पहुँची यात्रा, लक्ष्याधिक जनता के संग में।।
हरी पर्वत के सब जैनों ने, महावीर प्रभु की यात्रा की।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इस यात्रा की अगवानी की।।106।।

।। आचार्य सुन्दरसागर जी से मिलन ।।

अभिषेक और पूजन कीनी, यहाँ ही भक्तों ने अंतरंग से।
महावीर प्रभु जिनराजा की, अति प्रासुक आठों द्रव्यों से।।
आचार्य विमर्शसागर जी का, सुन्दरसागर आचारज से।
वात्सल्य मिलन भी हुआ यहाँ, आनंदमयी शुभ भावों से।।107।।

दूजे दिन श्री आचार्य प्रवर, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
तब राजस्थानी धरती को, पद कमलों से महकाते हैं।।
ये बारह कलश हुए पूरे, श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ के।
अड़तीस वर्षों की उम्मर के, सोलह वर्षों के संयम के।।108।।

।। इति बारहवाँ कलश ।।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

तेहरवाँ कलश

।। मंगलाचरण ।।

बन चक्रवर्ती इस दुनिया में, पाया जिन चक्र सुदर्शन को।
नव निधियाँ भी पाके जिनने, पाये प्रिय चौदह रतनों को।।
छह खण्डों के प्रिय वैभव संग, अनगिनत सैन्यबल था साथी।
थे कोटि अठारह महा अश्व, लख चौरासी जिन के हाथी।।1।।

बत्तीस सहस्र राजा जिनको, नित प्रति ही शीष झुकाते थे।
जिनके वैभव को लख करके, इन्द्रादिक भी शरमाते थे।।
यहाँ शची अप्सरा सम जिनकी, थी सहस्र छियानवे महारानी।
इतना भारी वैभव पाकर, वह रहे श्रेष्ठ सम्यग्ज्ञानी।।2।।

जिनको यहाँ वस्त्र उतरते ही, हो जाता केवल ज्ञान परम।
उन श्री भरत चक्रेश्वर को, हम शीष झुकाते हैं हरदम।।
श्री बाहुबली को नमन यहाँ जग को असार जिनने जाना।
यहाँ पुत्र मित्र बाँधव भाई, सबही को इनने पहिचाना।।3।।

जो चक्रवर्ती को जीत महज, वह वैभव तज देते छिन में।
उनके ऊपर बेलें चढ़ गईं, बामी बन गईं उनके तन में।।
उनकी सत् त्याग तपस्या को, हम शीष झुकाते हैं अपना।
इस महाकाव्य के लिखने का, पूरा करने मन का सपना।।4।।

।। आचार्य संघ भरतपुर में ।।

अब परम शारदा माता के, चरणों में शीष झुका करके।
तेरहवाँ कलश शुरू करते, कथानायक को चित में धरके।।
आचार्य विमर्शसागर स्वामी, संघस्थ साधुओं के संग में।
केशरिया ध्वज फहराने को, आ गये भरतपुर नगरी में।।5।।

यहाँ देहली पब्लिक शाला में, आचार्य प्रवर रुक जाते हैं।
शाला के शिक्षक छात्रों संग, अगवानी कर हर्षाते हैं।।
यहाँ सभी छात्रों ने मिलकर, आचार्य प्रभु के स्वागत में।
एक गीत सुरीला गाया था, अति हर्षाके अपने उर में।।6।।

यहाँ के प्राचार्य महोदय ने, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, स्टॉप सहित अति हरषाके।।
फिर सभी शिक्षकों ने मिलके, आचार्य प्रवर महाराजा की।
अपने अंतरंग के भावों से, घृत के दीपों से आरती की।।7।।

प्राचार्य महोदय तभी यहाँ, श्री गुरुवर से यह कहते हैं।
इस विद्यालय के संचालक, देहली नगरी में रहते हैं।।
गुरुदेव यहाँ पधराये हैं, जब हमने उनको बतलाया।
ये समाचार सुनके उनका, अंतरंग भी भारी हरषाया।।8।।

अति भव्य व्यवस्था भी करना, यह बोला है उनने हमसे।
अगली मंजिल तक भिजवाना, उनको तुम कोई वाहन से।।
आचार्य प्रभु तब कहते हैं, नहीं कोई जरूरत है इसकी।
जिन सन्त सदा पैदल चलते, यह आज्ञा है जिन आगम की।।9।।

।। आचार्यश्री का आशीर्वाद ।।

आचार्य प्रवर ने तभी यहाँ, उस विद्यालय के मालिक को।
आशीर्वाद दे दिया सहर्ष, उसकी पावन मानवता को।।
नवनिर्मित एक भवन का भी, इस विद्यालय के परिसर में।
उद्घाटन भी हो गया तभी, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।10।।

।। पाड़ली ग्राम में गुरुसंघ ।।

आचार्य प्रभु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुकके, अध्यात्म सुधा बरसाते हैं।।
दौसा नगरी से चल करके, गुरु ग्राम पाड़ली पधराये।
यहाँ ब्रह्मकुमारी आश्रम के, कुछ भ्राता दर्शन को आये।।11।।

।। एक मास्टर के वेवाक प्रश्न ।।

उनमें से एक शिक्षक बन्धु, आचार्य प्रवर से कहते हैं।
हो पूरी तरह वयस्क आप, फिर भी क्यों नंगे रहते हैं।।
क्या बहु बेटियों के संमुख, कोई लाज नहीं आती तुमको।
यह कैसा धर्म पालते हो, ये समझ नहीं आता हमको।।12।।

।। सवाल अरु सटीक उत्तर ।।

आचार्य प्रवर को थी तलाश, जिस भटकी हुई आत्मा की।
वह आज सामने आय गई, लेकर के झड़ी सवालों की।।
आचार्य प्रभु कहते उससे, यह यथा जात है रूप विमल।
ज्यों जन्म समय बालक होते, वह रूप हमारा है निर्मल।।13।।

।। एक मिथ्यादृष्टि को गुरु की शिक्षा ।।

जिनके हैं भाव विकारमयी, वह वस्त्र लपेटे ही रहते।
अविकारी जो होवत मन से, उनको नहीं वस्त्र रुचा करते।।
शिशु ने कभी वस्त्र नहीं माँगा, अपना पावन तन ढकने को।
क्योंकि विकार नहीं उसमें, वो सत् संदेश मिला हमको।।14।।

यहाँ सभी विकारी मनवाले, शिशुओं में आदत डालत हैं।
कपड़ों को यहाँ पहिनने की, यह कामी जन सब चाहत है।।
ये बात समझ में नहीं आई, उस शिक्षक के पापी मन में।
वह कहता माता बहिनों को, आपत्ति नहीं होवत इसमें।।15।।

।। उदाहरण गाँधारी दुर्योधन का ।।

तब यहाँ पिता की तरह उसे, आचार्य प्रवर समझाते हैं।
दुर्योधन अरु गाँधारी का, सत् किस्सा सहर्ष सुनाते हैं।।
जब समर भूमि में गाँधारी, सुत युद्ध हारने लगता हैं।
तब घर आके वह माता से, अपनी बीती सब कहता है।।16।।

अपने पुण्यों की ताकत से, गाँधारी ने अपने सुत को।
बिल्कुल ही नग्न बुलाया था, यह वज्र शरीर बनाने को।।
कोई पुत्र शिशु या हो जवान, उसके नंगे तनके अन्दर।
माँ कभी विकार नहीं लखती, वो सदा विकास लखे सुन्दर।।17।।

वहाँ बैठे सब श्रावक बंधु, गुरु की वाणी सुनके चित से।
कुछ बात समझ में आई है, यह पूछत है उस शिक्षक से।।
श्री गुरु साक्षात् दिवाकर है, सत् राह दिखाते हैं सबको।
तेरे शुभ कर्म उदय आये, जो दर्शन लाभ मिला तुझको।।18।।

अब पूछे वह गुरुराजा से, ब्रह्मचर्य और नंगेपन में।
क्या अन्तर है समझा दीजे, यह ही भ्रम है मेरे मन में।।
मैंने अबतक इतना जाना, ब्रह्मचर्य भाव है आतम का।
सो नित आतम का ध्यान करो, सच्चा मकसद है जीवन का।।19।।

पर नग्न सदा ही रहने से, ब्रह्मचर्य रूप कैसे बनता।
पशुपक्षी सभी नग्न रहते, ब्रह्मचर्य उन्हों में भी रहता।।
मेरे आश्रम में पति पत्नि, सब ब्रह्मचर्य को पालत हैं।
पर रात्रि में वह पति पत्नि, इक ही बिस्तर में सोवत हैं।।20।।

ब्रह्मचर्य रूप का मेल क्या, हे स्वामी यहाँ नंगेपन से।
यह बात हमें समझा दीजे, भ्रम मिट जावे मेरे मन से।।
आचार्य प्रभु अब सोचत हैं, यह आतम तो कई जन्मों से।
यहाँ अंधकार में डूबी है, बाहर लाना मुश्किल उससे।।21।।

फिर भी कर्तव्य निभाना है, सो समझावेंगे हम इसको।
भूलों को सत्पथ बतलाना, शुभ कार्य बताया है सबको।।
आचार्य प्रभु उस मास्टर को, आतम स्वरूप बतलाते हैं।
सच्चे ब्रह्मचर्य की महिमा में, उस भटके को समझाते हैं।।22।।

मास्टर से कहते गुरुदेव, जबतक स्त्री का त्याग नहीं।
तब तक ब्रह्मचर्य उपलब्धि, आतम में होवत शुद्ध नहीं।।
जब निर्विकार हो वस्त्रों में, तब आवश्यकता क्या वस्त्रों की।
दुहरा चरित्र नहीं चलता, उपलब्धि में ब्रह्म आतम की।।23।।

यहाँ एक दिगम्बर जैन संत, सड़कों पर नग्न चला करता।
उसके ब्रह्मचर्य में है इतनी, अति उत्तम श्रेष्ठ सही क्षमता।।
क्या आप नग्न होके तन से, एक घंटा कोई चौराहे पर।
संकोच बिना रह सकते हैं, जनता के बीच खड़े होकर।।24।।

उस हालत में तुमरी पत्नि, यदि उसी वक्त आ जाय वहाँ।
तब दोनों के क्या भाव बनें, ये बतलादो उस वक्त वहाँ।।
वह आँखें बंद करेगी वहाँ, कुछ आप छिपा लोगे कर से।
बस यही वासना कहलाती, इसको जानों अपने उर से।।25।।

ब्रह्मचर्य होयगा आतम में, तब ही नग्नत्व सुहावेगा।
वह काम वासना से उठके, सत् ब्रह्म रूप कहलावेगा।।
आचार्य प्रवर की वार्ता सुन, गुरु भक्त वहाँ जयकारों से।
धरती आकाश गुँजाते हैं, सत् वाह वाह के नारों से।।26।।

।। गलती स्वीकारी शिक्षक ने।।

अब मास्टर साहब कहते हैं, चरणों में शीष झुका गुरु से।
अंधकार हमारा दूर किया, अपने पावन ज्ञानामृत से।।
यह अहंकार का दुर्ग मेरा, यहाँ चूर किया तुमने क्षण में।
हम चरण आपके वन्दत है, अपनी गलती धरके चित में।।27।।

।। चूलगिरि में गुरु संघ ।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, संघस्थ साधुओं के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे, ईर्यापथ को धरके चित में।।
अप्रैल माह की चौदहवीं, तिथि में ही श्री आचार्य प्रवर।
सन् बारह में पधराये थे, श्री चूलगिरि के पर्वत पर।।28।।

।। गुरु के चरणों में गुरु संघ ।।

कर महा वन्दना पर्वत की, यहाँ से भी कदम बढ़ा करके।
जयपुर में स्थित जग्गा की, बावड़ी में पहुँचे हरषाके।।
यहाँ विमर्शसिन्धु मुनिनाथा ने, आचार्य विरागसागर जी के।
चरणन में शीष झुकाया था, परिक्रमा तीन लगा करके।।29।।

युग प्रतिक्रमण का प्रोग्राम, था यहाँ भवानी निकेतन में।
आचार्य गुरु के सबई शिष्य, तब आये इस आयोजन में।।
इस महाकाव्य का लेखक भी, इस आयोजन में आया था।
इस महाकार्य को देख यहाँ, अंतस में अति हरषाया था।।30।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, अपने ही पूज्य गुरुवर से।
देवागम का स्तोत्र परम, अध्ययन कीना यहाँ आनंद से।।
यहाँ विजयनगर के भक्तों ने, आचार्य विमर्शसागर जी से।
सन् बारह के चऊमासे की, विनती की अंतरंग भावों से।।31।।

आचार्य प्रभु तब कहते हैं, उन विजयनगर के भक्तों से।
सन् बारह के चऊमासे की, आज्ञा लो हमरे गुरुवर से।।
आचार्य विरागसागर जी के, उन भक्तों ने ढिंग जाकर के।
श्री विजयनगर चौमासे की, अनुमति ले ली अति हर्षाके।।32।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, संघस्थ साधुओं के संग में।
गुरुवर की पावन आज्ञा से, तेरह मई को सन् बारह में।।
जयपुर के कई मुहालों में, जाकर के अंतरंग भावों से।
जिनराजों के दर्शन कीने, भक्तों के अनुपम आग्रह से।।33।।

।। अतिशय क्षेत्र मौजमाबाद में ।।

आ गये मौजमाबाद गुरु, सन् बारह की अठरा मई में।
इस तीरथ के दर्शन कीने, संघस्थ साधुओं के संग में।।
तब पदमचन्द्र कोटा वाले, इस ही तीरथ के आँगन में।
भक्तामर विधान कराते हैं, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।34।।

।। मुनि देवेन्द्रसागर जी से मिलन ।।

चौबीस मई को गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
तब मारग में देवेन्द्रसागर, गुरुराजा को मिल जाते हैं।।
वात्सल्य मिलन के बाद वहाँ, रत्नत्रय की अति आनंद से।
हुई थी तब श्रेष्ठ समाचारी, ऋषियों में अंतरंग भावों से।।35।।

।। आचार्य संघ अजमेर में ।।

अब तीस मई को गुरुराजा, श्री मदनगंज से होकर के।
अजमेर नगर में पधराये, ईर्यापथ को चित में धरके।।
विज्ञानसिन्धु मुनिराजा ने, तब यहाँ श्रावकों के संग में।
अगवानी कीनी भव्य यहाँ, जाकर नगरी की सीमा में।।36।।

वात्सल्य मिलन यहाँ हुआ तभी, ऋषिराजों में आनंदकारी।
रत्नत्रय की भी हुई सहर्ष, अंतस से कुशल समाचारी।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को सब लेके आये, नसियाँ जी के जिन मन्दिर में।।37।।

नौ दिन तक श्री गुरुराजा ने, अपनी पावन मृदुवाणी से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, समतामयी अपने भावों से।।
पंडित श्री कुमुदचन्द्र सोनी, गुरुराजा के नित दर्शन को।
पत्नि बच्चों के साथ सहर्ष, आते थे प्रवचन सुनने को।।38।।

।। नशीराबाद में आचार्य संघ ।।

दसवें दिन श्री आचार्य प्रभु, यहाँ से भी कदम बढ़ा करके।
आ गये नशीराबाद सहर्ष, ईर्यापथ को चित में धरके।।
आचार्य ज्ञानसागर स्वामी, उन्नीस तिहत्तर के सन् में।
नश्वर काया को तज करके, बस गये जायके स्वर्गों में।।39।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, उनकी अति पूज्य समाधि के।
संघ के संग में दर्शन कीने, अंतरंग में भारी हरषाके।।
त्रय दिन के बाद गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कुछ ग्रामों नगरों में रुकके, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।40।।

।। विजयनगर में आचार्य संघ ।।

सत्रह तारीख रही वा दिन, जून माह सन् बारह की।
तब विजयनगर में हुई भव्य, अगवानी श्री गुरुराजा की।।
यहाँ भक्तों ने गुरुराजा के, पद कमलों का प्रक्षाल किया।
चरणों में शीष झुका करके, शुभ भावों से आशीष लिया।।41।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक उत्तम यात्रा के संग में।
आचार्य संघ को भक्त सहर्ष, प्रवेश कराते नगरी में।।
नगरी के सबई जैनियों ने, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, अंतरंग में भारी हरषाके।।42।।

आचार्य विमर्शसागर जी को, संघस्थ साधुओं के संग में।
अति आनंद से ठहराया था, चन्द्रप्रभ जैन वसतिका में।।
चन्द्रप्रभ शान्ति जिनायतन का, बाईस जून सन् बारह में।
यहाँ भव्य हुआ था शिलान्यास, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।43।।

।। 2012 का वर्षायोग विजयनगर में ।।

तब षाढ़ सुदी चौदस के दिन, श्री गुरुवर के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, यहाँ दो हजार बारह सन् का।।
राकेशकुमार चाँदमल को, यहाँ मुख्य कलश चौमासे का।
इस समारोह में आनंद से, सौभाग्य मिला स्थापन का।।44।।

श्री प्रभाचन्द्र बड़जात्या ने, स्थाप किया दूजा कलशा।
श्री रतनलाल कोठारी ने, स्थाप किया तीजा कलशा।।
श्री भँवर लाल जी बड़जात्या, चौथे कलशा का स्थापन।
अति आनंद से करवाते हैं, निजभाव बना करके पावन।।45।।

श्री मदनलाल गोधा ने भी, स्थापन पंचम कलशा का।
श्री जयकुमार ने किया यहाँ, स्थापन छठवें कलशा का।।
तब आस पास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
श्रावक जन आये हजारों में, गुरुवाणी चित में धरने को।।46।।

दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीराशासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, पूजन करके प्रभु वीरा की।।
प्रभु पारस का निर्वाण दिवस, पच्चीस जुलाई के दिन में।
अति धूमधाम से मना यहाँ, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।47।।

यहाँ हुए अनेकों धर्मकार्य, जो हुए अन्य चऊमासों में।
अति धूमधाम के साथ सभी, ऋषियों के पावन सान्निध्य में।।
संस्कार दिव्य प्रवचन माला, आचार्य प्रवर के श्री मुख से।
पाँच दिनी यहाँ हुई सहर्ष, बारह तारीख सितम्बर से।।48।।

भारत विकास परिषद् ने ये, गुरुराजा से आग्रह करके।
यह आयोजन करवाया था, परिसर में कृषि मंडी के।।
यहाँ पाँच दिना गुरुराजा ने, अपनी अमृतमयी वाणी से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, बचने को नित नये पापों से।।49।।

भ्रूण हत्या निरोध नशामुक्ति, अहिंसक जीवन जीने का।
सत्मार्ग यहाँ बतलाया था, उन्नत संस्कार विचारों का।।
हर रोज हजारों श्रोतागण, गुरुवर की वाणी सुनने को।
सब धरमों के मानव आये, अपनी उलझी सुलझाने को।।50।।

।। श्री गुरु को राष्ट्रयोगी अलंकरण ।।

अन्तिम दिन परिषद् वालों ने, आचार्य विमर्शसागर जी को।
राष्ट्रयोगी अलंकरण दीना, लखके श्री गुरु की प्रतिभा को।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, दसलक्षण के प्रिय पर्वों में।
दसधर्मों पर प्रवचन दीना आतम का हित धरके चित में।।51।।

यहाँ क्षमावाणी का समारोह, तब तीस सितम्बर के दिन में।
अति ही आनंद के साथ मना, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।
क्षमा धर्म नहीं एक दिन का, सब क्षमा धारिये जीवन में।
है क्षमा धर्म का मूल यही, ये कहें गुरु उद्बोधन में।।52।।

विमर्श जागृति मंच यहाँ, जन मन में जागृति लाने को।
बन गया गुरु के सान्निध्य में, आपस में टशन मिटाने को।।
पूजा का शिक्षण शिविर लगा, तारीख सात अक्टूबर से।
आचार्य प्रभु के सान्निध्य में, यहाँ पाँच दिनी अति आनंद से।।53।।

यहाँ क्षुल्लक पद की दीक्षायें, चौबीस अक्टूबर के दिन में।
आचार्य प्रवर के द्वारा हुई, दोय सहस्र बारह सन् में।।
श्री अजयभाई ब्रह्मचारी अरु, प्रकाश भाई ब्रह्मचारी की।
गुरुराजा के कर कमलों से, दीक्षायें हुईं क्षुल्लक पद की।।54।।

क्षुल्लक विजेयसागर तब, श्री अजय भाई ब्रह्मचारी का।
यहाँ नाम रखा गुरुराजा ने, निज आतम के हितकारी का।।
दूजे प्रकाश ब्रह्मचारी जी, विश्वाभसागर जी क्षुल्लक।
बन गये यहाँ दीक्षा लेकर, निज की आतम के संरक्षक।।55।।

दीक्षा देकर श्री गुरुवर ने, दोनों क्षुल्लक महाराजों को।
दे दिया कमंडल अरु पिच्छि, संयम पथ चलने वालों को।।
यहाँ क्षेत्र चंदेरी के श्रावक, श्री गुरुवर के ढिंग आये थे।
चरणों में शीष झुका उनने, अपने मन्तव्य बताये थे।।56।।

।। चंदेरी की स्वीकृति ।।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा समारोह, जनवरी माह सन् तेरह में।
हे नाथ आपके सान्निध्य की, अभिलाषा है हमरे चित में।।
वहाँ चलने की स्वीकृति देके, हे नाथ कृतार्थ करो हमको।
ये विनय हमारी चित धरके, उपकृत कीजे इस कारज को।।57।।

।। श्वेताम्बर साधु से मिलन ।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, भव्यों के भावों को लखकर।
स्वीकृति दे दी वहाँ आने की, अपने शिष्यों से चरचाकर।।
श्वेताम्बर साधु विजय मुनि, उन्तीस अक्टूबर के दिन में।
दर्शन करने गुरुराजा के, पधराये थे जिनमन्दिर में।।58।।

वात्सल्य मिलन के बाद यहाँ, इन दोनों ही ऋषिराजों में।
रत्नत्रय की चर्चाएँ हुईं, हर्षित होकर शुभ भावों में।।
श्री विजयमुनि ने तभी यहाँ, श्री गुरु की त्याग तपस्या की।
अपने अंतरंग के भावों से, अति भूरि-भूरि प्रशंसा की।।59।।

।। प्रवचन सेंटपॉल कॉलेज में ।।

सच्चा मुनित्व है गुरुवर में, हम हर सुविधा के भोगी हैं।
रत हैं गुरुश्रेष्ठ साधना में, हम नाम मात्र के योगी हैं।।
आचार्य विमर्शसागर जी के, यहाँ सेंटपॉल विद्यालय में।
प्रवचन हुए जीवनहित के, तारीख पाँच नवम्बर में।।60।।

बाहर सौ छात्र और शिक्षक, श्री गुरुवर की वाणी सुनके।
बन गये शुद्ध शाकाहारी, यहाँ माँस और मदिरा तजके।।
प्रिंसीपल फादर जी फ्रांसेस, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल यहाँ, करते हैं भारी हरषाके।।61।।

इक्कीसवाँ आचार्य पदारोहण, तारीख आठ नवम्बर में।
श्री गुरु के गुरु का मना यहाँ, श्री गुरु के पावन सान्निध्य में।।
आचार्य विरागसिन्धु के संग, आचार्य विमर्शसागर जी की।
तब धूमधाम से भक्तों ने, मनहर द्रव्यों से पूजन की।।62।।

।। वर्षायोग समापन ।।

प्रभुवीरा का निर्वाण दिवस, तेरह तारीख नवम्बर में।
अति ही आनंद से मना यहाँ, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।
उस ही दिन श्री गुरुराजा ने, यहाँ दो हजार बारह सन् के।
विधिपूर्वक ही चऊमासे का, निष्ठापन कीना हरषाके।।63।।

।। चालीसवाँ जन्मोत्सव ।।

चालीसवाँ जन्म महोत्सव भी, पन्द्रह तारीख नवम्बर में।
यहाँ मना गुरु महाराजा का, अति आनंद से बारह सन् में।।
इस समारोह में बाहर के, गणमान्य हजारों पधराये।
विनयांजलि दे गुरु चरणों में, अंतरंग में भारी हरषाये।।64।।

तब विज्ञों अरु गणमान्यों ने, संघस्थ यहाँ सब व्रतियों ने।
अति स्वस्थ रहें आचार्य प्रभु, यह श्रेष्ठ कामना की सबने।।
वृद्धिंगत होता रहे सतत, रत्नत्रय गुरु के जीवन में।
यह परम भावना भाई थी, गुरुराजा के संयमपथ में।।65।।

।। लेखक की भावांजलि ।।

हे परम आपके दर्शन को, मन नित ही मचला रहता है।
तुम कहीं रहो इस दुनिया में, मन साथ तुम्हारे रहता है।।
तन को तो भारी अड़चन है, मन तो निर्द्वंद हुआ करता।
रहता तन दूर सदा तुमसे, मन पास आपके ही रहता।।66।।

तुमने पुरुषारथ से स्वामी, इस तन को सदा नचाया है।
आतम की परम साधना में, तन मन को सदा लगाया है।।
हमरे स्वास्थ्यमयी होने से, इस तन ने हमें नचाया है।
इस जग के विषयी भोगों में, आतम को निरत फसाया है।।67।।

हे गुरुवर तुम्हें बधाई हो, हर जन्म दिवस के आने पर।
तुम रहो हजारों वर्षों तक, इस मुनिभेष में धरती पर।।
तुमरा रत्नत्रय बड़े नित्य, जो निज पर को गुणकारी है।
अति स्वस्थ रहे जीवन सारा, जो जग जन को हितकारी है।।68।।

हे विमर्श सिन्धु मुनिनाथ रहो, इस ही वसुधा पर सदा अमर।
लग जाय उमर सारी तुमको, जो बची हमारी अभी इधर।।
यह ज्ञान आपका नाम गुरु, यहाँ नित ही जपता रहता है।
तुम कहीं रहो इस दुनिया में, मन साथ तुम्हारे रहता है।।69।।

नगरी के सबई श्रावकों ने, गुरुराजा के जन्मोत्सव पर।
फल वितरित किये मरीजों को, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, आचार्य विमर्शसागर जी के।
घृत के दीपों से आरती की, गुरुराजा की पूजन करके।।70।।

।। पिच्छि परिवर्तन समारोह ।।

इक भव्य हुआ था आयोजन, अठरा तारीख नवम्बर में।
परिवर्तन गुरु की पिच्छि का, यहाँ ही महाराजा पैलेस में।।
तब आस पास के नगरों से, इस आयोजन के लखने को।
यहाँ श्रावक आये हजारों में, गुरुवाणी चित में धरने को।।71।।

इस समारोह के बाद गुरु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
तब नगरी के सारे श्रावक, अँखियों से जल बरसाते हैं।।
इस नगरी की सारी समाज, श्री गुरुवर के पहुँचाने को।
अगले पड़ाव तक जाती है, अंतस की प्यास बुझाने को।।72।।

वाराँ नगरी से होकर गुरु, बजरंग गढ़ में पधराये थे।
श्री शान्तिनाथ के दर्शन कर, अंतरंग में अति हरषाये थे।।
यहाँ शान्तिनाथ की मूरत है, अति ही सुन्दर खड़गासन में।
पाड़ाशाह द्वारा निर्मित, अठरा फुट की अवगाहन में।।73।।

।। अतिशय क्षेत्र चंदेरी में ।।

दर्शन करके आचार्य प्रभु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुककके, आगम की अलख जगाते हैं।।
हो करके गुना नगर से गुरु, आ गये चंदेरी नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हर्षाये मन गगरी में।।74।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुसंघ को लेकर आये थे, नगरी के प्रमुख जिनालय में।।
जिनमन्दिर जी के द्वारे पर, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, गणमान्यों ने अति हरषाके।।75।।

यहाँ की अतिशय युत चौबीसी अति ही प्राचीन मनोहर है।
पद्मासन मुद्रा में राजत, आगम की श्रेष्ठ धरोहर है।।
तीरथ में तीन जिनालय हैं, अति सुन्दर और मनोहारी।
नित यहाँ सैकड़ों आवत हैं, दर्शन करने को नरनारी।।76।।

।। शीतकालीन वाचना चंदेरी में ।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, एक आनंद यात्रा के संग में।
दर्शन किये सभी मन्दिरों के, हर्षित होकर भारी मन में।।
यहाँ शीतकालीन वाचना भी, गणमान्यों के अति आग्रह से।
पन्द्रह तारीख दिसम्बर से, हो गई शुरु गुरु के मुख से।।77।।

यहाँ रोज सुबह होता वाचन, श्री समयसार की गाथा का।
दोपहर समय में होता है, भगवती पूज्य आराधना का।।
श्री उदारसिन्धु उपझाया अरु, श्री वृषभसिन्धु मुनिराजा से।
वात्सल्य मिलन हो गया यहाँ, आनंदकारी शुभ भावों से।।78।।

।। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा चंदेरी में ।।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा हुई शुरू, जनवरी सत्ताईस के दिन में।
श्री आदिनाथ महाराजा की, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।
श्री जय निशांत ब्रह्मचारी ने, ये समारोह इस तीरथ में।
विधिपूर्वक ही करवाया था, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।79।।

।। थूबोन जी तीरथ में गुरुवर ।।

कुछ दिना बाद यहाँ भक्तों ने, श्री भक्तामर मंडल विधान।
गुरु सान्निध्य में करवाया था, सुख शान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।
फरवरी बीस में गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
थूबोन जी तीरथ में आकर, प्रभु दर्शन को रुक जाते हैं।।80।।

पच्चीस जिनालय बने यहाँ, अति सुन्दर और मनोहारी।
इनके दर्शन वन्दन करके, खुश हुए बहुत संयम धारी।।
यहाँ आदिनाथ की मूरत है, अति ही मनोज्ञ खड़गासन में।
अतिशयकारी है बेमिसाल, अट्ठाईस फुटी अवगाहन में।।81।।

।। आचार्य संघ शिवपुरी में ।।

यहाँ से चलके आचार्य प्रभु, ईसागढ़ नगरी से होकर।
शिवपुरी नगर में पधराये, ईर्यापथ को चित में धरकर।।
यहाँ सीमा पर गणमान्यों ने, आचार्य विमर्शसागर जी की।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, शुभ भावों से अगवानी की।।82।।

।। श्री सिद्धचक्र मंडल विधान ।।

श्री सिद्धचक्रमंडल विधान, अष्टाह्निका के प्रिय पर्वों में।
अति धूमधाम से हुआ यहाँ, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।
पश्चात् गुरु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
पनिहार और नगरों में भी, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।83।।

।। आचार्य संघ झाँसी में ।।

यहाँ से चलके आचार्य प्रभु, झाँसी नगरी में पधराये।
इस नगरी के सारे श्रावक, अगवानी कर अति हरषाये।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को लेके गये सभी, नगरी के मुख्य जिनालय में।।84।।

यहाँ ग्रीष्मकालीन वाचना भी, गणमान्यों के अति आग्रह से।
हो गई शुरू जिनमन्दिर में, अष्टपाहुड की गुरु के मुख से।।
तब डेढ़ माह तक रोजाना, विस्तार सहित अध्यातम की।
गुरु मुख से वरषा होती थी, सम्पूर्ण आत्मा के हित की।।85।।

।। अतिशयक्षेत्र करगुवाँ में ।।

पश्चात् यहाँ पर होता है, चौसठ ऋद्धि मंडलविधान।
आचार्य प्रवर के सान्निध्य में, सुख शान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।
आचार्य प्रभु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
आकर के क्षेत्र करगुवाँ में, प्रभु दर्शन कर हरषाते हैं।।86।।

यहाँ पारस प्रभु की मूरत है, अतिशयकारी पद्मासन में।
भावों से दर्शन करने पर, कट जाते पाप सभी छिन में।।
यहाँ से भी कदम बढ़ाके गुरु, श्री सिद्धक्षेत्र सोनागिर में।
चन्दाप्रभु के दर्शन करके, अति हरषाये अपने उर में।।87।।

।। आचार्यसंघ भिण्ड में ।।

ग्वालियर से होके गुरुराजा, नित आगे कदम बढ़ाते हैं।
गुरु भिण्ड नगर में आकर के, सीमा पर ही रुक जाते हैं।।
यहाँ खड़े हजारों नर नारी, केशरिया ध्वज लेके कर में।
गुरु संघ की करने अगवानी, हर्षित होके भारी मन में।।88।।

यहाँ नगरी के गणमान्यों ने, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, चंबल से निर्मल जल लाके।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा संग में।
गुरु संघ को लेके गये सभी, यहाँ के परेड जिनालय में।।89।।

था चऊमासे का समय निकट, सो भक्त सभी गुरुराजा से।
चऊमासा यहाँ ही करने की, विनती करते हैं अंतस से।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, भव्यों के भावों को लखकर।
स्वीकृति दे दी चऊमासे की, अपने शिष्यों से चरचा कर।।90।।

।। 2013 का वर्षायोग भिण्ड में ।।

तब षाढ़ सुदी चौदस को ही, श्री गुरुवर के चऊमासा का।
कलशा होवत है स्थापित, दोय सहस्र तेरह सन् का।।
यहाँ आस पास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
श्रावक जन आये हजारों में, गुरु मूरत चित में धरने को।।91।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, प्रयोजन भी चऊमासे का।
समझाया था श्रावक जन को, इसमें भी है हित आतम का।।
जिस नगरी में ये चऊमासा, मुनिराजा चित से करते हैं।
वहाँ के श्रावक संतों के संग, संयम भी चित में धरते हैं।।92।।

दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीराशासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, सत् ज्योति जला अहिंसा की।।
तब हुए अनेकों धर्मकार्य, इस पावनतम चऊमासे में।
अति धूमधाम के साथ सभी, गुरुराजा के निर्देशन में।।93।।

आचार्य प्रवर के सान्निध्य में, श्री शान्तिनाथ मंडल विधान।
अति ही आनंद से हुआ यहाँ, सुख शान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।
भक्तामर शिक्षण शिविर यहाँ, लगा अगस्त के महीने में।
नगरी के सारे श्रावक जन, शामिल भी होते हैं जिसमें।।94।।

जब श्री गुरु मुख से कहते हैं, श्लोक यहाँ भक्तामर के।
तब आनंदित हो जाते हैं, अंतस मन सुनने वालों के।।
लगता था जैसे झर रहे हों, यहाँ पुष्प सुगंधित वृक्षों से।
चहुँ ओर बरसाता था आनंद, सुनने वालों के अंतरंग से।।95।।

मुकुट सप्तमी के दिन में, निर्वाण दिवस पारस प्रभु का।
भक्तों ने सहर्ष मनाया था, सान्निध्य पाकर गुरुराजा का।।
आजादी का था पर्व परम, पन्द्रह अगस्त सन् तेरह में।
रक्षाबंधन का महापर्व, यहाँ मना गुरु के सान्निध्य में।।96।।

नगरी के सभी श्रावकों ने, दसलक्षण के प्रिय पर्वों में।
संयम की पूर्ण साधना की, गुरुराजा के निर्देशन में।।
दस दिन तक श्री मुनिनाथा ने, अपनी पावनतम वाणी से।
दस धर्मों पर व्याख्यान दिया, नित ही रहने को संयम से।।97।।

।। क्षमावाणी पर्व समारोह ।।

क्षमापर्व पर परम गुरु, श्रावक जन को समझाते हैं।
स्व-पर को क्षमा करते हैं जो, वह क्षमावान कहलाते हैं।।
आगे भी समझाया गुरु ने, है क्षमारूप जिन का जीवन।
उनको यहाँ बड़ी सरलता से, मिल जाते मुक्ति के साधन।।98।।

जिनने यहाँ जग के जीवों से, नहीं बैर रखा कोई मन में।
बस क्षमाभाव ही रहे सदा, अंतरंग के भावों में जिनमें।।
वो मानव ही निज आतम का, कल्याण सदा कर सकते हैं।
ऐसा गुरुवर ने समझाया, आगम में यह ही कहते हैं।।99।।

।। अहिंसा रैली दो अक्टूबर में ।।

श्री गुरु की वाणी सुनकर के, जनता के आँसू निकल पड़े।
निज बैर मिटाने रिपुओं से, सब ही लोगों के कदम बढ़े।।
गाँधी की जन्म जयंती पर, दो अक्टूबर को नगरी में।
सत् धर्म अहिंसामयी रैली, निकली यहाँ गुरु के सान्निध्य में।।100।।

।। श्री वीर निर्वाण दिवस-दीपावली ।।

ऋषिराजों के यहाँ रहने से, मेला सा सदा लगा रहता।
हर रात दिवाली सी लगती, दिन सावन के जैसा लगता।।
प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक बदी अमावस में।
अति धूमधाम से मनता है, ऋषियों के पावन सान्निध्य में।।101।।

।। मुनिश्री सुरत्नसागर से मिलन ।।

उस ही दिन श्री गुरुराजा ने, विधिपूर्वक ही चऊमासे का।
निष्ठापन कीना आनंद से, यहाँ दो हजार तेरह सन् का।।
मुनिश्री सुरत्नसागर जी तब, यहाँ संघ सहित पधराये थे।
गुरुदेव श्रावकों के संग में, अगवानी कर हरषाये थे।।102।।

वात्सल्य मिलन यहाँ सन्तों का, तब हुआ भव्य अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रयी की हुई श्रेष्ठ, अंतस् से कुशल समाचारी।।
मुनिश्री सुरत्नसागर जी ने, आचार्य विमर्शसागर जी की।
यहाँ बहुत प्रशंसा कीनी थी, चारित्र और वचनामृत की।।103।।

आचार्य विमर्शसागर जी के, सन्तों का माह दिसम्बर में।
होवत पिच्छिका परिवर्तन, साहर्ष एक आयोजन में।।
इस आयोजन में गुरुराजा, नई पिच्छि लेकर, भव्यों को।
जूनी पिच्छि यहाँ पर देते, संयम का पथ अपनाने को।।104।।

।। भिण्ड नगर से विहार ।।

गुरुराजा माह नवम्बर में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
तब नगरी के गुरुभक्त सभी, अँखियों से जल बरसाते हैं।।
जैसी बिटिया की विदा सदा, माँ करती है आँसू भरकर।
वैसी ही विदा यहाँ पर की, गुरुसंघ की भक्तों ने रोकर।।105।।

तब गुरुवर ने समझाया था, मुनिसंघ आते जाते रहते।
उनके पावन उपदेशों को, विरले ही जन चित में धरते।।
इन पाँच महीनों में हमने, जो ज्ञानामृत बरसाया है।
भवसागर पार करेगा वो, जिसके यह हृदय समाया है।।106।।

मेरा संदेश हृदय धरना, मेरी होगी सत् यादगार।
मेरा प्रिय भक्त वहीं होगा, जो होगा खुद का मददगार।।
हम मुनि रूप में ही केवल,जा सकते हैं इस नगरी से।
जो धर्म यहाँ बरसाया है, हृदय में रखना सदा उसे।।107।।

अब नगरी के सारे श्रावक, श्री गुरुवर के पहुँचाने को।
अगले पड़ाव तक जाते हैं, अंतरंग की प्यास बुझाने को।।
ये तेरह कलश हुए पूरे, श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ के।
चालीस वर्षों की उम्मर के, सोलह वरषों के संयम के।।108।।

।। इति तेरहवाँ कलश ।।

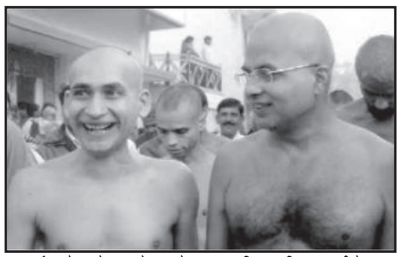

आचार्य पदारोहण शोभायात्रा के समय ऐसा क्या कह दिया गुरु विरागसागर जी ने कि शिष्य मुनि श्री विमर्शसागर जी खिलखिलाकर हँस पड़े।

आचार्य श्री को सूरिगच्छाचार्य प्रशस्ति पत्र भेंट करते हुए मुनि श्री विमर्शसागर जी, मुनि श्री विनम्रसागर जी, आर्यिका विशिष्टश्री, आर्यिका सत्यमति, क्षुल्लक विरंजनसागर, क्षुल्लक अतुल्यसागर एवं सुरेश सिंघवी (बाँसवाड़ा) एवं मुनिसंघ

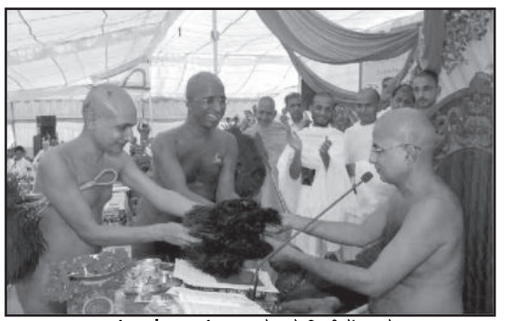

आचार्य पद संस्कार पूर्व पूज्य गुरुदेव को पिच्छी भेंट करते हुए मुनि श्री विमर्शसागर जी व मुनि श्री विनम्रसागर जी

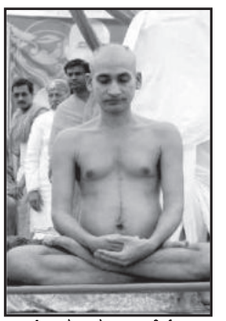

आचार्य पदारोहण के समय तीर्थंकर मुद्रा में विराजित मुनिश्री विमर्शसागर जी

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

चौदहवाँ कलश

।। मंगलाचरण ।।

है नमन यहाँ सब सिद्धों को, जिनने वसु कर्म हने सारे।
यहाँ नमन मेरा उन सन्तों को, जिनने आगम चित में धारे।।
जग में जिनमन्दिर हैं जितने, जिनबिम्ब रखे जितने उनमें।
उनको करता हूँ नमस्कार, स्थिरता लाने को मन में।।1।।

बीसों क्षेत्रों के विहरमान, उन सबको याद हृदय धरके।
पाँचों मेरु दसधर्म सहित, सबका वन्दन अर्चन करके।।
सोलहकारण अरु रत्नत्रय, धारणकर अंतस भावों में।
नंदीश्वर का चिंतन करते, सत् समता लाने को निज में।।2।।

सम्मेद शिखर के ही समान हैं सिद्ध क्षेत्र जहाँ जितने।
उन सबको शीष झुकाता हूँ, नित आतम में हिम्मत रखने।।
अब सरस्वती का वन्दन कर, हृदय में सहर्ष सजाता हूँ।
यह कारज सफल बनाने को, अति निर्मल भाव बनाता हूँ।।3।।

अब इसी काव्य के नायक को, भावों से नमन यहाँ करके।
उनको ही हृदय बिठाता हूँ, उनकी चर्या चित में धरके।।
बिन्दु से सिन्धु बनने की, यह अनुपम सत्य निशानी है।
बालापन में घर द्वार तजा, उसकी यह श्रेष्ठ कहानी है।।4।।

।। एटा नगरी में गुरुसंघ ।।

आचार्य विमर्शसागर जी के, चरणों में शीष झुका करके।
चौदहवाँ कलश शुरू करते, गुरु का जीवन चित में धरके।।
होकर गुरु नगर इटावा से, एटा डिस्ट्रिक में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।5।।

यहाँ शीतकालीन वाचना भी, पन्द्रह तारीख दिसम्बर से।
श्रेणिक चारित्र अष्टपाहुड़ की, आचार्य प्रवर के श्री मुख से।।
पन्द्रह तारीख जनवरी में, यहाँ से भी कदम बढ़ा करके।
फिरोजाबाद नगर आये, ईर्यापथ को चित में धरके।।6।।

यहाँ शीतकालीन वाचना हुई, फरवरी माह सन् चौदस में।
सिद्धांतसार अष्टपाहुड की, श्री सेठ छदामी मन्दिर में।।
आचार्य प्रवर के सान्निध्य में, श्री भक्तामर मंडल विधान।
अति ही आनंद से हुआ यहाँ, सुख शान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।7।।

।। सन्तों का मिलन फिरोजाबाद में ।।

श्री तरुणसिन्धु मुनिराज अरु, श्री अमितसिन्धु मुनिराजा से।
वात्सल्य मिलन यहाँ होता है, गुरुराजा का अति आनंद से।।
यहाँ हुई नमोस्तु ऋषियों में, शुभ भावों से अतिशयकारी।
फिर रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, अंतस से कुशल समाचारी।।18।।

।। विहार फिरोजाबाद से ।।

पश्चात् वाचना के यहाँ से, गुरुराजा कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुकके, आगम की अलख जगाते हैं।।
श्री गुरु का रुकना कार्य नहीं, नित ही नई राह चला करते।
मुक्ति मारग है सुखद दाह, उसपे ही गुरु सदा चलते।।9।।

गुरु ही इक ऐसे मुनिश्रेष्ठ, जिनका सब वन्दन करते हैं।
क्या श्वेतांबर क्या सोनगढ़ी, सबही चरणों चित धरते हैं।।
योगी नित रमते हैं, जैसे बहता रहता पानी।
दोनों ही बहते रहने से, उज्जवल रहती है जिंदगानी।।10।।

योगी करते हैं नित विहार, मोहादिक से बच रहने को।
निर्मल करने अपनी आतम, दुनियादारी से बचने को।।
योगी अरु पानी का यहाँ पर, रमने अरु बहते रहने में।
जीवन भी निर्मल रहता है, अपना ही मारग चलने में।।11।।

।। योगी के सभी कार्य श्रेष्ठ ।।

नहीं मित्र रहे कोई योगी का, दुश्मन भी कोई नहीं रहता।
इस जग के सारे जीवों में, एक जैसा नित रिस्ता रहता।।
योगी जन जहाँ पर जाते हैं, सब दोस्त वहाँ पर हो जाते।
वहाँ से आगे बढ़ जाने पर, योगी जन भूल उन्हें जाते।।12।।

योगी की राह नहीं रहती, अनजानी राह चला करते।
सारी दुनिया से अलग यहाँ, मुक्ति की राह हृदय धरते।।
योगी का भवन नहीं रहता, जहाँ चाहा वहीं ठहरते हैं।
योगी की दुनिया नहीं रहती, दुनिया में ही वह रहते हैं।।13।।

पानी कोई राह नहीं चलता, पानी खुद राह बना लेता।
रमता योगी बहता पानी, अपनी राहें खुद चुन लेता।।
योगी का कोई मकसद नहीं, मकसद है केवल सिद्धालय।
योगी का कोई सदन नहीं, योगी का मन ही है आलय।।14।।

योगी सिद्धांतों पर चलकर, आतम का हित उपजाते हैं।
नहीं राग द्वेष होता इनमें, समता ही हृदय बसाते हैं।।
होता नहीं अंत सरलता का, जिनके प्रज्ञामयी अंतस में।
स्व–पर का हित उपजाते हैं, वैराग्य भाव धरके चित में।।15।।

।। महाराजा हैं संयम पथ में ।।

आचार्य विमर्शसागर जी के, चरणों में शीष झुका करके।
उनके गौरव को लिखता हूँ, उनकी आभा चित में धरके।।
वात्सल्य भाव स्नेह साथ, प्रवाहमान होवत जिनमें।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, महाराजा है संयम पथ में।।16।।

।। संकट मोचन कहलाते हैं ।।

व्यक्तित्व यहाँ जिनका ऐसा, जिसमें जादू दिखलाता है।
आकर्षण त्याग समर्पण भी, जिनका उज्ज्वल कहलाता है।।
जिनकी मुद्रा के दर्शन से, मुरझाये मन खिल जाते हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा श्री, संकट मोचन कहलाते हैं।।17।।

इस युग में बड़ी विसंगतियाँ, मानव मन को उलझाती हैं।
योगी नहीं बच पाता इनसे, इनका भी ध्यान डिगाती हैं।।
ख्याति से रहके दूर सदा, जो सकल व्रतों को पालत हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथ श्री, समता हृदय में धारत हैं।।18।।

जिनने जाना जग है असार, आश्रव के संग में बन्धन से।
वह भी नहीं त्याग सके इसको, जनता के साथ विचरने से।।
जग वैभव झूठा जान यहाँ, जिनने त्यागा बालापन में।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, रहते हैं अपनी आतम में।।19।।

स्व–पर कल्याण सदा करना, जिनने उद्देश्य बनाया है।
विसंगतियों में भी रहकर, आतम का हित उपजाया है।।
सब जैन अजैनों में जिनने, आगम का बिगुल बजाया है।
उन विमर्शसिन्धु मुनिनाथा ने, दुख में भी सुख उपजाया है।।20।।

चारित्र संवर्धक होकर के, अनुशासित रहते भावों में।
अनुशासित रहना सिखलाते, शिष्यन को भी आतम हित में।।
जो स्वयं ढले अनुशासन में, शिष्यन को भी ढाला उसमें।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, अनुशासक हैं निज जीवन में।।21।।

वैराग्य भाव दृढ़ करने को, स्वाध्याय परम जो करते हैं।
चर्या अति श्रेष्ठ बनाने को, आगमानुकूल नित चलते हैं।।
उपयोग समय का भावों से, जो धर्म ध्यान में करते हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथ श्री, पर हित भी चित में धरते हैं।।22।।

अभिरुचि ज्ञान में होने पर, श्रुत सेवा में रत रहते हैं।
आगम का अध्ययन करने से तत्त्वों का रहस्य समझते हैं।।
जिन आगम की पुष्टी करके, नित भ्रांति दूर किया करते।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, आगम आधार हृदय धरते।।23।।

बेजार पना बढ़ रहा यहाँ, जिस तरह नित्य संबंधों में।
आत्मीयता चित घट रही यहाँ, संवेदन शून्य मनुष्यों में।।
ऐसे निराश समय में भी, जिनके मुख से अमृत बरसे।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, जिनकी वाणी को जग तरसे।।24।।

।। जन-जन के संत श्री गुरुवर ।।

अधिकांश धारणा बनी यहाँ, कई लोग दिगम्बर साधु को।
जैनों का सन्त समझते हैं, ऐसा लगता उनके मन को।।
कुछ सन्त यहाँ पर ऐसे हैं, जो सबको हृदय बिठाते हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा श्री, जन जन के सन्त कहाते हैं।।25।।

सूरज की किरणों के समान, आचार्य प्रभु के दिव्य वचन।
सागर की गहराई जैसे, मन से सुनते हैं सभी सजन।।
नहीं जात पांत का भेद कोई, सब जन आते गुरु दर्शन को।
जन संत इसी से कहते हैं, आचार्य विमर्शसागर जी को।।26।।

साकार दया की प्रतिमा भी जो जन मानुष के हृदय में।
दुखयारों के हित में भी यहाँ, करुणा बहती जिनके उर में।।
जो स्वयं कष्ट सहन करके, जन-जन को सुखी बनाते हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथ श्री, परमार्थिकता दिखलाते हैं।।27।।

।। बिन्दु ही बनी महासिन्धु ।।

जीवन होवत है प्रयोगशाला, जहाँ सुख दुख भी आते जाते।
उत्थान पतन जहाँ होता है, नहीं हर्ष विषाद वहाँ लाते।।
जो जन यहाँ झंझावातों में, भावों से अटल रहा करते।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, समता ही सदा हृदय धरते।।28।।

जो सूर्य किरण हर आँगन में, जाने में नहीं सकुचा करती।
उसी तरह वात्सल्यता भी, जनता में भेद नहीं करती।।
जो महल और झोपड़ियों में, आशीष सहर्ष बरसाते हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथ सदा, वात्सल्य की गंग बहाते हैं।।29।।

श्री विमर्शसिन्धु आचार्य प्रभु, अपने संघ को लेके संग में।
नित ही आगे बढ़ते रहते, ईर्यापथ को धरके चित में।।
जिनधर्म पताका लेके गुरु, भारत के सब ही नगरों में।
अंतस में अति हरषा करके, फहराते हैं स्व-पर हित में।।30।।

रुकने का कार्य नहीं गुरु का, नित ही विहार किया करते।
कुछ ग्रामों नगरों में जाकर, नित की चर्या चित में धरते।।
कहीं गणमान्यों के आग्रह से, अध्यात्म सुधा बरसा करके।
उसका रसपान कराते हैं, भव्यों को समता चित धरके।।31।।

तीनों टाइम की गुरु भक्ति, तीनों टाइम की सामायिक।
नित ही करते हैं गुरुराजा, शिष्यों के संग में हितदायक।।
अपनी मंजिल चित में धरके, हर रोज किया करते विहार।
नित चर्याओं के साथ सहर्ष, निज शिष्यों की करते सम्हार।।32।।

श्री छहढाला के अध्ययन का, जलपान सुबह जो करते हैं।
भक्तामर का भोजन करके, सामायिक चित में धरते हैं।।
इस पंचम युग में है कोई, वाात्सल्यता के पावन अम्बर।
अपने में लीन सदा रहते, वो विमर्शसिन्धु आचार्य प्रवर।।33।।

दस धर्म परिग्रह है जिनका, रत्नत्रय का लोभी जीवन।
सोलहकारण माया जिनकी, धन पाँच समितियों का पावन।।
ईर्ष्या करके वसु करमों से, पापों पर क्रोध किया करते।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, पापी से नेह हृदय धरते।।34।।

पुरुषारथ सिद्धि उपाय सही, जिनका व्यापार कहाता है।
स्वरूप संबोधन ही जिनका हृदय में सहर्ष सुहाता है।।
जो समयसार का सार सही, निज जीवन में अपनाते हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, जो डर को भी डरवाते हैं।।35।।

जो योगी बनकर अंतस से, सत् योगसार अपनाते हैं।
अरु श्रेष्ठ समाधि की मन में, जो सतत भावना भाते हैं।।
प्रवचनसार का सही सार, जिनने अंतस से पहिचाना।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, मुक्ति मंजिल के परवाना।।36।।

अन्दर बाहर से बाल ब्रह्म, अंतस में जिनके शुद्धपना।
जन जन यहाँ ज्ञाता हो जावे, ऐसा जिनके मन का सपना।।
जिनके जग में दुश्मन नाही, है मित्र सबई जग के प्राणी।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, मिसरी सम है जिनकी वाणी।।37।।

जिनका चारित्र हिमालय सा, सागर सा ज्ञान भरा गहरा।
दृढ़ता है मेरु सुमेरु सम, रत्नत्रय का सिर पर सेहरा।।
चलते फिरते तीरथ जग में, धरती के देव कहाते हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथ श्री, भटकों को सुपथ दिखाते हैं।।38।।

गुरुवर तो बड़े दयालु हैं, जग से छुटकारा पाने को।
शिवपुर की राह बताते हैं, करमन से पिण्ड छुड़ाने को।।
आतम तो यह अविनाशी है, पर की संगति में रहने से।
चहुँ गतियों में भटका करती, निज को ही नहीं समझने से।।39।।

आतम तो ज्ञान स्वभावी है, पर परदा पड़ा विकारों का।
रत्नत्रय की प्रिय औषधि से, नशता है रोग विचारों का।।
अपने शिष्यों को परमगुरु, प्रतिदिन ही तीन क्लासों में।
आचारसार सिखलाते हैं, आगममयी उत्तम भाषा में।।40।

।। लेखक की आलोचना ।।

हे गुरु हमारा चंचल मन, नित आतम को भटकाता है।
नित ही करके अपने मन की, आतम पर बोझ बढ़ाता है।।
हे गुरुवर हम फूटी गागर, कितना ही जल भरते जावो।
इक बूँद ठहरता नहीं अन्दर, सागर के सागर लुड़कावो।।41।।

संसारिक विषयों में फँसके, हमने अपने को भरमाया।
यह राग द्वेष की सरिता है, जिसका नहीं पार कभी पाया।।
क्रोधादि में जलकर हमने, अपना सर्वस्व नशाया है।
निज को नहीं समझा है मैंने, पर मैं ही समय गमाया है।।42।।

इस झूठे वैभव में फँसके, मैं निशदिन ही अलमस्त रहा।
चारों गतियों के दुख सहके, नित उनका ही अभ्यस्त रहा।।
भोगों को इतना भोग इधर, यह जीवन भोग बना डाला।
साध्य और साधक का हमने, अंतर ही इधर मिटा डाला।।43।।

नित विषय भोग की मदिरा पी, मैं बना यहाँ पर मतवाला।
तृष्णा को तृप्त करी जितनी, उतनी ही बड़ी निरत ज्वाला।।
जड़ को नहिं मैंने जड़ समझा, नहिं अक्षय निधि को पहिचाना।
इस भ्रम में ही भटका जग में, बन करके पर का दीवाना।।44।।

।। लेखक की भावना।।

श्री गुरुवर को पाके हमने, खुशियों के दीप जलाये हैं।
चरणों में हमें जगह देना, हम इस जग से घबराये हैं।।
गुरुदेव तीर्थ से पावन हैं, उनका दर्शन कर लेने से।
भवबंध सभी नश जाते हैं, उनकी राहों पर चलने से।।45।।

हे गुरुवर हम तो कायर हैं, संयम पथ से भय खाते हैं।
संसार दुखों में रहकर के, आतम का अहित बनाते हैं।।
हे गुरुवर! तुमरी महिमा को गाता हूँ बनकर अनजाना।
सुरताल यहाँ मैं क्या जानूँ, मैं तो गुरुवर का दीवाना।।46।।

इस वसुधा पर ऋषिराजों ने, ज्ञानामृत नित बरसाया है।
जिनका था पुण्य प्रबल भारी, उनके ही हृदय समाया है।।
हे गुरु! आपका सत् वन्दन, सारे जग का अभिनंदन है।
सब जीवों के अति हितकारी, सारे जग का सत् दर्शन है।47।।

हे गुरुवर! तुम हो स्वयं तीर्थ, पतितों को पावन करते हो।
जब ध्यान स्वयं का धरते हो, तब वीर प्रभु से लगते हो।।
नहिं शत्रु मित्र में भेद करो, सबको सत् राह दिखाते हो।
पापी तक के ओगड़ मन में, सम्यकता श्रेष्ठ जगाते हो।।48।।

जीवन है पानी की बूँद, यह सूत्र आपने ही बताव।
एक दिवस नाव में जो गाड़ी, एक दिन गाड़ी में वही नाव।।
तुम कुन्दकुन्द गुरु के कुन्दन, कुन्दन समान सबको करने।
करते हो गमनागमन सदा, स्व पर का हित चित में धरने।।49।।

सत् मंद-मंद मुस्कान सदा, चेहरे पर छायी रहती है।
आध्यात्म सुधा पावन वाणी, करुणामयी मुख से झरती है।।
इस अल्प उमर में भी गुरु ने, क्या अनुपम ज्ञान उपाया है।
गागर में सागर को भरके, यहाँ सागर को शरमाया है।।50।।

आचार्य विमर्शसागरजी हैं, रत्नत्रय के सत् सूत्रधार।
चारित्ररथी सुज्ञान दीप, सिद्धांत शिरोमणि न्यायकार।।
जीवन का कोई भरोसा नहीं, संसार दुखों का है सागर।
इसलिये श्री गुरुराजा ने, संयम सुख से भरली गागर।।51।।

उस ज्ञान की गागर से हमने कुछ बिन्दु सहर्ष निकाले हैं।
संसार दुखों को वह बिन्दु, निश्चित ही हरने वाले हैं।।
उन सभी बिन्दुओं को हमने, हरफों की माला में गुथकर।
इस महाकाव्य की रचना की, गुरु की चर्या चित में धरकर।।52।।

जिनकी है क्षमा धरम माता, अरु धैर्य पिता जीवन पथ के।
समता देवी ग्रहणी जिनकी, सत् संयम है भ्राता इनके।।
धरती है सेज यहाँ जिनकी, आकाश उड़ोना है तनका।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, नित स्वाध्याय भोजन इनका।।53।।

जो चलके भी चलते नाहीं, देखत भी नहीं देखें पर को।
निज के ही बस आराधन में, जो लगा रहे अपने चित को।।
जो निरत स्वयं का ही वन्दन करने को रहते हैं तत्पर।
निज में ही रुचियाँ हैं जिनकी, वो विमर्शसिन्धु आचार्य प्रवर।।54।।

भगवती अराधना की जिनने, नित ही सेवा की अंतरंग से।
अष्टपाहुड को निज हृदय में, धर लीना सम्यक् भावों से।।
गोम्मटसार का परमसार, जिनने हृदय में अपनाया।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, आगम ही जिनके मन भाया।।55।।

चैतन्य तीर्थ के उद्घोषक, जो भगवत्ता बतलाते हैं।
मेरा भगवन तो मुझमें है, सबको यह ज्ञान कराते हैं।।
जो अष्टसहस्री न्यायदीप, हृदय में सहर्ष सजाते हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथ श्री, निस्पृह योगी कहलाते हैं।।56।।

तन को विशुद्ध मन को विशुद्ध, चेतन विशुद्ध रखने वाले।
निर्ग्रंथ दिगम्बर मुद्रा में, निज आतम में रमने वाले।।
सर्वार्थसिद्धि की सत् महिमा, बस गई जिन्होंके अंतस में।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, जो सराबोर आतम रस में।।57।।

अन्तिम साँसों तक मुनिराजा, शमसीर धार पर चलते हैं।
उपसर्गों में अंतस मन से, समता ही चित में धरते हैं।।
जो जीवन का सिद्धांत नहीं, सत् समयसार बतलाते हैं।
वो विमर्शसिन्धु मुनिनाथा हैं, स्व-पर का हित उपजाते हैं।।58।।

कर्तव्यों से आचार्य परम, परिणामों से मुनिराजा हैं।
आध्यात्म ज्ञान में बृहस्पति, संयम पथ में सरताजा हैं।।
चारित्र हिमालय सा सुदृढ़, वात्सल्य में सही समुन्दर हैं।
वो विमर्शसिन्धु आचार्य गुरु, पंचम युग के परमेश्वर हैं।।59।।

रसना इन्द्री वश में करके, जो नीरस भोजन करते हैं।
अरु रोज तपस्या करने को, जो तन का गड्ढा भरते हैं।।
जग जन के सभी प्रपंचों से, जो दूर स्वयं को रखते हैं।
वो विमर्शसिन्धु आचार्य श्रेष्ठ, निज की आतम में रहते हैं।।60।।

ख्याति की भूख नहीं जिनको, है भूख सिद्धपद पाने की।
पर के वन्दन की चाह नहीं, नित करें वन्दना जो निज की।।
तन नहीं नचा पाता जिनको, जो तन को सतत नचाते हैं।
वो विमर्शसिन्धु आचार्य प्रभु, नित संहनन को शरमाते हैं।।61।।

करते हैं शान्त तृषा तन की, जो समतामयी रस को पीके।
तन का गड्ढा भर लेने को, आहार निरत करते फीके।।
मन को वश में करके अपने, जो आतम हित उपजाते हैं।
वो विमर्शसिन्धु आचार्य गुरु, आगम की अलख जगाते हैं।।62।।

।। समयसार गुरु के मुख से ।।

नहीं नियम कभी कर्तव्य बने, वह तो आचरण कहाते हैं।
आचरणों से यहाँ योगी के, कोई कार्य नहीं बन पाते हैं।।
कर्तव्य तो है अनिवार्य यहाँ, आचरणों के अनुसार सदा।
यह योगी का है समयसार, इसमें नहीं शंका करो कदा।।63।।

यहाँ भव्यों को श्री गुरुवर ने, समझाया है सत् समयसार।
बस राग द्वेष परिणामों से, प्राणी जग भ्रमता बार बार।।
प्रवचन सम्राट गुरुराजा, तत्त्वन का सत् समझाते हैं।
तत्त्वन पर श्रद्धा कर लेना, कारण सम्यक्त्व बताते हैं।।64।।

सत्ता तो आँखें लख सकतीं, पर सत्य नहीं आतम जाने।
यह ही आतम का सत् स्वभाव, वह कोई विभाव नहीं जाने।।
निज की सत्ता से आतम ने, शुभ अशुभ रूप पहिचाना है।
वो रूप सही तज आतम ने, चिद्रूप रूप सत् जाना है।65।।

वैसे ही आतम का स्वभाव, शुभ अशुभ भाव के है संग में।
इस आतम का निर्मल सुरूप, रत्नत्रय जब होवे उसमें।।
कोई द्रव्यों में पर्यायों का, नहीं है अभाव सुनो ज्ञानी।
इक गई दूसरी आ जाती, उस ही पल उसकी अनजानी।।66।।

जब आतम के जाते विभाव, तत्क्षण स्वभाव आ जाते हैं।
इक का वियोग यहाँ होते ही, दूजे सुयोग बन जाते हैं।।
यह सही तत्त्व का निर्णय है, इसको ही कहते समयसार।
सत् तत्त्व ज्ञान जिनने जाना, उनने जाना आतम सुसार।।67।।

करमों से हैं संबंध यहाँ, आतम के काल अनादि से।
नहिं भाव बदलते आतम के, दुष करमों के संग रहने से।।
पानी का रूप दिखत वैसा, जिस रंग के रंग में रहता हो।
पानी तो निर्मल रूप परम, जब कोई रंग संग में न हो।।68।।

नहीं दोष निमित्तों को धरना, ये भूतकाल की परणति है।
जो कर्म उजाये थे निशदिन, उन करमों की फल वृत्ति है।।
धर्मीजन को लखके जिनका, अंतस गदगद हो जाता है।
वह ही सत् सम्यग्दृष्टि है, यह समयसार बतलाता है।।69।।

निर्ग्रंथ मुनि का परम भेष, होता है सम्यक् समयसार।
यह रूप सभी लखके श्रावक, जाने निज आतम का सुसार।।
ये समयसार श्रावक जनकी, आतम को निर्मल करने को।
श्री विमर्शसिन्धु समझाते हैं, यहाँ भव सिन्धु से तरने को।।70।।

प्रवचन सम्राट विमर्शसिन्धु, जब जहाँ मंच पर जाते हैं।
तब अपने आगे चौका पर, श्री जिनवाणी पधराते हैं।।
श्रीमुख से जब मुनिनाथा के, जिनवाणी श्रेष्ठ निकलती है।
वह वाणी सब श्रोताओं को अंतस में जाकर भिदती है।।71।।

।। नित चर्या श्री गुरुराजा की ।।

जब चर्या के सम्राट सहर्ष, आहारों को निकला करते।
ईर्यापथ का पालन करके, कुछ दृष्टि भव्यों पर धरते।।
जब विधि के ही अनुसार कहीं, श्रीगुरु का होता पड़गाहन।
नवधा भक्ति चित में धरके, भावों में रखते अनुशासन।।72।।

गौवृत्ति धरके अंतरंग में, तप को तन की करने सम्हार।
नहिं ध्यान स्वाद पर है कोई, गड्ढा भरने करते अहार।।
यहाँ कौन बोल करके शुद्धि, अंजुली में रखता यहाँ ग्रास।
श्री गुरु को मतलब है नाहीं, कोई आम रखे या रखे खास।।73।।

भँवरा समान वृत्ति रखके, श्री गुरु अहार सदा करते।
दाता को कोई तकलीफ न हो, ऐसे विचार चित में धरते।।
श्री गुरु की नित चर्या लखके, श्रावक जन ऐसा कहते हैं।
पंचम युग में चौथे युग के, मुनिराज अभी भी दिखते हैं।।74।।

गुरुराजा के मन मस्तिष्क में, अगणित भरे हैं गुण सागर।
जिसमें नहलाके भव्य यहाँ, तिर गये अनेकों भव सागर।।
बिन धन दौलत के श्री गुरु, सत् महाधनी कहलाते हैं।
धन वालों की जर जर नैया, गुरुवर ही पार लगाते हैं।।75।।

।। श्री गुरुवर की महिमा ।।

श्री गुरु के पावन मुखड़े पर, मुस्कान सतत छाई रहती।
श्री गुरु की पावन मृदुवाणी, स्व-पर उद्धार सदा करती।।
यह गुरु में कैसा संमोहन, कोई लगत हमें जादू टोना।
जो एक बार दर्शन करले, नहीं चाहे कभी अलग होना।।76।।

गुरु स्वयं तीर्थ से पावन हैं, अपने में हैं सत् समयसार।
गुरु ही मन्दिर गुरु ही मूरत, गुरु की महिमा का नहीं पार।।
माँ भगवती के श्रेष्ठ लाल, श्री सनतकुमार जी के ललना।
राजेश कुमार के लघु भ्राता, श्री विमर्शसिन्धु जी महामना।।77।।

गुरुराजा के जीवन पथ में, सुविधायें रहती दास सभी।
गुरु मुक्ति पथ के सत्राही, इच्छायें हैं सब दास अभी।।
गुरु कुन्दकुन्द के लघुनंदन, श्री भूतबली गुरु के भ्राता।
जिनवाणी माँ के वरद पुत्र, जैनागम के सत् व्याख्याता।।78।।

गुरु वर्तमान के वर्धमान, सारा ही जग गुणगान करे।
क्या जैन अजैन सभी बन्धु, गुरु के चरणों में शीष धरें।।
गुरुयुग के संत शिरोमणि हैं, अरु युवाचार्य अध्यात्म वीर।
जयवंत रहें इस भूमि पर, जब तक है सूरज की लकीर।।79।।

संयम में जिनको नहीं रहा, विश्वास स्वयं के अंतरंग में।
अध्यातम से समझा उनको, वापस लाये शिव मारग में।।
श्री गुरुवर की जिनमुद्रा भी, बस गई जिन्होंके तन मन में।
वह नाव आपकी बैठ गये, घर द्वार सभी तजके छिन में।।80।।

वह रत्नत्रय भी पाल रहे, निज जीवन सफल बनाने को।
संयम के पथ पर ही चलते, आतम का हित उपजाने को।।
गुरुवर ही ऐसे महामुनि, जिनका सब वन्दन करते हैं।
क्या सोनगढ़ी क्या श्वेताम्बर, सब ही अभिनंदन करते हैं।।81।।

हो गया जतारा नगर धन्य, जहाँ जन्मे हैं गुरुवर प्यारे।
गुरुराज जहाँ नित खेले हैं, वो धन्य हुए सब गलयारे।।
हो गया धन्य सारा अंचल, जहाँ गुरु का बीता बाल्यकाल।
यह भारत भूमि धन्य हुई, जहाँ गुरु से जन्मे वीर लाल।।82।।

वो सभी नगर हो गये धन्य, जहाँ गुरु के मन संयम भाया।
क्षुल्लक ऐलक मुनि बने जहाँ, आचार्य परम पद भी पाया।।
वह धन्य हुए हैं नगर ग्राम, जहाँ से गुरु ने कीना विहार।
वो कुल भी सब हो गये धन्य, जहाँ श्री गुरु ने लीना अहार।।83।।

वो मानव भी हो गये धन्य, जिनका गुरु लेते सहर्ष नाम।
वह सभी लोग हो गये धन्य, जिनने गुरु को कीना प्रणाम।।
वह अँखियाँ भी हो गयीं धन्य, जिनने श्री गुरुवर को देखा।
वह मस्तिक भी हो गये धन्य, जिनने गुरु चरणों में टेका।।84।।

वो नगर सभी हो गये धन्य, जहाँ किये गुरु ने चऊमासे।
वह मारग भी हो गये धन्य, गुरुराजा निकले हैं जहाँ से।।
वह शिक्षक भी हो गये धन्य, गुरु ने शिक्षा पाई जिनसे।
वह शालायें हो गयीं धन्य, जहाँ शिक्षित हुए गुरु मन से।।85।।

आचार्य विमर्शसागर जी का, जीवन चरित्र है बेमिशाल।
इसको हृदय में धरने से, कट जाते हैं सब आल जाल।।
गुरुराजा के गुण लिखने को, नहीं बनी कोई कागज स्याही।
गुण तो अनंत इनके अन्दर, लिख नहीं सकते कोई ग्राही।।86।।

गुरु महावीर के पोस्टमैन, घर घर संदेश भिजाते हैं।
जग में भटकों की नाव सदा, भवदधि से पार कराते हैं।।
आचार्य गुरु हैं परम श्रेष्ठ, जग जन को श्रेष्ठ बनाने को।
हर पल ही यत्न किया करते, स्व-पर का हित उपजाने को।।87।।

विमर्श सरोवर में गुरु ने, कई भव्यों को नहला करके।
अपने समकक्ष बनाया है, पावन मुनिदीक्षा दे करके।।
कई उत्तम श्रावक बने यहाँ, गुरुवर से लेके प्रतिमायें।
भक्तों की गणना नहीं कोई, श्री गुरुवर के जो गुण गायें।।88।।

।। विनय श्री गुरुवर से ।।

हम तो संसारी हैं गुरुवर, संसार में लिपटे रहते हैं।
अज्ञान दशा के कारण हम, इस जग को अपना कहते हैं।।
श्री गुरु की अमृतवाणी सुन, हम सभी दुखों से बचते हैं।
इस युग में भी महावीर हमें, गुरु की सूरत में दिखते हैं।।89।।

नहीं लखा कभी प्रभुवीरा को, पर नाम सुना अतिशयकारी।
शास्त्रों में पढ़ा सुना हमने, प्रभु की महिमा जग से न्यारी।।
गुरु ने वीरा का रूप धरा, निर्ग्रंथ महामुनि बन करके।
महावीर प्रभु ऐसई होंगे, लगता तुमरी सूरत लखके।।90।।

श्री गुरु की वाणी सुन करके, हम सबको ऐसा लगता है।
यह समय यहाँ ही रुक जाता, जाने क्यों आगे बढ़ता है।।
पर समय नहीं रुकता कोई, गुरुदेव सदा समझाते हैं।
जो नहीं समय का मूल्य करें, वह जग के चक्कर खाते हैं।।91।।

जहाँ चरण गुरु के पड़ते हैं, वह धरती पावन हो जाती।
जहाँ वचन गुरु के खिरते हैं, वहाँ की वायु तक महकाती।।
जिस नगरी में रुक जाते हैं, वहाँ हर दिन होता है फागुन।
जहाँ होय गुरु का चऊमासा, वहाँ लगता है नित ही सावन।।92।।

मुस्कान गुरु के अधरों की, भव्यों को सुख पहुँचाती है।
खुशबू गुरु के सत् चारित्र की, सारे जग को महकाती है।।
हृदय के आँगन में हमने, गुरु की तस्वीर सजाई है।
रज पाके गुरु के चरणों की, हमने तकदीर बनाई है।।93।।

श्री गुरुवर तो जादूगर है, जग पर जादू कीना गुरु ने।
गुरुवर ही साँचे बाजीगर, हर बाजी जीती गुरुवर ने।।
यह कैसा गुरु का सम्मोहन, सब मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।
गुरुराजा की सूरत लखके, सब चरणों में बिछ जाते हैं।।94।।

जिन नगरों में गुरु जाते हैं, वहाँ अमन चैन आ जाता है।
खुशहाली होती है घर-घर, वहाँ चमन सही दिखलाता है।।
श्री गुरु की कोयल समवाणी, सुनने को सभी तरसते हैं।
सूरज अरु चाँद सितारे भी दर्शन को सदा ललकते हैं।।95।।

।। भ्रूण हत्या पर गुरु संबोधन ।।

आचार्य प्रवर जहाँ जाते हैं, वहाँ जनता को समझाते हैं।
नहीं गर्भ गिराओ कोई कभी, यह महापाप कहालते हैं।।
जिनकी हत्या करवाते हो, वह मुनि आर्यिका हो सकते।
जो अपने ही तप के बल से, जीवोद्धारक बन सकते।।96।।

वो कर्मवीर भी हो सकते, या हो सकते कोई श्री नंदन।
उनकी हत्या करके तुमने, नरकों का बाँध लिया बंधन।।
आगे गुरुवर समझाते हैं, तुमसे तो अच्छी वह नागिन।
उसने तो पाप उदय से ही, पाया तिर्यंच विकल जीवन।।97।।

अपने बच्चों को जन उसने, आनंद से उनको खा करके।
निज तन की भूख मिटाई थी, अज्ञान परा चित में धरके।।
पर मानव ने दानव बनके, ऐसे ही पाप किये निश दिन।
यह कहाँ उन्हें पहुँचावेंगे, इसका भी ध्यान करो श्री मन।।98।।

मानव तन में ही तीर्थंकर, अरु चक्रपति बनते भाई।
इससे ही इन्द्र नरेन्द्र बने, इससे मुक्ति पद सुखदाई।।
वह प्रभु के गर्भ कल्याणक में, यहाँ नहिं हो सकते हैं शामिल।
ऐसा ही दुष्कृत करने पर, जिनका चारित्र होय धूमिल।।99।।

यहाँ पर बच्चे को आने दो, या संयम धारण करो सभी।
वो अपना भाग्य लिखेगा खुद, आगम में ही यह लिखा सभी।।
जिसका तुमने जीवन छीना, वह सीता जैसी बन सकती।
अरु जन्म यहाँ पर लेके वो, प्रिय सती द्रौपदी हो सकती।।100।।

यह गर्भ गिराने वालों यहाँ, नहिं पाप बड़ा कोई इससे।
कई भव तक संभल न पावोगे, ऋषियों ने यही लिखा चित से।।
यह मानव तन दुर्लभ भाई, इससे पर का उपकार करो।
ये जिनवाणी का सही कथन, इन सबमें श्रद्धा भाव धरो।।101।।

इस तरह गुरु ने भावों से, छलकाया ज्ञान सुधा सागर।
उस ही सागर से भर लीनी, हमने अपने मन की गागर।।
ये चौदह कलश हुए पूरे, श्री विमर्श सिन्धु जीवन पथ के।
अठरा वरषों के संयम के, आतम की कठिन साधना के।।102।।

।। इति चौदहवाँ कलश ।।

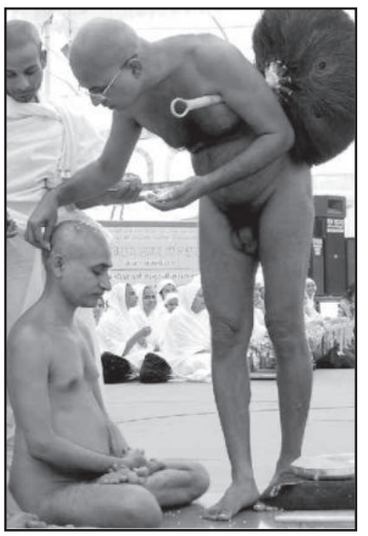

केशलोंचन विधि सम्पन्न करते हुए पूज्य आचार्यश्री

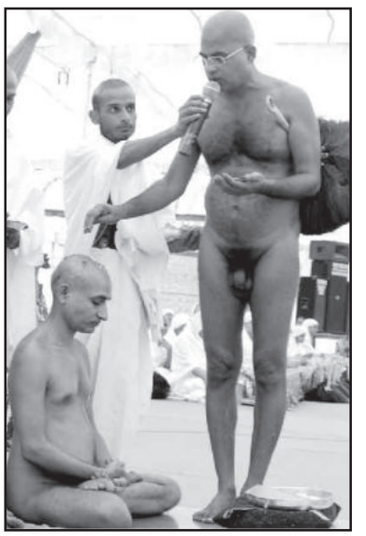

आचार्य पद के संस्कार करते हुए प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज (बाँसवाड़ा १२/१२/२०१०)

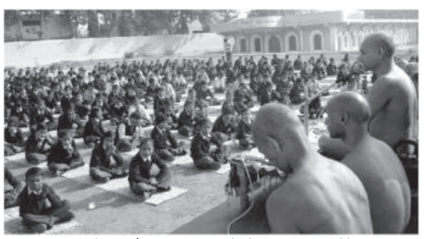

अतिशय क्षेत्र बड़ागाँव १५०० छात्र-छात्राओं को संस्कार की शिक्षा देते हुए आचार्य श्री विमर्शसागर जी

विजयनगर राजस्थान में सेंट पॉल स्कूल में अरिहंत ज्ञान गंगा महोत्सव में २००० बच्चों को 'देश और धर्म के लिये जीयो' का सन्देश देते हुए पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

पन्द्रहवाँ कलश

।। मंगलाचरण।।

इस वसुधा पर तीर्थेशों के, जो हुए यहाँ गणधर स्वामी।
उनने प्रभुवर की वाणी को, झेली बनकर अंतरयामी।।
यहाँ श्रेष्ठ अठारह भाषायें, अरु सात शतक लघु भी संग में।
हर भाषा धारी को उनने, समझाई थी उनके ढंग में।।1।।

यहाँ चौबीसों जिनराजों के, चौदह सौ उनसठ गणना में।
हो गये श्रेष्ठ गणधर स्वामी, मनःपर्यय ज्ञानी भारत में।।
उनके पावन श्री चरणों में, हम सादर शीष झुकाते हैं।
मन का सपना पूरा करने, अंतरंग में उन्हें सजाते हैं।।2।।

अब परम शारदा माता को, हृदय में सहर्ष सजा करके।
आगे का वर्णन लिखता हूँ, गुरुराजा को चित में धरके।।
उनको यहाँ शीष झुकाता हूँ, जो इसी काव्य के हैं नायक।
उनका ही चारित्र लिखता हूँ, जो होगा सबको हितदायक।।3।।

ये विमर्शसिन्धु मुनिनाथा के, जीवन का सही कथानक है।
इसमें इनका सच्चा चरित्र, स्व-पर को सही सहायक है।।
गुरु की चर्या लखके लेखक, खुद डूब गया भक्ति रस में।
जो कुछ सुरूप देखा गुरु का, ज्यों का त्यों दरशाया इसमें।।4।।

यह अक्षर स्वर बावन पूरे, बस इनमें कुछ हेराफेरी।
जिससे बन जाती है कविता, बस यही चतुरता है मेरी।।
नहिं फरक हुआ कोई गाथा में, पढ़ने में उमदा लगती है।
पढ़नेवाले हर पाठक के, मन को उत्साहित करती है।।5।।

।। आचार्य संघ आगरा में ।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिनाथा जी, अपने संघ को संग में लेकर।
आ गये आगरा नगरी में, कुछ ग्रामों नगरों से होकर।।
तब यहाँ के सभी श्रावकों ने, जाकर नगरी की सीमा पर।
गुरु संघ की कीनी अगवानी, निज भावों में अति हर्षाकर।।6।।

।। ग्रीष्मकालीन वाचना आगरा में ।।

यहाँ ग्रीष्मकालीन वाचना भी, छीपीटोला जिनमन्दिर में।
पन्द्रह मई से हो गई शुरू तब दो हजार चौदह सन् में।।
सिद्धांतसार अष्टपाहुड की, आचार्य प्रवर के श्री मुख से।
एक महीना तक हुई थी, दोनों टाइम अति आनंद से।।7।।

।। वाचना अलीगढ़ में ।।

पश्चात् वाचना के श्री गुरु, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
आकर के नगर अलीगढ़ में, आगम का ध्वज फहराते हैं।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, यहाँ भव्यों के अति आग्रह से।
तब एक माह वाचन कीना, सिद्धान्तसार का आनंद से।।8।।

।। भक्तामर विधान खुरजा में ।।

यहाँ से चलके आचार्य संघ, खुरजा नगरी में पधराया।
अगवानी कर यहाँ भक्तों का, अंतरंग भी भारी हरषाया।।
तब भक्तामर मंडल विधान, खुरजा नगरी के आँगन में।
अति ही आनंद के साथ हुआ, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।9।।

कुछ दिन के बाद गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुकके, आगम की अलख जगाते हैं।।
आचार्य प्रभु संघ के संग में, नगरी बड़ौत में पधराये।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतरंग में भारी हरषाये।।10।।

है चऊमासे का समय निकट, सो भक्त यहाँ गुरुराजा से।
इस ही नगरी में करने की, विनती करते हैं अंतरंग से।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, भव्यों के भावों को लखकर।
सहमति दे दी चऊमासे की, अपने शिष्यों से चरचा कर।।11।।

।। बड़ौत वर्षायोग 2014 ।।

तब षाढ़ सुदी चौदस के दिन, गुरुराजा के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, यहाँ दो हजार चौदह सन् का।।
तब आसपास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
श्रावक यहाँ आये हजारों में, गुरुवाणी चित में धरने को।।12।।

दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीरा शासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, पूजन करके गुरुराजों की।।
दोनों टायम गुरु के मुख से, श्री रयणसार अष्टपाहुड की।
हो रही वाचना नगरी में, परमारथ से आतम हित की।।13।।

यहाँ हुए अनेकों धर्मकार्य, जो हुए अन्य चऊमासों में।
अति ही आनंद के साथ सभी, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।
आचार्य संघ के रुकने से, मेला सा यहाँ लगा रहता।
हर रात दीवाली सी लगती, दिन सावन के जैसा लगता।।14।।

श्री पार्श्वनाथ जिनराजा का, सावन सुदी साते के दिन में।
निर्वाण महोत्सव मना यहाँ श्री गुरुवर के निर्देशन में।।
आचार्य प्रवर ने तभी यहाँ, श्री पार्श्वनाथ जिनराजा की।
दस भव की कथा सुनाई थी, कमठेश्वर के उपसर्गों की।।15।।

।। रक्षाबंधन महापर्व ।।

आचार्य प्रवर के श्री मुख से, जब कथा सुनी उपसर्गों की।
तब श्रोता अपनी अँखियों से, गागर छलकाते अँसुओं की।।
रक्षाबंधन का परम पर्व, यहाँ सभी मनाते आनंद से।
तब सात शतक मुनिराजों की, गुरु कथा सुनाते है चित से।।16।।

आचार्य प्रवर से सुनी कथा, ऋषियों पर अत्याचारों की।
अँखियाँ भी जल बरसाती हैं, तब सुननेवाले भव्यों की।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, यहाँ पूज्य पर्यूषण पर्वों में।
नित प्रातः ही दस धर्मों पर, वाचन कीना आतम हित में।।17।।

रोजाना तीन बजे गुरुवर, तत्त्वार्थ सूत्र के वाचन में।
विस्तार सहित समझाते हैं, तत्त्वन को आतम के हित में।।
व्रत करनेवाले भव्यन की, यहाँ दसलक्षण के पर्वों में।
लाइन भी सदा लगी रहती, आचार्य प्रवर के चरणों में।।18।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, यहाँ दसलक्षण के पर्वों में।
एक शिक्षा शिविर लगाया था, स्व-पर की आतम के हित में।।
दस दिना सभी श्रावक बन्धु, नित आत्म साधना करते हैं।
आचार्य प्रवर के सान्निध्य में, संयम ही चित में धरते हैं।।19।।

प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक वदी अमावस में।
श्रावक जन सहर्ष मनाते हैं, ऋषियों के पावन सान्निध्य में।।
प्रभु वीरा के उपदेश सही, आचार्य प्रवर ने जनता को।
मार्मिक वचनों में समझाये, सब पालो परम अहिंसा को।।20।।

दुनियाँ के सारे धरम यहाँ, होवत हैं शुरू अहिंसा से।
हिंसा से बँधती नरक गति, श्री गुरु ने कहा सभी जन से।।
इस ही दिन श्री गुरुराजा ने, विधिपूर्वक ही चऊमासे का।
साहर्ष किया था निष्ठापन, दोय सहस्र चौदह सन् का।।21।।

चऊमासे के पश्चात् यहाँ, श्री कल्पद्रुम मंडल विधान।
अति ही आनंद के साथ हुआ, सुख शान्ति का सत् अनुष्ठान।।
यहाँ समारोह सम्पन्न हुआ, बड़ौत नगर के आँगन में।
अति धूमधाम के साथ सहर्ष, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।22।।

।। 41वाँ जन्म महोत्सव बड़ौत नगर में ।।

इकतालिसवाँ जन्मोत्सव भी, पन्द्रह तारीख नवम्बर में।
आचार्य प्रवर का मना यहाँ, तब दो हजार चौदह सन् में।।
कई नगरों से गणमान्य श्रेष्ठ, इस समारोह में आये थे।
विनयांजलि दे गुरु चरणों में, अंतस में अति हरषाये थे।।23।।

विद्वानों अरु गणमान्यों संग, संघस्थ सभी व्रतिराजों ने।
अरोग्य रहे आचार्य प्रवर, यह श्रेष्ठ कामना की सबने।।
वृद्धिंगत होता रहे सतत, रत्नत्रय गुरु के जीवन में।
यह परम भावना भाई थी, गुरुराजा के संयम पथ में।।24।।

।। लेखक की परम भावना ।।

हे गुरुवर तुम्हें बधाई हो, हर जन्मोत्सव के आने पर।
तुम रहो हजारों वर्षों तक, इस मुनि भेष में धरती पर।।
तुमरा रत्नत्रय बड़े नित्य, जो स्व-पर को हितदाई है।
अरु स्वस्थ रहे जीवन पूरा, जो जग जन को सुखदाई है।।25।।

हे गुरु आपके दर्शन को, मन हरदम मचला करता है।
तुम कहीं रहो इस दुनियाँ में, मन साथ आपके रहता है।।
तन को तो अड़चन है भारी, मन तो निर्द्वन्द हुआ करता।
तन रहता दूर सदा इससे, पर मन तो साथ सदा रहता।।26।।

।। पाँचवाँ आचार्य पदारोहण ।।

आचार्य पदारोहण उत्सव, तब सहर्ष पाँचवाँ नगरी में।
गुरुवर का भक्त मनाते हैं, बारह तारीख दिसम्बर में।।
मुनिदीक्षा दिवस श्री गुरु का, चौदह तारीख दिसम्बर में।
सोलहवाँ यहाँ मना उत्तम, बड़ौत नगर के आँगन में।।27।।

त्रिदिवसी इस आयोजन में, बहुत ग्रामों अरु नगरों से।
श्रावक जन आये हजारों में, आशीष लेने गुरुराजों से।।
आचार्य प्रवर के चरणों में, उन सबने शीष झुकाये थे।
विनयांजलि देकर भावों से, वह सभी बहुत हरषाये थे।।28।।

।। आचार्य संघ खेकड़ा में ।।

आचार्य गुरु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
उत्तरप्रदेश की धरती को, पद कमलों से महकाते हैं।।
कुछ ग्रामों नगरों से होकर, गुरु आगे खेकड़ा तीरथ में।।
दर्शन कर यहाँ जिनराजों के, अति हर्षाये अपने उर में।।29।।

श्री भक्तामर मंडल विधान, इस ही तीरथ के आँगनमें।
अति ही आनंद के साथ हुआ, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।
यहाँ तीन दिना रहके गुरु ने, गणमान्यों के अति आग्रह से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, अपनी पावन मृदुवाणी से।।30।।

।। आचार्य संघ क्षेत्र खुरजा में ।।

गुरुदेव खेकड़ा से चलके, खुरजा तीरथ में पधराये।
पारस प्रभु के दर्शन करके, अंतरंग में भारी हरषाये।।
श्री शान्तिनाथ मंडल विधान, इसी ही तीरथ के आँगन में।
अति ही आनंद के साथ हुआ, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।31।।

कर तीर्थवन्दना गुरुराजा, संघस्थ साधुओं के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, निज मंजिल को धरके चित में।।
कुछ ग्रामों में आचार्य प्रवर, चर्या करके अति आनंद से।
धर्मामृत की बारिस करते, अपनी पावन मृदुवाणी से।।32।।

।। आचार्य संघ आगरा में ।।

फिर तीन बजे श्री गुरुराजा, वहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
ईर्यापथ को चित में धरके, संयम का बिगुल बजाते हैं।।
कुछ दिन के बाद गुरुराजा, पधराये नगर आगरा में।
अगवानी भव्य हुई संघ की, इस ताज नगर की सीमा में।।33।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को लेके आये सभी, छीपीटोला जिनमन्दिर में।।
चौसठ ऋद्धि मंडल विधान, इस ही नगरी के आँगन में।
अति धूमधाम के साथ हुआ, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।34।।

।। मुनि विश्वतीर्थ सागर से मिलन ।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, नगरी के प्रमुख जिनालयों में।
अति आनंद से दर्शन कीने, एक आनंद यात्रा के संग में।।
मुनि विश्वतीर्थ सागर जी से, यहाँ मिलन हुआ आनंदकारी।
तब रत्नत्रय की हुई श्रेष्ठ, ऋषियों में कुशल समाचारी।।35।।

।। आचार्य संघ सिद्धक्षेत्र सोनागिर में ।।

यहाँ से चल के आचार्य संघ, होकर के नगर मुरैना से।
श्री सिद्धक्षेत्र सोनागिर में, पधराया था अति आनंद से।।
अपने अंतरंग के भावों से, गुरुराजा ने संघ के संग में।
तब महावन्दना कीनी थी, गिरिराजा की इस तीरथ में।।36।।

वात्सल्य मिलन यहाँ होता है, कीर्तिसागर जी मुनिवर से।
श्री नमन श्री आर्यिका संघ से, विश्वलोचनसागर मुनिश्री से।।
तीनों संघों से गुरुवर का, होता है मिलन सुखदकारी।
रत्नत्रय की तब हुई श्रेष्ठ, ऋषियों में कुशल समाचारी।।37।।

कुछ दिन के बाद गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
बुंदेली की प्रिय धरती को, पद कमलों से महकाते हैं।।
अब झाँसी होकर गुरुराजा, पृथ्वीपुर में पधराये थे।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतस में अति हरषाये थे।।38।।

।। वेदी प्रतिष्ठा पृथ्वीपुर में ।।

सारे श्रावक श्री गुरुवर को, एक आनंद यात्रा के संग में।
गायन वादन संग ले जाते, श्री पारसनाथ जिनालय में।।
नई वेदी की प्रतिष्ठा हुई, तेरह तारीख जनवरी में।
हुआ तीन दिना का आयोजन, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।39।।

।। पृथ्वीपुर में पंचकल्याणक ।।

विधिपूर्वक ही ये आयोजन, पृथ्वीपुर के जिनमन्दिर में।
अति आनंद से सम्पन्न हुआ, तब दो हजार पन्द्रह सन् में।।
सोलह तारीख फरवरी से, श्री गुरुवर के ही सान्निध्य में।
जिनबिम्ब प्रतिष्ठा हुई यहाँ, गजरथ के फेरों के संग में।।40।।

यहाँ शतकाधिक हिन्दु भाई, श्री जन्मकल्याणक के दिन में।
तज देते माँसाहार सहर्ष, गुरुवाणी को धरके मन में।।
आचार्य प्रभु ने उन सबको, अति आनंद से आशीष दिया।
अरु जैन भाइयों ने उनका, खुश होकर के सम्मान किया।।41।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिनाथा ने, दीक्षा कल्याणक के दिन में।
एक मुनि एक क्षुल्लक दीक्षा, दीनी इस पंच कल्याणक में।।
तब मुनिश्रेष्ठ का नाम रखा, विश्वार्यसागर मुनिराजा।
अरु क्षुल्लक जी को नाम दिया, विश्वार्थ सागर हितकाजा।।42।।

पंडित जी ऋषभ शास्त्री ने, यह समारोह पृथ्वीपुर में।
विधि सम्मत ही करवाया था, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।
अब एक मार्च को गुरुराजा, संघस्थ साधुओं के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, ईर्या पथ को धरके चित में।।43।।

।। आचार्य संघ जतारा में ।।

गुरु पृथ्वीपुर से चल करके, गृह नगर जतारा आते हैं।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अंतस में अति हरषाते हैं।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को वह लेकर आये, प्रधानपुरा जिनमन्दिर में।।44।।

यह नगर जतारा जन्मभूमि, आचार्य विमर्शसागर जी की।
लोगों का अधिक लगाव रहा, इस कारण चर्या से गुरु की।।
क्या जैन अजैन सभी के घर, में आनंद उत्सव छाया था।
नगर जतारा की माटी का गौरव नगरी आया था।।46।।

यहाँ शीतकालीन वाचना भी, गणमान्यों के अति आग्रह से।
श्री रयणसार की हुई सहर्ष, आचार्य प्रवर के श्री मुख से।।
पश्चात् यहाँ पर होता है, श्री सिद्धचक्र मंडल विधान।
आचार्य प्रवर के सान्निध्य में, सुख शान्ति का प्रिय अनुष्ठान।।47।।

।। अहार जी में आचार्य संघ ।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, शिष्यों अरु भक्तों के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे, जिन मंजिल को धरके चित में।।
खरगापुर से होकर के गुरु, आ गये अहारजी नगरी में।
यहाँ भक्त सभी अगवानी कर, अति हरषाये मन गगरी में।।48।।

यहाँ शान्तिनाथ की मूरत है, अतिशयकारी खड़गासन में।
अति सुंदर और मनोहारी, सत्रह फुट की अवगाहन में।।
प्रभु शान्तिनाथ बड़े बाबा, भक्तों के सब दुख हरते हैं।
ऐसा अतिशय है बाबा का, बिन माँगे झोली भरते हैं।।49।।

श्री शान्तिप्रभु के अगल बगल, श्री कुन्थु अरह जिनराजों की।
इक ही वेदी पर राजत हैं प्रतिमायें, त्रय पदधारी की।।
दो दिन रुक के गुरुराजा ने, इस तीरथ में जिनराजों के।
कई बार यहाँ दर्शन कीने, अंतरंग में भारी हरषाके।।50।।

।। सिद्धचक्र मंडल विधान जतारा में ।।

टीकमगढ़ के श्रावक बन्धु, तब आये गुरु के चरणों में।
सब विनती करते हैं मिलके, आचार्य प्रवर के चरणों में।।
हे स्वामी हमरी नगरी में, पन्द्रह सन् के चऊमासे की।
स्वीकृति दे दीजे हे गुरुवर, यह विनय आपसे है सबकी।।51।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, भव्यों के भाव सुदृढ़ लखके।
स्वीकृति दे दी चऊमासे की, निज शिष्यों से चरचा करके।।
टीकमगढ़ के गुरु भक्तों ने, आशीष सहित स्वीकृति पाकर।
चरणों में शीष झुकाया था, गुरुराजा के अति हर्षाकर।।52।।

।। आचार्य संघ टीकमगढ़ में ।।

टीकमगढ़ के भक्तों के संग गुरु यहाँ से कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुकके, आगम की अलख जगाते हैं।।
अपने चरणों की पद रज से, सब रस्तों को पावन करके।
आ गये गुरु टीकमगढ़ में, ईर्यापथ को चित में धरके।।53।।

तब यहाँ के सभी श्रावकों ने, सीमा पर जाकर नगरी की।
अपने अंतरंग के भावों से, श्री गुरुवर की अगवानी की।।
यहाँ पर ही सभी श्रावकों ने, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, अंतरंग में भारी हरषाके।।54।।

।। 2015 का वर्षायोग टीकमगढ़ में ।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुसंघ को लेके आये सभी, बाजारपुरा के मन्दिर में।।
तब षाढ़ सुदी चौदस के दिन, श्री गुरुवर के चऊमासे का।
यहाँ कलशा होता स्थापित, दोय सहस्र पन्द्रह सन् का।।55।।

यहाँ आसपास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
श्रावक जन आये हजारों में, गुरुवाणी चित में धरने को।।
दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीरा शासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, पूजन करके प्रभु वीरा की।।56।।

श्री पार्श्वनाथ जिनराजा का, सावन सुदी सातें के दिन में।
निर्वाण महोत्सव मना यहाँ, गुरु संघ के पावन सान्निध्य में।।
आचार्य प्रवर ने तभी यहाँ, श्री पार्श्वनाथ जिनराजा की।
दस भव की कथा सुनाई थी, कमठ संग जीवन पथ की।।57।।

श्री गुरु के मुख से सुनी कथा, कमठेश्वर के उपसर्गों की।
तब श्रोता अपनी आँखियों से, गागर छलकाते अँसुओं की।।
यहाँ हुए अनेकों धर्मकार्य, जो हुए अन्य चऊमासों में।
अति ही आनंद के साथ सभी, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।58।।

।। बयालीसवीं जन्म जयंती श्री गुरु की ।।

श्री दसलक्षण का पर्व और, उत्सव भी क्षमा महोत्सव का।
अति धूमधाम से मना यहाँ, सान्निध्य पाकर गुरुराजा का।।
प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, अरु निष्ठापन चऊमासे का।
हुआ कार्तिक वदी अमावस में, दोय सहस पन्द्रह सन् का।।59।।

आचार्य विमर्शसागर जी का, संघस्थ साधुओं के संघ में।
होवत पिच्छिका परिवर्तन, एक अति सुन्दर आयोजन में।।
ब्यालिसवाँ जन्म महोत्सव भी, पन्द्रह तारीख नवम्बर में।
आचार्य प्रभु का सहर्ष मना, इस ही नगरी के आँगन में।।60।।

कई नगरों के गुरुभक्त यहाँ, इस समारोह में आये थे।
विनयांजलि दे गुरु चरणों में, अंतस में अति हरषाये थे।।
विद्वानों अरु गणमान्यों संग, संघस्थ सबई व्रतिराजों ने।
नित स्वस्थ रहें आचार्य प्रभु, अति श्रेष्ठ भावना की सबने।।61।।

चऊमासे के पश्चात सहर्ष, श्री सिद्धचक्र मंडल विधान।
अति ही आनंद से हुआ यहाँ, विश्वशान्ति को यह अनुष्ठान।।
श्री जय निशान्त ब्रह्मचारी ने, यह समारोह इस नगरी में।
विधिपूर्वक यहाँ कराया था, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।62।।

बैरवार के श्रावक तब, श्री गुरुवर के ढिंग आये थे।
श्री फल का अर्घ्य चढ़ा उनने, अपने मंतव्य बताये थे।।
हे पूज्य हमारी बस्ती में, जिनबिम्ब प्रतिष्ठा है प्रभु की।
उसमें चलकर सान्निध्य दीजे, यह विनती है हम लोगों की।।63।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, वैरबार ग्राम के भव्यों की।
लख विनय भावना भावों से, स्वीकृति दे दी वहाँ आने की।।
तब वैरबार के भक्त सभी, आशीष सहित स्वीकृति पाके।
गुरु चरणों में झुक जाते हैं, अंतरंग में भारी हरषाके।।64।।

।। पंचकल्याणक प्रतिष्ठा टीकमगढ़ ।।

तेईस तारीख नवम्बर से, तब दो हजार पन्द्रह सन् में।
जिनबिम्ब प्रतिष्ठा हुई सहर्ष, टीकमगढ़ के ही आँगन में।।
श्री जयनिशान्त ब्रह्मचारी ने, यह समारोह इस नगरी में।
विधिपूर्वक यहाँ कराया था, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।65।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिनाथा ने, यहाँ एक शतक प्रतिमाओं में।
परमेश्वर को पधराया था, श्री सूरि मंत्र देकर उनमें।।
पच्चीस नवम्बर को शिष्यन की पूरी कर दी इच्छायें।
गुरुवर ने इस आयोजन में दी चार दिगम्बर दिक्षायें।।66।।

।। टीकमगढ़ से विहार ।।

इस चऊमासे में श्री गुरु ने, सत् ज्ञान ध्यान अरु चर्या से।
सब लोगों का मन जीत लिया, अपने समतामयी भावों से।।
अब दो तारीख दिसम्बर में, गुरु यहाँ से कदम बढ़ाते हैं।
तब नगरी के सारे श्रावक, अँखियों से जल बरसाते हैं।।67।।

।। बैरवार में आचार्य संघ ।।

गुरुदेव जतारा से होकर, अब बैरवार में पधराये।
यहाँ जैन अजैन सभी भाई, अगवानी कर अति हरषाये।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को सब लेके आये, श्री पारसनाथ जिनालय में।।68।।

।। पंचकल्याणक बैरवार में ।।

दसवीं तारीख दिसम्बर से, यहाँ दो हजार पन्द्रह सन् में।
जिनबिम्ब प्रतिष्ठा हुई शुरू, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।
पंडित दीवान पवन जी ने, यह समारोह बैरबारा में।
विधिपूर्वक ही करवाया था, गजरथ के फैरों के संग में।।69।।

।। छठवाँ आचार्य पदारोहण बैरवार में ।।

छठवाँ आचार्य पदारोहण, तब बैरवार के कस्बा में।
अति धूमधाम के साथ मना, बारह तारीख दिसम्बर में।।
चौदह तारीख दिसम्बर में, मुनिदीक्षा दिवस श्री गुरु का।
सत्रहवाँ भक्त मनाते हैं, श्री गुरुवर के सत् संयम का।।70।।

।। बैरवार से विहार ।।

इस समारोह के बाद गुरु, संघस्थ साधुओं के संघ में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, ईर्यापथ को धरके चित में।।
जिनधर्म पताका लेके गुरु, भारत के सबई प्रदेशों में।
अंतस् में अति हर्षा करके, लहराते हैं आतम हित में।।71।।

।। आचार्य संघ पुनः जतारा में ।।

गुरु बैरवार से चलते हैं, सोलह तारीख दिसम्बर में।
ईर्यापथ को चित में धरके, आ गये जतारा नगरी में।।
तब यहाँ के सभी श्रावकों ने, नगरी की सीमा पर जाकर।
गुरु संघ की कीनी अगवानी, अंतस् में भारी हरषाकर।।72।।

आचार्य प्रवर के चरणों का, यहाँ भक्तों ने अति हरषाके।
प्रक्षाल किया था अंतरंग से, दूधई नदिया से जल लाके।।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को लेके आये सभी, मन्दिर के पास वसतिका में।।73।।

।। वेदी प्रतिष्ठा जतारा में ।।

यहाँ नई वेदी की प्रतिष्ठा, सत्रह तारीख दिसम्बर से।
हुई पारसनाथ जिनालय में, त्रय दिन की भारी आनंद से।।
पंडित राजेश 'राज' जी ने, यह समारोह इस नगरी में।
विधिपूर्वक यहाँ कराया था, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।74।।

।। जतारा से विहार गुरुसंघ का ।।

आचार्य विमर्शसागर स्वामी, बाईस दिसम्बर के दिन में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, अपनी मंजिल धर के चित में।।
त्रय दिन के बाद गुरुराजा, आ जाते हैं खरगापुर में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हरषाये अन्तःपुर में।।75।।

।। अहार जी में गुरुराजा ।।

दो दिन रुक के गुरुराजा ने, गणमान्यों के अति आग्रह से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, अपनी पावन मृदुवाणी से।।
खरगापुर से चलके स्वामी, आहार क्षेत्र पर पधराये।
यहाँ क्षेत्र कमेटी वाले सब, अगवानी कर अति हरषाये।।76।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, प्रभु शान्ति कुन्थु अरह जिन के।
दर्शन कीने संघ के संग में, अंतरंग में भारी हरषाके।।
हर साल यहाँ मेला भरता, जैनों का माह दिसम्बर में।
जिसमें सान्निध्य दिया गुरु ने, संघस्थ साधुओं के संग में।।77।।

।। आचार्य गुरुवर विरागसागर जी से मिलन ।।

आचार्य विरागसागर स्वामी, संघस्थ साधुओं के संग में।
आहारक्षेत्र पर पधराये, तेईस दिसम्बर पन्द्रह में।।
श्री विमर्शसिन्धु मुनिनाथा ने, श्रावक अरु सन्तों के संग में।
अगवानी कीनी गुरुवर की, जाकर तीरथ की सीमा में।।78।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिनाथा ने, अपने ही प्रिय गुरुराजा के।
चरणों में शीष झुकाया था, परिक्रमा तीन लगा करके।।
अपने शिष्य को गुरुराजा ने, साहर्ष उठाकर चरणों से।
निज वक्षस्थल से लगा लिया, स्नेह सहित अति आनंद से।।79।।

श्री विमर्शसिन्धु मुनिनाथा ने, अपने अंतरंग के भावों से।
गुरु चरणों का प्रक्षाल किया, अपने पावनतम अँसुओं से।।
ये गुरु शिष्य का मिलन दृश्य, जनता ने लखके अंतस से।
आनंद अश्रु बरसाये थे, अपनी पावनतम अँखियों से।।80।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंदयात्रा के संग में।
आचार्य प्रवर को लाये सभी, श्री शान्तिनाथ जिनालय में।।
आचार्य प्रवर ने तभी यहाँ, संघस्थ साधुओं के संग में।
बड़े बाबा के दर्शन कीने, अति हरषा के मन आलय में।।81।।

।। गुरुदेव की साधना का अतिशय ।।

(सिद्धक्षेत्र अहार जी, 25 दिसम्बर 2015)

आहार क्षेत्र अतिपावन है, प्रभु शान्तिनाथ महिमाशाली।
जो दर्शन करने आते हैं, होती जीवन में खुशहाली।।
गुरुवर विमर्श का शुभागमन, जब हुआ यहाँ अतिशय भारी।
आओ मैं तुम्हें सुनाता हूँ, इस अतिशय की घटना सारी।।82।।

गुरुवर विमर्श का संघ बड़ा, अनुशासन ख्याति वाला है।
हर एक शिष्य गुरु अनुशासन की, जपता पावन माला है।।
इनके संघ में ही एक बहिन, आँचल दीदी कहलाती हैं।
गुरु विनय समर्पण सेवा में, बस अपना चित्त लगाती हैं।।83।।

इक दिवस असाता कर्मोदय की, आईं थीं घड़ियाँ भारी।
आधे शरीर में दीदी के, हो गई भयानक बीमारी।।
सब वैद्य हकीमों ने देखा पर, समझ किसी के न आया।
है रोग भयानक ये कोई, या है कोई व्यंतर माया।।84।।

फौरन दीदी को लेकर के, सब महानगर को जाते हैं।
झाँसी, ग्वालियर और मेदान्ता जाकर गुड़गाँव दिखाते हैं।
दीदी के तन के सब चैकप, इक बार नहीं कई बार हुये।
पर रोग समझ न आता था, सारे चैकप बेकार हुये।।85।।

आधा तन अब बेजान हुआ, था मुँह में टेड़ापन भारी।
खो गई रोशनी आँखों की, न समझ सके क्या बीमारी।।
चैकप सारे सामान्य मगर, बीमारी बढ़ती जाती थी।
थे सभी चिकित्सक परेशान, कुछ बात समझ न आती थी।।86।।

जब सभी इलाज हुये निष्फल, जब सभी चिकित्सक हार गये।
दीदी को बापिस गुरु चरणों में, लेकर क्षेत्र अहार गये।।
यह क्षेत्र बड़ा अतिशयकारी, सदियों से जाना जाता है।
विष्कम्बल मदन केवली का यह सिद्ध क्षेत्र कहलाता है।।87।।

प्रभु शान्तिनाथ अतिशयकारी, दर्शन कर गुरुवर हर्षाये।
गुरुवर विराग के दर्शन से, क्या हर्ष हुआ कैसे गायें।।
दीदी की लख यह रुग्ण दशा, सबमें करुणा उपजाती थी।
उनकी यह करुण व्यथा मानो, पत्थर को भी पिघलाती थी।।88।।

हर ओर निराशा के बादल, न दिखता कोई साथी था।
पर दीदी के मन में गुरु का, विश्वास अभी भी बाँकी था।।
गुरु चरणों में अपनी श्रद्धा की, पावन ज्योत जलाई थी।
उनका ही एक भरोसा था, उनही से आश लगाई थी।।89।।

पच्चीस दिसम्बर का दिन था, हर ओर निराशा छाई थी।
गुरु चरणों में अंतिम अर्जी लेकर के दीदी आई थी।।
आँखों से कुछ न दिखता था, कानों से कुछ न सुन पातीं।
मुख हाथ पैर का टेडापन, लख के तब छाती थर्राती।।90।।

मानो पत्थर की काया हो, कुछ हलन चलन न होता था।
जिसने भी दीदी को देखा, उसका ही हृदय रोता था।।
करुणा सागर ने करुणा का, दीदी पर अभिसंचार किया।
आशीष कृपा बरसाने का, गुरुवर ने मनः विचार किया।।91।।

अपने नयनों को बंद किया, गुरुदेव विराजे पद्मासन।
गुरुवर की परम विशुद्धि से, तब काँप उठे थे देवासन।।
अतिशयकारी प्रभु शान्तिनाथ को, हृदयासन पर पधराया।
फिर पूज्यपाद की शान्ति भक्ति पढ़, शान्तिनाथ प्रभु ध्याया।।92।।

इक ओर ये पावन संत अहो, भक्ति में डूबे जाते थे।
इक ओर बड़े बाबा अपना, अतिशय भी खूब दिखाते थे।।
भक्ति के इक इक अक्षर ने, इक महामंत्र का काम किया।
गुरुवर ने मानो दीदी को, नव जीवन का वरदान दिया।।93।।

बस क्षणभर में ही खोई रोशनी, आँखों में वापिस आई।
मुँह का टेड़ापन दूर हुआ, दीदी तब अतिशय मुस्काई।।
कानों से सुनना शुरु हुआ, सब देह विकृति दूर हुई।
गुरुवर की भक्ति की शक्ति, तीनों लोकों मशहूर हुई।।94।।

जो व्हील चेयर पर आई थी, दोनों पैरों पर खड़ी हुई।
यह देखा अतिशय लोगों ने, तब इसकी चर्चा बड़ी हुई।।
गुरु शुभाशीष से दीदी ने, तब दूजा जीवन पाया था।
गुरुवर की जय जयकारों से, धरती आकाश गुँजाया था।।95।।

गुरुवर ने दोनों नयन खोल, प्रभु शान्तिनाथ को नमन किया।
फिर दीदी को दोनों हाथों से, खूब-खूब आशीष दिया।।
गुरुवर विराग बोले विमर्शसागर जी अतिशय भारी है।
यह युगों युगों तक गूँजेगा, अनुशंसा खूब हमारी है।।96।।

इस भावविशुद्धि के अतिशय से, प्रेरित देवों ने आकर।
गुरुवर विमर्श की महाअर्चना की, कुछ ऐसा बतलाकर।
हे नाथ! आपने शान्ति भक्ति की दुर्लभतम् सिद्धि पाई।
गुरु भावलिंगी हो संत आप, गुण महिमा देवों ने गाई।।97।।

तब ''संत भावलिंगी'' कहकर, गुरुवर का जय जयकार किया।
''श्री सिद्धक्षेत्र आहार के छोटे बाबा'' कह गुणगान किया।।
''हे शान्ति प्रभु के लघुनंदन'' गुरुवर विमर्श दो हमें अभय।
संकट मोचन तारण हारे, गुरु विमर्श की जय जय जय।।98।।

भारतभूमि पर यह अतिशय, इक अमरगीत कहलायेगा।
श्री सिद्धक्षेत्र आहार का, कण कण इसकी महिमा गायेगा।।
गुरु मंत्र जपो श्रद्धा लाओ, हैं ये भावी अरिहंत अहो।
स्मरण मात्र कर लेने से, हो जाते सब दुख अंत अहो।।99।।

अब गुरु शिष्य का यहाँ से भी, पच्चीस दिसम्बर के दिन में।
हो गया गमन टीकमगढ़ को, संघस्थ साधुओं के संग में।।
तब नगरी के सब लोगों ने, जाकर नगरी की सीमा में।
ऐतिहासिक कीनी अगवानी, जय जय के नारों के संग में।।100।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, एक आनंद यात्रा के संग में।
गुरुओं को लेके पहुँच गये, सब जन मझार के मन्दिर में।।
दोनों गुरुओं के सान्निध्य में, आचार्य विमलसागर जी का।
उनतीस दिसम्बर पन्द्रह में, मनता है दिवस समाधि का।।101।।

उस ही दिन दोनों संघों का, हो गया गमन टीकमगढ़ से।
तब बड़ा गाँव के तीरथ में, दोनों संघ पहुँचे आनंद से।।
तीरथ पर सभी श्रावकों ने, जनवरी एक सन् सोलह में।
इस महासंघ की अगवानी, की शीष झुका कर चरणों में।।102।।

।। अतिशय क्षेत्र बड़ागाँव में ।।

सारे श्रावक इस नगरी के, इस नई साल सन् सोलह में।
इस महासंघ के दर्शन कर, खुश होय रहे भारी मन में।।
श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा ने, संघस्थ साधुओं के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे, सागर का रस्ता धर चित में।।103।।

।। पुनः टीकमगढ़ में गुरुवर ।।

आचार्य विमर्शसागर स्वामी, गुरुवर की आज्ञा पाकर के।
आ गये पुनः टीकमगढ़ में, ईर्यापथ को चित में धरके।।
यहाँ शीतकालीन वाचना भी, गणमान्यों के अति आग्रह से।
जनवरी सात से शुरू हुई, आचार्य प्रवर के श्री मुख से।।104।।

श्री शान्तिनाथ दिव्यार्चन का, यहाँ पाँच दिना का आयोजन।
आचार्य प्रवर के सान्निध्य में, होता है उत्तम मन भावन।।
श्री विमलकुमार सौंरया ने, यहाँ तहसीली के आँगन में।
विधिपूर्वक इसे कराया था, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।105।।

।। टीकमगढ़ से विहार मंजना को ।।

फरवरी तीन को गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
मंजना नगरी में आकर के, गुरु संघ सहित रुक जाते हैं।।
फरवरी पाँच सन् सोलह से, मंजना नगरी के आँगन में।
हुआ सिद्धचक्र मंडल विधान, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।106।।

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा आगामी, बन रहे यहाँ नये मन्दिर की।
श्री गुरुवर से गणमान्यों ने, विनती कीनी करवाने की।।
अन्तिम दिन एक शोभायात्रा, आचार्य संघ के सान्निध्य में।
अति धूमधाम से निकली थी, मंजना के सबई मुहालों में।।107।।

।। सिद्धक्षेत्र आहार जी में ।।

आचार्य संघ यहाँ से चलके, उन्नीस फरवरी के दिन में।
आहार क्षेत्र पर पधराये, प्रभु शान्तिनाथ के चरणों में।।
इक्कीस फरवरी के दिन से, इस सिद्धक्षेत्र के प्रांगण में।
हुई दिव्य अर्चना आनंद से, प्रभु शान्तिनाथ के मन्दिर में।।108।।

।। द्रोणगिरी में गुरुसंघ ।।

कई नगरों के श्रावक आये, इस सप्तदिनी आयोजन में।
उनने अभिषेक किया प्रभु का, अति हर्षाके अपने मन में।।
अब सात मार्च को श्री गुरु ने, यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे।
होकर तब लार बुढ़ेरा से, द्रोणागिरि में पधराये थे।।109।।

यहाँ क्षेत्र कमेटी वालों ने, नगरी की सीमा पर जाकर।
अगवानी कीनी गुरुसंघ की, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
आचार्य प्रवर के सान्निध्य में, श्री भक्तामर मंडल विधान।
अति ही आनंद के साथ हुआ, जग शान्ति का यह अनुष्ठान।।110।।

।। बड़ा मलहरा में गुरुवर ।।

इक्कीस मार्च को गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
आकर के बड़े मलहरा में, गुरुसंघ सहित रुक जाते हैं।।
नगरी के सबई श्रावकों ने, सीमा पर श्री गुरुराजा की।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, अति आनंद से अगवानी की।।111।।

यहाँ ग्रीष्मकालीन वाचना भी, पच्चीस मार्च सन् सोलह से।
गोम्मटसार पर शुरू हुई, आचार्य प्रवर के श्री मुख से।।
श्री शान्तिनाथ जिनराजा का, यहाँ के ही बड़े जिनालय में।
मस्तिकाभिषेक हुआ पावन, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।112।।

।। संत मिलन मलहरा में ।।

जिन संत विरंजनसागर अरु, श्री अमितसिन्धु मुनिराजा से।
होता है मिलन मलहरा में, श्री विमर्शसिन्धु मुनिनाथा से।।
जीवन पानी की बूँद सही, यह अमरकृति गुरुराजा की।
जिस पर संगोष्ठी हुई यहाँ, अति ख्याति प्राप्त विद्वानों की।।113।।

।। मलहरा से विहार ।।

तब विद्वानों ने कहा सहर्ष, अपने अनुपम आलेखों में।
यह गीत नहीं यह गीता है, दुनियाँ की पावन कृतियों में।।
अब आठ जून को गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में रुककें, आगम की अलख जगाते हैं।।114।।

।। गुरु संघ छतरपुर में ।।

गुलगंज होयके गुरुराजा, आ गये छतरपुर नगरी में।
यहाँ के श्रावक अगवानी कर, अति हरषाये मन गगरी में।।
डेरा पहाड़ी का तीर्थ परम, इस ही नगरी में मनहारी।।
यहाँ शान्तिप्रभु की प्रतिमा है, खड़गासन में अतिशयकारी।।115।।

मस्तिकाभिषेक उस मूरत का, पच्चीस जून के शुभ दिन में।
अति धूमधाम के साथ हुआ, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।
अठाईस जून को गुरुवर ने, यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे।
होकर के नगर बमीठा से, खजुराहो में पधराये थे।।116।।

।। खजुराहो में आचार्य संघ ।।

तीरथ के सबई श्रावकों ने, नगरी की सीमा पर जाकर।
गुरुसंघ की कीनी अगवानी, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
बाईस जिनालय तीरथ में, है कला पूर्ण अतिशयकारी।
जिनके दर्शन को आवत है, हर रोज हजारों नरनारी।।117।।

यहाँ शान्तिनाथ की मूरत है, अति ही सुन्दर खड़गासन में।
मनमोहक है अतिशयकारी, सत्रह फुट की अवगाहन में।।
श्री शान्तिनाथ दिव्य अर्चना भी, यहाँ त्रिदिवसी आयोजन में।
अति ही आनंद के साथ हुई, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।118।।

श्री शान्तिनाथ मंडल विधान, यहाँ पाँच जुलाई के दिन में।
अति धूमधाम के साथ हुआ, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।
था चऊमासे का समय पास, जो भक्त यहाँ कई नगरों के।
विनती करने चऊमासे की, गुरुवर के पास पधारे थे।।119।।

।। देवेन्द्रनगर के भक्तों को आशीष ।।

पर गुरुवर का आशीष यहाँ, सन् सोलह के चऊमासे का।
देवेन्द्रनगर की जनता को, मिल जाता भाव विशुद्धी का।।
देवेन्द्रनगरी की जनता ने, गुरुराजा से आशीष पाकर।
चरणों में शीष झुका गुरु के, भर लीनी खुशियों से गागर।।120।।

।। हीरों की नगरी पन्ना में ।।

आचार्य विमर्श सागर स्वामी, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
पन्ना नगरी में आकर के, आगम का ध्वज फहराते हैं।।
पन्ना की सबई समाजों ने, नगरी की सीमा पर संघ की।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, अति आनंद से अगवानी की।।121।।

श्री भक्तामर मंडल विधान, यहाँ आठ जुलाई के दिन में।
अति ही आनंद के साथ हुआ, आचार्य प्रभु के सान्निध्य में।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, संघस्थ साधुओं के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाये थे, ईर्यापथ को धरके चित में।।122।।

।। देवेन्द्रनगर में गुरुसंघ ।।

पन्ना नगरी से चलके गुरु, पन्द्रह तारीख जुलाई में।
देवेन्द्रनगर में पधराये, करुणा को धरके हृदय में।।
नगरी के सबई श्रावकों ने, सीमा पर जाकर नगरी की।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, श्री गुरुवर की अगवानी की।।123।।

यहाँ नगरी के गणमान्यों ने, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, प्रासुक जल से अति हरषाके।।
आचार्य संघ को श्रावकजन, एक आनंद यात्रा के संग में।
नगरी में प्रवेश कराते हैं, खुश होकर के भारी मन में।।124।।

उस दिन भक्तों ने नगरी को, दुल्हन की तरह सजाया था।
कई स्वागत द्वार बना उनपे, केशरिया ध्वज लहराया था।।
तब भक्तों ने निज द्वारों पर, आचार्य विमर्शसागर जी के।
पद कमलों का प्रक्षाल किया, अंतरंग में भारी हरषा के।।125।।

आचार्य संघ को श्रावक जन, मन्दिर के पास वसतिका में।
अति आनंद से ठहराते हैं, निज शीष झुका के चरणों में।।
ये पन्द्रह कलश हुए पूरे, श्री विमर्शसिन्धु जीवन पथ के।
तैंतालीस वर्ष की उम्मर के, इक्कीस वर्ष के संयम के।।126।।

।। इति पन्द्रहवाँ कलश ।।

।। सर्वोदयी संत (महाकाव्य) ।।

सोलहवाँ कलश

है अनादिकाल से जैनधर्म, जिनने कायम राखा इसको।
चरणों में शीष झुकाते हम, उन चौबीसों जिनराजों को।।
इस पंचम युग में भी जिनने, इस जैनधर्म की रक्षा की।
हम यहाँ वन्दना करते हैं, उन कुन्दकुन्द मुनिनाथा की।।1।।

उनके भी बाद हुये हैं कई, आचार्य श्रेष्ठ इस भारत में।
जिनआगम ग्रंथ रचे जिनने, स्व-पर की आतम के हित में।।
श्री पुष्पदंत अरु भूतबली, षट्खण्डागम की रचना की।
इस महाकाव्य के लिखने को, अंतस से उनकी स्तुति की।।2।।

।। आचार्यसंघ देवेन्द्रनगर में ।।

अब परम शारदा माता के, चरणों में शीष झुका अपना।
सोलहवाँ कलश शुरू करते, पूरा करने मन का सपना।।
आचार्य विमर्शसागर स्वामी, संघस्थ साधुओं के संग में।
कर रहे आत्मा का चिंतन, देवेन्द्रनगर के आँगन में।।3।।

।। वर्षायोग 2016 देवेन्द्रनगर ।।

तब षाढ़ सुदी चौदस के दिन, श्री गुरु संघ के चऊमासे का।
कलशा होवत है स्थापित, यहाँ दो हजार सोलह सन् का।।
कई ग्रामों नगरों के श्रावक, इस समारोह में पधराये।
ऋषिराजों के दर्शन करके, अंतरंग में भारी हरषाये।।4।।

उस दिन सामूहिक पूजा की, चरणों का प्रक्षालन करके।
अति आनंद से आरती कीनी, जयकारों को चित में धरके।।
दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीरा शासन की।
यहाँ मनी जयंती आनंद से, सत् संगति में गुरुराजा की।।5।।

श्री पार्श्वनाथ निर्वाण दिवस, सावन सुदी साते के दिन में।
अति धूमधाम से मना यहाँ, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, श्री पार्श्वनाथ जीवन पथ की।
दस भव की कथा सुनाई थी, कमठेश्वर के उपसर्गों की।।6।।

जिसको सुनकर श्रोताओं ने, अपनी पावन नम आँखों से।
अँसुओं की गागर छलकाई, सुन श्रेष्ठ कथा गुरुराजा से।।
रक्षाबन्धन का महापर्व, अठरा अगस्त सोलह सन् में।
श्रावक जन यहाँ मनाते हैं, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।7।।

।। रक्षाबन्धन की कथा कही गुरुराजा ने ।।

रक्षाबन्धन की परम कथा, गुरुराजा के मुख से सुनके।
अँसुओं की धारा बह निकली, निज नयनों से श्रोताओं के।।
रक्षाबन्धन का परम सूत्र, उस दिन भव्यों ने आपस में।
बाँधा था सहर्ष कलाई पर, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।8।।

।। दसलक्षण महापर्व देवेन्द्रनगर में ।।

रक्षाबन्धन का परम पर्व, हितकारी है हर जीवन को।
करमों के बन्धन तोड़ सभी, निर्बन्ध बनावत आतम को।।
तब दसलक्षण का महापर्व, देवेन्द्रनगर के आँगन में।
अति ही आनंद के साथ मना, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।9।।

सारे श्रावक इस नगरी के, दस दिन पर्यूषण पर्वों में।
नित धर्म साधना करते हैं, संयम को भी धरके चित में।।
आचार्य विमर्शसागर स्वामी, दोनों टायम मृदु वचनों से।
आतम का हित समझाते हैं, तिर जाने को भवसागर से।।10।।

पन्द्रह तारीख सितम्बर से, चौदह दिन का इस नगरी में।
पूजन का शिविर लगा न्यारा, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।
जिसमें नगरी के श्रावक जन, नित श्वेत वस्त्र धारण करके।
भगवन् की पूजा करते हैं, भारी आनंद हृदय धरके।।11।।

।। विमर्श जागृति मंच का अधिवेशन ।।

श्री विमर्श जाग्रति मंच सभी, महिलाओं के अरु पुरुषों के।
जो बने हुए कई नगरों में, सान्निध्य में श्री गुरुराजा के।।
वह सब आमंत्रित होते हैं, उन्तीस सितम्बर के दिन में।
तब सभी इकट्ठे हुए सहर्ष, देवेन्द्रनगर के आँगन में ।।12।।

उन सभी मंच शाखाओं का, यहाँ दो हजार सोलह सन् में।
अधिवेशन हुआ सुहितकारी, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।
उन सभी मंच शाखाओं के, मंत्री अध्यक्ष सदस्यों का।
आनंद से परिचय हुआ यहाँ, आयोजक अरु संचालक का।।13।।

।। संगोष्ठी विद्वानों की ।।

तब नगरी के गणमान्यों ने, गजरा अरु शाल श्रीफल से।
आमंत्रित सब मेहमानों का, सम्मान किया था अंतरंग से।।
पानी की बूँद सदृश जीवन, यह रचना श्री गुरुराजा की।
इस पर महागोष्ठी हुई यहाँ, अतिश्रेष्ठ परम विद्वानों की।।14।।

विद्वानों ने यह व्यक्त किया, जीवन का सार सही इसमें।
नैतिकता अरु धार्मिकता का सही समावेश इस गाथा में।।
मूर्धन्य सबई गुणवानों ने, इस महाकाव्य की रचना को।
अंतस से बहुत सराहा था, रचना के वृहद रहस्यों को।।15।।

।। एक चमत्कार ।।

इस महाकाव्य का सही सार, सुनकर के इन विद्वानों से।
हो गये धन्य यहाँ के श्रावक, अपने अंतरंग के भावों से।।
यहाँ पवई ग्राम का एक युवा, अनायास निज पैरों से।
कमजोर पूर्ण हो जाता है, एक झटका सा लग जाने से।।16।।

कई जगह इलाज कराया पर, आराम इसे नहीं मिल पाया।
वह खड़ा नहीं हो सकता था, इससे वह भारी घबराया।।
अब तो वह हार गया मन से, नित ही उपचार कराने से।
मैं खड़ा नहीं हो सकता अब, यह सदा सोचता है मन से।।17।।

इक दिन देवेन्द्रनगर आके, आचार्य विमर्शसागर जी के।
चरणों में शीष झुकाता है, निज भावों में अति हरषाके।।
आचार्य प्रभु ने कहा सहर्ष, आशीष देके उस बालक से।
प्रभु शान्तिनाथ का जाप करो तुम सच्ची श्रद्धा भक्ति से।।18।।

तुम जल्द ठीक हो जावोगे, नित णमोकार के जपने से।
दो दिन में ठीक हुआ बालक, गुरुवर के पावन आशीष से।।
देवेन्द्रनगर चऊमासे में, ये बात सही सन् सोलह की।
यह चर्चा वहीं सुनी हमने, आश्चर्यचकित उस बालक की।।19।।

इस चऊमासे में सभी कार्य, देवेन्द्रनगर के आँगन में।
अति ही आनंद के साथ हुए, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।
इस चऊमासे में श्री गुरु ने, नित धर्मसुधा बरसाया था।
बिन अखियाँ वालों को उनका, कई भव का रूप दिखाया था।।20।।

इस महाकाव्य का लेखक भी, गुरुराजा के दर्शन करने।
देवेन्द्रनगर में आया था, गुरु की मूरत चित में धरने।।
गुरुराजा के दर्शन करके, निज मन की प्यास बुझाने को।
यहाँ से ही लिखना शुरू किया, श्री गुरु को हृदय बसाने को।।21।।

आचार्य विमर्शसागर जी का, लिख रहे सही जीवन चरित्र।
इसमें अध्यात्म सुधा का ही, वर्णन है अति सुन्दर सचित्र।।
नहीं लालच में ये लिखा काव्य, यह तो केवल गुरु भक्ति है।
हमने भावों से लिखा इसे, यह अंतस की मन शक्ति है।।22।।

।। शुभ दीपावली श्री वीर निर्वाणोत्सव ।।

प्रभु वीरा का निर्वाण दिवस, यहाँ कार्तिक वदी अमावस में।
अति ही आनंद के साथ मना, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, अपनी पावन मृदु वाणी से।
इस महापर्व का सही अर्थ, समझाया था अति आनंद से।।23।।

महावीर प्रभु ने इसी दिना, निज आतम का शोधन करके।
सिद्धात्म महापद पाया था, अपनी नश्वर काया तजके।।
यह आत्मशोध का महापर्व, निज आत्मबोध पा जाने का।
धन दौलत का ये पर्व नहीं, यह निज में सही समाने का।।24।।

इस ही दिन श्री गुरुराजा ने, विधिपूर्वक इस चौमासे का।
सहर्ष किया था निष्ठापन, यहाँ दो हजार सोलह सन् का।।
देवेन्द्रनगर के जैनों ने, सम्पूर्ण पटाकों को तजके।
आतिशबाजी नहीं की कोई, गुरु की वाणी हृदय धरके।।25।।

।। दीक्षा दिवस देवेन्द्रनगर में ।।

देवेन्द्रनगर के भक्त सभी, छठवीं तारीख नवम्बर में।
यहाँ दीक्षा दिवस मनाते हैं, ग्यारह संतों का हरषाके।।
तब आसपास के नगरों से, इस समारोह के लखने को।
गुरु भक्त हजारों में आये, यह दृश्य हृदय में धरने को।।26।।

आचार्य प्रभु के परम गुरु, श्री विरागसिन्धु मुनिनाथा का।
शुभ दिवस मना था आनंद से, पच्चीसवाँ आचारज पद का।।
नगरी के सभी श्रावकों ने, यहाँ आठ नवम्बर के दिन में।
यह उत्सव भव्य मनाया था, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।27।।

।। पिच्छि परिवर्तन गुरु संघ का ।।

यहाँ पिच्छिका परिवर्तन भी, पन्द्रह तारीख नवम्बर में।
सब ही सन्तों का हुआ सहर्ष, इक अति भव्य आयोजन में।।
आशीष सहित गुरुराजा को, नई पिच्छि कर में देकर के।
जूनी पिच्छी लेते श्रावक, सत् संयम को चित में धरके।।28।।

।। मुनिदीक्षा दिवस श्री गुरु का ।।

आचार्य विमर्शसागर जी का, चौदह तारीख दिसम्बर में।
मुनि दीक्षा दिवस मनाया था, गुरुभक्तों ने निज नगरी में।।
उन्नीसवाँ दीक्षा समारोह, उन्नीस दीपों से आरती कर।
भव्यों ने सहर्ष मनाया था, भक्ति भावों से पूजन कर।।29।।

।। जैनेश्वरी दीक्षा में ।।

छह दीक्षायें तब हुईं श्रेष्ठ, देवेन्द्रनगर के प्रांगण में।
गुरुराजा के कर कमलों से, जनवरी एक सन् सत्रह में।।
छै बजे सुबह दीक्षार्थी जन, आचार्य प्रवर की आज्ञा से।
केश लोंच स्वयं का करते हैं, हर्षित होके अपने कर से।।30।।

साढ़े बारह पर दीक्षार्थी, वस्त्राभूषण से सज धजके।
दीक्षा मंडप में पधराये, संग में संघस्थ गुरुजन के।।
दीक्षा हेतु अनुमति माँगी, उनने निज मात पिता जन से।
फिर क्षमादान के साथ यहाँ, वितनी की श्री गुरुराजा से।।31।।

हे नाथ यहाँ हम घबराये, इस जग के गोरखधन्धे से।
जैनेश्वरी दीक्षा देकर के, अब हमें बचालो इस दुःख से।।
जनता के सम्मुख श्री गुरु ने, दीक्षार्थी सबई सुभव्यों से।
दीक्षा बावत कुछ पूछ लिया, जिनआगम युत सिद्धांतों से।।32।।
दीक्षार्थी भाई सभी सहर्ष, तब कहते हैं गुरुराजा से।
आगम सिद्धांत सभी हमको, मंजूर है अंतरंग भावों से।।
श्री गुरुवर ने उन शिष्यों को, जैनेश्वरी दीक्षा दे करके।
मुक्ति का मारग बतलाया, आतम का हित चित में धरके।।33।।

।। तीन पीढ़ियाँ एक साथ दीक्षित ।।

ब्रह्मचारी श्री सागर भैया, रहने वाले कोलारस के।
निज माता पिता दादा के संग, मुनिदीक्षा लेवत हरषाके।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, ब्रह्मचारी सागर भैया का।
मुनि विशुभ्रसागर नाम रखा, चोला पहनाकर संयम का।।34।।

ब्रह्मचारी श्री मुकेश भैया, रहवासी कोटा नगरी के।
श्री विशमसागर मुनि बने यहाँ, जैनेश्वरी दीक्षा चित धरके।।
श्री गुलाबचन्द ब्रह्मचारी जी, रहवासी रहे जबलपुर के।
विश्वाक्षसागर मुनि बने, संयम की डोरी में बंधके।।35।।

ब्रह्मचारी बहिना विजयश्री, रहनेवाली कोलारस की।
विनयांत श्री आर्यिका बन गई, जननी यह सागर भैया की।।
ब्रह्मचारी शंकरलाल सेठ, प्रिय दादा हैं यह सागर के।
विश्वांक सागर क्षुल्लक जी, बनते यहाँ दीक्षा लेकर के।।36।।

ब्रह्मचारी अरविन्द भैया जी, प्रिय पापा सागर भैया के।
विश्वार्कसागर क्षुल्लक जी, बन जाते दीक्षा चित धरके।।
निज माता पिता दादा के संग, सागर भैया कोलारस के।
जिनदीक्षा लेवत एक साथ, चारों सदस्य इक ही कुल के।।37।।

इन तीन पीढ़ियों ने संग में, जैनेश्वरी दीक्षा लेकर के।
इतिहास रचा है अद्वितीय, इस पंचम युग में आकर के।।
इतिहास अनूठा बना श्रेष्ठ, देवेन्द्रनगर के आँगन में।।
श्री विमर्शसिन्धु गुरु के द्वारा, जनवरी एक सत्रह सन् में।।38।।

।। देवेन्द्रनगर से मंगल विहार ।।

फरवरी एक में गुरुराजा, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
तब नगरी के सारे श्रावक, अँखियों से जल बरसाते हैं।।
गुन्नौर पवई से होके गुरु, कुण्डलपुर में पधराये थे।
बड़े बाबा के दर्शन करके, अंतस में अति हरषाये थे।।39।।

।। कुँवरपुर में आचार्य संघ ।।

पन्द्रह दिन बाद यहाँ से भी, गुरुराजा कदम बढ़ाते हैं।
आकर के ग्राम कुँवरपुर में, नित चर्या को रुक जाते हैं।।
यहाँ जैन अजैनों ने मिलके, जाकर नगरी की सीमा पर।
ऐतिहासिक कीनी अगवानी, गुरुराजों की अति हर्षाकर।।40।।

।। चौके में हुई भारी सिद्धि ।।

आचार्य विमर्शसागर जी का, पंडित सुरेश जी के घर में।
अति आनंद से आहार हुआ, नवधा भक्ति धर के उर में।।
उस दिन चौके में सिद्धि हुई, सीमित भोजन भी रहने से।
चालीस अतिथियों का भोजन, हो जाता है अति आनंद से।।41।।

आचार्य विमर्शसागर जी का, आहार हुआ था जिस घर में।
आक्षीण महानस ऋद्धि भी, हो गई सिद्ध उस चौके में।।
आहार सबई का होने पर, नहीं फरक पड़ा सामग्री में।
यह पंडित जी का कहना है, यह सिद्धि हुई मेरे घर में।।42।।

।। आचार्य संघ कटनी में।।

चर्या करके आचार्य प्रवर, संघस्थ साधुओं के संग में।
यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं, ईर्यापथ को धर के चित में।।
गुरु होकर ग्राम मोहंद्रा से, ग्यारह तिथि मार्च महीना में।
कटनी नगरी में पधराये, संघस्थ साधुओं के संग में।।43।।

इस नगरी के सारे श्रावक, जाकर नगरी की सीमा पर।
ऐतिहासिक करते अगवानी, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
यहाँ गणमान्यों ने नगरी के, गुरुराजा के पद कमलों का।
प्रक्षाल किया था अंतरंग से, जल लाकर नदी नर्मदा का।।44।।

गाजों बाजों के साथ सहर्ष, इक आनंद यात्रा के संग में।
गुरु संघ को प्रवेश कराया था, जनता ने कटनी नगरी में।।
श्री गुरु के यहाँ पधराने से, महकाय रही नगरी सारी।
गुरु चरणों का वन्दन करके, खुश होय रहे सब नरनारी।।45।।

।। होली पर गुरु का उपदेश ।।

होली के दिन में गुरुवर ने, अपनी पावन मृदुवाणी से।
होली का मतलब समझाया, यहाँ बचना सभी बुराई से।।
सब अपना मान जला करके, समता धारो अपने मन में।
यहाँ सभी अहिंसा रंग को, भर लेना अपने जीवन में।।46।।

।। भक्तामर मंडल विधान ।।

बाईस मार्च सन् सत्रह में, श्री भक्तामर मंडल विधान।
यहाँ हुआ गुरु के सान्निध्य में, प्रिय जगशान्ति का अनुष्ठान।।
पंडित श्री शैलेन्द्र शास्त्री ने, कटनी नगरी के आँगन में।
विधिपूर्वक ही करवाया था, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।47।।

आचार्य प्रवर के गुरु भाई, श्री विभवसिन्धु मुनिनाथा के।
दो शिष्य यहाँ पधराये थे, गुरु से मिलने अति हरषाके।।
अध्यापन सागर मुनिराजा, अध्ययनसागर मुनि के संग में।
कटनी नगरी में पधराये, छब्बीस मार्च सन् सत्रह में।।48।।

।। संत मिलन कटनी में ।।

गुरु संघ ने यहाँ अगवानी की, नगरी की सीमा पर जाकर।
कटनी नगरी के भव्यों संग, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
यहाँ दोनों महा मुनिराजों ने, आचार्य प्रवर के चरणों में।
श्रद्धायुत शीष झुकाया था, आकर के यहाँ वसतिका में।।49।।

।। महावीर जयंती 2017 की कटनी में ।।

महावीर जयंती का उत्सव, अप्रैल माह नवमें दिन में।
अति ही आनंद के साथ मना, श्री गुरुवर के निर्देशन में।।
उस दिन नगरी को भक्तों ने, दुल्हन की तरह सजाया था।
कई स्वागत द्वार बना उनपें, केशरिया ध्वज लहराया था।।50।।

उस दिन प्रातः गुरु भक्तों ने, नगरी के सबई मुहालों में।
इक भव्य जुलूस निकाला था, आचार्य संघ के सान्निध्य में।।
श्री वीर प्रभु के जीवन पर, कई श्रेष्ठ झाँकियाँ थी संग में।
प्रभु वीर और गुरुराजा के, कई चित्र सजाये थे उनमें।।51।।

।। दिन में कवि सम्मेलन कटनी में ।।

वा दिना सभी जिनभक्तों ने, नगरी के सब चौराहों पर।
जन जन में मीठा बँटवाया, अंतरंग में भारी हर्षाकर।।
अध्यात्मिक कवि सम्मेलन की, स्वीकृति पाकर गुरुराजा से।
कई कविराजों ने आकर के, कविताएँ की अति आनंद से।।59।।

फिर बाद गुरु महाराजा ने, अपनी पावन कविताओं से।
मन मोह लिया था जनता का, अपनी मृदुता मय वाणी से।।
गुरुवर ने जाति पंथवाद, अरु संतवाद पर भावों से।
जम कर के हमला बोला था, आगम सम्मत निज वाणी से।।52।।

।। ग्रीष्मकालीन वाचना कटनी में ।।

हुई ग्रीष्मकालीन वाचना भी, अप्रैल माह सन् सत्रह में।
आचार्य प्रवर के श्रीमुख से, श्री जैन बोर्डिंग वाचनालय में।
श्री समाधि तंत्र का महाग्रंथ, श्री पूज्यपाद मुनिनाथा ने।
रचना कीनी थी अंतरंग से, केवल समता चित में धरने।।53।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, इस महाग्रन्थ पर भावों से।
यहाँ निरत वाचना कीनी थी, अपनी पावन मृदुवाणी से।।
भोजन तजके तन को कृषना, नहीं मरण समाधि है भाई।
तन के संग कृषो कषायों को, वह ही समाधि है हितदाई।।54।।

आचार्य विमर्शसागर जी ने, अपनी इस धर्म देशना में।
बतलाया अर्थ समाधि का, स्थिर रहने को अपने में।।
जिनकी समाधि सध जाती है, सार्थक जीवन होता उनका।
आगम ग्रन्थों में लिखा यही, यह कथन पूर्व आचार्यों का।।55।।

।। कटनी से विहार ।।

आचार्य प्रभु संघ के संग में, यहाँ से भी कदम बढ़ाते हैं।
कई ग्रामों नगरों में जाकर, जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं।।
कहीं करते हैं विश्राम गुरु, कहीं चर्या सहर्ष बनाते हैं।
कहीं गणमान्यों के आग्रह से, अध्यात्म सुधा बरसाते हैं।।56।।

रुकने का कार्य नहीं गुरु का, भावों से विहार किया करते।
संसार विधाओं को तजकर, मुक्ति मारग चित में धरते।।
तीनों टायम की गुरु भक्ति, तीनों टायम का सामायिक।
मारग में करते रहते, निज की आतम के आराधक।।57।।

।। भक्त के भाव गुरु दर्शन ।।

गुरु भोले भाले होकर भी, अध्यातम के दरिया दिल हैं।
गुरु ही मेरे मन के मालिक, गुरु ही मेरी सत् मंजिल है।।
श्री गुरु के दर्शन करने पर, मन को तो ऐसा लगता है।
रात्रि के यहाँ गुजरने पर, जैसे प्रिय सूरज दिखता है।।58।।

।। श्री गुरुवर का गुणगान ।।

पंचास्तिकाय के जीवन की, यहाँ दशा दिशा लखके गुरु ने।
सत् संयम का बाना पहना, इनही जग जालों से बचने।।
आये जो भी उपसर्ग यहाँ, स्वीकार किये गुरु ने मन से।
भय का तो नामनिशान नहीं, हर दुख में सुख माना तन से।।59।।

श्री गुरुवर का आध्यात्म ज्ञान, सागर से भी अति गहरा है।
गुरु के जीवन की बगिया में, समता संगम का पहरा है।।
गुरु में शशि जैसी शीतलता, रवि जैसा तेज सदा दिखता।
है बृहस्पति सा ज्ञान प्रखर, भावों में उज्ज्वल निर्मलता।।60।।

।। लेखक की विनय श्री गुरु से।।

श्री गुरुवर के गुण गाने का, यह नया यत्न किया हमने।
भवदधि से पार करा देना, यह आशा की हमरे मन ने।।
अब यहाँ आरजू है अन्तिम, हो मरण आपके चरणों में।
सत् संयम को धारण करके, नित रहूँ आपकी शरणों में।।61।।

।। लेखक का पश्चाताप ।।

इक्यासी वरषों का जीवन, ऐसे ही हमरा निकल गया।
जब पता चला इसका हमको, यह पूरा तन ही शिथिल भया।।
ये तन जर जर हो जाने से, नहीं साथ हमारे चलता है।
पर मन तो है बेईमान बड़ा, जो अपने मन की करता है।।62।।

चंचलता इमसें तीव्र हुई, इसके मन की नहीं होने से।
निज आतम को भरमाता है, इच्छाओं के नित बनने से।।
जो कर्म किये है पूरव में, वह फल तो मिलने वाला है।
रोने से कुछ नहीं होगा, जग का कानून निराला है।।63।।

हर रोज कषायों वश हमने, निज में कई दोष उपाये हैं।
जिनका नहीं ध्यान हमें कोई, वह गुरु ने हमें बताये हैं।।
श्री विमर्शसिन्धु के चरणों में, हम झुका रहे अपना माथा।
उनके ही जीवन चारित्र की, यह लिखी श्रेष्ठ निर्मल गाथा।।64।।

झरने से सागर बनने की, यह गुरु की श्रेष्ठ कहानी है।
बिन भोगे त्यागा धन वैभव, इसकी यह श्रेष्ठ निशानी है।।
विद्या विराग विशुद्ध विमर्श, यह चारों ही आचार्य प्रवर।
पंचम युग में चल रहे अभी, मुक्ति के पथ की शुद्ध डगर।।65।।

यह चारों ही आचार्य परम, रत्नत्रय की उत्तम ऐनिक।
जिनधर्म ध्वजा फहराते हैं, अध्यातम के बनके सैनिक।।
इन ही रास्तों पर चल करके, कई ने पाई मुक्ति मंजिल।
यह राह गुरु ने बतलाई, जो शिवपुर जाती है केवल।।66।।

बिल्कुल भी फर्क नहीं इनकी, कथनी अरु करनी में भाई।
देखो इनकी अनुपम चर्या, जो स्व-पर को है हितदाई।।
हर बातों को धरलो चित में, जो समझाते यह वचनों से।
भवसागर से तिर जावोगे, इनकी राहों पर चलने से।।67।।

आतम का तो निर्मल स्वभाव, यह गुरुराजा समझाते हैं।
पर जड़ के संग में रहने से, नित विषयों को अपनाते हैं।।
क्या सुन्दर और असुन्दर हैं, भ्रम भाव कहा गुरु ने इसको।
पर को ही अपना मान यहाँ, सब भूले हैं निज आतम को।।68।।

चैतन्य किया जिसने चेतन, वह ही शिव पथ चल पाता है।
जग जालों से बचके वह ही, आतम को परम बनाता है।।
बिन भाव यहाँ उपवास किया, वो तन मन सभी नशाता है।
अंतस के भाव बिगड़ने से, नहीं सुफल कोई मिल पाता है।।69।।

ऐसा सत् पाठ परम गुरु ने, भव्यन को निरत पढ़ाया है।
ये श्री गुरुवर की महिमा है, जिसको कोई जान न पाया है।।
गुरु ही मन्दिर गुरु ही मूरत, गुरु ही पूजा मंडल विधान।
गुरु ही शक्ति गुरु ही भक्ति, गुरु ही होते हैं श्रुत प्रधान।।70।।
यहाँ ख्याति लाभ भी जीवन में, एक बहुत बड़ी है बीमारी।
जनता के संग महात्मा तक, इसमें बीमार बहुत भारी।।
दुनियाँ में जन्मा हर मानव, तन मन धन को लालायत है।
मैं श्रेष्ठ कहाऊँ जग जन में, ऐसी अंतरंग में चाहत है।।71।।

।। गुरुवर की महिमा बेमिसाल ।।

पर विमर्शसिन्धु गुरु के मन में, नहीं यहाँ कोई भी चाहत है।
यहाँ कौन किधर आता जाता, इसकी नहीं इन्हें जरूरत है।।
वह तो निज में ही लीन रहें, तज करके जग के आल जाल।
इससे इनकी उत्तम चर्या, सारे जग में है बेमिसाल।।72।।

आतम के रोग लगे जितने, गुरु उनका करते हैं इलाज।
तन के रोगों से गुरुवर को, रत्ती भर भी नहीं है गिराज।।
इस दुनियाँ का सारा वैभव, श्री गुरु ने छोड़ दिया हमको।
फिर भी सच्चे धनवान वही, संयम में लगा रही चित को।।73।।

बदले में कुछ भी चाह नहीं, उनसा नहीं श्रेष्ठ कोई दानी।
लौकिक धन के सब ही दानी, होते हैं केवल अभिमानी।
मुनि मारग है शमसीर धार, आसान नहीं इसपे चलना।
पर श्री गुरु ने इसपे चलके, सिखलाया आतम में रमना।।74।।

श्री गुरु ने सभी परिषहों को, आनंद के साथ सहे मन से।
आगम सिद्धांत मुताबिक ही, विद्वेष नहीं कीना उनसे।।
विपदायें हार गईं गुरु से, संयम का लख सिरपे सेहरा।
बाधा में दूर हुई सब ही, रत्नत्रय का लखके पहरा।।75।।

कर गईं किनारा दुविधायें, दसधर्म देख के हृदय में।
सब शल्यों ने बदले मारग, सोलहकारण लखके चित में।।
इन श्रमणों के चारित्र सहर्ष, जो अंतरंग यहाँ पढ़ते हैं।
उन भव्यों के शिव पास सदा, निश्चय ही बनते रहते हैं।।76।।

।। गुरु भक्ति का फल ।।

जो भव्य यहाँ इन श्रमणों की, निज भावों से संगति करते।
उनको शिवपुर के दरवाजे, निश्चय ही सदा खुले रहते।।
अपने समतामयी भावों में, जिनका विवेक जग जाता है।
उनका इन जग के जालों से, कोई नाता नहीं रह पाता है।।77।।

।। किये करमों के फल ।।

जिनने मुनिराजों के चरित, अंतस में सहर्ष सजाये हैं।
उनने तजके मोहादि सभी, आतम के हित उपजाये हैं।।
दुष्कर्म हमेशा करने पर, कर्ता को ध्यान नहीं रहता।
जब फलीभूत होते हैं वह, तब हर घर में डंका पिटता।।78।।

शुभ कर्मों के कर्ता जन को, धन धान्य सभी ही मिल जाते।
काँटों की सेज बनी हो तब, वहाँ फूल उसी में खिल जाते।।
जब अशुभ भाव आ जाते हैं, तब सुख में विपदा आ जाती।
छप्पन भोजन मिल जाने पर, उसमें भी मक्खी गिर जाती।।79।।

।। आचार्य प्रभु का शुभ संदेश ।।

यह सही दशा है करमों की, जो सभी निरत उपजाते हैं।
इससे बचने के लिए गुरु, संयम का पथ बतलाते हैं।।
आचार्य प्रवर ने भव्यन को, शाश्वत सुख पाने का हेतु।
रत्नत्रय धर्म यहाँ केवल, बतलाया है अनुपम सेतु।।80।।

दसधर्म धारके हृदय में, नित सोलहकारण भाने से।
मुक्ति का पथ मिल जाता है, उत्तम समता चित लाने से।।
उपकार नहीं बनने देती, निज आतम की मायाचारी।
यह समझाते हैं भव्यन को, श्री विमर्शसिन्धु संयमधारी।।81।।

मानव के ईर्षित भाव सदा, मानवता नष्ट किया करते।
दुनियाँ के सबई सुधर्मों में, ऐसई संदेश लिखे मिलते।।
पर निंदा ईर्ष्या चुगली से, निज का भविष्य बिगड़ जाता।
आचार्य प्रवर समझाते हैं, इनसे नहीं रखो कोई नाता।।82।।
उत्तम चारित्र मुनिन्द्रों का, सिद्धालय तक पहुँचाता है।
उनही मुनियों को रत्नत्रय, संयम पथ सही दिखाता है।।
आचार्य विमर्शसागर जी ने, यहाँ आत्मबोध संबोधन में।
निज की आतम को समझाया, उज्ज्वल चारित्र रखो हित में।।83।।

काया से वस्त्र उतरने पर, आतम नहीं होती हीन भार।
भावों का भार उतरने पर, हो जाती आतम निर्विकार।।
पर से तजने पर राग यहाँ, कोई त्याग नहीं कहलाता है।
निज से ही राग तजेगा जो, वह ही निर्ग्रन्थ कहाता है।।84।।

यहाँ धर्म दिखाने वाले सब, जग जालों में उलझे रहते।
मायाचारी नित ही करके, अपनी ही आतम को ठगते।।
जो धर्म यहाँ धारण करते, निज आतम शुद्ध बनाने को।
वो ही जन तत्पर रहते हैं, सिद्धालय में बस जाने को।।85।।

निज भाव सदा शीतल रहते, पर भाव उबलते हैं भाई।
यह भेदज्ञान विज्ञान सही, निज आतम को है हितदाई।।
सत् समयसार का सार यहाँ, जो निज पर को समझाते हैं।
वह पंचम युग में महामुनि, श्री विमर्शसिन्धु कहलाते हैं।।86।।

निज आतम का उद्देश्य सही, आगम सम्मत समझाते हैं।।
अंतरंग की दुष्ट कालिमा भी, संयम जल से धुलवाते हैं।।
जो शुद्ध समय को जान गया, वह समयसार का ज्ञाता है।
वो समय सार ही आतम को, सिद्धालय तक पहुँचाता है।87।।

जो धर्म दिखावा करके नित, यहाँ अपना समय गमाते हैं।
वो मायाचारी करके नित, आतम को जग भरमाते हैं।।
जिनकी कथनी अरु करनी में, यहाँ अंतर रहता है भाई।
वो समयसार से दूर सभी, यह बतलाते हैं मुनिराई।।88।।

जो सकलव्रती बन करके भी, ईर्ष्या के भाव हृदय धरते।
वो यहाँ अधर्मी से बदतर, संसार भ्रमण करते रहते।।
जिनने आतम रस चखा नहीं, पर भावों को माना अपना।
वो समयसार से रहत दूर, सिद्धालय भी उनको सपना।।89।।

वह सदा देखते हैं पर को, मतलब नाहीं निज आतम से।
वो सभी यहाँ छल करते हैं, अपनी ज्ञाता शुद्धातम से।।
जो जन यहाँ केवल ख्याति को, मुनियों का भेष धरा करते।
वो समयसार से बहुत दूर, चहुँ गतियों में भ्रमते रहे।।90।।

श्री कुन्दकुन्द आचार्य प्रवर, श्री समयसार में कहते हैं।
जो नहीं समय का मूल्य करें, वह सदा दरिद्री रहते हैं।।
श्री कुन्दकुन्द मुनिनाथा के, आगममयी सत् सिद्धांतों को।
श्री विमर्शसिन्धु बतलाते हैं, रोजाना यहाँ श्रावकजन को।।91।।

जो भव्य जीव इस दुनियाँ में, वह सभी सिद्ध बन सकते हैं।
पर यहाँ विकारी भावों वश, संसार दुखों को सहते हैं।।
हर आतम ज्ञान स्वभावी है, पर परदे पड़े विकारों के।
पर भावों में रमते रहना, यह कारण है दुखियारों के।।92।।

दसधर्म और रत्नत्रय ही, इस दुख से यहाँ बचाते हैं।
अविकारी प्यारी आतम को, सिद्धालय तक पहुँचाते हैं।।
आचार्य प्रवर ने जनता को, सिद्धों का सुख बतलाया है।
कैसे बनते हैं सिद्ध यहाँ, वह भी उपाय बतलाया है।93।।

गुरु कहते हैं इस जीवन में, यह ख्याति लाभ अहं बैरी।
पल भर की भूख मिटाने में, कई गतियाँ नाश हुईं तेरी।।
इसमें जो कोई उलझ जाता, वह जग ही भ्रमता रहता है।
इससे भी बचने का उपाय, संसार में केवल समता है।।94।।

धन वैभव हो या ख्याति हो, इनकी अति भूख जिन्हें मन में।
यह लालच की संतान सभी, दुखदाई है संयम पथ में।।
कथनी करनी का भेद यहाँ, इनका भ्राता कहलाता है।
इन सबमें फँसने से आतम, नरकों के चक्कर खाता है।।95।।

नित का कर्तव्य रहा गुरु का, जिन नगरों में बह जाते हैं।
वहाँ सभी मानवों को गुरुवर, शिवपुर की राह दिखाते हैं।।
नहीं शत्रु मित्र इनका कोई, सबको ही हित समझाते हैं।
इस कारण से आचार्य गुरु, भावी भगवन् कहलाते हैं।।96।।

खड्ग ढाल तलवार बिना, आचार्य गुरु निस्पृही रहके।
करमों से युद्ध किया करते, केवल समता चित में धरके।।
श्री गुरु की मंजिल सिद्धालय, जबतक न मिले चलते रहना।
उपसर्ग होंय जो मारग में, समता के साथ उन्हें सहना।।97।।

नहीं कोई जरूरत जनता की, संयम पथ में मुनिराजों को।
समता की सही जरूरत है, शिवपथ में कर्म निर्जरा को।।
आचार्य विमर्श सागर जी ने, यह सूत्र सभी निज शिष्यों को।
समझाया सही सुगमता से, चेतन चैतन्य बनाने को।।98।।

गुरु समयसार के अनुग्राही, सम्मान समय का करते हैं।
रखते हैं ध्यान समय का ही, अरु सदा समय से चलते हैं।।
जैसी जहाँ समय लब्धि होगी, उनही नगरों में जा रुकते।
जनता की दई वसतिका में, विश्राम सहित चर्या करते।।99।।

सच्चे पाबंद समय के गुरु, श्री विमर्शसिन्धु कहलाते हैं।
उपयोग समय का ही करके, आतम का हित उपजाते हैं।।
जिन ग्रामों में रुक जाते गुरु, वहाँ करते हैं अमृत बरसा।
वहाँ धर्म पिपासु भव्यन् की, पूरण हो जाती निज मनसा।।100।।

।। बहोरीवंद तीरथ में गुरुसंघ ।।

श्री गुरु का रुकना ध्येय नहीं, नित नई राहों पर चलते हैं।
मुक्ति मंजिल है लक्ष्य सही, उसको ही चित में धरते हैं।।
कटनी से चलके गुरुराजा, बहोरीवंद तीरथ में आये।
इस तीरथ के सारे श्रावक, अगवानी कर अति हरषाये।।101।।

यहाँ शान्ति प्रभु की मूरत है, अतिशयकारी खड़गासन में।
अति सुन्दर और मनोहारी, सोलह फुट की अवगाहन में।।
आचार्य प्रभु संघ के संग में, इस तीरथ के दर्शन करके।
निज लक्ष्य ओर बढ़ जाते हैं, ईर्यापथ को चित में धरके।।102।।

।। अतिशय क्षेत्र पनागर में ।।

सीहोरा से होकर स्वामी, आ जाते क्षेत्र पनागर में।
यहाँ शान्तिनाथ के दर्शन कर, अति हर्षाये अपने उर में।।
कुछ दिना यहाँ रुकके गुरु ने, गणमान्यों के अति आग्रह से।
अध्यात्म सुधा बरसाया था, अपनी पावन मृदु वाणी से।।।103।।

।। गोसलपुर में आचार्य संघ ।।

यहाँ से चलके आचार्य प्रभु, ग्यारह तिथि जून महीना में।
जबलपुर के ही अनुपम, पधराये एक मुहल्ले में।।
तब गोसलपुर के भक्तों ने, सीमा पर जाके गुरु संघ की।
गाजों बाजों के साथ सहर्ष, अति आनंद से अगवानी की।।104।।

।। महान अतिशय गोसलपुर में।।

तेरह तिथि जून महीना की, वा ही दिन यहाँ जिनालय में।
एक पावन अतिशय होता है, यहाँ दो हजार सत्रह सन् में।।
जब शान्ति धारा पढ़ते हैं, आचार्य प्रभु अपने मुख से।
तब हुई दूध की धार यहाँ, अपने ही आप प्रभु सिर से।।105।।

जो दर्शक वहाँ पर बैठे थे, ये अतिशय लखके अँखियों से।
आश्चर्य चकित हो जाते हैं, विह्वल होकर के भावों से।।
वहाँ आदिनाथ की प्रतिमा है, अतिशयकारी खड़गासन में।
जिस ही पर हुई दुग्ध धारा, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।106।।

तब यहाँ नेट पर देखा था, भारत की जनता ने जिसको।
मोबाइल पर तब देखा था, हमने उस पावन धारा को।।
आचार्य प्रवर ने तभी यहाँ, नगरी के श्रेष्ठ जिनालयों में।
दर्शन कीने अति आनंद से, एक आनंद यात्रा के संग में।।107।।

।। वर्षायोग जबलपुर 2017 ।।

आचार्य विमर्शसागर जी का, तब संघ सहित ही चौमासा।
होवेगा यहीं जबलपुर में, निज आतम में करने वासा।।
गुरुराजा के चऊमासे का, ग्यारह तारीख जुलाई में।
कलशा होवत है स्थापित, तब यहाँ तलैया मन्दिर में।।108।।

इस समारोह में शामिल थे, नगरी के सबई मुहालों के।
गुरुभक्त और अधिकारी, शासन के और प्रशासन के।।
दूजे दिन गुरु पूर्णिमा अरु, तीजे दिन वीरा शासन की।
वहीं मनी जयंती आनंद से, सत् ज्योति जला अहिंसा की।।109।।

वहीं हुए अनेकों धर्म कार्य, जो हुए अन्य चऊमासों में।
अति ही आनंद के साथ सभी, आचार्य प्रवर के सान्निध्य में।।
तीनों टायम में गुरुभक्ति, तीनों टाइम में सामायिक।
तीनों टाइम प्रवचन करते, अपनी आतम के आराधक।।110।।

आचार्य विमर्शसागर जी का, संघस्थ साधुओं के संग में।
चऊमासा सत्रह के सन् का, हो रहा जबलपुर नगरी में।।
अग्रज गुरुभ्राता विशुद्धसिन्धु, जिनने यह गाथा लिखने को।
आशीष दिया था अंतरंग से, स्व–पर की आतम के हित को।।111।।

चऊमासे के पश्चात गुरु, यहाँ से भी कदम बढ़ावेंगे।
कई ग्रामों नगरों में जाकर, जिनधर्म ध्वजा फहरावेंगे।।
ये सोलह कलश हुए पूरे, श्री विमलसिन्धु जीवन पथ के।
चौंवालिस वर्षों की उम्मर के, बाईस वरषों के संयम के।।112।।

।। इति महाकाव्य ।।

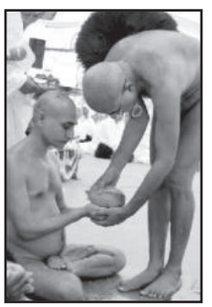

पवित्र अंजलि में मंगल द्रव्यपूर्वक व्रत प्रदान करते हुए पूज्य विरागसागर जी

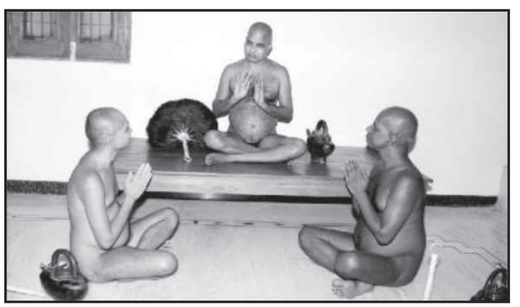

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज नवोदित आचार्य विमर्शसागर जी एवं आचार्य श्री विनम्रसागर जी को रहस्य ग्रंथ की शिक्षाएँ देते हुए

।। नई साल मंगलमयी हो ।।

हे विमर्शसिन्धु स्वामी! तुमको, यह नई साल मंगमलयी हो।
जिसमें रत्नत्रय की बहार, दिन रात निरंतर अनुपम हो।।
उस नई साल का हर पल भी, गुरु तुम्हें होय मंगलकारी।
तुम हर पल ही उपकार करो, जो यहाँ दुखित जीवनधारी।।
उन नई सालों के दिवस माह, होवें यहाँ लाख हजारों में।
उन दिवसों के पल अरु घड़ियाँ, होवे गुरु लाख कड़ोरों में।।
श्री सनतकुमार जी के सुपुत्र, करुणा के परम पुजारी हो।
माँ भगवती जी के ललना, निज आतम के उपकारी हो।।
है जन्मदिवस गुरुराजा का, पन्द्रह तारीख नवम्बर में।
हम सबकी परम भावना है, आवें वह दिवस हजारों में।।
तुममें तप संयम की बहार, सत् बाल शीलव्रत के धारी।
तुमरे पावन द्वय चरणों में, झुक रहे हजारों नरनारी।।
हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई, सब सहर्ष बधाई देते हैं।
हर नई साल मंगलमयी हो, सब तुमरे परम चहेते हैं।।
मानवता का शंखनाद गुरु, भारत के सबई प्रदेशों में।
अंतरंग से कीना है तुमने, वचनों की अनुपम शैली में।।
हे गुरु अमानव को मानव, तुम सहर्ष बनाया करते हो।
जो सोय रहा है अंतरंग में, तुम उसे जगाया करते हो।।
जो आज स्वयं को भूल रहा, उसको पहिचान कराते हो।
जो भटक गया निज पथ से, उसको सत् राह धराते हो।।
हे गुरु आपने तो हर दिन, नये-नये इतिहास बनाये हैं।
हर नई साल इतिहास बने, हम यही भाव चित लाये हैं।।

।। चरणरज सेवक ज्ञानचन्द पिड़रुआ सागर ।।

।। स्तुति आचार्य विमर्शसागर की ।।

श्री विमर्शसिन्धु के श्री चरणों में, शत-शत नमन हमारा है।
श्री विरागसिन्धु से निकल गई, यह रत्नत्रय की धारा है।।
श्री सनतकुमार घर जन्म लिया, हर घर में बजी बधाई है।
माँ भगवती के आँचल में, गुरुवर ने ली अंगड़ाई है।।
नगर जतारा की गलियों में, बचपन बीता गुरुवर का।
बीस वरष की अल्प उमर में, सोचा गुरु ने हित आतम का।।
अल्प उमर में श्री गुरुवर ने, महाशील व्रत चित धरके।
सकल व्रतों को वरण किया, विरागसिन्धु ढिंग जाकर के।।
बाल ब्रह्मचारी बन गुरु ने, विषयन से किया किनारा है।
श्री विमर्शसिन्धु के चरणों में, शत शत नमन हमारा है।।
महावीर प्रभु की सत् वाणी, तुम जन जन तक पहुँचाते हो।
जिनधर्म पताका लेके तुम, हर नगरों में फहराते हो।।
दस विधि धर्म कमंडल पिच्छि, यही आपकी धन दौलत।
निज आतम में रमते रहते, यह तुमरे मन की है चाहत।।
सुखी रहें सब जीव जगत के, यह परम तुम्हारा नारा है।
श्री विमर्शसिन्धु के चरणों में, यहाँ शत-शत नमन हमारा है।।
हँसमुख चेहरा रूप सुनहरा, सबका मन हर लेता है।
तुमरी वाणी सुनके श्रावक, मन निर्मल कर लेता है।।
हे गुरु आपने इस जग में, भव्यों की अरजी चित धरके।
मन का अंधकार हटाया है, सत् ज्ञान का दीप जला करके।।
जो नाव आपकी बैठ गये, उनको भव पार उतारा है।
श्री विमर्शसिन्धु के चरणों में, यहाँ लाखों नमन हमारा है।।
इस रंग बदलती दुनियाँ में, लेखक को परम सहारा है।
आचार्य विमर्शसागर जी को, यहाँ लाखों नमन हमारा है।।

।। ज्ञानचन्द जैन (दाऊ) पिड़रुआ, सागर ।।

लेखक की अन्य रचनायें

1. महाश्रमण की जीवन यात्रा (महाकाव्य) प्रकाशित
2. अध्यात्म का सरोवर (महाकाव्य) प्रकाशित
3. बुंदेली माटी के सपूत (महाकाव्य) प्रकाशित
4. तरुण क्रान्ति दर्पण (महाकाव्य) प्रकाशित
5. . विराग काव्याँजलि (महाकाव्य) प्रकाशित
6. सुधा सागर कलश (महाकाव्य) प्रकाशित
7. गागर में सागर (महाकाव्य) प्रकाशित
8. विभव संजीवनी (महाकाव्य) प्रकाशित
9. ज्ञानपथ प्रदर्शक (महाकाव्य) प्रकाशित
10. बिन्दु से सिन्धु (महाकाव्य) प्रकाशित
11. रक्षाबंधन कथा काव्य में अप्रकाशित
12. सोलह कारण व्रत कथा काव्य में अप्रकाशित
13. रोहणी व्रत कथा काव्य में अप्रकाशित
14. भक्तामर भाषा काव्य में अप्रकाशित
15. देवशास्त्र गुरुपूजा काव्य में अप्रकाशित
16. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय पद्यानुवाद हिन्दी
17. आत्मानुशासन पद्यानुवाद हिन्दी
18. समाधितंत्र स्तोत्र पद्यानुवाद हिन्दी
19. रयणसार पद्यानुवाद हिन्दी
20. रत्नकरण्ड श्रावकाचार पद्यानुवाद हिन्दी
21. इष्टोपदेश पद्यानुवाद हिन्दी
22. योगसार पद्यानुवाद हिन्दी
23. तत्त्वसार पद्यानुवाद हिन्दी
24. आचार्य कुन्दकुन्द चारित्र पद्यानुवाद हिन्दी
25. नई कविता संग्रह आदि

लेखक का परिचय

नाम – ज्ञानचन्द जैन (दाऊ) पिड़रुआ सागर (म.प्र.)

जन्म – 23 अगस्त, 1936 स्थान पिड़रुआ

शिक्षा – प्राईमरी चौथी हिन्दी पिड़रुआ में

पिताश्री – स्व. श्री धन्नालाल जी जैन (कर्मठ पुरुष)

माताश्री – स्व. श्रीमती सुन्दरबाई जैन (धार्मिक ग्रहिणी)

पत्नि – स्व. श्रीमती सुशीला देवी (आदर्श ग्रहिणी)

भाई – 1, निर्मल कुमार जैन सागर (अनुज)

बहिनें – 2, अग्रजा श्रीमती तेजाबाई – डॉ. भैयालाल जैन
अनुजा – श्रीमती भागवती – सेठ सुखदयाल जैन

पुत्र – 5, वीरेन्द्र–सुनीता, चक्रेश–सरिता, राजेश–अनीता, जितेन्द्र–संगीता, मुकेश–राजुल

पुत्रियाँ – 4, श्रीमती चन्द्रप्रभा–राजकुमार, मीना–विनय कुमार, श्रीमती मन्जू–कमलेश कुमार, मुक्ता–शैलेन्द्र कुमार

विशेष – सन् 1962 में पिड़रुआ से सागर आये। यहाँ जीवन में बहुत संघर्ष किया। सन् 1997 तक अपने सभी बच्चों को पाल–पोसकर, पढ़ा–लिखाकर ग्रेजुएट कराकर उनकी शादी कर और आत्मनिर्भर कर हमने व्यापार छोड़कर धार्मिक कार्यों एवं लेखन में मन लगा लिया।

पुरुस्कार – 1. गोपालदास बरैया पुरस्कार 2011, जबलपुर में। 2. विमलसागर पुरस्कार 2014, राजनगर में। 3. सागर रत्नसागर जैन समाज द्वारा स. 2015 में।

रुचि – मुनिराजों की सेवा आहार कराना एवं विहार कराना। उनके हर कार्यक्रमों में शामिल होना। उनकी संगति करना भावों में, णमो लोए सव्वसाहूणं

निवास – रामपुरा चौराहा सागर 470002 (म.प्र.)
मो. – 0–9713042001

।। गुरुवर तेरी आँधी में ।।

गुरुवर तेरी आँधी में, जलती रहे मशाल।
माँ भगवती के लाल, तूने कर दिया कमाल।।
बालकपने में तुमने, घर द्वार तज दिया है।
तजके जगत के वैभव, मुनि भेष धर लिया है।।
सत् ज्ञान की तुमारे, जग में नहीं मिशाल।
माँ भगवती के लाल, तूने कर दिया कमाल।।गु.।।
रत्नत्रय को तुमने, जीवन बनाया अपना।
जग जाल तज दिये हैं, जैसे सुबह का सपना।।
तुमरी परम तपस्या, अनुपम महा विशाल।
माँ भगवती के लाल, तूने कर दिया कमाल।।गु.।।
ले मौन व्रत हृदय में, बकवास तज दई है।
बनके महान तुमने, समता हृदय गही है।।
दस धर्म धर हृदय में, जीवन लिया सम्हाल।
माँ सरस्वती के लाल, तूने कर दिया कमाल।।गु.।।
निज आतमा में तुमने, खुद को रमा लिया है।
तप ध्यान को ही अपना, जीवन बना लिया है।।
गुरु ने मुनित्व अपने, मन में लिया बिठाल।
माँ सरस्वती के लाल, तूने कर दिया कमाल।।गु.।।
आचार्य बनके गुरुने, लघुता निरत दिखाई।
बिन्दु से बन के सिन्धु, करमों पर की चढ़ाई।।
तुमरे परम चरित की, जग में नहीं मिशाल।
माँ सरस्वती के लाल, तूने कर दिया कमाल।।गु.।।
रिस्तों को तज के तुमने, आतम से हित लगाया।
धनवान हीन निर्धन, सबको सुपथ दिखाया।।
तुमरे दरश से हमरी, अँखियाँ हुईं निहाल।
माँ भगवती के लाल, तूने कर दिया कमाल।।गु.।।

।। ज्ञानचन्द जैन (दाऊ) पिड़रुआ सागर ।।

।। झाँकी आचार्य गुरु महाराज की।।

आओ भाई तुम्हें दिखाये, झाँकी गुरु महान की।
श्री विमर्शसिन्धु की शरण गहो, जो इच्छा हो कल्याण की।।
धन वैभव अरु माया ममता, इनने छोड़ी बचपन में।
पाँच महाव्रत धार लिये हैं, नहीं परिग्रह तन मन में।।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरित, इन तीनों रतन महान की।।श्री.।।
श्री विमर्शसिन्धु गगन उड़ोना, भेष दिगम्बर है इनका।
पिच्छि कमंडल धन वैभव है, दया धर्म उत्सव मन का।।
वाचन करते जिनवाणी का, यह वाणी भगवान की।
श्री विमर्शसिन्धु की शरण गहो, जो इच्छा हो कल्याण की।।श्री.।।
सभी प्रदेशों में जाकर के, आगम अलख जगाते हैं।
जो भटक गये हैं जीवन में, सत् पथ भी उन्हें दिखाते हैं।।
गुण छत्तीस शोभते जिन में, उन आचार्य महान की।
आओ भाई तुम्हें दिखाये, झाँकी उस भगवान की।।श्री.।।
दस धरमों का पालन करते, पंचाचार हृदय धरके।
पंचेंद्रिय का निग्रह करते, सत् संयम पालन करके।।
सोलह कारण नित जो भाते, उन गुरुदेव महान की।
आओ भाई तुम्हें दिखायें, झाँकी उस गुणवान की।। श्री.।।
नव बाड़ों से शील पालते, बचपन से ब्रह्मचारी हैं।
क्षमा नम्रता सहज सरलता, उपशम गुण के धारी हैं।।
नहीं फिकर है इनको कोई, मान और अपमान की।
आओ मित्रों तुम्हें दिखायें, झाँकी उन बलवान की।।श्री.।।
नहीं कोई घरबार इन्होंका, शिवपुर सही ठिकाना है।
नहीं जगत से कोई मतलब, शिव पथ बस पहिचाना है।।
उपसर्गों से नहीं डरते हैं, उन भावी भगवान की।
आओं मित्रों तुम्हें दिखायें, झाँकी सम्यक ज्ञान की।।श्री.।।

।। ज्ञानचन्द जैन (दाऊ) पिड़रुआ सागर ।।

राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच (रजि.)
के अंतर्गत

जिनागम पंथ ग्रंथमाला

उद्देश्य
मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन, प्रचार–प्रसार
एवं लोकोपयोगी, धार्मिक–नैतिक साहित्य का
निर्माण व प्रकाशन

शुभाशीष/प्रेरणा
प.पू. श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

स्थापना ग्रंथमाला : 15 नवम्बर 2018, विमर्श उत्सव

कार्यालय : 116, भूता कम्पाउण्ड, इटावा रोड़, भिण्ड (म.प्र.)